Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NAGRI PRCHARNI PTRIKA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110771

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या R CO
पुस्तक संख्या का ९५ना
आगत पंजिका संख्या भाग ९५
पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

[illegible] ११८४-११८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

11077/
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
110771

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | १५ जूलाई १९१० । | संख्या १

सूचना और सम्मति ।

यह जान कर हिन्दी प्रेमी प्रसन्न होंगे कि प्रबंध कारिणी समिति ने "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" का सभापति माननीय पण्डित मदन मोहन मालवीय बी० ए०, एलएल० बी० को चुना है ।

गत तीसरी जुलाई को सम्मेलन की कार्य्य कारिणी कमेटी ने नवरात्र की सप्तमी और अष्टमी ता० १० और ११ अक्तूबर १९१०) को हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी तिथि, आई हुई सम्मतियों पर निश्चय कर निरधारित किया है ।

भारत गवर्न्मेंट की आज्ञानुसार बङ्गाल की एशियाटिक सोसाइटी राजपूताने की भाट चारणों के वीरता की कविताओं का संग्रह कर रही है । इस काम के लिये पं० हरप्रसाद शास्त्री राजपुताने में दौरा कर रहे हैं ।

जोधपुर के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता मुंशी देवी प्रसाद जी मुंसिफ ने सिक्कों पर एक समयानुकूल लेख अभ्युदय में लिखा है उसे हिन्दी प्रेमियों के लिये नीचे उद्धृत करते हैं ।

मुसल्मान बादशाहों के सिक्कों में हिन्दी लिपि ।

पुराने सिक्कों अर्थात् मुहरों रुपयों और पैसों के देखने से जाना जाता है कि सुलतान मुअज़्ज़ुद्दीन साम (शहाबुद्दीन गोरी) के दिल्ली जीतने से पहिले जो पृथ्वीराज चौहान का सिक्का चलता था उसमें एक ओर तो एक घुड़सवार की मूर्ति होती थी जिस के नीचे 'स्री * पृथ्वीराज' देवनागरी अक्षरों में खुदा होता था और दूसरी तरफ बैल का चित्र 'स्री असावरी' और 'स्री सामन्तदेव' खुदा रहता था । असावरी कदाचित् चौहानों की कुल देवी आसापूरा का पाठान्तर वा रूपान्तर है और सामन्तदेव पृथ्वीराज वा दिल्ली के राजा की पदवी हो क्योंकि आगे बादशाहों के सिक्कों में भी यह नाम आवेगा ।

---

* सब सिक्कों में 'स्री' योहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी सिक्के में बैल तथा त्रिशूल और किसी में त्रिशूल की जगह फूल भी है परन्तु साल सम्वत् किसी में भी नहीं है । एक सिक्का ऐसा भी मिला है जिस में पृथ्वीराज चौहान और सुलतान मुअज्जुद्दीन साम दोनों के ही नाम हैं । कदाचित् किसी सन्धिपत्र में जिसका उल्लेख इतिहास में नहीं है ऐसा प्रण हुआ हो कि दोनों के नाम के सिक्के दोनों की अमलदारी में चला करें नहीं तो और कोई कारण एक सिक्के में दोनें के नाम होने का समझ में नहीं आता है ।

१—सुलतान मुअज्जुदीन साम ।

इस सुलतान के जो सिक्के मिले हैं उन की आकृति पृथ्वीराज चौहान के सिक्कों की सी है एक ओर वही घुड़सवार है दूसरी ओर वही बैल और त्रिशूल है । किसी में तो घुड़सवार के नीचे 'स्री हमीर' और किसी में बैल के नीचे 'स्री महमद साम' खुदा है ।

एक मोहर ऐसी भी मिली है जिस के एक ओर लक्ष्मी की भद्दी सी मूर्त्ति है और दूसरी ओर 'स्री महमद* बिलसाम' है । एक मोहर में एक ओर लक्ष्मी तो है ही परन्तु दूसरी ओर 'स्री मद हमीर स्री महमद साम' है । कुछ रुपये ऐसे भी मिले हैं जिनमें एक ओर अरबी अक्षरों में 'अल सुलतान उल आजम मोहम्मद विन साम' और दूसरी ओर हिन्दी लिपि में 'स्री हमीर' है ।

इन सिक्कों से ऐसा जाना जाता है कि यद्यपि मोहम्मद विनसाम गोरी ने चौहानों का राज ले लिया था परन्तु रुपयों और मुहरों में उन के सिक्कों का चिन्ह ज्यों का त्यों रहने दिया था, केवल नाम बदला था जिससे चलने में कुछ गड़बड़ न पड़े और प्रजा को सन्तोष रहे कि उसका जाना पहिचाना हुआ ही सिक्का चलता है ।

* बेटा साम का ।

इन सिक्कों में साल सम्वत् नहीं है जिस से यह नहीं जाना जाता कि पहिला सिक्का कब चला । हां हमीर के शब्द से ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह शब्द पहिले पहल के सिक्के में उस समय डाला गया होगा जब कि मुअजुद्दीन का भाई गयासुद्दीन साम गजनी का बादशाह था और मुअजुद्दीन अमीर कहलाता था । अमीर का हिंदी रूप हमीर है फिर जब वह अपने भाई के पीछे बादशाह हो गया था तो सिक्के में 'अलसुलतान उलआजम मोहम्मद विन-साम' अरबी अक्षरों में बढ़ाया गया और हिन्दी में वही 'स्री हमीर' और 'स्री महमद साम' बना रहा ।

२—महमद विनसाम ।

कुछ सिक्के ऐसे भी मिले हैं जिनमें एक ओर 'अलसुलतान उल आजम महमद विनसाम' अरबी में और दूसरी ओर वैसा ही चौहानो वाला घुड़सवार और हिन्दी में स्री हमीर खुदा है । यह मोहम्मद साम का भतीजा था ।

३—ताजुद्दीन यलदोज ।

यह भी कुतुबुद्दीन ऐवक के समान जो मुअजुद्दीन साम के राज में दिल्ली का हाकिम रहा था और फिर उस के पीछे बादशाह हो गया था मुअजुद्दीन का गुलाम था और इसने भी कुतुबुद्दीन की देखा देखी अपने नाम का सिक्का चलाया था । इस के भी सिक्के मिले हैं जिन में भी एक तरफ़ तो वही चौहानों वाला सवार और हिन्दी में 'स्री हमीर' है परन्तु दूसरी ओर 'अलसुलतान उलमुअज्जम यलदोज-अलसुल-तान' अरबी अक्षरों में है परन्तु एक रुपये में बैल भी है जिस के नीचे 'स्री हमीर' और दूसरी ओर 'मुअजुदुनिया वलदीन* अब्ददुयलदोज' अ-रबी में है यह सिक्का सुलतान मुअज्जुद्दीन

* अर्थात् उसका गुलाम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समय का है तभी ते उसका 'गुलाम यलदोज़' लिखा है । (क्रमश:)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रस्तावित मन्तव्य।

[पहिला प्रस्ताव]

यह सम्मेलन सम्राट सप्तम एडवर्ड की असामयिक मृत्यु पर अत्यन्त शोकाकुल है और राज्य वंश के साथ इस करुणामय घटना पर सहानुभूति प्रगट करता है ।

[दूसरा प्रस्ताव]

यह सम्मेलन सम्राट पंचम ज्यार्ज के सिंहासनारूढ़ होने पर हृदय से आनन्दित है और वृटिश सिंहासन पर अपनी अविचल भक्ति प्रगट करता हुआ जगन्नियंता जगदीश्वर से प्रार्थना करता है कि सम्राट दीर्घजीवी और यशस्वी हों तथा उनके राज्यकाल में उनकी कृपा, सहानुभूति और सहायता द्वारा हिन्दी तथा अन्य देश भाषाएं उन्नति के शिखर पर विराजमान हों और भारतवर्ष में प्रारम्भिक शिक्षा का विशेष प्रचार हो ।

[तीसरा प्रस्ताव]

यह सम्मेलन श्रीमान् सर चार्ल्स हार्डिंज के वाइसराय नियत होने पर आनन्द प्रगट करता है और हिन्दी भाषियों की ओर से उनके आगमन पर उनका सादर स्वागत करता है तथा आशा रखता है कि उनके समय में हिन्दी तथा अन्य देश भाषाएं उन्नति को प्राप्त होंगी और भारतवर्ष की शिक्षा प्रणाली में उन्हें उनका उचित स्थान दिया जायगा ।

[चौथा प्रस्ताव]

राजा कमलानन्द सिंह तथा पंडित उमापति दत्त शर्म्मा की असामयिक मृत्यु से हिन्दी के भविष्य को बहुत हानि पहुंची है और यह सम्मेलन इस दुर्घटना पर शोक प्रदर्शित करता हुआ उनके सम्बन्धियों से सहानुभूति प्रगट करता है ।

[पांचवां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन की सम्मति में संयुक्त प्रदेश की कचहरियों और दफ्तरों में नागरी अक्षरों के प्रचार के लिये निरंतर उद्योग की आवश्यकता है और उसे इस बात का दुःख है कि स्थान स्थान पर सर्कारी कर्मचारियों के विरोध अथवा उनकी उपेक्षा के कारण इस कार्य में विघ्न पड़ते हैं, अतएव वह गवर्न्मेंट का ध्यान इस ओर आकर्षित करता हुआ दृढ़ता पूर्वक इस विश्वास को प्रगट करता है कि प्रजा के सुबीते तथा संतोष और उनमें आरम्भिक शिक्षा के प्रचार के लिये यह आवश्यक है कि उनको उन अक्षरों में लिखने पढ़ने तथा कार्य करने का अवसर दिया जाय जिनमें उनके देश का प्राचीन साहित्य भरा पड़ा है, जो अत्यन्त सुगमता से सीखे जासक्ते हैं, जिन की लिखावट में कभी किसी प्रकार के गड़बड़ होने या धोखा देने की आशंका नहीं है और जिनका देशमें विशेष रूप से प्रचार है । यह सम्मेलन आशा करता है कि गवर्न्मेंट नागरी प्रचार में अपनी भी भलाई और सुबीता समझ कर इस उद्योग में भारतवासियों की सहायता करेगी।

इस सम्मेलन की सम्मति में यह उचित जान पड़ता है कि संयुक्त प्रदेश के प्रत्येक ज़िले में इस बात का निरंतर उद्योग किया जाय कि सर्कारी कचहरियों में नागरी अक्षरों के प्रचार में कोई रुकावट न पड़ने पावे और गवर्न्मेंट की ता० १८ अप्रैल १९०० की आज्ञा के अनुसार कार्य हो । अतएव प्रत्येक ज़िले में इस कार्य के लिये हिन्दी प्रेमियों की एक एक सभा का स्थापित होना नितांत आवश्यक है और इस सम्मेलन की ओर से एक इन्स्पेक्टर को सब स्थानों में जा जा कर इस मन्तव्य की सफलता के लिये उद्योग करना चाहिए।

[छठां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन को इस बात का दुःख है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युनिवर्सिटीज़ कमिशन की सम्मति कालिज क्लासें में देश भाषाओं की पढ़ाई के पक्ष में होने पर भी अब तक इस ओर भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों का ध्यान नहीं हुआ है। जहां कहीं इस ओर ध्यान दिया भी गया है वहां पढ़ने वालों की रुचि पर देश भाषाओं का पढ़ना छोड़ दिया गया है। इस सम्मेलन के विचार में विश्वविद्यालयों के लिये यह बात बड़ी लज्जा और अप्रतिष्ठा की है कि प्रति वर्ष सैंकड़ों विद्यार्थी डिगरी प्राप्त करें और अंग्रेजी भाषा में विशेष योग्यता रक्खें पर उन में से अधिकांश अपनी मातृ भाषा के सम्यक पठन पाठन से बंचित रहें और उस के शुद्धता पूर्वक लिखने पढ़ने, उस में अपने हार्दिक भावों तथा विचारों के प्रगट करने और उसके ग्रन्थरत्नों के रसास्वादन में असमर्थ हों। अतएव यह सम्मेलन इस बात पर दृढ़ता पूर्वक ज़ोर देता है कि कालिज क्लासें में देशभाषा की शिक्षा सब विद्यार्थियों के लिये बाध्य हो और विश्वविद्यालय की प्रत्येक परीक्षा में इस विषय का ज्ञान आवश्यक माना जाय। इस कार्य के लिये प्रत्येक कालिज में सप्ताह में तीन घंटे की पढ़ाई अलग होगी और इस से अन्य विषयों के अध्ययन में किसी प्रकार की बाधा न पड़ेगी। इसी प्रकार स्कूल क्लासों में भी देश भाषाओं का अध्ययन आवश्यक किया जाय।

[सतवां प्रस्ताव]

यह सम्मेलन इस बात पर दु:ख प्रगट करता है कि भिन्न भिन्न प्रांतों में जो हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें नियत की जाती हैं उनकी भाषा प्राय: दोष पूर्ण होती है और कभी कभी हिन्दी प्रेमियों के आन्दोलन करने पर भी गर्हित पुस्तकें चुनली जाती हैं। इस सम्मेलन की सम्मति में यह उचित जान पड़ता है कि प्रत्येक विश्वविद्यालय तथा टेक्स्ट बुक कमेटी में उन उन देश भाषाओं के मान्य विद्वान सदस्य नियत किए जांय जिन भाषाओं की पढ़ाई उन उन प्रांतों में विशेष रूप से होती हो जिसमें विश्वविद्यालय और टेक्स्टबुक कमेटियां निस्स्वार्थ भाव से कार्य कर सुयश की भागी हों। यह सम्मेलन गवर्नेन्ट का ध्यान इस आवश्यक सुधार की ओर दिलाते हुए प्रार्थना करता है कि इस कार्य में काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा चुना हुआ एक प्रतिनिधि हिन्दी पाठ्य पुस्तकें नियत करने वाली कमेटियों में लिया जाया करे और आशा करता है कि उसकी प्रार्थना पर उचित विचार किया जायगा।

[आठवां प्रस्ताव]

हिन्दी के व्याकरण सम्बन्धी कई प्रश्नों पर समय समय पर आन्दोलन हुआ है पर अब तक इन आन्दोलनों का यह फल देखने में नहीं आया कि इन प्रश्नों के विषय में कोई सर्वमान्य सिद्धान्त स्थिर हो जाय। हिन्दी के प्रचार में दिनों दिन उन्नति होते देख कर यह आवश्यक जान पड़ता है कि व्याकरण सम्बन्धी वादग्रस्त प्रश्नों पर एक मत स्थिर हो जाय। हिन्दी प्रेमियों को यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई थी कि इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त काशी तथा आरे की नागरी प्रचारिणी सभाएं अलग अलग व्याकरण बनवा रही हैं परन्तु अब तक इन उद्योगों का कोई परिणाम देखने में नहीं आया। साथ ही इस सम्मेलन को इस बात की विशेष आशंका है कि इन दो व्याकरणों के लिये दो भिन्न भिन्न अनुक्रमणिकाएं पृथक पृथक रीति पर बनाई गई हैं, इससे जहां इस समय कुछ प्रश्नों पर ही केवल मतभेद है वहां आगे चल कर कहीं ऐसा न हो कि दो अलग अलग व्याकरण बन जांय जिसमें ऐक्य के स्थान पर भेद की मात्रा बढ़ जाय। इस अवस्था में यह सम्मेलन निम्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखित महाशयों से प्रार्थना करता है कि वे दोनों अनुक्रमणिकाओं पर विचार कर अगले सम्मेलन में अपनी सम्मति दें कि किस अनुक्रमणिका के अनुसार हिन्दी का व्याकरण बनना ठीक होगा और किस से हिन्दी के पठन पाठन में विशेष सहायता पहुंचेगी। इन महाशयों को अधिकार होगा कि अन्य जिन महाशयों से चाहें वे इस विषय के निर्णय में सम्मति और सहायता लें। जिस अनुक्रमणिका को वे स्वीकार करें यदि उस में कुछ अदल बदल करने की आवश्यकता हो तो वे कृपा कर इस विषय पर भी अपनी सम्मति विशेष रूप से दें। इस सम्बन्ध की रिपोर्ट जून १९११ के अंत तक प्रकाशित हो जानी चाहिए जिस में आगामी अधिवेशन में इस विषय पर निश्चय हो सके।

[नवां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन की सम्मति में हिन्दी भाषा और साहित्य के एक सुन्दर इतिहास की अत्यन्त आवश्यकता है और यह आशा करता है कि काशी की नागरी प्रचारिणी सभा की प्रेरणा से पंडित श्यामबिहारी मिश्र के जिस इतिहास को लिखने की कई बेर सूचनाएं छप चुकी हैं उसके शीघ्र समाप्त होकर छपने का वह सभा शीघ्र प्रबन्ध करेगी।

[दसवां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन को इस बात के जानने से परम संतोष और आनन्द है कि काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा हिन्दी के एक वृहद कोश के बनवाने के सराहनीय उद्योग में लगी हुई है और उसे इस कार्य में बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। यह सम्मेलन हिन्दी के सब प्रेमियों से साग्रह प्रार्थना करता है कि वे इस कार्य्य के लिये सभा को आर्थिक सहायता देंगे।

[ग्यारहवां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन को इस बात पर विशेष संतोष होता है कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों में हिन्दी को राष्ट्र भाषा और नागरी को राष्ट्र लिपि बनाने के पक्ष में मत पुष्ट हो रहा है और इस सदुद्योग की सिद्धि के लिये अनेक साहित्य सम्मेलन यत्नवान हो रहे हैं। यह सम्मेलन इन सब को हृदय से धन्यवाद देता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों में परस्पर सहानुभूति उत्पन्न करने, एक दूसरे के भावों और विचारों को समझने तथा आपस में ऐक्य स्थापित करने के लिये यह आवश्यक है कि भारतवर्ष में एक भाषा और लिपि का प्रचार हो जिस का अर्थ यह नहीं है कि अन्यदेश भाषाओं तथा लिपियों का लोप हो जाय वरन् जिससे तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रान्त वासी अपनी मातृ भाषा के अतिरिक्त उस राष्ट्र भाषा और लिपि का जानना भी अपना कर्तव्य समझे और उसी के द्वारा यथा सम्भव अन्य प्रांत वालों से व्यावहारिक कार्य करे। इस कार्य में विशेष सफलता प्राप्त करने के लिये इस सम्मेलन की सम्मति में यह उचित जान पड़ता है कि बंगला, मराठी, गुजराती उर्दू और हिन्दी साहित्य सम्मेलनों के प्रतिनिधियों का एक संघ शीघ्रही कहीं मिले और राष्ट्र भाषा तथा राष्ट्र लिपि के सम्बन्ध में विशेष रूप से से बिचार करे। कलकत्ते की एक लिपि विस्तार परिषद् को इस के लिये उद्योगी होना चाहिए।

[बारहवां प्रस्ताव]

अंग्रेजी के विद्वानों और प्रेमियों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने के लिये इस सम्मेलन की सम्मति में यह उचित जान पड़ता है कि तुलसीकृत रामायण का एक सुन्दर संस्करण प्रतिवर्ष उनलोगों में वितरित किया जाय जो भारतवर्ष के भिन्न भिन्न विश्वविद्यालयों से डिग्री परीक्षाओं में उत्तीर्ण हों। इस संस्करण की भूमिका अंग्रेजी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखी जाय जिसमें तुलसीकृत रामायण के महत्व और गुणों का वर्णन मनोहारिणी भाषा में हो और साथ ही एक छोटे से लेख में हिन्दी का इतिहास दिया जाय। यह भी आवश्यक होगा कि ग्रंथ के प्रारम्भ में हिन्दी बर्णमाला दीजाय और उसका प्रतिरूप अंग्रेज़ी, बंगला, मराठी, गुजराती, उर्दू तथा तेलगू अक्षरों में भी छापा जाय।

[तेरहवां प्रस्ताव]

हिन्दी साहित्य की पूर्ति और उन्नति के लिये इस सम्मेलन की सम्मति में निम्न लिखित प्रकार के ग्रंथो का प्रकाशित होना आवश्यक है।

(१) वैज्ञानिक ग्रंथ। (२) ऐतिहासिक ग्रंथ।
(३) ऐतहासिक तथा शिक्षाप्रद उपन्यास।
(४) हिन्दी के प्राचीन ग्रंथ रत्न।

इन ग्रन्थों के छपवाने का प्रबन्ध एक प्रकाशक द्वारा होना चाहिये और ऐसा उपाय होना चाहिये जिसमें पुस्तकें साधारण मूल्य पर बिकें और ग्रन्थकर्ताओं को लाभ के अंश का भाग कुछ वर्षों तक मिले जिसके अनन्तर यदि वे चाहें तो स्वत: उन ग्रंथों को प्रकाशित करवा सकते हैं। लाभ का दशमांश उस सभा को मिलना चाहिये जिसके द्वारा यह प्रबन्ध हो जिसमें वह इस प्रकार के कार्यों का उचित उद्योग कर सके।

[चौदहवां प्रस्ताव]

इस समय हिंदी के प्रचार तथा उद्धार के लिये निम्न लिखित चार सभाएं उद्योगी हो रही हैं। अर्थात् काशी की नागरीप्रचारिणी सभा, आरे की नागरीप्रचारिणी सभा, कलकत्ते का एकलिपि बिस्तार परिषद और प्रयाग की नागरी प्रवर्धिनी सभा इस सम्मेलन के बिचार में इन चारों सभाओं को परस्पर हितभाव से एक दूसरे की सहायता पूर्वक हिन्दी प्रचार तथा उद्धार का कार्य करना चाहिए। अतएव यह सम्मेलन सम्मति देता है कि इनमें इस प्रकार कार्य का बिभाग होना चाहिए।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा-हिन्दीकोष, हिन्दी व्याकरण, प्राचीन ग्रंथरत्नों का प्रकाशन, हिन्दी का इतिहास।

आरा नागरीप्रचारिणी सभा-ऐतिहासिक ग्रन्थ और उपन्यास।

प्रयाग की नागरी प्रवर्धिनी सभा-वैज्ञानिक ग्रन्थ कचहरियों में नागरी अक्षरों का प्रचार।

कलकत्ते का एक लिपि विस्तार परिषद्-हिंदी को राष्ट्र भाषा और नागरी को राष्ट्र लिपि बनाने का उद्योग।

इस कार्य बिभाग का यह तात्पर्य नहीं है कि इनके अतिरिक्त ये सभाएं दूसरा काम न करें अथवा जो कार्य एक सभा को सौंपा गया है वह दूसरी सभा न कर सके परन्तु यह आवश्यक है कि एकही कार्य को दो सभाएं न उठावें वरन् एक सभा की सहायता दूसरी सभाएं उसके उद्योगों में करें। अन्य सभाएं जो स्थापित हैं या भविष्य में स्थापित हों वे अपना मुख्य कर्तव्य इन सभाओं की सहायता करना नागरी के प्रचार में उद्योग करना तथा अपने नगर में हिंदी के पुस्तकालय, हिंदी पुस्तकों के पढ़ने और बिकने के लिये स्थापित करना समझें।

[पंद्रहवां प्रस्ताव]

इस सन्मेलन की सम्मति में एक सम्पादक समाज का कलकत्ते में स्थापित होना अत्यन्त आवश्यक है जिसमें हिन्दी पत्रों के सम्पादक परस्पर बिचार करके अपने सिद्धान्तों को स्थिर करें और ऐसा उद्योग करें जिसमें मातृ भूमि और मातृभाषा की वास्तविक सेवा हो और परस्पर के झगड़े न उठने पावें, न हिन्दी के प्रेमियों में वैमनस्य उत्पन्न हो। सम्पादक समाज को प्रकाशित हिन्दी ग्रंथों की उचित तथा पक्षपात रहित समालोचना की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। सम्पादक समाज का वार्षिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन सम्मेलन के साथ होना उचित होगा ।

[सोलहवां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन की सम्मति में यह सर्वथा उचित जान पड़ता है कि उन महानुभावों का समुचित आदर किया जाय जो हिंदी साहित्य की पूर्ति अथवा हिंदी भाषा के प्रचार में अपना समय अथवा धन लगाते हैं और जिनके द्वारा हिन्दी को बहुत कुछ उपकार हुआ है। अतएव यह सम्मेलन यह निश्चय करता है कि हिन्दी प्रेमियों द्वारा इन महाशयों को "भारतेन्दु" और "भारत भूषण" की उपाधि दी जाया करे और इसके लिये ये नियम स्वीकृत किए जांय—

"भारतेन्दु" उपाधि ।

(१) यह उपाधि उन महानुभावों को दी जा सकेगी जिन्हों ने कम से कम दसबर्ष तक अपनी विद्वता और गवेषणा शक्ति का उपयोग हिन्दी साहित्य की पूर्ति या सेवा के लिये किया हो और जिनकी साहित्यसेवा के कारण हिंदी साहित्य के किसी अंग की पूर्ति हुई हो अथवा उसका विशेष उपकार हुआ हो ।

(२) ऐसे उपाधिधारी महानुभावों की संख्या किसी समय पचास से अधिक न होगी ।

(३) जिस क्रम से यह उपाधि दी जायगी उसी क्रम से इन उपाधिधारी महानुभावों की बैठक होगी या किसी सवारी में उनका स्थान नियत होगा और वर्तमान लोगों में से जिसको सबसे पहिले उपाधि मिली होगी वही इस समुदाय का अध्यक्ष माना जायगा । इस समुदाय को अधिकार होगा कि अपने में से किसी एक को समुदाय का मंत्री नियत करे जो उनकी ओर से अध्यक्ष की आज्ञानुसार सब कार्य करेगा ।

(४) समुदाय सम्बन्धी किसी विषय का निर्णय पत्र द्वारा भी हो सकता है।

(५) हिन्दी सम्बन्धी किसी सभा, समाज या कार्य में इन उपाधिधारी महानुभावों को प्रथम स्थान मिलेगा ।

(६) इन उपाधिधारी महानुभावों को अपनी बांई छाती पर एक चिन्ह धारण करने का अधिकार होगा जो सोने और चांदी के पूर्णचन्द्र की आकृति का बना होगा और जिसके बीच में "भारतेन्दु" शब्द खुदा होगा । यह चिन्ह लाल रंग के फीते से लटकाया जायगा और इसे वह अपने पास तभी तक रख सकता है जब तक वह इस समुदाय का सदस्य रह कर इस उपाधि के धारण करने का अधिकारी होगा ।

(७) पहिली वेर इस उपाधि के लिये उपयुक्त व्यक्तियों को चुनने और उपाधि देने का अधिकार इस सम्मेलन को होगा, परन्तु इस के अनन्तर इस समुदाय के सदस्यों की अधिक सम्मति से इस विषय के निर्णय करने का अधिकर होगा । प्रत्येक महानुभाव के विषय में जिसे यह समुदाय अपने में सम्मिलित करना और यह उपाधि देना निश्चय करेगा, यह प्रकाशित करेगा कि उन्होंने कौन कौन से कार्य किए हैं जिन के उपलक्ष में उन्हें यह उपाधि दी जाती है । उन महानुभावों की सूची जिन्हें उपाधि देना निश्चय होगा पहिली सितम्बर को प्रतिवर्ष प्रकाशित करदी जायगी और उपाधि सम्मेलन के साधारण अधिवेशन में दी जायगी यदि किसी वर्ष सम्मेलन का अधिवेशन न हुआ तो हिन्दी सम्बन्धी किसी सभा के विशेष अधिवेशन में जिसका निश्चय इस समुदाय का अध्यक्ष करेगा यह उपाधि दी जायगी ।

(८) यदि कोई उपाधिधारी महाशय कोई ऐसा कार्य करेगा जिस से हिन्दी भाषा वा नागरी अक्षरों को किसी प्रकार की वास्तविक हानि पहुंचेगी या यदि वह सर्कारी नियमानुसार किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निन्दनीय या घोर अपराध के कारण दंडित होगा तो वह इस समुदाय से अलग किया जायगा और उसे फिर इस उपाधि के धारण करने का अधिकार न होगा।

"भारत भूषण उपाधि"।

(१) यह उपाधि उन महानुभावों को दी जा सकेगी जिन्हों ने कम से कम दस वर्ष तक शारीरिक अथवा आर्थिक रूप में हिन्दी भाषा और उसके साहित्य की सेवा की होगी।

(२) ऐसे उपाधिधारी महानुभावों की संख्या किसी समय पचास से अधिक न होगी।

(३) जिस क्रम से यह उपाधि दी जायगी उसी क्रम से इन उपाधिधारी महानुभावों की बैठक होगी या किसी सवारी में उनका स्थान नियत होगा और वर्तमान लोगों में से जिसको सब से पहिले उपाधि मिली होगी वही इस समुदाय का अध्यक्ष माना जायगा। इस समुदाय को अधिकार होगा कि अपने में से किसी एक को समुदाय का मंत्री नियत करे जो उनकी ओर से अध्यक्ष की आज्ञानुसार सब कार्य करेगा।

(४) समुदाय सम्बन्धी किसी विषय का निर्णय पत्रद्वारा भी हो सकता है।

(५) हिन्दी सम्बन्धी किसी सभा, समाज या कार्य में इन उपाधिधारी महानुभावों का स्थान "भारतेन्दु" उपाधिधारी महानुभावों के समकक्ष होगा।

(६) इन उपाधिधारी महानुभावों को अपनी बांई छाती पर एक चिह्न धारण करने का अधिकार होगा जो सोने और चांदी के सूर्य की आकृति का बना होगा और जिसके बीच में "भारत भूषण" शब्द खुदा होगा। यह चिन्ह नीले रंग के फीते से लटकाया जायगा और इसे वह अपने पास तभी तक रख सकता है जब तक वह इस समुदाय का सदस्य रह कर इस उपाधि के धारण करने का अधिकारी होगा।

(७) पहिली वेर इस उपाधि के लिये उपयुक्त व्यक्तियों को चुनने और उपाधि देने का अधिकार इस सम्मेलन को होगा, परन्तु इस के अनन्तर इस समुदाय के सदस्यों की अधिक सम्मति से इस विषय के निर्णय करने का अधिकार होगा। प्रत्येक महानुभाव के विषय में जिसे यह समुदाय अपने में सम्मिलित करना और यह उपाधि देना निश्चय करेगा, यह प्रकाशित करेगा कि उन्होंने कौन कौन से कार्य किए हैं जिनके उपलक्ष में उन्हें यह उपाधि दी जाती है। उन महानुभावों की सूची जिन्हें उपाधि देना निश्चय होगा पहिली सितम्बर को प्रतिवर्ष प्रकाशित कर दी जायगी और उपाधि सम्मेलन के साधारण अधिवेशन में दी जायगी। यदि किसी वर्ष सम्मेलन का अधिवेशन न हुआ तो हिन्दी सम्बन्धी किसी सभा के विशेष अधिवेशन में जिसका निश्चय इस समुदाय का अध्यक्ष करेगा यह उपाधि दी जायगी।

(८) यदि कोई उपाधिधारी महाशय कोई ऐसा कार्य करेगा जिस से हिन्दी भाषा वा नागरी अक्षरों को किसी प्रकार की वास्तविक हानि पहुंचेगी या यदि वह सर्कारी नियमानुसार किसी निन्दनीय या घोर अपराध के कारण दंडित होगा तो वह इस समुदाय से अलग किया जायगा और उसे फिर इस उपाधि के धारण करने का अधिकार न होगा।

[सत्रहवां प्रस्ताव]

पूर्व निश्चय के अनुसार यह सम्मेलन निम्न लिखित महाशयों को "भारतेन्दु" की उपाधि देता है।

[अट्ठारहवां प्रस्ताव]

पूर्व निश्चय के अनुसार यह सम्मेलन निम्न लिखित महाशयों को "भारतभूषण" की उपाधि देता है।

[उन्नीसवां प्रस्ताव]

यह सम्मेलन यह निश्चय करता है कि उसकी ओर से प्रतिवर्ष एक सोने का पदक उस हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक को दिया जायगा जिसका प्रकाशित ग्रन्थ पूर्व सन में सब से उत्तम समझा जायगा । इस पदक का नाम "हरिश्चन्द्र पदक" होगा ।

[बीसवां प्रस्ताव]

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि उसके कार्य विवरण के साथ एक सूची हिन्दी के प्रत्येक जीवित ग्रन्थ कर्ता की प्रकाशित की जाय जिसमें उसका पूरा नाम, जन्मतिथि, और रचित, अनुवादित तथा सम्पादित ग्रन्थों की नामावली उन के प्रकाशित होने के सन् के साथ दी जाया करे ।

[इक्कीसवां प्रस्ताव]

इस सम्मेलन का प्रबन्ध करने तथा इसके निश्चित सिद्धांतों को कार्य में परिणत करने के लिये एक समिति २५ सभासदों की प्रतिवर्ष सम्मेलन द्वारा नियत की जाया करेगी । सम्मेलन का सभापति, तथा काशी की नागरी प्रचारिणी सभा, आरे की नागरी प्रचारिणी सभा, प्रयाग की नागरी प्रवर्धिनी सभा और कलकत्ते के एक लिपि विस्तार परिषद् के मंत्री भी इसके सदस्य होंगे। इस सम्मेलन का एक मंत्री और एक उपमंत्री होगा जो प्रति वर्ष सम्मेलन द्वारा चुना जायगा । इस समिति का कर्तव्य होगा कि सम्मेलन के वार्षिक सिद्धांतों को कार्य में परिणत करे और सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के प्रबन्ध में यथोचित सहायता दे । यदि किसी वर्ष समिति के नवीन सभासद न चुने जांय तो यथास्थित समिति को काय करने का पूरा अधिकार होगा जब तक कि नवीन सभासद न चुने जांय । समिति के सम्मुख उपस्थित प्रत्येक विषय का निर्णय अधिक सम्मति द्वारा होगा और कोरम सात सदस्यों का माना जायगा । यदि सम्मेलन की तिथि के तीन मास पूर्व उसका सभापति स्थानिक सभा निश्चय न कर सकेगी तो इस समिति को सभापति स्थिर करने का पूरा अधिकार होगा । इसीप्रकार यदि विचारणीय विषयों का निश्चय अधिवेशन की तिथि के दो मास पूर्व न होगा तो यह समिति उस कार्य को भी करेगी ।

[बाईसवां प्रस्ताव ।]

इस सम्मेलन के भविष्यत् अधिवेशनों में सम्मिलित होने का अधिकार उन्हीं महाशयों को होगा जो हिन्दी सम्बन्धी किसी सभा या समाज के सभासद हों, किसी हिन्दी सामयिक पत्र के सम्पादक हों या किसी हिन्दी संबन्धी सभा के प्रतिनिधि हों ।

[तेईसवां प्रस्ताव ।]

यह सम्मेलन................को सम्मेलन समिति का मंत्री और.........को उपमंत्री नियत करता है ।

[चौबीसवां प्रस्ताव ।]

यह सम्मेलन निम्नलिखित महाशयों को सम्मेलन समिति का सदस्य नियत करता है ।

[पचीसवां प्रस्ताव ।]

इस सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन...में होगा ।

प्रबन्धकारिणी सभा

शनिवार ता० २ जुलाई १९१० सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू जुगलकिशोर सभापति । बा० गौरीशंकरप्रसाद पं० कृष्णाराम मेहता । पं०सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा । बा० बालमुकुन्द वर्मा ।

(१) बा० गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव तथा पं० कृष्णाराम मेहता के अनुमोदन पर बा० जुगलकिशोर सभापति चुने गये ।

(२) गत अधिवेशन (ता० ६ जून १०) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) नियम २८ के अनुसार आगामी वर्ष के पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी समिति के सभासदों के चुनाव के लिये निम्नलिखित सूची बनाई गई ।

एक सभापति और दो उपसभापति जिनमें से एक का काशीस्थ होना आवश्यक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी काशी । आनरेबुल मिस्टर जस्टिस शारदाचरण मित्र कलकत्ता । आनरेबुल पण्डित मदनमोहन मालवीय बी० ए०, एलएल० बी० प्रयाग । बा० गोविन्द दास काशी । बा० श्यामसुन्दर दास काश्मीर । महामहोपाध्याय पं० आदित्यराम भट्टाचार्य, प्रयाग । उपाध्याय पं० बद्रीनारायण चौधरी, मिर्जापुर ।

एक मंत्री और एक उपमंत्री ।

बा० गौरी शंकरप्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० । पं० सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा । पं० कृष्णाराम मेहता बी० ए० एलएल० बी० । बा० बालमुकुन्द वर्मा ।

प्रबन्धकारिणी समिति के १२ काशीस्थ सभासद

महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी । बा० गोविन्ददास । राय शिवप्रसाद । बा० गौरीशंकरप्रसाद । पं० सुरेन्द्रनारायण शर्मा । पं० कृष्णाराम मेहता । बा० बालमुकुन्द वर्म्मा । पं० केशवदेव शास्त्री । बा० जुगलकिशोर । बा० बेणीप्रसाद । गोस्वामी रामपुरी । बा० प्रसिद्धनारायण सिंह । बा० बलभद्रदास बी० ए०, एल एल० बी० । राय कृष्णचन्द्र । बा० बृजचन्द । डा० गणेश प्रसाद भार्गव मि० ज्यार्ज एस० एरण्डेल । पं० इकबालनारायण गुर्टू । पं० सिद्धेश्वर शर्म्मा । राव गोपालदास । बा० भोलानाथ बा० रामप्रसाद चौधरी । बा० मुरारी दास । बा० शिवप्रसाद गुप्त । बा० भगवानप्रसाद ।

संयुक्त प्रदेश से २ सभासद :-पं० रामनारायण मिश्र, जौनपुर । पं० श्यामबिहारी मिश्र, गोरखपुर । पं० राधाचरण गोस्वामी, वृन्दावन । पं० श्रीधर पाठक, प्रयाग । ठा० महादेव सिंह, फैजाबाद राजा रामपाल सिंह, कुर्री, सुदौली । पं० माधवप्रसाद पाठक, प्रयाग ।

बंगालसे १ सभासद:-आनरेबुल मि० जस्टिस शारदाचरण मित्र, कलकत्ता पं० सखाराम गणेश देउस्कर कलकत्ता ।

बिहार से १ सभासदः-बा० युगलकिशोर अखौरी बी० ए०, बी० एल० वकील डालटैन गंज । पं० भुवनेश्वर मिश्र, दर्भंगा । राय बहादुर बा० परमेश्वर नारायण मेहता, मुजफ्फरपुर । पं० चन्द्रशेखर धर मिश्र, जि० चम्पारन ।

मध्यप्रदेश तथा बरार से एक सभासद :-बा० हीरालाल बी० ए०, नागपुर । बा० चुन्नालाल नागपुर । पं० विनायक राव, जबलपुर ।

मध्यभारत से एक सभासदः-पं० गणपत जानकीराम दुबे बी० ए० ग्वालियर । बा० जगन्नाथ प्रसाद छत्रपुर ।

राजपुताने से एक सभासद : मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ जोधपुर । पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, अजमेर । कुंवर फतहलाल मेहता, उदयपुर ।

पंजाब से एक:-बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए० काश्मीर । पं० हीरा नन्द शास्त्री एम० ए० लाहौर ।

बम्बई से एक:-प्रोफेसर टी० के० गज्जर एम० ए० बी० एस० सी० बम्बई । बा० पन्नालाल जैन, बम्बई ।

(४) मंत्री ने गतवर्ष के आय व्यय का हिसाब उपस्थित किया ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और सन् १९०९-१० के लिये जो बजेट स्वीकृत हुआ है उसमें निम्न लिखित संशोधन किया जाय ।

	बजेट	संशोधन
कार्य कर्ताओं का वेतन	८२५)	८२६)
हिन्दी पुस्तकों की खोज	५००)	६३८)
ब्याज	०	३३)
डाक व्यय	४००)	३००)
[नागरी प्रचार	२५०)	२००)
[पुस्तकालय	५१०)	४८८)

(५) आगामी वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित किये जाने के लिये निम्नलिखित बजेट स्वीकृत हुआ ।

५७८७।।।)१०½ गतवर्ष की बचत	८२५) आफ़िस के कार्य्य कर्ताओं का वेतन
२०००) सभासदों का चन्दा	३०५०) छपाई
१०००) पुस्तकों की बिक्री	१८५) पारितोषिक
८००) गवर्नमेंट की सहायता	५२५) पुस्तकालय
१२००) पृथ्वी राजरासोकी बिक्री	१२००) पृथ्वीराजरासो
५०) स्थायी कोश	४५०) स्थायी कोश
२०) नागरी प्रचार	५००) हिन्दी पुस्तकों की खोज
५०) फुटकर	२९२) नागरी प्रचार
७००) राजा साहब भिनगा की सहायता	३००) डाकव्यय
८०) पारितोषिक	३५०) पुस्तकों के लिये पुरस्कार
६००) पुस्तकालय	३००) फुटकर व्यय
५०) राधाकृष्ण दास स्मारक	२५) मरम्मत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००००) हिन्दी भाषा का कोश	१६४५८॥-)३$\frac{१}{२}$ हिन्दी भाषा का कोश
८६५।≶) हिन्दी साहित्य सम्मेलन	१००) ब्याज
जोड़ २३३१३≶)१०$\frac{१}{२}$	८८७॥।-)।।। साहित्य सम्मेलन
	५०) साहित्य सम्मेलन में सभा की सहायता
	[७८१।।।)$\frac{१}{२}$ बनारस बंक का चलते खाते में देना
	[१८२।) राधाकृष्ण दास स्मारक
	६०००) बाबू गोपाल कृष्ण दास का देना
	जोड़ ३२५५२।≶)१

(६) जौनपुर की नागरी रक्षिणी सभा के विषय में पं० रामनारायण मिश्र की यह सम्मति उपस्थित की गई कि उसे जौनपुर में हिन्दी का अर्जीनवीस नियत करने के लिये इस सभा से सहायता मिलनी चाहिये।

निश्चय हुआ कि इस के लिये ३) मासिक की सहायता स्वीकार की जाय।

(७) हिंदी कोश सम्बन्धी कार्यों के विषय में बा० श्यामसुन्दरदास की मई सन् १८१० की रिपोर्ट सूचनार्थ उपस्थित की गई।

(८) अजमेर के श्वेताम्बर जैन कान्फरेन्स का १३ जून का पत्र नं० १५८६ उपस्थित किया गया जिस में उन्हों ने सूचना दी थी कि उनके कान्फरेन्स ने भविष्यत में अपनी सब कारवाई हिन्दी भाषा और हिन्दी लिपिमें छापना निश्चित किया है।

निश्चय हुआ कि इस के लिये श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेन्स को धन्यवाद दिया जाय।

(९) अलीगढ़ के बाबू प्यारे लाल जमींदार का ८ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा उनकी उर्दू की पुस्तकों का अनुवाद उनके व्यय से हिन्दी में करवा दे।

निश्चय हुआ कि बाबू प्यारे लाल जिन पुस्तकों का अनुवाद करवाया चाहते हैं उन्हें सभा के देखने के लिये भेज दें।

(१०) सभा की ओर से हिन्दी की विशेष परीक्षा के सम्बन्ध में ठाकुर महावीर सिंह वर्मा का २७ मई का पत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह आगामी मास में विचार के लिये उपस्थित किया जाय।

(११) बाबू श्यामसुन्दर दास का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पं० निष्का मिश्र को संक्षेप लेख प्रणाली के बनाने के लिये कुछ पुरस्कार दिलाने का उनका विचार अवश्य था, उनकी सम्मति में पं० निष्का मिश्र से साहित्य सम्मेलन के समय वक्तृताओं को संक्षेप लिपि प्रणाली के अनुसार लिखने की प्रार्थना की जाय और उस समय इस प्रणाली में सफलता दिखलाने पर उनको १००) रु० का पारितोषिक दिया जाय।

निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास का यह प्रस्ताव हिन्दी साहित्य सम्मेलन कमेटी के पास भेजा जाय।

(१२) होशियारपुर के बाबू हरीलाल बी० ए० का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि यह सभा अन्य समाजों से भी प्रार्थना करे कि वे गवर्नमेण्ट से सिक्कोंमें नागरी अक्षरों के रखने की प्रार्थना करें।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और इस विषय का पत्र छपवा कर सब सभाओं के पास भेजा जाय।

(१३) पुस्तकाध्यक्ष के पद के लिये पांच महाशयों के पत्र उपस्थित किये गये जिनमें से बाबू भगवती प्रसाद सिंह ने विना वेतन के इस पद पर कार्य करना स्वीकार किया था।

निश्चय हुआ कि बाबू भगवती प्रसाद सिंह एक मास के लिये परीक्षार्थ इस पद पर नियत किये जांय और उनसे १००) रु० की जमानत ली जाय।

(१४) ठाकुर कुशलपालसिंह का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने संयुक्त प्रदेश के प्राइमरी स्कूलों के लिये जो नवीन पाठ्य पुस्तकें तयार होनेवाली हैं उनकी भाषा और विषय के सम्बन्ध में सभा की सम्मति पूंछी थी।

निश्चय हुआ कि यह विषय पं० कृष्णाराम मेहता की सम्मति के सहित अगस्त मास के अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) साहित्य सम्मेलन कमेटी के निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किये गए (क) सम्मेलन के सभापति आनरेबुल पं० मदन मोहन मालवीय, पं० महावीर प्रसाद दिवेदी अथवा पं० गोविन्द नारायण चुने जांय और (ख) कमेटी का कोरम पांच के स्थान पर तीन सभासदों का नियत किया जाय।

निश्चय हुआ कि (क) आनरेबल पं० मदनमोहन मालवीय सभापति चुने जांय और (ख) कोरम तीन सभासदों का नियत किया जाय।

(१६) शिमला के पं० भवानीदत्त पांडे का पत्र उपस्थित किया गया जिस के साथ उन्होंने Belfour Stewart की फिजिक्स प्राइमर का हिन्दी अनुवाद सभा द्वारा प्रकाशित होने के लिये भेजा था।

निश्चय हुआ कि यह पं० कृष्णाराम मेहता की सम्मति के सहित आगामी अधिवेन में उपस्थित किया जाय।

(१७) मुंशी भगवानदीन का २८ जून का यह पत्र उपस्थित किया गया कि उन्हें सभा को १४१) रु० रेलभाड़ा और २५) रु० १५ दिन के वेतन मद्धे लौटाना स्वीकार है पर इस समय उनका हाथ खाली है अतः वे तीन मास के भीतर थोड़ा थोड़ा कर के यह रुपया सभा में भेज देंगे।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(१८) बाबू गंगा प्रसाद गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने सभा की पुस्तकों पर २५) रु० सैकड़े कमीशन मांगा था और इसके लिये सभा से हिसाब खोलने की इच्छा प्रकट की थी।

निश्चय हुआ कि बाबू गंगाप्रसाद गुप्त को सभा की पुस्तकों पर २५) रु० सैकड़े कमीशन दिया जाय पर पुस्तकों की बिक्री नकद मूल्य पर की जाय।

(१९) निश्चय हुआ कि सभा के साधारण अधिवेशन में यह प्रस्ताव किया जाय कि बाबू मोतीचंद, राव गोपाल दास और पं० कृष्णाराम मेहता इस सभा के बोर्ड आफ ट्रस्टीज़ के सभासद चुने जांय।

(२०) पं० रामसूरत पांडे का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने सभा से दो मास की छुट्टी मांगी थी।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार नहीं की जा सकती।

(२१) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

आय व्यय का हिसाब।

(जून १९१०)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३४३९	१४	१½
ग्रन्थमालाके लिये गवर्नमेण्टकी सहायता	३००	०	०
नागरी प्रचार	०	१०	०
पुस्तकालय	४८	५	८
पुस्तकों की बिक्री	१२८	१५	६
पृथ्वी राजरासो की बिक्री	१३३	८	०
फुटकर	०	७	०
सभासदों का चन्दा	५०	३	३
हिन्दी कोष	१०	०	०
हिन्दी साहित्य सम्मिलन	२४	८	०
जोड़	४१३७	८	१०½

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्त्ताओं का बेतन	६८	६	६
छपाई	१११	७	०
डाक व्यय	२१	१५	६
नागरी प्रचार	१२	१५	३
पुस्तकालय	४८	७	८
हिन्दी पुस्तकों की खोज	७७	१४	६
फुटकर	५	१३	६
हिन्दी कोष	[illegible]	[illegible]	८
पृथ्वीराजरासो	२८६	०	०
पारितोषिक	४०	०	०
मरम्मत	३	८	८
हिन्दी साहित्यसम्मिलन	६	७	६
	७४८	१२	०
बचत	३३८७	१२	१०½
जोड़	४१३७	८	१०½

रोकड़ सभा	११०॥≡)१०½
बनारस बंक लि० (कोष विभाग)	४२१२॥-)५
	४३२३॥-)½
बंक का देना	८३५॥।)२
	३३८७॥।)१०½

देना ६०००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत प्रेस काशी में बाबू माधव प्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | १५ अगस्त १९१० । | संख्या २

सूचना और सम्मति ।

डाक्टर जे० टकाकूस् नामक एक जापानी विद्वान ने जापान राज्य के पुराने कागज़पत्रों की छान बीन करके पता लगाया है कि सन् ७९९ ई० में कुछ भारतवासी लोग जापान में गए थे । डैटो शामाजी नामक एक दूसरे जापानी विद्वान ने इससे भी और पहिले भारतवर्ष और जापान का सम्बन्ध दिखलाया है । उसने कई भिक्षुकों का वर्णन किया है जो ६०० ई० में भारतवर्ष से जापान गए थे । सब से विलक्षण वृत्तान्त बुद्धसेन नामक एक ब्राह्मण का मिला है जो मध्य एशिया से होता हुआ चीन में जा पहुंचा था और वहां से फिर जापानी सन् ७३६ के पांचवें महीने की १८ वीं तिथि को जापान में गया था । जापान के राजा ने उसे 'सको' वा धर्म्माचार्य्य की उपाधि दी थी । कहते हैं कि उसकी समाधि अब तक है । डा० टकाकूस् कहते हैं कि ५० अक्षरों की जापानी वर्णमाला का क्रम इसी बुद्धसेन ही ने संस्कृत वर्णमाला के ढंग पर चलाया ।

(२)

हर लुडर नामक बर्लिन (जर्मनी) के एक प्रसिद्ध संस्कृतवेत्ता ने पूर्वीय तुर्किस्तान के तरफ़न नामक नगर में मिली हुई एक संस्कृत हस्तलिखित पुस्तक को पढ़ा है । इसे वे ईसा से ६९० वर्ष पूर्व का बना हुआ एक नाटक बतलाते हैं । आशा है कि इस पुस्तक के सम्बन्ध में और भी बातें प्रकाशित होंगी जिनसे उसके काल आदि के निर्णय करने में सुबीता होगा । किसी समय संस्कृत का प्रचार कितने विस्तार में था इस का अनुमान इस पुस्तक से हो सकता है । इंगलिशमैन का सम्बाददाता इस विषय में पूछ पाछ करने के लिये कलकत्ते के पंडित हरप्रसाद शास्त्री से मिला था । शास्त्रीजी ने कहा कि नाटक की चाल आर्य्यों में बहुत प्राचीन काल से है : भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र ईसा से दो शताब्दी पूर्व प्राचीन सामग्रियों को लेकर लिखा था जब कि फारस के पहलवी वंश को भारत वाले 'पह्लव" वा 'पह्नव" कहते थे (पारदाः पल्हवाश्चीनाः किराता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरदाः खशा-मनु। तस्याहम्भारवोत्सृष्टाः पह्लवाः शतशो नृप—रामायण)। दूसरा प्रमाण संस्कृत नाटकों की प्राचीनता का कौटिल्य के "अर्थ शास्त्र" में मिलता है जिस में कुशीलव (नट) लोगों को शूद्रों की एक बड़ी जाति लिखा है। यह प्रसिद्ध ही है कि कौटिल्य सिकन्दर का समकालीन था। ७ या ८ वर्ष हुए कि डाकृर ब्लाच (Dt. Bloch) ने मिर्ज़ापुर से दक्षिण सरगुजा के रायगढ़ नामक स्थान में एक गुफ़ा में बने हुए नाट्यशाला का पता लगाया जिस में अशोक के समय के अक्षर खुदे हैं। डाकृर स्टीन मध्य एशिया की एक प्राचीन बौद्ध गुफा से जो बहुत सी चीजें ले गए हैं उनसे भी संस्कृत नाटकों के सम्बन्ध में बहुत सी बातों का पता लगना सम्भव है। विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि गोबी और तकलामकन के रेगिस्तानों में आर्यों की प्राचीन सभ्यता के बहुत से चिन्ह दबे पड़े हैं।

—:o:—

(३)

अमेरिका के एक प्रोफेसर ने शब्दों से वायु में जो कम्प होते हैं उनके फ़ोटोग्राफ़ लेने की युक्ति निकाली है। प्रोफेसर साहब ने शब्दों के कई अद्भुत फ़ोटो लिए हैं।

प्राचीन भारत का एक शक राजा।

आज से सौ वर्ष पहिले मुसल्मानी राज्य के पूर्व का क्रमबद्ध और प्रमाणिक इतिहास कुछ नहीं मिलता था। इधर सौ वर्ष के बीच में पुराने सिक्कों और शिलालेखों के सहारे पर हिन्दू राजत्व काल का बहुत कुछ इतिहास जोड़ जाड़ कर खड़ा किया गया। सर विलियम जोन्स ने पुराणों और नाटकों में दिए हुए नामों और आख्यानों को यूनानियों की यात्रा सम्बन्धी पुस्तकों में आए हुए नामों और वृत्तान्तों से मिलान किया*।

जेम्स प्रिंसिप ने मौर्य्य बंशीय राजा अशोक के शिलालेखों को पढ़ा और उनमें पांच समकालीन यूनानी राजाओं के नाम पाए। जिन बादशाहों के नाम शिलालेखों में आए हैं वे ये हैं सीरिया (शाम) का अंतिओकस, मिश्र का टालमी (दूसरा), मेसिडोनिया का अंतिगोनस, सिरीन का मगस, और इपिरस का अलिग्जेंडर। इस प्रकार अशोक का समय २५० ई० पू० के लगभग पाया गया।

डाक्टर फलीट ने गुप्त बंशीय राजाओं का सम्बत निकाला जो उत्तरीय भारत में ३१९ ईसवी से राज्य करने लगे। इसके उपरान्त मौर्य्य और गुप्त बंशी राजाओं के बीच में पड़ने वाले और राजबंशों का पता लगाना रह गया।

यह अब अच्छी तरह प्रगट हो गया है कि ईसा से १५० वर्ष पूर्व से लेकर कुछ दिनों तक उत्तर पश्चिम भारत पर बलख़ के यूनानी राजाओं का अधिकार रहा। इन यवन राजाओं के सिक्के पेशावर से लेकर मथुरा तक मिलते हैं जिनसे उनकी पीढ़ी का बहुत ठीक क्रम बैठाया जा सकता है। इन यूनानी राजाओं के चिन्ह स्वरूप पत्थर की बहुत सी बौद्ध कारीगरियां उत्तर पश्चिमी सीमा और गांधार देश में मिलती हैं। ईसा से पूर्व की पहिली शताब्दी में पारद† (Parthian) और शक (Scythian लोगों ने इन यूनानी राजाओं को वाल्हीक देश से निकाल दिया। इसके पीछे शक जाति के

---

* देखिए मेगास्थिनीज़' के हिन्दी अनुवाद में मेरी लिखी हुई भूमिका—रा० शु०

† मेरा निश्चय है कि ये पार्थियन (Parthian) लोग ही संस्कृत ग्रंथों के "पारद" हैं। इनका उल्लेख महा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशस्न वंश का प्रताप चमका जिसके अधिकार में उत्तरीय भारत सैकड़ों वर्ष तक रहा। शिलालेखों में आज तक इस कुशन वंश के तीन राजाओं के नाम मिले थे कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव। इन शिला लेखों में सम्वत पूरा पूरा दिया है पर यह निश्चय नहीं होता कि वह कौन सा सम्वत है। कोई कहता है कि विक्रमीय सम्वत है, कोई कहता है शाका। पर यथार्थ में यह कनिष्ट ही का चलाया हुआ सम्वत जान पड़ता है।

अशोक के पीछे बौद्धधर्म्म को उन्नति देने वाला कनिष्क ही हुआ। पेशावर में जिस स्तूप के भीतर कुछ दिन हुए कि बुद्धदेव की हड्डियां मिली थीं वह इसी कनिष्क का स्थापित था। चीनी यात्रियों के लेख से इस बात का पता लगता है। इसके अतिरिक्त डिब्बे पर जो उसका चित्र खुदा मिला है उसका आसन और वेश ठीक वैसा ही है जैसा कि उसके सिक्कों पर के चित्रों का।

हुविष्क भी बौद्धधर्म्म ही पर श्रद्धा रखता था। उसने मथुरा में ठीक उसी स्थान पर जहां आज कल कचहरी है एक बौद्ध मठ बनवाया था जो उसी के नाम से प्रसिद्ध था। उसके समय में बौद्धशिल्प बहुत बढ़ा चढ़ा था। वासुदेव के काल में इस कला की अवनति आरम्भ हुई। वासुदेव के नाम से यह प्रगट होता है कि उसके समय में शक लोग अपने परम्परागत स्वदेशीय नाम आदि सब बदल कर पूरे हिन्दू हो गए थे।

कनिष्क के सब से अन्तिम शिलालेख में सम्वत १० दिया है और हुविष्क का सब से पहिले का शिलालेख सम्वत् ३३ का है। बीच में कई वर्षों का अन्तर पड़ने पर भी साधारणतः यही समझा जाता था कि कनिष्क के उपरान्त ही हुविष्क हुआ। पर अब मथुरा में एक शिला लेख मिला है जिससे इस विश्वास का खंडन हो गया। इस में 'कुशन' वंशीय एक और 'वशिष्क' नामक राजा का नाम मिला है जो अवश्य कनिष्क और हुविष्क के बीच में हुआ है क्योंकि उसके नाम के आगे सम्वत् २४ लिखा है।

इस लेख का पता मथुरा के पण्डित राधाकृष्ण को लगा है। यह १९ फुट ऊंचे एक पत्थर के खंभे पर खुदा है जो जमुना के उसपार मथुरा के सामने ईसापुर नामक गांव में मिला है। ईसापुर इस गांव का नाम मिरज़ा ईसा तरखान ने रखाया था जो शाहजहां के राजत्वकाल के प्रथम वर्ष में मथुरा का हाकिम था।

यह पत्थर का खम्भा वास्तव में एक यज्ञस्तूप था जिसे भरद्वाजगोत्री रुद्रिल नामक ब्राह्मण के पुत्र द्रोणल ने खड़ा किया था और १२ दिन यज्ञ किया था। मथुरा में आज तक जितने पुराने चिन्ह मिले हैं सब बौद्धों और जैनों के हैं। पर यह लेख वैदिकधर्म सम्बन्धी है और शुद्ध संस्कृत में लिखा है। यह शुद्ध संस्कृत के सब से प्राचीन शिलालेखों में है। भारतवर्ष में सब से प्राचीन लेख अशोक के हैं जो प्राकृत में हैं।

इस स्तम्भ को पण्डित राधाकृष्ण ने अब मथुरा म्यूज़ियम में रख दिया है जिसके कि वे आनररी असिस्टेंट क्यूरेटर हैं।

—:o:o:—

भारत में है, यथा—कैराता, दरदा दर्व्वाः शूरा वैयामकस्तथा। औदुम्बरा दुर्विभागो पारदाः सह वाल्हिकैः। मनु ने लिखा है कि ये पहिले क्षत्रिय थे जो पतित होकर म्लेच्छ हो गए, यथा शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः। वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणा दर्शनेनच॥ पौंड्रकाश्चौड्र द्रविड़ाः काम्बोजा यवनाः शकाः। पारदाः पह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः।—रा० यु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारतवासियों की समुद्रयात्रा

(गताङ्क से आगे)

ईसा से २५० वर्ष पहिले १८ बौद्ध भिक्षुक उपदेश करते हुए चीन में गए थे जहां उनका अब तक आदर होता है और उन की प्रतिमाएं बड़े बड़े मन्दिरों में रक्खी जाती हैं। कुछ लोग इस घटना का काल २१७ ई० पू० बतलाते हैं और कुछ लोगों का मत है कि बौद्ध धर्म्म ईसा से २२१ वर्ष पहिले चीन में गया। जो कुछ हो पर बौद्ध धर्म्म ने चीन में ईस्वी पहिली शताब्दी तक अच्छी उन्नति नहीं की थी। खृष्टीय पहिली शताब्दी में चीन के बादशाह के बुलाने पर भारत वर्ष से कश्यप मातङ्ग और गोभरण नामक दो विद्वान श्रमण, बौद्ध ग्रंथ और भगवान बुद्ध की प्रतिमाएं ले कर चीन में गए और बड़े उत्साह के साथ उन्हों ने धर्म्म का उपदेश और बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद करना आरम्भ किया। इसी काल में चीन धर्म में भारत वर्ष का शिष्य हुआ और दोनों देशों का सम्पर्क और भी बढ़ा।

चीन से भारतवर्ष का व्यापार।

इसके पीछे दोनों देशों में व्यापार भी बराबर बढ़ता ही गया। ईसवी पहिली और दूसरी शताब्दियों में (सन् ८९ से १०५ तक चीन के बादशाह " होती " के राजत्वकाल में तथा सन् १५९ तक दूसरे चीनी बादशाह " हिवन्ती" के राजत्वकाल में) चीनी इतिहासों में भारतवर्ष के राजाओं की ओर से दूतों का चीन की राज सभा में " कर " वा व्यापार की वस्तुएं लेकर आना लिखा है। चीन में विदेशियों के साथ जो व्यापार होता था वह बादशाह ही के द्वारा होता था इसी से उन व्यापार की वस्तुओं को चीन वाले " कर " कहा करते थे। वास्तव में ये पदार्थ किसी आधीन राजा के भेजे हुए "कर" नहीं होते थे। भारत वर्ष से इन दूतों वा राजाज्ञा प्राप्त व्यापारियों का चीन में समुद्र के मार्ग से जाना बहुत काल से चला आता था और मुगल बादशाहों के समय तक जारी था। ये दूत नामधारी लोग केवल राजाओं के परस्पर व्यवहार निबाहने, धर्म्म की चर्चा करने वा भेदनीति का कौशल दिखाने ही नहीं जाते थे बरन् बहुत सी बहुमूल्य भेंट वा व्यापार की वस्तुओं को (जिन्हें चीन वाले अपने राजा का गौरव प्रगट करने के लिए " कर " कहा करते थे) चीन की राजसभा में ले जाते थे और उन का लेन देन करते थे। चीन में विदेशी लोग इसी रूप में व्यापार करने पाते थे। चीन के इतिहासों में जो " भारतवर्ष से बहुत से राजदूतों का बराबर जाना " लिखा मिलता है उसका तात्पर्य्य समझने के लिये चीन वालों की इस व्यापार करने की प्रथा का अच्छी तरह ज्ञान सम्पादन कर लेना चाहिए। सन् १८९६ के रायल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल (पृष्ट ६४–६६) में डाक्टर हर्थ ने इस विषय की सम्यक रीति से विवेचना की है। वे कहते हैं:-"चीन में विदेशी व्यापार बहुत काल तक 'कर' के नाम से प्रसिद्ध था। इस कर के लिये जो चीनी शब्द 'कुंग' है उसका अर्थ यथार्थ में 'पैदावार वा माल का बदला' अथवा 'लेन देन' ही समझना चाहिए क्योंकि उस काल में अन्य जातियों के साथ जो व्यापार होता था वह बादशाह ही के द्वारा होता था। बादशाह तब तक किसी अन्य जाति से व्यापार नहीं करता था जब तक कि उस जाति के लोग अपनी व्यापार की वस्तुओं को अपने राजा की ओर से भेजी हुई भेंट कह कर न ले आवें। इन वस्तुओं के बदले में चीनी दरबार की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतनी ही लागत की दूसरी वस्तुएं बदले की भेंट वा इनाम के रूप में उन दूतनामधारी लोगों को दी जाती थीं। इस लेन देन से विदेशियों को अच्छा लाभ होता था, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो भारतवर्ष, फ़ारस और अरब आदि देश (जिन्हें चीन वालों ने करद देश लिखा है) के लोगों को क्या पड़ी थी कि इतनी दूर से समुद्रयात्रा का कष्ट और अपनी हेठी स्वीकार कर के अपने देश की चीज़ें ले जाते ? चीन की मित्रता से उन्हें कोई हानि लाभ तो था नहीं। अस्तु मेरा विश्वास है कि इन भेंट ले जाने वाले राजदूतों में से अधिकांश वास्तव में साधारण व्यापारी होते थे जो अपने माल को 'कर' वा भेंट के नाम से लाकर देते थे और चीनी दरबार की वस्तुओं को मोल लेते थे। चीज़ें जो इन दूतनामधारी लोगों को दरबार से बदले की 'भेंट' वा 'इनाम' के रूप में मिलती थीं उनका ब्योरा और उनकी संख्या वा मात्रा दरबारी इतिहास लेखकों ने कहीं कहीं पर लिखी है। उन चीज़ों का मूल्य यदि हम आजकल के हिसाब से लगावें तो जान पड़ेगा कि इन विदेशी दूतों वा व्यापारियों को उतना ही लाभ होता था जितना कि आजकल आधुनिक सन्धि के नियमों के अनुसार लेन देन करने में होता है। चीन का आसपास के देशों के साथ इस रीति का व्यापार बहुत प्राचीन काल से चला आता था। यह इतना बढ़ गया था कि इसके प्रबन्ध के लिये अलग कर्मचारी नियुक्त किए गए थे। चीन के पुराने कागज़ों में लिखा है कि ख़ृष्टीय सातवीं शताब्दी में "पृथ्वी की चारो दिशाओं के देशों से आने वाले इन दूतों (व्यापारियों) के साथ व्यवहार करने के निमित्त, एक एक देश के लिये अलग अलग, कर्मचारी नियुक्त थे जिनका काम इन दूतों की अभ्यर्थना के सिवाय 'माल के लेन देन' की जांच करना भी था"। इन बातों से साफ़ जान पड़ता है कि इन दूतों द्वारा लाए हुए 'कर' वा 'भेंट' का आडम्बर वास्तव में स्वयं व्यापार करने के लिये बादशाह का एक मिस वा ढंग था। किसी विदेशी के साथ गुप्तरीति से थोड़ा बहुत लेन देन करने वाले को भी बड़ा कठोर दण्ड मिलता था।

सर एमर्सन टेनेट Sir Emerson Tenett ने सीलोन वा सिंहलद्वीप पर जो प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है उसमें (जिल्द १ भाग ५--प्रकरण ३-पृष्ट ५९७में) उन्होंने भी यही बात कही है। वे लिखते हैं:-" यद्यपि चीनी इतिहासों में इन दूतों का आना आधीनता सूचक लिखा है पर जिन शब्दों में उनका उल्लेख किया गया है उनका प्रकृत अर्थ नहीं लेना चाहिए। जो वस्तुएं भेंट के नाम से गिनाई गई हैं वे यथार्थ में दोनों जातियों के व्यापारिक लेन देन की चीज़ें थीं। चूंकि ग्रंथ प्रणेता लोग व्यापार को हेच दृष्टि से देखते थे इस से वे इसकी चर्चा उड़ा ही गए।" भारतवर्ष ने बहुत प्राचीन काल में चीन से इस भेंट वा कर रूपी व्यापार को जारी किया था और बराबर बहुत दिनों तक जारी रक्खा। यहां तक कि जब तेरहवीं शताब्दी में चीन के तातारी बादशाह कुबलई खां ने अन्यदेशों से व्यापार बढ़ाना चाहा तब केवल भारत वर्ष ही के चार राज्यों ने उसके दूतों को सत्कार पूर्वक बुलाया और उसके प्रस्तावों को स्वीकार किया (Yule's Cathay and the Way thither) सीलोन वा सिंहलद्वीप ने भी जिसे भारत वर्ष ही का एक भाग समझना चाहिए, बहुत प्राचीन काल में चीन के साथ यह विलक्षण "कर" रूपी व्यापार सम्बन्ध किया। सर एमर्सन टेनेट अपनी सीलोन सम्बन्धी पुस्तक में लिखते हैं कि 'चीन के सब इतिहास इन देशों (सीलोन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चीन) के निवासियों के बीच बहुत पुराना और घनिष्ट सम्बन्ध बतलाते हैं। दोनों में देवाराधन की रीति एक ही है। दोनों देशों के राजा लोग परस्पर शिष्ट व्यवहार की वृद्धि करते आए। चीन के बादशाह लोग प्रायः अपने राजदूत सिंहलद्वीप में बुद्ध भगवान की प्रतिमाओं और उनके पवित्र चिन्हों को लेने तथा धर्म्म ग्रन्थों की प्रतियों को संग्रह करने के लिये भेजा करते थे; और सिंहल के राजा लोग भी अपने राज दूतों को धर्म्म सम्बन्धी प्रीति को दृढ़ करने और चीन के अधीश्वर को "भेंट देने," अर्थात् उस के साथ व्यापार करने को भेजा करते थे। *

मुसल्मान बादशाहों के सिक्कों में हिन्दी लिपि।

(गताङ्क से आगे)

४—सुलतान शमसुद्दीन एलतमश।

यह कुतुबुद्दीन का गुलाम था! उस के बेटे आरामशाह के पीछे बादशाह हुआ। इस के सिक्के तो ऐसे पाये गये हैं कि जिन में हिन्दी लिपि नहीं है और कई ऐसे भी मिले हैं जिनका आकार चौहानों के सिक्कों का सा है। अर्थात् एक तरफ तो वही सवार है और दूसरी तरफ वही बैल और त्रिशूल है परन्तु दोनों तरफ हिन्दी अक्षर हैं। सवार के नीचे तो 'स्री हमीर' लिखा है, बैल और त्रिशूल के नीचे 'स्री समसुदिण' है।

एक सिक्का ऐसा भी है कि उसमें भी दोनों तरफ हिन्दी है। सवार के नीचे तो 'चाहडदेव', साफ लिखा है और दूसरी तरफ 'स्री असावरी स्री समसीरलदेव' कठिनता से पढ़ा जाता है।

५—रुकनुद्दीन फीरोजशाह।

इस बादशाह का भी एक ऐसा ही सिक्का मिला है कि दोनों तरफ हिन्दी अक्षर हैं। घुड़सवार के नीचे 'स्री हमीर' और दूसरी तरफ 'सुरिता स्री रुकणदीण' है।

६—रजिया सुलताना।

यह शमशुद्दीन एलतमश की बेटी थी। इसका सिक्का भी चौहानों का सा था जिस के एक तरफ घुड़सवार था परन्तु लेख में यह अन्तर था कि सवार के नीचे तो हिन्दी में 'स्री हमीर' लिखा था और दूसरी तरफ अरबी में उसका 'अलसुलतान उल-आलम रजियब उलदुनयाबलदीन'।

इसका सिक्का ऐसा भी है जिस पर एक तरफ अरबी में 'रजिया' और हिन्दी में 'स्री समन्त देव' लिखा है।

७—मुअज्जुद्दीन बहरामशाह।

इस के एक सिक्के में एक ओर बैल और झूले का चित्र और दूसरी तरफ 'स्री मुअज'।

८—अलाउद्दीन मसऊदशाह।

इस के ऐसे भी सिक्के मिले हैं जिनके दोनों ही तरफ हिन्दी लेख हैं। एक में तो एक तरफ बैल और झूले का चित्र और 'सुरताण स्री अलावदिण' है और दूसरी तरफ चौहान घुड़सवार के नीचे 'स्री हमीर' लिखा है और दूसरे में बैल की तरफ तो 'स्त्री अलावती सुरिताण' और दूसरी तरफ 'स्री खलीफ'* है।

९—नासिरुद्दीन महमूदशाह।

यह सब से पिछला बादशाह शमसुद्दीन एलतमश की सन्तान में से था। इस के सिक्के में भी एक तरफ हिन्दी में 'स्री हमीर' था और दूसरी तरफ हिन्दी में इसका नाम था।

* 'Dawn magazine' में प्रकाशित श्रीहाराणचन्द्र चकलेदार के लेख से अनुवादित।

* खलीफा बगदाद या मिश्रदेश का बादशाह जो मुसलमानों में पूज्य समझा जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०—गयासुद्दीन बलवन ।

यह शमसुद्दीन का गुलाम और जमाई था, नासिरुद्दीन महमूद के पीछे बादशाह हुआ। इस के सिक्कों पर भी एक तरफ हिन्दी अक्षरों में इसका नाम 'स्त्री सुलतां गयासुदी' दर्ज होता था।

११—मुइज्जुद्दीन कैकुबाद ।

यह गयासुद्दीन बलवन का पोता था। इस के सिक्कों पर भी एक तरफ हिन्दी में इसका नाम 'स्त्री सुलतां मु'जुदीं' होता था।

१२जलालुद्दीन फीरोज खिलजी ।

इस के सिक्कों पर भी एक तर्फ इसका नाम हिन्दी में 'स्त्री सुलतां जलालुदी' लिखा जाता था।

१३—गयासुद्दीन तुगलकशाह ।

इस के सिक्कों पर हिन्दी में इसका नाम लिखा जाता था। एक सिक्के में जो सन् ७२० † (हिजरी) का है 'स्त्री सुलतां गयासुदो' साफ पढ़ा जाता है।

इस तरह बादशाहों के पीछे फिर किसी बादशाह के सिक्के में हिन्दी अक्षर नहीं हैं। बादशाही सिक्कों की जो आकृति सुलतान मुअज्जुद्दीन गोरी के समय से चली आती थी तुगलकों के राज्य में विलकुल बदल दी गई थी और उनमेंसे हिन्दी लिपि निकाल बाहर की गई थी। शायद पहिले पहिल सिक्कों का चलन केवल मुसलमानी ढङ्ग से कम और कठिनता पूर्वक होता होगा इसी लिये हिन्दुओं की सी आकृति रक्खी गयी थी और जब राज्य अच्छी तरह से जम गया और लोग पूरे २ आधीन हो गये तो फिर उसकी आवश्यकता नहीं रही। अंग्रेजों ने भी ऐसा ही किया कि पहिले कम्पनी का सिक्का शाह आलम बादशाह के नाम से चलाया। जब वह अच्छी तरह से चल निकला तो फिर वैसी ही आकृति का सिक्का अपने बादशाह के नाम का चला दिया।

तुगलकों के पीछे लोधियों और मुगलों के सिक्कों में भी हिन्दी नहीं देखी जाती है परन्तु हुमायूं के पीछे जब शेरशाह ने अपना सिक्का चलाया तो हिन्दी को भी स्मरण किया। उसके और उसके बेटे इस्लाम शाह को सिक्कों पर दोनों बाप बेटों के नाम हिन्दी में 'स्त्री सेरसाह' और 'स्त्री इस्लाम साह' लिखे मिलते हैं।

* यह * 'इ' का प्राचीन रूप है।

† सम्वत १३७७।

हिन्दी हस्त-लिखित पुस्तकों की खोज विषयक जून मास की रिपोर्ट ।

इस मास में सभा के ट्रैवेलिंग एजेण्टने आज़मगढ़, निजामाबाद, और अयोध्या में भ्रमण किया कुल १०५ पुस्तकों की जांच हुई जिन में से २४ की नोटिसें पहले ली जा चुकी हैं। शेष ८१ किताबों की नोटिस इस बार ली गई। यह कार्य्य १४ दिन में हुवा और शेष दिन पुस्तकों के खोज लगाने में व्यतीत हुए।

जिन पुस्तकों के नोटिस लिए गए उनमें अधिकांश महन्त युगुलानन्य शरण, अयोध्यानिवासी की रची हुई हैं अयोध्या में यह एक अच्छे महात्मा हो गए हैं।

आज़मगढ़ में "राजा हरिश्चन्द्र की कथा" नामक एक पुस्तक मिली है जिसे पं० जगन्नाथ मिश्र ने बनाया था। यह महाशय अकबर बादशाह के "नवरत्नों" में से एक थे। उसी स्थान में एक महाशय के यहां बाण विद्या पर एक अत्यन्त प्राचीन हिन्दी ग्रन्थ का पता चला है पर उक्त महाशय ने अब तक उसे दिखाया भी नहीं! खेद की बात है कि ऐसी उत्तम पुस्तकें कभी कभी योंही लुप्त हो जाती हैं!! भला नासमझी का कोई ठिकाना है!!! अस्तु, उक्त पुस्तक कोई ९०० वर्ष की लिखी अथवा बनी हुई है और चन्द कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रासो से भी अधिक प्राचीन है । इस की नोटिस और प्रतिलिपि होना अत्यन्त आवश्यक है और मैं इस के प्राप्त करने का पूर्ण प्रयत्न कर रहा हूं । ऐसी किसी भी पुस्तक का खोज अब तक नहीं लगा था ।

श्यामबिहारी मिश्र
आनरेरी सुपरिण्टेण्डेण्ट ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ जून १९१० सन्ध्या के ६ बजे स्थान-सभाभवन ।

(१) गत अधिवेशन (ता० २८ मई १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) प्रबन्धकारिणी सभा के ता० २६, २८ और ३० अप्रैल तथा १ मई के कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(३) निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए :--(१) बाबू भगवान दास-अध्यक्ष-भारत हिन्दू होटल-रेलवेरोड-हरद्वार १॥) (२) बा० बसन्तलाल खण्डेलवाल C/o बा० बांके लाल स्टाम्पवेलर नं० ७१ बड़तला स्ट्रीट कलकत्ता १॥) (३) बा० लक्ष्मी नारायण, लक्ष्मी नारायण यंत्रालय, मुरादाबाद ३) (४) पं० मथुरानाथ शर्मा पाराशर C/o राय कृष्णदास जी काशी १॥) (५) बा० बांकेलाल वकील जौनपुर ३) (६) बा० वैष्णवदास बगाई-महल्ला सेवादास पेशावर सिटी ३) (७) बा० शिवदत्त सिंह धिंगड़ा-कचौड़ी गली काशी ५) (८) राय कृष्ण जी-फाटक रंगील-दास-काशी ५) (९) बा० गंगाप्रसाद गुप्त-दूकान शिवनन्दन प्रसाद माता प्रसाद काशी ३) (१०) बा० रामप्रताप लाटा-टीनखांग आसाम ३)

(४) सभासद होने के लिये पांच महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(५) मंत्री ने निम्नलिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी:—(१) बा० शशुनचन्द्र श्रीवास्तव-काशी (२) पं० देवी दत्त शर्म्मा-मंत्री-कविमंडल-बिसवां जिला सीतापुर । इस पर सभाने शोक प्रगट किया ।

(६) निम्नलिखित सभासदों का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ:-(१) पण्डित सखाराम भण्डारी-बंगालीटोला-काशी (२) पण्डित प्यारेलाल गोस्वामी-ज्ञानवापी-काशी ।

(७) पण्डित केदारनाथ पाठक का ६ जून का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और साथ ही उनका २५ जूनका पत्र उपस्थित हुआ जिसमें उन्होंने यह इस्तीफा लौटाए जाने की प्रार्थना की थी ।

निश्चय हुआ कि उनका इस्तीफ़ा लौटा दिया जाय ।

(८) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं:-(१) मंदराजकी गवर्नमेण्ट-A descriptive catalogue of the Sanskrit Mss in the Government Oriental Manuscripts Library Madras Vol VII. सर्वसिद्धांत संग्रह । (२) बाबू राम सहाय लाल सौदागर, कचहरी रोड़, गया-विनय पचासा, दीर्घजीवन, श्री राम नाम माहात्म चालीसा (३) पं० शिवरत्न शुक्ल, बछरावां, राय बरेली-प्रभुचरित्र (४) बाबू जगन्नाथ प्रसाद असिस्टेण्ट सेटिलमेण्ट आफिसर, बिलासपुर-काव्यप्रभाकर (५) बा० माणक चन्द पानाचन्द जौहरी बम्बई नं० ४-नर्क दुःख चित्रादर्श (६) श्रीयुत प्रबन्धक, भारतवर्षीय जैन शिक्षा प्रचारक समिति, जयपुर-Annual Report of the Jain Educational Society of India, Jaipur for 1909. (७) श्रीमत परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी रामकृष्णानन्द गिरि, प्रयाग-नरसिंह चम्पू ४ प्रति (८) बा० बद्रीनारायण सिंह, शिक्षक मुंगेर ट्रेनिंग एकडमी, मुंगेर-भाषा दिवाकर (९) संयुक्त प्रदेशकी गवर्नमेण्ट-District Gazetteer of Cawnpur. (१०) Indian Antiquary for June 1910 (११) परिवर्तन में प्राप्त-शुभ चिन्तक, पंच महायज्ञ विधि, नीतिसार, सनातन धर्म प्रकाश, द्वितीय पुस्तक ।

(९) निश्चय हुआ कि सभा को अपने स्थायी सभासद एवं ट्रस्टी राजा माधवलाल साहब को राजा की पदवी मिलने से बड़ा हर्ष हुआ है । राजा माधव लाल साहब को इसके लिये बधाई दी जाय ।

(१०) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गौरीशंकर प्रसाद, मंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध कारिणी समिति ।

शनिवार ता० १६ जूलाई १९१०–सन्ध्या के छ बजे।

स्थान--सभाभवन

उपस्थित

बाबू गोविन्ददास--सभापति । बाबू जुगलकिशोर । बाबू गौरी शंकर प्रसाद । पण्डित कृष्णाराम मेहता । पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा

(१) गत अधिवेशन (तारीख २ जूलाई १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) म्युनिसिपल बोर्ड के सेक्रेटरी का १५ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने श्रीमान् सम्राट सप्तम एडवर्ड के स्मारक सम्बन्धी पब्लिक मीटिंग के लिये ता० १८ जूलाई के लिये सभा की बेंचें मंगनी मांगी थीं ।

निश्चय हुआ कि उन्हें इसके लिये सभा की बेंचें दी जांय ।

(३) बाबू शिवप्रसाद गुप्त के आषाढ़ शुक्ल ८ के पत्र उपस्थित किए गए जिन में उन्होंने लिखा था कि सभा उन्हें अग्रवाल स्पोर्टस क्लब के अधिवेशन सभाभवन में हर रविवार को करने की आज्ञा दे और इसके लिये उनसे कुछ मासिक द्रव्य लिया करे ।

निश्चय हुआ कि उन्हें हर रविवार को क्लब के अधिवेशन सभाभवन में करने की आज्ञा दी जाय पर इसके लिये सभा का हाल देना आवश्यक नहीं है । इसके लिये उनसे २) रु० मासिक लिया जाय और रोशनी आदि का प्रबन्ध वे स्वयं करें ।

(४) बाबू भगवती प्रसाद सिंह का ८ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पुस्तकाध्यक्ष के पद के लिये वे १००) की जमानत नहीं दे सकते ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार नहीं किया जा सकता

(५) ललिता पारितोषिक के लिये आए हुए पत्र उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्न लिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय अर्थात् बाबू बाल मुकुन्द वर्म्मा, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल एल० बी० और पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एल एल० बी० ।

(६) सभा के मंत्री के नाम संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का १५ जूलाई १९१० का पत्र नं० जी / १९६४ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि एंगलो वर्नाक्युलर तथा वर्नाक्युलर स्कूलों के मिडिल विभाग में कैसी पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता है, इस विषय पर विचार करने के लिये गवर्मेंट ने एक विशेष कमेटी नियत की है और पूछा था कि क्या सभा के मंत्री इस कमेटी का मेम्बर होना स्वीकार करेंगे

निश्चय हुआ कि इसके लिये मंत्री की ओर से स्वीकारपत्र भेजा जाय ।

(७) निश्चय हुआ कि पण्डित देवीदत्त मिश्र १०) रु० मासिक वेतन पर पुस्तकाध्यक्ष के पद पर नियत किए जांय और उनसे ५०) की जमानत ली जाय ।

(८) हिन्दी कोश सम्बन्धी कार्य्यों के विषय में बाबू श्याम सुन्दर दास की जून १९१० की रिपोर्ट सूचनार्थ पढ़ी गई ।

(९) बाबू श्यामलाल के ३१ मई और ११ जून के पत्र उपस्थित किए गए जिन में उन्होंने लिखा था कि पुस्तकालय की नई सूची के तय्यार होने के लिये सभा एक अवधि नियत कर दे ।

निश्चय हुआ कि यह सूची ३० जून १९११ तक बन जानी चाहिये ।

(१०) बाबू बाल मुकुन्द वर्म्मा के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ की पोस्ट मास्टर जनरल को एक पत्र लिखा जाय कि बनारससिटी पोस्ट आफ़िस के प्रत्येक विभाग का साइनबोर्ड नागरी अक्षरों में भी रहे ।

(११) हिन्दी पुस्तकों के खोज के निरीक्षक की जून १९१० की मासिक रिपोर्ट उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि यह नागरीप्रचारिणीपत्रिका में प्रकाशित की जाय ।

(१२) सभा की सन् १९०९--१० की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी गई और आवश्यक संशोधन के उपरान्त स्वीकृत हुई

(१३) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गौरीशंकर प्रसाद मंत्री ।

—:0:0:—

110771
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० ३० जुलाई १९१० सन्ध्या के छ बजे

स्थान—सभाभवन ।

(१) बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद के प्रस्ताव तथा बाबू बेणीप्रसाद के अनुमोदन पर बाबू जुगल किशोर सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २५ जून १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्ध कारिणी सभा का ता० ६ जून का कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

(४) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए।
(१) बाबू केदार नाथ खन्ना, नेपाली खपड़ा, काशी १।।) (२) पण्डित जगन्नाथ मेहता, १८ जतनवर काशी ५) (३) साधु कामता दास जी, हनुमन्त निवास, अयोध्या १।।) (४) पण्डित गोविन्द आत्माराम धवले तहसीलदार आज़मगढ़ ३) (५) बाबू टेक चन्द ७७ सूतापट्टी कलकत्ता ५)

(५) सभासद होने के लिये ६ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए :-(१) पण्डित समहुत राम तिवारी सोनाडी पो० कोरस्टा डोह जिला सिहलट (२) बाबू हरबख्श भंडारा गली अजमेर ।

(७) बाबू जमुना दास बुलानाला काशी का इस्तीफा उपस्थित किया गया पर बाबू जुगल किशोर ने सूचना दी कि उन्होंने अपना इस्तीफा लौटाने की इच्छा प्रगट की है ।

निश्चय हुआ कि यह इस्तीफ़ा लौटा दिया जाय ।

(८) मंत्री ने निम्न लिखित सभा सदों की मृत्यु की सूचना दी ;-(१) बाबू दुर्गादास सत्री-कुलू जि० कांगड़ा (२) महन्त राम प्रपन्न रामानुज दास, राजीव लोचन जी का मन्दिर अयोध्या ।

सभा ने इस पर शोक प्रगट किया ।

(९) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं :-(१) बाबू गोपाल लाल खत्री चौक लखनऊ-अनुचित विवाह । (२) पण्डित गणेश प्रसाद शर्मा सम्पादक, भारत सुदशा प्रवर्तक फर्रुखाबाद-नाम करण (३) बाबू रामरत्न लाल डिप्टी कलेक्टर जौनपुर,-भारतभूषण १ प्रति, हनुमत चरित २ प्रति (४) श्रीयुत मेनेजर, बिहार एज्युल प्रेस एण्ड स्टोर्स, भागलपुर-सच्चा सुधार (५) ठाकुर हनुमन्त सिंह, राजपूत एङ्गलो ओरियण्टल प्रेस आगरा-वीर बालक अभिमन्यु, माता का पुत्री को उपदेश, जीवन सुधार, गृहस्थ चरित्र और सती चरित्र नाटक । (६) स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण श्री गुरुराम जी पुस्तकालय, गोंड़ा-हमें क्या चाहिए, शृङ्गार चन्द्रिका, चन्द्रकला काव्य, यन्त्रों की कुञ्जी और सरयू अष्टक (७) राय बहादुर बाबू हीरालाल बी०ए० बेतुल-Kuruspal stone inscription of *S*omesvaradeva. (८) एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल कलकत्ता-Journal and Proceedings Vol. V. Nos. 8, 9, 10 and 1I, Index and title page of Vol. IV. of the Journal, Memoirs of the Asiatic Society of Bengal Vol. II Nos. 10 and 11 (९) Indian Antiquary for July 1910, Index to Vol XXXVIII of the Indian Antiquary. (१०) खरीदी गई तथा परिवर्तन में प्राप्त-विकट बदमौवल, दो नकाब पोश एवं भाग, दो खून, देवी या दानवी, वीर वारांगना, नई नवेली, दो जोरू का शौहर, विचित्र खून, चन्द्रशाला, स्त्रीदर्पण, व्यावहारिक संस्कृत प्रबोध, खान खाना नामा, रामायण सार, रोजगार, कुञ्ज विलास, आरोग्य दर्पण ५ वां भाग और कुन्दनन्दिनी ।

(१०) प्रबन्ध कारिणी समिति का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि बाबू मोतीचन्द, राव गोपाल दास और पण्डित कृष्णराम मेहता इस सभा के बोर्ड आफ ट्रष्टीज के सभासद चुने जांय । सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

(११) सभा पति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशङ्कर प्रसाद

मंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक अधिवेशन ।

सोमवार ता० १ अगस्त १९१० सन्ध्या के छ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू जुगल किशोर, सभापति, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल एल० बी०, बाबू शिव प्रसाद गुप्त, बाबू बेणी प्रसाद, पण्डित केशव देव शास्त्री, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, पण्डित कृष्ण राव पावगी, पण्डित सिद्धेश्वर शर्म्मा, पण्डित गंगाराम सारस्वत, बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा, बाबू भागवत प्रसाद, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बाबू शिवदत्त सिंह धिंगड़ा, बाबू गंगा प्रसाद अरोड़ा, बाबू माधव प्रसाद मारवाड़ी, गोपाल दास ।

पंडित सोमेश्वर दत्त शुक्ल सीताराम, पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए० छत्रपुर, बाबू स्वरूप लाल नन्हौरिया, जबलपुर, पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, अजमेर, बाबू बंशीधर अग्रवाल कलकत्ता, बाबू गन्धर्व सिंह, फर्रुखाबाद, पण्डित राधे लाल देहरादून, पण्डित राम कृपाल पांडेय, डालटैनगंज, बाबू युगल किशोर अखौरी बी०ए०बी० एल० डालटैनगंज ठाकुर नग सिंह जी मालवा, आसूरि अनन्ताचार्य्य बेङ्गलूर, भाष्य रामाचार्य्य बेङ्गलूर, पण्डित चन्द्रशेखरधर मिश्र, चम्पारन (प्रतिनिधि बाबू गौरीशंकर प्रसाद)।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० काश्मीर, महाराज कुमार बाबू कृष्ण प्रसाद सिंह जि० गोरखपुर, राय पूरन चन्द्र पटना, (प्रतिनिधि बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा)।

श्रीयुत एच० हर सुखदेव राजपुत कोहिमा आसाम (प्रतिनिधि गोपाल दास)।

(१) बाबू शिवप्रसाद गुप्त के प्रस्ताव तथा बाबू बेणीप्रसाद के अनुमोदन पर बाबू जुगल किशोर सभापति चुने गए।

(२) पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणीसमिति के सभासदों के चुनाव के लिये उपस्थित सभासदों में निर्वाचन पत्र बांटे गए और उनका परिणाम देखने के लिये सभापति ने पण्डित केशव देव शास्त्री और पंडित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा को नियत किया।

(३) मन्त्री ने सभा की सत्रहवें वर्ष की रिपोर्ट पढ़ी।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने प्रस्ताव किया कि इस रिपोर्ट के पृष्ट ५२ में जो अच्छी पुस्तकों की नामावली दी गई है उसमें यह स्पष्ट कर दिया जाय कि यह नामावली केवल उन्हीं पुस्तकों में से दी गई है जो इस वर्ष सभा में आईं और इसके उपरान्त यह रिपोर्ट स्वीकार की जाय। बाबू बेणीप्रसाद ने इसका अनुमोदन किया और यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(४) निर्वाचन पत्रों का निम्न लिखित परिणाम सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

सभापति—महामहोपाध्याय पण्डित आदित्य राम भट्टाचार्य्य, प्रयाग।

उपसभापति—बाबू गोविन्द दास, काशी। बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०, काश्मीर।

मन्त्री—बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एलएल० बी०

उपमन्त्री—पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा।

प्रबन्धकारिणीसमिति के अन्य सभासद-संयुक्त प्रदेश से-आनरेबुल राजा रामपाल सिंह, कुर्री, सुदौली। पंडित माधव प्रसाद पाठक, मांडा जि० इलाहाबाद। बंगाल से-पंडित सखाराम गणेश देउस्कर, कलकत्ता। बिहार से-बाबू युगल किशोर अखौरी बी० ए० बी० एल० डालटैनगंज। मध्य प्रदेश और बरार से-बाबू हीरालाल बी०ए०, नागपुर। मध्यभारत से-पंडित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए० छत्रपुर। राजपुताने से-कुंअर फतह लाल मेहता, उदयपुर। पंजाब से बाबू श्यामसुन्दर दास बी०ए० काश्मीर। बम्बई से प्रोफेसर टी० के गज्जर एम० ए० बी० एस सी०, एफ० टी० एस०, बम्बई। काशी से महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी, राय शिवप्रसाद, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, पंडित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू जुगल किशोर, बाबू बेणी प्रसाद, पंडित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एल० एल० बी०, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, पंडित केशवदेव शास्त्री, गोस्वामी रामपुरी, बाबू बलभद्र दास बी० ए० एल एल० बी०, राय गोपाल दास।

मंत्रीने सन् १९०९-१० के आय व्यय का हिसाब तथा आगामी वर्ष के लिये निम्न लिखित बजेट उपस्थित किया:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय का व्योरा	सन् १९०९-१० की वास्तविकआय			सन् १९१०-११ के लिये वजेट		
गत वर्ष की बचत	५११९	९	७½	५७८७	१२	१०½
सभासदों का चन्दा	१८०८	४	३	२०००	०	०
पुस्तकों का विक्री	१०५३	०	३	१०००	०	०
गवर्न्मेंण्ट की सहायता	८००	०	०	८००	०	०
पृथ्वीराजरासो की विक्री	६६४	६	०	१२००	०	०
स्थायी कोश	१३	०	०	५०	०	०
नागरी प्रचार	१६	९	९	२०	०	०
फुटकर	८१	७	०	५०	०	०
राजा साहब भिनगा की सहायता	५०	०	०	७००	०	०
पारितोषिक	०	०	०	९०	०	०
पुस्तकालय	५५१	३	९	६००	०	०
राधाकृष्णदास स्मारक	०	०	०	५०	०	०
हिन्दी भाषा का कोश	५३६१	१	७	१००००	०	०
व्याज	१	६	०	०	०	०
हिन्दी साहित्यसम्मेलन	३४	९	०	९६५	७	०
जोड़	१५५५४	९	२½	२३३१३	३	१०½

व्यय का व्योरा	सन १९०९-१० का वास्तविक व्यय			सन् १९१०-११ के लिये बजेट		
आफिस के कार्य्यकर्ताओं का वेतन	८२५	५	७½	८२५	०	०
छपाई	९३२	१०	१०	३०५०	०	०
पारितोषिक	१५५	०	०	१९५	०	०
पुस्तकालय	४२७	७	०	५२५	०	०
पृथ्वीराज रासो	६८९	११	३	१२००	०	०
स्थायी कोश	३३०	०	०	४५०	०	०
हिन्दी पुस्तकों की खोज	६३७	१४	०	५००	०	
नागरी प्रचार	१९६	११	३	२७२	०	
डाक व्यय	२९५	३	६	३००	०	
पुस्तकोंकेलियेपुरस्कार	०	०	०	३५०	०	
फुटकर व्यय	२९६	१२	४	३००	०	
मरम्मत	३	९	९	२५	०	
हिन्दी भाषा का कोश	४९३१	१२	२½	१६४५८	९	
व्याज	३२	८	४	१००	०	
साहित्य सम्मेलन	१२	२	३	९८७	१३	
साहित्य सम्मेलन में सभा की सहायता	०	०	०	५०	०	
बनारस बंक का चलते खाते में देना	०	०	०	७८१	१२	½
राधाकृष्णदास स्मारक	०	०	०	१८२	४	०
देना				६०००	०	०
जोड़	९७६६	१२	४	३२५५२	७	१

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।(६) नवीन नियमों के अनुसार प्रथम, द्वितीय, और तृतीय वर्षों के अन्त में प्रवन्धकारिणी समिति के कौन सभासद् स्थान त्याग करेंगे. इस के लिये गोटी डाली गई जिसका परिणाम इस प्रकार हुआ:-प्रथम वर्ष। पण्डित श्याम विहारी मिश्र पण्डित माधव प्रसाद पाठक, कुंवर फतह लाल मेहता, बाबू बाल मुकुन्द वर्म्मा, बाबू बेणी प्रसाद, बाबू बलभद्र दास, पण्डित केशव देव शास्त्री। द्वितीय वर्ष। बाबू हीरालाल प्रोफेसर टी० के गज्जर आनरेबुल राजारामपाल सिंह बाबू शिवप्रसाद, गुप्त, पण्डित कृष्णाराम मेहता, बाबू जुगल किशोर, गोस्वामी रामपुरी। तृतीय वर्ष। पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर, बाबू युगल किशोर अखौरी बाबू श्यामसुन्दर दास, महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, राय शिवप्रसाद, पण्डित रामनारायण मिश्र, राव गोपाल दास, (७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

भारत प्रेस, काशी में बाबू माधव प्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | १५ सितम्बर १९१०। | संख्या ३

सूचना और सम्मति।

पञ्जाब की हिन्दू सभा ने भारत वर्ष के हिन्दू समय का एक सच्चा और क्रमबद्ध इतिहास हिन्दी भाषा में तैयार कराने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की एक सब कमेटी बनाई है :--

(१) लाला लालचन्द एम० ए०
(२) मास्टर दुर्गा प्रसाद
(३) कपूर्थला के दीवान हरीचन्द
(४) भगत ईश्वरदास एम० ए०
(५) लाला शिवदयाल एम० ए०
(६) लाला हंसराज बी० ए०

इस सब-कमेटी के ३ जूलाई के अधिवेशन में निश्चित हुआ कि जो जो सामग्रियां इस समय प्रस्तुत हैं उनसे हिन्दू समाज का एक इतिहास हिन्दी भाषा में लिखा जाय, इसके लिये कोई योग्य लेखक नियुक्त किया जाय और सर्वसाधारण से आर्थिक सहायता के लिये अपील की जाय।

उक्त निश्चय के अनुसार लाला लालचन्द ने इस कार्य्य के लिये सर्वसाधारण से सहायता पाने के निमित्त प्रार्थना पत्र निकाला है जिसका सारांश यह है :--

हिन्दुओं में इतिहास का अभाव बहुत ही बुरा है। साहित्य, दर्शन, तथा धर्म्म सम्बन्धी ग्रन्थ तो भरे पड़े हैं पर इतिहास की ओर या तो ध्यान ही नहीं दिया गया अथवा लिखे लिखाए वृत्त नष्ट हो गए। यूरोपियन विद्वानों ने छानबीन कर बहुत सी बातों का पता लगाया जिनके लिये हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। पर विदेशीय लोगों के लिये दूसरे समाज की जीवनगति और क्रमविकाश के तत्व को समझना कठिन ही होता है। अतः किसी समाज के पूर्व जीवन को अङ्कित करनेवाला कोई उस समाज ही का होना चाहिए। यह काम यद्यपि छोटा ही है तौ भी इसमें दस हज़ार रुपए से कम न बैठेंगे। पञ्जाब हिन्दू सभा की गत अधिवेशन की १०००) की बचत इसी कार्य्य में लगा दी जायगी। किन्तु इतने से तो साल भर का भी खर्च न चलेगा। पुस्तकें मोल लेनी होंगी, स्थान स्थान पर जा कर कुछ अन्वेषण भी करना होगा, कई वर्ष लिखने में लगेंगे। ये सब बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना रुपए के कैसे हो सकती हैं? अतः आशा है कि सर्वसाधारण से इस कार्य्य में पूरी सहायता मिलेगी। छोटी से छोटी रक़म भी धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जायगी। दूसरे पत्र में इस इतिहास को लिखने के लिये एक सुयोग्य लेखक की आवश्यकता सूचित की गई है और साथ ही यह भी प्रार्थना की गई है कि पुस्तक की रचना तथा ऐतिहासिक सामग्रियों की उपलब्धि आदि के विषय में भी विज्ञजन अपनी सम्मतियां भेज कर अनुगृहीत करें। चन्दा वा चिट्ठी पत्री, लाला लालचन्द एम० ए० एडवोकेट, लाहौर, अथवा लाला गोपालचन्द, सेक्रेटरी पञ्जाब-हिन्दू-सभा, लाहौर के पते से आनी चाहिए।

उपन्यास।

आज कल उपन्यास लिखने में बहुत लोगों की धड़क खुल गई है। इनमें यदि थोड़े ऐसे हैं जिन्हें अपनी कल्पना और अनुभव का सहारा है तो बहुत से ऐसे भी हैं जिनका अन्य भाषाओं की अविख्यात पुस्तकों ही पर गुज़ारा है। उपन्यास साहित्य का एक प्रधान अङ्ग है। मानव प्रवृत्ति पर इसका प्रभाव बहुत पड़ता है। अतः अच्छे उपन्यासों से भाषा की बहुत कुछ पूर्त्ति और समाज का बहुत कुछ कल्याण हो सकता है।

मानव जीवन के अनेक रूपों का परिचय कराना उपन्यास का काम है। यह उन सूक्ष्म से सूक्ष्म घटनाओं को प्रत्यक्ष करने का यत्न करता है जिन से मनुष्य का जीवन बनता है और जो इतिहास आदि की पहुंच के बाहर हैं। बहुत लोग उपन्यास का आधार शुद्ध कल्पना बतलाते हैं। पर उत्कृष्ट उपन्यासों का आधार अनुमान शक्ति है न कि केवल कल्पना। तोता मैना का क़िस्सा और तिलस्म ऐयारी की कहानियाँ निस्सन्देह कल्पना की क्रीड़ा हैं और असत्य हैं, पर स्वर्णलता, दुर्गेश नन्दिनी, बङ्गविजेता, जीवन सन्ध्या, बड़ा भाई आदि के ढंग के गार्हस्थ और ऐतिहासिक उपन्यास अनुमान-मूलक और सत्य हैं। उच्च श्रेणी के उपन्यासों में वर्णित छोटी छोटी घटनाओं पर यदि विचार किया जाय तो जान पड़ेगा कि वे यथार्थ में सृष्टि के असंख्य और अपरिमित व्यापारों से छाँटे हुए नमूने हैं।

संसार में मनुष्य जीवन सम्बन्धी बहुत सी ऐसी ऐसी बातें नित्य होती रहती हैं जिनका इतिहास लेखा नहीं रख सकता पर जो बड़े महत्व की होती हैं। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन इन्हीं छोटी छोटी घटनाओं का जोड़ है। पर बड़े से बड़े इतिहास और बड़े से बड़े जीवन चरित्र में भी इन घटनाओं का समावेश नहीं हो सकता। जब इन सूक्ष्म घटनाओं के संयोग से कोई उग्र घटना उभड़ पड़ती है तब जा कर इतिहास की दृष्टि उस पर पड़ती है। अपनी असंख्यता और क्षिप्रगति के कारण ऐतिहासिक प्रमाणों की पकड़ में न आनेवाली इन घटनाओं के निदर्शन के निमित्त मनुष्य की अनुमान शक्ति उठ खड़ी होती है जो अनेक व्यापारों के अभ्यास से वैसे ही किसी एक व्यापार का आरोपण कर सकती है। इस शक्ति को रखने वाले उच्च कोटि के उपन्यास लेखक जिन जिन बातों का उल्लेख अपनी कथाओं में करते हैं वे सब ऐसी ही होती हैं जो संसार में बराबर होती रहती हैं और समाज की परिचित गति के अन्तर्भूत होती हैं। जब कि इन घटनाओं का आरोप करने में सृष्टि के व्यापारों के निरीक्षण करने की अपेक्षा हुई तब वे बिलकुल कल्पना मूलक कैसे कही जा सकती हैं? उनका आधार सत्य पर है, उन्हें असत्य नहीं समझना चाहिए।

ऐतिहासिक आख्यानों के वर्णन करने में भी कवि लोग इस अनुमान का सहारा लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन छोटे छोटे अंगों को इतिहास छलांग मारता हुआ छोड़ जाता है कवि अपने सत्यमूलक अनुमान के बल पर उनकी एक एक लड़ी जोड़ कर जीवन का एक चित्र पूरा करके खड़ा करता है। धनुषभंग होने पर परशुराम का राम और लक्ष्मण पर क्रोध करना इतिहास की बात है पर परशुराम और लक्ष्मण के बीच जो जो बातें हुईं वह कवि का अनुमान है। कवि ने लक्ष्मण और परशुराम के स्वभाव तथा अवसर की ओर ध्यान दे कर अनुमान किया कि उनके बीच ये या इसी तरह की बातें अवश्य हुई होंगी। कैकेयी का कोप-भवन में जाना तो इतिहास ने बतलाया पर उसने जो चुटीली बातें राजा दशरथ को कहीं उन्हें भिन्न भिन्न कवियों ने अपने अनुमान के अनुसार जोड़ा है। इन छोटी छोटी बातों के समावेश के कारण कोई ऐतिहासिक काव्य वा आख्यान असत्यमूलक नहीं कहा जा सकता। बिना इन बातों का जोड़ लगाए ऐतिहासिक वृत्त स्वाभाविक मानव व्यापार समक्ष ही नहीं पड़ते। ऐतिहासिक उपन्यासों के बीच जो पात्र और व्यापार ऊपर से लाए जाते हैं और कल्पित कहे जाते हैं यदि वे उस समय की सामाजिक स्थिति के सर्वथा अनुकूल हों तो उन्हें ठीक मान लेना कोई बड़ी भारी भूल नहीं है। क्योंकि उनके अनुमान करने का साधन तो हमारे पास है पर खंडन करने का एक भी नहीं। यदि कोई अनुभवी लेखक महाराणा प्रतापसिंह वा शिवाजी की असंख्य सेना में से किसी सैनिक को चुन कर उसका साहस तथा किसी रमणी पर प्रेम तथा उसका गार्हस्थ जीवन आदि दिखलावे तो हमें इन बातों को अघटित और असत्य मानने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि हमें तो उस समय का सामाजिक चित्र देखना है न कि किसी व्यक्ति के विषय में छानबीन करना। इसी प्रकार किसी इतिहास-प्रसिद्ध घटना के ऐसे अंगों का वर्णन करना भी उपन्यास लेखक का काम है जिन पर इतिहास ने ध्यान नहीं दिया। यदि हल्दी घाटी की लड़ाई का दृश्य दिखाने में लिखा जाय कि 'रामसिंह ने भाला मारा, गाज़ी खां की पगड़ी गिरी, राजपूतों को महाराणा ने यह कह कर बढ़ावा दिया, अमुक भील ने पत्थर लुढ़काया', तो इन अनुमानित व्यापारों को उस लड़ाई के अन्तर्गत मानने में कोई बाधा नहीं है। ऐसे ही व्यापार की प्रायिक वा साधारण (General) सूचना पाकर उपन्यासकर्त्ता विशेष उदाहरण का अनुमान भी कर सकता है। जैसे औरंगजेब के लिये हिन्दुओं को सताना और उनके मन्दिर तोड़ना साधारण बात प्रसिद्ध है। अतः यदि उस समय की कहानी लिखते हुए कोई किसी बस्ती में एक विशेष नाम का मन्दिर अनुमान करके उसका तोड़ा जाना दिखलावे तथा किसी अनुमानित व्यक्ति विशेष की पीठ पर काज़ी के कट्टरपन के कारण कोड़े पड़ने की बात सुनावे तो वह मिथ्या-भाषण का दोषी नहीं।

इतिहास कभी उन बहुत से सूक्ष्म व्यापारों के लिए जिनसे जीवन का तार बंधा है एक सांकेतिक (Symbolic) व्यापार का व्यवहार कर के काम चला लेता है पर उपन्यास का सन्तोष इस प्रकार नहीं हो सकता। इतिहास कहीं यह कह कर छुटी पा जायगा कि अमुक राजा ने बड़ा अत्याचार किया। अब इस अत्याचार शब्द के अन्तर्गत बहुत से व्यापार आ सकते हैं। इससे उपन्यास इन व्यापारों में से किसी किसी को प्रत्यक्ष करने में लग जायगा।

यहां पर यह भी समझ रखना चाहिये कि ऐतिहासिक उपन्यासकर्त्ताओं के इस अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भी सीमा है । वह उन्हीं छोटी छोटी घटनाओं को ऊपर से ला सकता है जो किसी ऐतिहासिक घटना के अन्तर्गत अनुमान की जा सकें, अथवा संसार की गति और समाज की तत्कालीन अवस्था का अंग समझी जा सकें । न वह किसी विख्यात घटना में उलट फेर कर सकता है और न ऐसी बातों को ठूंस सकता है जिनका अनुमान उस समय की अवस्था को देखते नहीं हो सकता। इन ऊपर लिखी बातों पर विचार करने ही से यह विदित हो गया होगा कि ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के लिये इतिहास के पूरे ज्ञान के साथ ही साथ परम्परागत रहन सहन, बोल चाल की आलोचनाशक्ति आदि भी खूब होनी चाहिए ।

सामाजिक उपन्यास जिन जिन चरित्रों को सामने लाते हैं वे या तो ऐसे हैं जो सामाजिक व्यापारों के औसत हैं अथवा जिनका होना मानव प्रवृत्ति की चरमसीमा पर सम्भव है। कहीं पर ये उपन्यास यह दिखलाते हैं कि समाज कैसा है और कहीं पर यह दिखलाते हैं कि समाज को कैसा होना चाहिये। ये कहीं तो उन असंख्य व्यापारों में से जिनसे हम घिरे हैं कुछ एक को ऐसे स्थान पर लाकर अड़ा देते हैं जहां से हम उनका यथार्थ रूप और सृष्टि के बीच उनका सम्बन्ध दृष्टि गड़ा कर देख सकते हैं और कहीं उन सम्भावनाओं की सूचना देते हैं जिनसे यह मनुष्यजीवन देवजीवन और यह धराधाम स्वर्गधाम हो सकता है । सतोगुण की जो मुग्धकारिणी छाया ये प्रतिभासम्पन्न लेखक एक बार डाल देते हैं वह पाठक के हृदय पर से जीवन भर नहीं हिलती, मानव अन्तःकरण के सौन्दर्य्य की जो झलक ये एक बार दिखा देते हैं वह कभी नहीं भूलती । कथा के मिस से मनुष्यजीवन के बीच भले और बुरे कर्मों की स्थिति दिखा कर जितना ये लेखक आंख खोल सकते हैं उतना अहंकार से भरे हुए नीति के कोरे उपदेश देनेवाले नहीं । चाणक्य, स्माइल्स (Smiles) आदि नीति छांटने वाले रूखे लेखक जन साधारण से अपने को श्रेष्ठ समझ जिस ढब से आदेश चलाते हैं वह मनुष्य की आत्माभिमान वृत्ति को अखर सकता है। ये लोग सदाचार का स्वाभाविक सौन्दर्य्य नहीं दिखला सकते जिसकी ओर मनुष्य मोहित होकर आपसे आप ढल पड़ता है । अस्तु, चाणक्यनीति और स्माइल्स के कैरेक्टर आदि की अपेक्षा उत्तम श्रेणी के उपन्यासों का पढ़ना आचरण पर कहीं बढ़ कर प्रभाव डालता है ।

बड़े लोगों के जो जीवनचरित्र लिखे जाते हैं वे भी मानव जीवन के पूरे और सच्चे चित्र नहीं । उनमें भी बहुत सी सूक्ष्म घटनाएं तो असामर्थ्य के कारण छूट जाती हैं और बहुत सी स्थूल घटनाएं किसी विशेष अभिप्राय से छिपा दी जाती हैं। उनमें मनुष्य के अन्तःकरण की वृत्तियां साफ़ साफ़ नहीं झलकाई जातीं । बासवेल (Boswell) आदि अंग्रेजी लेखकों ने अपने चरित्र नायकों की बहुत छोटी छोटी बातें भी दर्ज की हैं पर वे बेजोड़ सी मालूम होती हैं, उनमें औपन्यासिक पूर्णता नहीं आई । बादशाहों तथा और वैभवशाली पुरुषों के जो चरित्र लिखे जाते हैं वे तो और भी कृत्रिम होते हैं। किसी महाराज ने अपनी गाड़ी पर से उतर अस्पताल में जा किसी रोगी से दो बातें पूछ लीं तो उनकी दया और करुणा का कहीं ठिकाना नहीं । क्या इन बातों से मानव अन्तःकरण की सच्ची परख हो सकती है । वर्डस्वर्थ (Wordsworth), थैकरे (Thackeray) डिकेंस (Dickens) और जार्जएलियट (George Eliot) आदि बड़े बड़े अंगरेजी कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उपन्यास लेखकों तथा लेखिकाओं ने दीन से दीन और तुच्छ से तुच्छ लोगों की झोपड़ियों में जीवन के ऊंचे से ऊंचे आदर्श दिखलाए हैं।

---:o:---

महाराणा उदयपुर का ब्राह्मण-क्षत्री होना

श्रीयुत सम्पादक

नागरीप्रचारिणी पत्रिका, काशी।

महाशय,

आशा है कि आप कृपा करके मेरे इस लेखको अपनी पत्रिका में अवश्य ही स्थानदान देंगे :--

आप से और आप के विद्वान पाठक महाशयों से सविनय प्रार्थना है कि मेरे जिस लेख पर पं० गौरीशंकर जी ओझा मुझ पर द्वेषबुद्धि से लिखने का अपराध लगाते हैं, वह और पं० ओझा जी का उस के उत्तर में जो कथन है, वह दोनों लेख आप के सन्मुख हैं। उन को आप भली प्रकार विचार कर अपना निर्णय प्रकाश करें कि मेरे लेख में कहां और क्या "द्वेषबुद्धि" अर्थात् (Malice) का अंश है अथवा नहीं है। मैंने अपने लेख में पं० ओझा जी के विषय में केवल यह कहा है और इस कथन का ही मैं जिम्मेदार हूं :--

"उसमें उन्होंने उदयपुर वाले पं० गौरीशङ्कर ओझा के बताए और दिए एकलिङ्ग माहात्म्य आबूकी समरसी की प्रशस्ति और मूता नैणसी की ख्याति आदि के प्रमाणों पर से यह सिद्ध कर बताया है" इत्यादि

"और उन्होंने इस विषय के प्रमाण बताने, देने और नकल करा देने के विषय में पं० गौरी शङ्कर ओझा का धन्यवाद प्रकाश किया है।"

मेरे इन कथनों में मुझे जिम्मेदार बनाने वाले तीन शब्द हैं "देने", "बताने", और "नकल कराने"। और ये तीनों शब्द मैंने मिस्टर डी० आर० भंडारकर जी के जिन कथनों से समझ कर प्रयोग किये हैं, वे ये हैं :--

A. "That the Guhilots were originally Nagar Brahmans, afterwards became Kshatriyas, is certain and incontrovertible, as we have seen above."

B. "If any body is still sceptic about this conclusion, his doubt is complctly set at rest by the following extract from the E katinga-mahatmya composed during the reign of Rana Kumbha, for which I am indebted to the kindness of Pandit Gauri Shankar Ojha".

C. "The Chhappaya was copied from Pandit Gauri Shankar's copy of Muta Nensis Khyati'

D. "The Brahmans of Mewar, not being learned, recite the stanza frightfully badly; but the correct text of it, so far as it goes, has been supplied to me by Pandit Gaurishankar ji'.

(Journal and Proceadings of the Asiatic Society of Bengal Vol. V. No. 6 for June 1909. p. 167-187)

मेरे लेख के विषय में पं० ओझा जी का यह कथन है :

"इतिहास प्रेमी ने मेरे विषय में जो कुछ लिखा है वह केवल द्वेषबुद्धि से लिखा गया है और उस में सत्यता का लेश भी नहीं है" इत्यादि

"मिस्टर भंडारकर एम० ए० महाशय ने मेरे पुस्तकालय से एकलिङ्ग माहात्म्य और मूता नैणसी की ख्याति ये दो प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकें देखने के लिये मंगवाईं जिन्हें मैंने उनके पास भेजीं। इससे उन्होंने केवल सभ्यता के खातिर अपने लेख में मेरे लिये धन्यवाद प्रकट किया।"

अब आप और पत्रिका के विद्वान पाठक महाशय ऊपर लिखे मेरे मिस्टर भंडारकर जी के और पं० ओझा जी के वचनों को भले प्रकार विचार कर देखें, कि मेरे लेख में कहां द्वेषबुद्धि है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पं० ओझा जी जो कुछ कहते हैं उसकी तसदीक मिस्टर भांडारकर जी के लेख से होती है वा नहीं । पं० ओझा जी तो दो पुस्तकों के भेजने के लिये धन्यवाद देना कहते हैं और मिस्टर भांडारकर जी अपने (B.) कथन में स्पष्ट रूप से Extract from the Ekalinga-mahatmya देने के लिये धन्यवाद देते हैं । वैसे ही नं० (D.) कथन में स्पष्ट कहा है "The correct text of it, so far as it goes, has been supplied to me by Pandit Gaurishankar ji" कि जो उक्त दोनों पुस्तकों के प्रमाणों से एक अन्य पृथक ही प्रमाण है । उक्त पण्डित जी ने द्वेषबुद्धि के लिये जो यह दलील लिखी है कि "मैंने उक्त विषय में किसी पुस्तक वा लेख द्वारा अपनी सम्मति अब तक प्रकट ही नहीं की" सो यह मैंने कब अपने लेख में लिखा है ? मैंने तो मिस्टर भांडारकर जी के लेख से जो मालूम हुआ वह लिखा तथापि पं० ओझा जी को उचित है कि जो वे मिस्टर भांडारकर जी की सम्मति से वास्तव में असम्मत हैं तो तुरन्त लिखकर प्रकाशित कर दें कि मिस्टर भांडारकर जी का लिखना असत्य है, जैसे कि पंडया जी ने निर्भयता से कह दिया है । क्योंकि निरी युक्ति लड़ाने और गोल मोल लिखने पढ़ने और उलटे हम सरीखों से लड़ने भिड़ने में क्या सार है । ऐसा करने से सर्व साधारण को ज्ञात हो जायगा कि पं० ओझा जी मेवाड़ से निकली नई "आनन्दपुर थियोरी" जिसका स्पष्ट परिणाम मि० भांडारकर ने यह प्रकाशित कर दिया है कि गहिलोत असल में आनन्दपुर के नागर ब्राह्मण थे और पीछे से वे क्षत्री बने हैं अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री हैं, सो नहीं मानते हैं और वह असत्य है । सब झगड़ा मिट जावेगा । अंतिम वक्तव्य यही है कि मैंने पं० ओझा जी के विषय में द्वेष बुद्धि से कुछ नहीं लिखा है, अतएव वे कृपा कर के अपने "द्वेष बुद्धि" सम्बन्धी कथन को फेर लें नहीं तो मुझको लाचार हो कर अदालताना प्रयत्न करना पड़ेगा, क्योंकि हर एक मनुष्य इज्जत रखता है । इत्यलम् ।

(एक इतिहास प्रेमी)

श्रीयुत सम्पादक जी

श्रीमती नागरी प्रचारिणी पत्रिका योग्य

काशी ।

महाशय,

अपरंच पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द जी ओझा महाशय ने आप की पत्रिका द्वारा एक इतिहास-प्रेमी के साथ के रगड़े झगड़े में मुझ वुढ्ढे बीमार को भी व्यर्थ स्मरण किया है । अतएव स्पष्ट निवेदन है कि वास्तव में यह बात यों है कि एक मित्र ने मि० डी० आर० भाण्डारकर जी एम० ए० महाशय के लेख और पं० ओझा जी के एक नोट का हवाला देकर मुझसे पूछा था कि सुना जाता है कि पं० ओझा जी ने प्राचीन "वल्लभी थियोरी" का मानना छोड़ कर एक नवीन "आनन्दपुर थियोरी" निकाली है कि जिसका परिणाम मि० भंडारकर जी ने अपने लेख द्वारा प्रकाशित किया है । इस पर बेशक मैंने उसको लिख दिया था कि दोनों के कथन अयुक्त हैं । पं० ओझाजी का उक्त नोट यह है:—

"१३-सन् १९०२ में हम ने टाड साहिब का जीवन चरित्र लिखा । उस समय तक टाड साहिब के लेखानुसार हम भी यही मानते थे कि मेवाड़ के राजा वल्लभी के खानदान से निकले हुए हैं, परन्तु उसके पीछे के शोध से कितने एक प्रमाण ऐसे मिले जिनसे पाया जाता है कि मेवाड़ के राजाओं का वल्लभी के राजाओं से कुछ भी सम्बन्ध नहीं हैं । मेवाड़ में गुहिल वंश का राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापन करने वाला गुहिल वा गुहदत्त गुजरात के आनन्द पुर नामक नगरसे आया था, ऐसा लिखा मिलता है।" (खड्गविलास प्रेस का छापा हिन्दी टाड्स राजस्थान पृष्ट १३१)

इस नोट में जो कुछ कहा गया है उस से स्पष्ट मालूम होता है कि सन् १९०२ के पीछे पं० ओझा जी सदैव से मानी हुई "वल्लभी थियोरी" को तो नहीं मानते हैं और उन का नई "आनन्द पुर थियोरी" का मानना वा न मानना स्पष्ट सा है।

निदान पं० ओझा जी और पत्रिका के अन्य सब विद्वान पाठकों को ज्ञात हो कि हमने पं० ओझा जी के इस नोटवाले कथन को 'अयुक्त' कहा है और कुछ नहीं। और वही "अयुक्त" शब्द "एक इतिहास प्रेमी" ने भी लिखा है। क्योंकि जब तक उक्त थियोरियों के न मानने वाले और मानने वालों में से कोई हमको भलीभांति समझा कर संतुष्ट न कर दे तब तक हम वल्लभी थियोरी को न मानने और "आनंदपुर थियोरी" को मानने दोनों को ही अयुक्त मानते हैं। यदि इस में मेरी कुछ भूल हो तो आप महाशय कृपा करके मुझे सूचित करें, मैं अत्यन्त ही आभारी होऊँगा।

पं० ओझाजी ने जो मुझ से पूछा उसका स्पष्ट और सत्य उत्तर ऊपर देकर अब मैं आप और आप के विद्वान पाठक महाशयों के ज्ञातार्थ यह अधिक निवेदन करता हूं। उक्त दोनों थियोरियों का स्पष्ट और मुख्य भावार्थ ऐसा है। वल्लभी थियोरी में अब तक तथा सन् १९०२ के पहिले तक निःसंदेह यह माना गया है कि महाराज श्रीराम चंद्रजी के वंशज सुमित्र के बाद उसकी संतान में से राजा विजयभूप अयोध्या छोड़कर सौराष्ट्र में आया और उसने वहां सूर्यवंशी राज्य स्थापित किया। उसकी संतान में से वल्लभी के राजा हुए हैं। और उस 'वल्लभी' के खान दान में मेवाड़ के राजा हैं। निदान वे शुद्ध सूर्यवंशी राजपुत्र हैं अर्थात् मेवाड़ के राजवंश का वर्त्तमान् सब गौरव इसी मन्तव्य का आधार रखता है। इस वल्लभी नाम से संबंध रखने वाले और अनेक ऐतिहासिक वृत्त हैं जिन को हम फिर किसी समय आपकी सेवा में निवेदन करेंगे। इस थियोरी के विषय में खास हमारी ही अनेक ऐसी शंकाएं हैं जिनका हल होना कठिन है। इन शंकाओं को स्थान देने से यह थियरी नष्ट हो जाती है तथापि हमने अब तक उसका मानना नहीं छोड़ा है, क्योंकि हमारे देश भर में वह सदैव से मानी जाती है। हम उसके प्रतिकूल प्रमाणों को भी उस के अनुकूल लगाने की सदैव चेष्टा करते रहते हैं, जिसमें हमारे देश का प्राचीन मन्तव्य हमारी जिद्द, पक्षपात, और कुछ का कुछ समझ लेने से नष्ट न होजाय। अब रही "आनन्दपुर थियोरी" उसमें आनन्दपुर के पहिले का कुछ वृत्तान्त अभी तक नहीं बताया गया है किन्तु इतना ही प्रकाशित हुआ है कि मेवाड़ में राज्य स्थापित करने वाला गुहिल गुजरात के नागर ब्राह्मणों के मूलस्थान जिसका प्राचीन नाम आनन्दपुर है वहां से आया था, कि जो वर्त्तमान् समय में बड़ नगर करके प्रसिद्ध है। इसके विषय में नये शोध से जिन प्रमाणों का मिलना कहा जाता है वे सब मिस्टर भंडारकर जी ने अपने लेख में दिये हैं। उन में सब से बड़ा भारी जबरदस्त प्रमाण एक लिंग माहात्म्य नामक पुस्तक का है—इस संज्ञा से आप उस वायु पुराणान्तर्गत एक लिंग माहात्म्य को न समझ लें कि जो देश भर में परम प्रख्यात है और जिसकी कथा प्रायः श्री मेवाड़ दर्बार में बांची जाती है—किन्तु वह श्री दरबार मेवाड़ के शुद्ध सूर्यवंशी राजपुत्र होने के गौरव और मेवाड़ के सदैव से माने जाते हुए इतिहास को उड़ादेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला एक बंब का गोला है । उसके कथन को सत्य मान कर नये गजेटियर के कर्त्ता ने मेवाड़ की तवारीख को उथल पुथल कर दिया है । और इस अद्भुत अपूर्व माहात्म्य के प्रागत्य के विषय में यद्यपि उक्त राजपूताना गजेटियर कर्त्ता ने यह कहा है:—

"But according to a manuscript of the fifteenth century recently discovered at Udaipur" etc (Vol. I p. I10)

But much new and valuable information has just been obtained through the finding by Pandit Gaurishankar of Udaipur of an old manuscript (the Ekalinga mahatmya) of the time of Rana Kumbha." (Vol. II. A. p. I4)

परंतु इस पुस्तक को हम कविराजजी और मेवाड़ के अन्य कई विद्वान और प्रतिष्ठित लोग उस समय से जानते हैं जब पं० ओझाजी मेवाड़ में न आये थे और न नौकर हुए थे और उसकी नकल भी हम लोगों के पास है । कविराजजी इस को बिल्कुल नहीं मानते थे। इस में यह स्पष्ट लिखा है कि विजयादित्य से बाप्पा तक दस पुश्त नागर ब्राह्मण हुए थे और वे आनंदपुर में रहते थे। आनन्द पुर से गुहिल मेवाड में आया और उसका बेटा बाप्पा हुआ । नीचे लिखे श्लोकों का पाठ हमारी पुस्तक के अनुसार है कि जिस को शास्त्री अजित देव जीने शोधा था।

जयति जगति विख्यातं सकलमहिलोकपावनं सुमहत्
श्री एक लिगं दैवत गोत्रं वै वैजवापाह्वम् ॥
जयति तथानंदपुरे नागर कुलमंडनो महीदेवः ।
जयनादि कर्म कुशलो विजयादित्याभिधो विप्रः।
तत्तनयो द्विजवर्यः केशवनामा बभूव लोकेऽस्मिन् ।
श्रुतयो यत्र चतस्रः षडङ्ग सहिता विभासन्ते ॥
तस्यसुतोजगतीतलमखिलं तपसा सुसुख स्यंकुर्वन् ।
नागाराउल नामा बभूव पात्रं स्मृतीनांऽयः ॥
तत्पुत्रो जगति भोगादित्य संज्ञो धराधिपैर्वंद्यः ।
आसाधरोस्य सूनुः श्री देवाठ्योऽस्य तनुजन्मा ॥
तत्तनुजः सर्वज्ञो दत्ताध्वर ऋद्धिभूति भृद्धिमल: ।
समहादेवो भगवानंभिधानेनाभिधेयेन ॥
तस्य कुलालंकरण गुहदत्तोऽन्वर्थनामधेयोभूत् ।
अद्यापि यस्य नाम्ना वंशोऽयं ख्यातिमान् जगति।
यदुक्तं पुरातनैः कविभिः—
आनन्दपुर समागत विप्रकुलानन्दनो महादेवः ।
जयति श्री गुहदत्तः प्रभवः श्रीगुहिलवंशस्य ॥

* * * *

तनुजोऽस्य चैरुलिंगः प्रसाद संप्राप्त राज्यलक्ष्मीकः ।
श्रीमेद पाट वसुधामपालयद्बाप्प पृथ्वीशः ॥

गुहिलोतों को नागर ब्राह्मण सिद्ध करने के लिये जो कुछ परमस्पष्ट प्रमाण हैं वे ऊपर लिखे श्लोक ही हैं और उन्हीं का प्रमाण मिस्टर भंडारकर जीने अपने लेख में बड़े जोर से दिया है। परन्तु इस "आनन्दपुर थियोरी" में यह एक बड़ी ही विचित्र बात है कि केवल नागर ब्राह्मण सिद्ध करने के प्रमाण में तो ये श्लोक माने जाते हैं, पर उनमें जो जो गुहिल के पहिले के आठ नाम हैं और गुहिल के पीछे उस के बेटे बापाका जो नाम वंशावली में है इनका विचार नहीं किया गया है। अर्थात ये श्लोक केवल नागर ब्राह्मण सिद्ध करने के लिये तो परम प्रमाण रूप हैं पर उनमें कहे राजाओं के नाम वंशावली में ग्रहण करने के लिये अप्रमाण रूप हैं। क्योंकि, अगर ये नाम मान लिये जावें तो फिर वे कुछ २ "वल्लभी थियोरी" के नामों से जा मिलते हैं। ऊपर लिखे श्लोकों में सब से नीचे का श्लोक जो गुहिल का बेटा बापा होना बताता है, वह मिस्टर भंडारकरजी ने छोड दिया सो हमने आप महाशयों के ज्ञातार्थ लिख दिया है। 'आनन्दपुर थियोरी' में अभी तक गुहिल के पहिले पुरुषाओं के नाम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित किये गये हैं, किन्तु उसकी वंशावली गुहिल से ही प्रारम्भ होती है। उसके पहिले के बीस नाम इस माहात्म्य के अनुसार नहीं माने गये हैं वरन् ऐतपुर की एक प्रशस्ति के अनुसार माने गये हैं जो कर्नल टोड साहब को मिली थी ! परन्तु उस प्रशस्ति के नामों में बापा के नाम का कहीं कुछ पता नहीं है। इस लिये इस थियोरी वालों को कयास लड़ाना पड़ता है कि महेन्द्र दूसरा (नं० ७ और नं० ८) वा कालभोज में से कोई बापा होना चाहिये, जैसा कि राजपूताना गजेटियर के कर्त्ता ने कहा है:—

"Mahendraji II. Kalabhoja. One of the two last (it is not certain which) was better known as Bapa." (R. G. Vol. II. A. p. 13)

इसकी विचित्रता का वर्णन कहां तक करें। यदि कोई इतिहास प्रेमी चाहे तो हम उसे सब बता और लिखा दें, क्योंकि हम बीमारी से स्वयम् लिखने पढ़ने में अशक्त हैं।

अंत में हमारी पत्रिका के सब विद्वान् पाठकों से यह छोटी सी प्रार्थना है कि वे नावेल आदि का शौक़ छोड़ कर इतिहास विद्या की ओर ध्यान दें। जब इसका मज़ा उनको आ जावेगा तब वह हमारे मर जाने पीछे भी हमारी इस प्रार्थना के लिये हमको याद करेंगे। यूरोप ने इस विद्या के बल से अत्यन्त उन्नति की है। किमधिकम्

गोरपाड़ा, मथुरा } भवदीय
१५।६।१० } मोहन लाल विष्णुलाल पंडया।

हिन्दी हस्त लिखित पुस्तकों की खोज विषयक जूलाई और अगस्त मास की रिपोर्ट।

इन दोनों महीनों में सभा का ट्रवेलिंग एजेंट काशी में ही खोज करता रहा। अन्य अनेक ज़िलों में जांच होने के अनन्तर अब बनारस के ज़िले में काम हो रहा है।

काशी में एक पं० रघुनाथ राम शर्मा हैं जिन के यहां पुस्तकों का अच्छा संचय है पर इन महाशय जी को अपने काम काज से अवकाश कम रहता है। जुलाई मास में तो आप २५ पुस्तकों के नोटिसकरा भी सके पर अगस्त में केवल चार नोटिसें ली जा सकीं ! आशा है कि आप सभा के धनाभाव पर विचार करके इस खोज के महत्कार्य्य में चित्त से सहायता दे कर नोटिसें लेने का काम शीघ्र समाप्त करा देंगे क्योंकि अब सभा का एजेंट प्रायः आपही के लिये काशी में पड़ा अपना समय नष्ट कर रहा है। अवश्यही एजेंट और महाशयों के पास जाता और इधर उधर अन्य पुस्तकों का खोज लगाता है पर कहीं ग्रन्थों का पता नहीं चलता है। सभा कोई कल की ऐसी वैसी अप्रमाणिक समिति नहीं है और उस में जो ग्रन्थ आप देंगे वे कभी नष्ट या गायब नहीं हो सकते। क्या आप कृपा कर अपने ग्रन्थ १५-१५ या २०-२० कर के सभा को देने की सज्जनता करेंगे ? जैसे जैसे नोटिस होते जावें वैसेही ग्रन्थ आप वापस लेते जायं। आशा है कि आप इस पर ध्यान देंगे और सभा के मंत्री जी इस का शीघ्र प्रबन्ध कर देंगे। आप के पास २५०-३०० ग्रन्थ कहे जाते हैं। जुलाई में गाज़ीपुर के लाला कौलेश्वर लाल जी की कृपासे आठ और ग्रन्थों की नोटिसें भी ली गईं।

छत्र पुर ११-९-१० { श्याम बिहारी मिश्र
सुपरिंटेंडेंट, खोज।

सभा का कार्यविवरण।

प्रबन्धकारिणी समिति

शनिवार ता० १३ अगस्त १९१० सन्ध्या के छ बजे

स्थान-सभाभवन

उपस्थित

पण्डित राम नारायण मिश्र बी० ए०- सभापति। बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद बी० ए०, एलएल० बी०। पण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णा राम मेहता बी० ए०, एलएल० बी०। बाबू बलभद्र दास बी० ए०, एल एल० बी०। बाबू शिव प्रसाद गुप्त। राव गोपाल दास

(१) पण्डित कृष्णा राम मेहता के प्रस्ताव तथा बाबू बलभद्रदास के अनुमोदन पर पण्डित रामनारायण मिश्र सभापति चुने गए।

(२) आज के अधिवेशन के कार्य्य के सम्बन्ध में पण्डित श्याम बिहारी मिश्र, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू श्यामसुन्दर दास और पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर की सम्मतियां उपस्थित की गईं।

(३) ता० १६ जुलाई १९१० के अधिवेशन का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(४) निश्चय हुआ कि इस वर्ष के लिये प्रबन्ध कारिणी समिति के प्रधान महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी और उपप्रधान पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० चुने जांय।

(५) निश्चय हुआ कि इस वर्ष पुस्तकालय के निरीक्षक पण्डित कृष्णा राम मेहता बी० ए०, एल एल० बी०, नागरी प्रचार के निरीक्षक बाबू बलभद्र दास बी० ए०, एल एल० बी०, सुबोध व्याख्यान के निरीक्षक पण्डित केशव देव शास्त्री, नागरीप्रचारिणी पत्रिका के सम्पादक पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला के सम्पादक पण्डित माधव प्रसाद पाठक और नागरीप्रचारिणी लेखमाला के सम्पादक पण्डित राम नारायण मिश्र चुने जांय।

(६) निश्चय हुआ कि पूर्ववत इस वर्ष भी मंत्रियों के कार्य्य का विभाग इस भांति रहे अर्थात् पत्रव्यवहार और सब कार्य्यों की देख भाल मंत्री करें और हिसाब किताब तथा द्रव्य सम्बन्धी कार्य्यों का प्रबन्ध मंत्री की सम्मति से उपमंत्री किया करें।

(७) सिक्कों पर नागरी अक्षरों के छपने के सम्बन्ध में गवर्न्मेंट की सेवा में भेजे जाने के लिये एक मसौदा उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि इसकी भाषा और रूप ठीक करने के लिये निम्न लिखित महाशयों की एक कमेटी बनाई जाय अर्थात् पण्डित कृष्णा राम मेहता, पण्डित राम नारायण मिश्र और बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद। इन सज्जनों से प्रार्थना की जाय कि वे इस प्रार्थनापत्र को ठीक करके एक सप्ताह के भीतर उसे गवर्न्मेंट की सेवा में भेज दें।

(८) बाबू शिव प्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा में जहां तक हो सके स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार किया जाय और उनके मिलते हुए कोई विदेशी वस्तु न वर्ती जाय। निश्चय हुआ कि इस पर ध्यान रक्खा जाय।

(९) ललिता पारितोषिक के लिये मथुरा जिले की कन्याओं की हस्त लिपि परीक्षा के सम्बन्ध में सब कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि सब-कमेटी की सम्मति के अनुसार वृन्दावन की कक्षा ३ में पढ़ने वाली भगवती नामकी कन्या को यह पारितोषिक दिया जाय।

(१०) हाथरस के एडवर्ड हिन्दी पुस्तकालय का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उन्हें कुछ कम मूल्य पर दी जांय।

निश्चय हुआ कि ये उन्हें अर्द्धमूल्य पर दी जांय।

(११) बाबू श्याम सुन्दर दास का ८ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि (१) १ अगस्त १९१० के वार्षिक अधिवेशन में प्रबन्धकारिणी समिति में काशी से पण्डित राम नारायण मिश्र और मध्य भारत से पण्डित श्यामविहारी मिश्र का जो चुनाव हुआ है वह २९ वें नियम के विरुद्ध है और उस दिन जो कार्य्यकर्त्ता या कार्य्यकारिणी समिति चुनी गई है उसे सभा सम्बन्धी किसी कार्य्य के करने का अधिकार नहीं है (२) यह नवीन नियम बनाया जाना चाहिये कि सभा का कोई कार्य्यकर्ता या सभासद सभा के किसी अधिवेशन के लिये पांच से अधिक सभासदों का प्रतिनिधि न हो।

निश्चय हुआ कि (१) बाबू श्याम सुन्दर दास जी के पास नियमावली की एक प्रति भेजी जाय और उनका ध्यान नियम २९ के शब्दों की ओर दिलाया जाय। समिति को विश्वास है कि बाबू साहब उक्त नियमों का अवलोकन करके सभा की कार्यवाही को नियम विरुद्ध न समझेंगे, उनका भ्रम इस सम्बन्ध में मिट जायगा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे अपनी भूल स्वीकार करेंगे (२) अभी थोड़े ही दिन हुए हैं कि नियमों के संशोधन के समय इस विषय पर विचार हो चुका है । समिति की सम्मति में इस पर फिर विचार करने की अभी आवश्यकता नहीं है ।

(१२) पण्डित भवानी दत्त पांडे कृत Balfowr Stewart's Physics के अनुवाद के सम्बन्ध में पण्डित कृष्णा राम मेहता की यह सम्मिति उपस्थित की गई कि यह अनुवाद छपने योग्य है पर इसमें भाषा की अनेक त्रुटियां हैं जिनके दूर करने के लिये इसका संपादन किसी सुयोग्य सज्जन को सौंपा जाना चाहिये ।

निश्चय हुआ कि बाबू शिव प्रसाद गुप्त से प्रार्थना की जाय कि वे बाबू गोकुल दास एम० एस० सी० प्रोफेसर विज्ञान शास्त्र, इन्दोर से इसका संशोधन करा दें ।

(१३) समय अधिक हो जाने के कारण सभा विसर्जित हुई और निश्चय हुआ कि शेष कार्यों के लिये सोमवार ता० १५ अगस्त १९१० को सन्ध्या के छ बजे पुनः अधिवेशन हो ।

शनिवार ता० २० अगस्त १९१० सन्ध्या के ५ बजे

स्थान-सभाभवन

उपस्थित

पण्डित राम नारायण मिश्र बी० ए०, सभापति । बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद बी० ए०, एलएल० बी । पण्डित कृष्णा राम मेहता बी० ए०, एलएल० बी० । राव गोपाल दास । पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्मा । बाबू शिव प्रसाद गुप्त । बाबू गोविन्द दास । राय शिव प्रसाद ।

(१) गत अधिवेशन (ता० १३ अगस्त १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) मंत्री ने सूचना दी कि सभा के नये नियमों के अनुसार पत्रिका में हिसाब जांचने वालों की सम्मति के सहित प्रति मास का हिसाब छपना आवश्यक है पर बोर्ड आफ़ ट्रष्टीज ने इस वर्ष का हिसाब जांचने के लिये राव गोपाल दास और पण्डित राम नारायण मिश्र को नियत किया था और ये सज्जन गत वार्षिक अधिवेशन में प्रबन्ध कारिणी समिति के सभासद चुने गए हैं इस कारण नवीन नियमों के अनुसार वे सभा का हिसाब नहीं जांच सकते ।

निश्चय हुआ कि इसके लिये बोर्ड आफ़ ट्रष्टीज का एक अधिवेशन शीघ्र किया जाय और बोर्ड जिन महाशयों को हिसाब जांचने के लिये नियत करे उनसे जुलाई १९१० से हिसाब जचवा कर पत्रिका में छापा जाय ।

(३) बाबू राजबहादुर सिंह के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्हों ने बाबू गंगोत्तरी प्रसाद सिंह की मृत्यु की सूचना दी थी और उनका Deussen's Metaphysics का अनुवाद भेजा था जिसका कुछ अंश दोहराया नहीं गया था और जिसमें टिप्पणी देने का कार्य शेष रह गया था । साथही उन्हों ने इस पुस्तक में बाबू गंगोत्तरी प्रसाद सिंह की संक्षिप्त जीवनी दिए जाने के लिये भी लिखा था ।

निश्चय हुआ कि सभा को बाबू गंगोत्तरी प्रसाद सिंह की मृत्यु का समाचार जान कर बड़ा शोक हुआ । बाबू राजबहादुर सिंह के यहां से उनकी संक्षिप्त जीवनी आने पर वह इस अनुवाद के साथ छापी जाय और बाबू राज बहादुर सिंह से पूछा जाय कि अनुवाद का पुरस्कार किसको दिया जायगा । अनुवाद के दोहराने तथा इसमें टिप्पणी लिखने के लिये पंडित रामावतार पांडेय से प्रार्थना की जाय ।

(४) बाबू बंशीधर वैश्य का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि भारतवर्ष के हिन्दी पुस्तकालयों की सूची सभा अपने वार्षिक विवरण में छापा करे और उनके पुस्तकालय की सूचना नागरी प्रचारिणी पत्रिका में छाप दी जाय ।

निश्चय हुआ कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका द्वारा सूचना देकर हिन्दी पुस्तकालयों की सूची मंगाई जाय और इस सूची में बाबू बंशीधर वैश्य के पुस्तकालय का नाम भी सम्मिलित कर लिया जाय ।

(५) डाक्टर अमरनाथ बेनर्जी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने टेनिस क्लब के लिये सभाभवन की पश्चिम ओर की भूमि पर खेलने की आज्ञा मांगी थी और सामान रखने के लिये सभाभवन में स्थान मांगा था ।

(शेष आगे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

सम्मेलन का प्रबन्ध यथोचित हो रहा है। सम्मेलन कमेटी प्रति सोमवार और शुक्रवार को होती है। आगन्तुक महाशयों के ठहरने के लिये हरिश्चन्द्र स्कूल में प्रबन्ध किया गया है। यह स्थान सभाभवन से ५ मिनट के रास्ते पर है। इसके अतिरिक्त राजा शिवप्रसाद के मकान के बगल में गोलघर भी मिल गया है। हिन्दूकालेज और हरिश्चन्द्र स्कूल के लड़के आगन्तुक महाशयों का स्वागत करेंगे। प्रस्तावित मन्तव्यों में से उपाधि सम्बन्धी मन्तव्य निकाल दिया गया है नीचे लिखे महाशयों ने व्याख्यान अथवा लेख देना स्वीकार कर लिया है:-

बा० गोपाललाल खत्री, लखनऊ-नागरीप्रचार उन्नति का द्वार है। प्रो० रामावतार पांडेय, बांकीपुर-वैज्ञानिक और ऐतिहासिक ग्रन्थों के हिन्दी में लिखने की आवश्यकता। प्रो० पाटंकर, काशी-महाराष्ट्री भाषा की उन्नति। ला० मुंशीरामजी, कांगड़ी-पंजाब में आर्य भाषा। बा० भगवानदास हालना, प्रयाग-हिन्दी कोश के लिये अपील। रायदेवीप्रसाद पूर्ण, कानपुर-हिन्दी काव्य। पं० राधाचरण गोस्वामी, वृन्दाबन-ब्रजभाषा, सूरदास। पं० रुद्रदत्त शर्म्मा, आगरा-अखबार नवीसी। श्रीयुत शारदाचरण मित्र, कलकत्ता-बंगला साहित्य की उन्नति। मुं० देवीप्रसाद जी मुंसिफ, जोधपुर-मुसल्मानी राजत्व काल में हिन्दी। बा० श्यामसुन्दरदास बी० ए०, काश्मीर-प्राचीन पुस्तकों की खोज का फल। पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, छत्रपुर--हिन्दी साहित्य का इतिहास। पं० चन्द्रिका प्रसाद जी, अजमेर-दादूदयाल और सुन्दर दास। पं० श्रीधर पाठक, नैनीताल-खड़ी बोली की कविता। महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, काशी-हिन्दी साहित्य। पं० रामनारायण मिश्र, काशी युनिवर्सिटी में हिन्दी की शिक्षा। बा० गोविन्द दास, छत्रपुर-बुन्देलखण्ड में हिन्दी। पं० नन्दकिशोर देव शर्म्मा-सम्पादक समाज की आवश्यकता। पं० देवी प्रसाद, मांडा-हिन्दी की वर्त्तमान दशा और उसके उन्नति का उपाय। ठकुराई रामचीज सिंह, चक्रधरपुर-हिन्दी पैसा फण्ड के प्रचार की उपयोगिता। पं० सन्तराम शर्म्मा, लाहौर--पंजाब में हिन्दी। बा० शिवप्रसाद गुप्त, काशी-हिन्दी में तार। पं० गोविन्दाचार्य काशी-बम्बई में हिन्दी। पं० नारायण महदा जी आगरे, मुलताई-हिन्दी भाषा का साहित्य। पं० रामचन्द्र शुक्ल, जम्बू--हिन्दी की स्थिति। पं० ब्रह्मदेव शर्म्मा, इटावा-हिन्दी साहित्य की उन्नति। बा० हरेकृष्णप्रसाद बी० ए०-भागलपुर-हिन्दी कोश १२ वां प्रस्ताव। बा० श्रीकृष्णप्रसाद बी० ए० भागलपुर १३ वां प्रस्ताव। बा० गोपालराम गहमर-नाटक और उपन्यास। बा० बिन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, गहमर-हिन्दी भाषा। पं० राजाराम शास्त्री, लाहौर-आर्य्य ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद।

इन महाशयों के अतिरिक्त अनेक महाशयों की जिनसे प्रार्थना की गई थी, अब तक स्वीकृति नहीं आई है। इस सभा के सभासदों, अन्य नागरी सभाओं के सदस्यों, समाचार पत्र के सम्पादकों तथा अन्य हिन्दी प्रेमियों से प्रार्थना है कि इस सम्मेलन में पधार कर इसके प्रथम अधिवेशन को फलीभूत करें। हम इस बात को फिर लिखदें कि इस सम्मेलन के सभापति माननीय पण्डित मदन मोहन मालवीय बी० ए० एल० एल० बी० होंगे।

गौरीशङ्कर प्रसाद

मन्त्री।

भारत प्रेस काशी में बाबू माधव प्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | १५ अक्तूबर और नवम्बर १९१० । | संख्या ४-५

प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

हर्ष का विषय है कि यह सम्मेलन बड़ी धूम धाम के साथ काशी में हो गया । सभा की ओर से जो तैयारियां की गई थीं उनसे लोगों के उत्साह और उमंग की सूचना मिल रही थी । चौराहे से लेकर सभाभवन तक सड़क के दोनों ओर झंडियां फहरा रही थीं । म्युनिसिपल बाग के बीच से होकर जो सड़कें सम्मेलन मंडप तक गई थीं वे भी खूब सजी हुई थीं । स्थान स्थान पर ऊंचे फाटक बने हुए थे जिन पर बड़े बड़े नागरी अक्षरों में "प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन" अङ्कित देख दर्शकों का चित्त उत्साह से भर जाता था । सम्मेलन के सभापति माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय ९ अक्तूबर की रात को बनारस स्टेशन पर पहुंचे । स्टेशन पर उनका अच्छा स्वागत हुआ । दूसरे दिन सबेरे ९॥ बजे दशाश्वमेध घाट से मालवीय जी की सवारी बड़ी धूम धाम से निकाली गई । निस्सन्देह यह पहिला ही अवसर था जब कि हिन्दी के हित का अनुष्ठान इस सजधज के साथ हुआ । बाहर से ३०० प्रतिनिधि आए थे और इतने ही के लगभग काशी से थे तथा दर्शकों की संख्या दो हजार के लगभग थी । कुछ लोगों का ऐसा अनुमान है कि यदि हिन्दी के सब पत्र सम्मेलन का पक्ष और समर्थन करते तो और भी अधिक सफलता प्राप्त होती । जो कुछ हो, हिन्दी प्रेमियों का चित्त तो इतने ही पर फूले अङ्ग नहीं समाता था । ६ अक्तूबर को १० बजे से ही लोग आने लगे । इधर उधर दूर दूर से आए हुए हिन्दी हितैषियों का एक दूसरे से प्रेम के साथ मिलने और स्थान स्थान पर कई मंडलियों में बंट कर वाग्विलास करने का दृश्य भी अपूर्व और मनोहर था । सब के मुखमंडल पर उत्साह की झलक दिखाई देती थी, सब का हृदय परस्पर प्रेमभाव से परिपूर्ण था । ११॥ बजे सभापति महाशय मंडप में आए और स्वागत-कारिणी कमेटी ने उनका बड़े आदर और उत्साह के साथ स्वागत किया । सब लोगों के बैठ जाने पर हिन्दूकालेज हरिश्चन्द्र स्कूल, तथा क्षत्रिय स्कूल के छात्रों ने हारमोनियम पर मंगला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण और स्वागत सम्बन्धी उत्साहवर्धक गान सुनाया। इसके अनन्तर स्वागतकारिणी कमेटी के सभापति राय शिवप्रसाद ने निम्नलिखित शब्दों में उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया:—

"माननीय महोदय,

हिन्दी के इतिहास में आज का दिन सदा स्मरणीय बना रहेगा कि जब हिन्दी के इतने प्रेमी और सहायक दूर दूर से अनेक प्रकार के शारीरिक कष्ट और आर्थिक हानि उठा कर इस सम्मेलन में सम्मिलित होने और हिन्दी के हित साधन के उपायों पर विचार करने के लिये इस स्थान में एकत्रित हुए हैं। हिन्दी के आधुनिक इतिहास में अनेक ऐसी घटनाओं का वर्णन हो सकता है जिनमें अनेक महानुभावों ने मिलकर अपनी मातृभाषा की उन्नति के लिये उद्योग किया है तथा साथही हिन्दी के विद्वानों ने उसके साहित्य की पूर्ति में अपनी अपनी शक्ति के अनुसार सफलता प्राप्त की है। पहिले पहिल प्रयाग के "हिन्दू समाज" ने दो तीन वर्षों तक बड़ी धूमधाम से वार्षिक अधिवेशन करके इस कार्य्य के करने की चेष्टा की परन्तु खेद का विषय है कि वह समाज चिरकाल तक स्थिर न रह सका। दूसरा उद्योग अलीगढ़ की "भाषा संवर्धिनी सभा" है। इसके मूल आधार और प्राण बाबू तोताराम जी थे। इसके द्वारा अनेक अच्छे अच्छे ग्रन्थ प्रकाशित हुए। इसका ढङ्ग सब से निराला और प्रशंसनीय था। दुःख है कि यह सभा भी बहुत दिनों तक जीवित न रह सकी। तीसरा उद्योग मेरठ की "देवनागरी प्रचारिणी सभा" है जिसके जीवनाधार पण्डित गौरीदत्त जी थे। इस सभा ने अनेक वर्षों तक हिन्दी की उन्नति के लिये उद्योग किया, यद्यपि इसकी उद्योगसीमा विशेष कर मेरठ जिले के अन्तर्गत ही रही। पश्चिमी जिलों में जहां मुसलमानों का प्रभुत्व बड़े जोर के साथ अनेक काल तक बना रहा और जहां उर्दू देवी ने जन्म पाकर अपना बल प्रताप बढ़ाया, हिन्दी के लिये प्रेम उत्पन्न करना और उसकी उन्नति का बीजारोपण करना कुछ कम साहस और अध्यवसाय की बात नहीं है। जिस किसी ने पण्डित गौरीदत्त जी के दर्शन किए होंगे, उनके उद्योगों का कुछ आभास पाया होगा, उसने हिन्दी का दूसरा ऐसा अनन्य भक्त कदाचित ही देखा होगा। अस्तु, इनकी वृद्धावस्था तदनन्तर मृत्यु के कारण यह सभा भी शिथिलता के चिन्ह दिखाने लगी और आज दिन उसकी वह अवस्था नहीं है जो विकाश सिद्धान्त के नियमानुसार सब सांसारिक पदार्थों की होती रहती है। कदाचित् यह शिथिलता तितली की नींद के समान हो और उसका पुनरुत्थान वैसाही मनोहर और आश्चर्यदायक भी हो। चौथा उद्योग काशी की "नागरी प्रचारिणी सभा" है जिसने आज आप लोगों को यहां निमंत्रित करने का साहस किया है। इस सभा का सूत्रपात वटवृक्ष के बीज के समान १६ जुलाई सन् १८९३ ई० को काशीधाम में हुआ था। उस समय कुछ नवयुवक विद्यार्थियों ने मिलकर अपनी मातृभाषा की उन्नति का विचार किया था। किसी को यह स्वप्न में भी आशा न थी कि उस छोटे से बीज से समय पाकर इतना बड़ा वृक्ष खड़ा हो जायगा जिसकी शीतल छाया में ८०० हिन्दी प्रेमी एकत्रित होकर उस वृक्ष की पुष्टि का निरन्तर उद्योग करेंगे। इस सभा से मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है और अब भी है। इस लिये इच्छा रहते हुए भी इसके विषय में मैं विशेष कुछ नहीं कह सकता। मेरी इस त्रुटि को आप लोग क्षमा करेंगे। पांचवां उद्योग आरे की "नागरीप्रचारिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा" है । इसको स्थापित हुए थोड़े ही वर्ष हुए हैं पर इस बीच में इसने कई उपयोगी काम किए हैं और उसके द्वारा और भी अधिक अच्छे कार्य्यों के होने की आशा की जाती है । छठां उद्योग कलकत्ते की 'एकलिपिविस्तार परिषद्" है । उसने अपना उद्देश्य नागरी लिपि का सार्वभौम प्रचार स्थिर कर रक्खा है । इस परिषद् का एक पत्र भी निकलता है जिसमें भिन्न भिन्न देशभाषाओं के लेख देवनागरी अक्षरों में छपते हैं । इस समय दिनों दिन देवनागरी लिपि के प्रचार में राष्ट्र मत बढ़ता चला जाता है और यदि इस अवसर का हम लोग उपयुक्त प्रयोग कर सके तो हमें अपने उद्देश्य की सफलता में बहुत कुछ सहायता पहुंचेगी । सातवां उद्योग प्रयाग की "नागरी प्रवर्धिनी सभा" है इसे स्थापित हुए दो तीन वर्ष हुए हैं । इस बीच में ही इसके उद्योग से कई अच्छे अच्छे ग्रन्थ छपे हैं । इस सभा का भविष्य निस्संदेह बहुत कुछ आशाजनक है । इन सभाओं के अतिरिक्त और भी कई सभाएं हैं जो अपने व्रत पालन में लगी हुई हैं जैसे कलकत्ते का "हिन्दी साहित्य परिषद्" छत्रपुर की "काव्यलता सभा" इसलामपुर की "हिन्दी भाषा प्रचारिणी सभा" जौनपुर की "नागरीरक्षिणी सभा" लखनऊ की "मातृभाषा प्रचारिणी सभा" जालन्धर और मैनपुरी की "नागरीप्रचारिणी सभाएं" इत्यादि ।

महाशयो, यह सब कथा कहने से मेरा तात्पर्य्य आप लोगों का ध्यान इस बात पर दिलाने का है कि इस समय कई स्थानों में सभाएं स्थापित हैं जो हिन्दीभाषा की उन्नति और उसके साहित्य की पूर्ति के लिये उद्योग कर रही हैं परन्तु वे सब एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं, किसी सम्बन्धसूत्र में बंधी नहीं हैं और न एक दूसरे की विशेष रूप से सहायक ही हैं । जहां यह सत्य है कि अलग अलग उद्योग करने की अपेक्षा कुछ पुरुषों के एक साथ मिल कर उद्योग करने से विशेष सफलता होती है और साथही किसी एक पर इतना बोझ नहीं पड़ जाता कि वह उसके नीचे दब जाय, उसी प्रकार अलग अलग कई सभाओं के उद्योग करने से उतना लाभ नहीं हो सकता जितना उनके आपस में मिल कर करने से हो सकता है । मेरा अनुमान है कि इस सम्मेलन द्वारा एक सभा का दूसरे से प्रेम निस्सन्देह बढ़ेगा जिसमें अपने उद्देश्यों में हमें अवश्य सफलता प्राप्त होगी । यह समय ऐसा है जब कि चारों ओर सब भाषा वाले अपनी अपनी मातृभाषा की उन्नति के उद्योग में लगे हुए हैं परन्तु हिन्दीभाषाभाषी अब तक कार्यक्षेत्र में आने में विलम्ब कर रहे हैं । इन सब कारणों से मैं समझता हूं कि यह अत्यन्त आवश्यक था कि हिन्दी के प्रेमीगण एक स्थान पर एकत्रित होकर अपनी मातृभाषा की अवस्था पर विचार करें और उसकी उन्नति के उपायों को सोचें । मुझे इस बात पर आज बड़ा आनन्द होता है कि हिन्दी के आधुनिक इतिहास में आज यह पहिला दिन है जब कि हिन्दी के प्रेमी अपनी मातृभाषा की सेवा ही के लिये एकत्रित हुए हैं और मैं अपने को बड़ा सौभाग्यवान मानता हूं कि मुझे आप महानुभावों को स्वागत करने का गौरव और आनन्द प्राप्त हुआ है । यह कार्य्य जो मुझे सौंपा गया है सर्वथा मेरी योग्यता और बुद्धि के बाहर है । काशी ऐसी त्रिलोक से न्यारी विद्यापीठ में अनेक हिन्दी सेवक हो गए हैं और अब भी वर्तमान हैं जिन्होंने अपनी साहित्यसेवा से उसके भंडार की पूर्ति की है और उसके गौरव को बढ़ाया है । ऐसे स्मरणीय अवसर पर यह सर्वथा उचित था कि इन महानुभावों में से कोई आप का स्वागत करता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशयो! इस अवस्था के रहते हुए मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि जो वाक्य इस समय मेरे मुंह से आप लोगों से स्वागत में निकल रहे हैं वे हार्दिक और भक्ति भाव पूर्ण हैं। मुझ में इतनी शक्ति नहीं कि मैं मानसिक भाव को स्पष्ट शब्दों द्वारा आप लोगों पर प्रगट कर सकूं। तिस पर विशेष आनन्द के समय पर यह प्रायः देखने में आता है कि बड़े बड़े लोगों का मुंह बन्द हो जाता है। इस अवस्था में यदि मेरे इस कथन में उपयुक्त शब्दों का अभाव पाया जाय तो उसके लिये मैं दोषी नहीं ठहराया जा सकता। पूज्य महाशयो! इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप लोगों के यहां पधारने से नागरी प्रचारिणी सभा कृतार्थ हुई है और वह अपने को बड़ी सौभाग्यवती समझती है कि आप लोगों ने उसके निमंत्रण को स्वीकार कर इस समय यहां आने की कृपा की है।

जिस कार्य के लिये आप लोग यहां एकत्रित हुए हैं वह बड़े महत्व का है। मातृभाषा की सेवा करने का सौभाग्य सब को प्राप्त नहीं होता। धन्य हैं वे लोग जो इसकी सेवा के व्रती हैं और धन्य है वह देश जहां ऐसे व्रती लोगों की अधिकता है। भारतवर्ष में अनेक देशभाषाओं का प्रचार है। सन् १९०१ की मनुष्य गणना के समय १८५ भाषाओं का पता लगा था। इनमें से २३ युरोपीय भाषाएं हैं और १५ दूसरे एशियाई अफ्रिकन आस्ट्रेलियन देशों की हैं। शेष १४७ भाषाओं में से २ मालय ९२ इंडोचीनी और ४ ऐसी हैं जो गणना योग्य नहीं। शेष ४९ भाषाओं में से २४ द्रविण और २५ आर्य्य हैं। द्रविण भाषाओं में से तेलगू, तामिल, कनारी और मलयालम ये चार प्रधान हैं जिनका साहित्य ध्यान देने योग्य है और जिन में प्रत्येक के बोलने वालों की संख्या २० लाख से अधिक है। शेष २० असंस्कृत और अविकासित अवस्था में हैं और संभवतः समय पाकर वे लुप्त हो जांय। इन चारों मुख्य द्रविण भाषाओं में से तेलगू प्रधान है और इसके बोलने वालों की संख्या २ करोड़ से अधिक है। यह भाषा भारतवर्ष की आर्यभाषाओं से बहुत ही भिन्न है। इसका व्याकरण, इसकी शब्दावली, सारांश यह कि इसकी सारी बनावट किसी दूसरी भाषा से नहीं मिलती। सम्भव है कि यह तामिल मलयालम को अपने उदर में लीन कर ले। कनाड़ी की बनावट मराठी से बहुत कुछ मिलती जुलती है। २५ आर्यभाषाओं के बोलने वालों की संख्या २२ करोड़ के लगभग है और इनका प्रचार भारतवर्ष के अधिक भाग में है। इनमें से १६ तो ऐसी हैं जिनके बोलनेवालों की संख्या १० लाख से अधिक है और ७ ऐसी हैं जो एक करोड़ से अधिक सेवकों के रखने का अभिमान कर सकती हैं। इन सातों के नाम ये हैं:—

बंगला—	४. ४६, २४, ०४
पश्चिमी हिन्दी—	३, ९३, ६७, ७७
पूर्वी हिन्दी--	२, ०९, ८६, ३५
बिहारी--	३, ७०, ७८, ९९
मराठी--	१, ८२, ३७, ८९
पंजाबी--	१, ७०, ७०, ९६
राजस्थानी--	१, ०६, १७, ७१
	१८, ८२, ६१, ७३

इस प्रकार मुख्यआर्यभाषाओं के बोलने वालों की संख्या ६ करोड़ के लगभग है। अब यदि पूर्वी और पश्चिमी हिन्दी बोलने वालों की संख्या ही ले ली जाय तो वह ६ करोड़ से अधिक होती है जितने सेवक और किसी भाषा के नहीं हैं। यदि हम हिन्दी से मिलती हुई दूसरी भाषाओं (यथा बिहारी, पंजाबी, राजस्थानी) की भी गणना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके साथ कर लें तो इसके सेवकों की संख्या १२ करोड़ ५२ लाख हो जाती है। इस प्रकार भविष्यत् में हिन्दी, बंगला मराठी और तेलगू यही चार भाषाएं ऐसी हैं जिनमें परस्पर उच्च आसन ग्रहण करने के लिये स्पर्धा हो सकती है। परन्तु हिन्दी के बोलनेवालों का सामना करने का साहस किसी को नहीं हो सकता। यदि इसके समझने वाले भी सम्मिलित कर लिए जांय तब तो यह एक प्रकार से अजित हो जाती है और यदि इन लोगों में एका रहा और वे अपनी मातृभाषा की सेवा में दत्तचित्त रहे तो निस्संदेह यह एक दिन सर्वोच्च आसन पर विराजमान होगी। अंतएव हम हिन्दीभाषियों के लिये यह बात बड़े गौरव तथा अभिमान की है और हम लोगों का यह परम धर्म्म है कि इसके हित साधन में तत्पर रह कर अपने कर्तव्य का पालन करें।

इसी आशा से आप लोग यहां निमंत्रित किए गए हैं कि इन बातों का विचार करें कि हिन्दी की उन्नति किस प्रकार हो सकती है, उसका साहित्य कैसे भरा जा सकता है, उसके प्रचार में सुगमता कैसे हो सकती हैं, वह राष्ट्रभाषा कैसे बन सकती है और उसके द्वारा देश में विद्या का प्रचार कैसे हो सकता है। महशयो! सूक्ष्म रूप से येही प्रश्न हैं जिन पर विचार करके भविष्यत् कार्य्य प्रणाली को स्थिर करने के लिये आपलोगों को कष्ट दिया गया है। इनमें से प्रत्येक प्रश्न पर अपने विचारों को प्रगट करके मैं व्यर्थ आपका समय नहीं लिया चाहता। सम्मेलन समिति ने प्रस्तावित मन्तव्य आप लोगों की सेवा में उपस्थित कर दिए हैं। उनके पढ़ने से ही आप लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो गया है और निस्संदेह आप लोगों ने इनके सम्बन्ध में पूर्वापर का विचार किया होगा। इस अवस्था में मेरे कुछ विशेष निवेदन करने की आवश्यकता नहीं है फिर भी आधुनिक हिन्दी के प्राण उसके उद्धारक और उन्नायक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के इन महत्वपूर्ण वाक्यों पर आपका ध्यान दिलाऊंगा—

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटत न हिय को सूल॥ १॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब,
उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु,
प्रथम जु सबको मूल॥ २॥
विविध कला शिक्षा अमित,
ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु,
भाषा मांहि प्रचार॥ ३॥
प्रचलित करहु जहान में,
निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में,
फैलावहु यह रत्न॥ ४॥

प्यारे हरिश्चन्द्र ने बहुत पहले ही हमारे लिये पथप्रदर्शन करा दिया है। अब केवल देश काल पात्र पर विचार कर इसी पथ के पथिक बनना और दृढ़ चित्त हो निर्दिष्ट स्थान पर दृष्टि रखते हुए अपनी यात्रा को पूर्ण करना ही हमारा कार्य है। मुझे विश्वास है कि इस सम्मेलन द्वारा हमारे इष्ट की सिद्धि होगी और इसका फल बहुत ही मधुर होगा तथा भारतवासी और विशेष कर उनमें से हिन्दी भाषीमात्र उसके रसास्वादन से तृप्त और उत्साहित होंगे। महाशयो! एक बात पर मैं आपका ध्यान विशेष रूप से दिलाया चाहता हूं। इस सम्मेलन की ओर केवल हिन्दी भाषी ही अतृप्त नेत्रों से नहीं देख रहे हैं परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक अन्य आर्यभाषाभाषी भी उत्साह उत्कंठा और प्रेम की दृष्टि से देख रहे हैं। इस स्थान पर मैं उस कानफरैन्स का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं जो सन् १९०९ में बड़ोदा में हुई थी। इस कानफरेन्स में सम्मिलित होने वाले अधिकांश ऐसे महानुभाव थे जिनकी हिन्दी मातृभाषा नहीं है परन्तु इन सब लोगों ने मुक्तकंठ से इस बात को स्वीकार किया कि देवनागरी अक्षर तथा हिन्दी भाषा सारे भारतवर्ष में आदरणीय हो। हमारा उत्साह इस बात को जान कर और भी बढ़ जाता है कि इसके सञ्चालक श्रीमान् बड़ोदानरेश तथा प्रसिद्ध देशभक्त स्वर्गीय रमेशचन्द्रदत्त और डाक्टर रामकृष्ण गोपाल भंडारकर थे। इसलिये जहां आपका कार्य कुछ कठिन हो गया वहां साथ ही यह बात है कि यह अवस्था आप के लिये अत्यन्त गौरव तथा उत्तरदायिता की है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप लोग इस बात पर ध्यान रखकर अपने कार्य में दत्तचित्त हो कर लगेंगे और भारतवर्ष के आर्य भाषा भाषियों को अपने निष्पक्ष विचार और अपनी कर्तव्यनिष्ठा से संतुष्ट, उत्साहित और आनन्दित करेंगे।

इस सम्मेलन को फलीभूत करने में अनेक महाशयों ने अनेक प्रकार से हमारी सहायता की है जिन सब के हम अत्यन्त अनुगृहीत हैं। हम समाचारपत्रों के सम्पादकों के भी बाधित हैं। प्रायः सभी हिन्दी पत्रों ने सम्मेलन का प्रबन्ध करने में हमारा उत्साह बढ़ाया है। नवरात्र में इस सम्मेलन को करने के कारण कुछ मतभेद अवश्य था परन्तु हम लोग विवश थे। जितने हिन्दी प्रेमियों की सम्मति हम लोगों के पास आई उनमें से अधिक महाशयों ने यही समय पसंद किया।

अस्तु महाशयो, मैं नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से आपको निमंत्रण स्वीकार करने के लिये धन्यवाद देता हुआ और साभिमान आप का हृदय से स्वागत करता हुआ अब यह प्रार्थना करूंगा कि इस सम्मेलन का सभापति चुन कर आप इस शुभकर यज्ञ को प्रारंभ कीजिए। ऐसे बड़े महत्व के कार्य्य के लिये एक योग्य और मान्य हिन्दी सेवक का सभापति होना भी आवश्यक ही है। यद्यपि आप लोग इस सम्बन्ध में अपनी इच्छा को पहिले ही से प्रगट कर चुके हैं तथापि प्रचलित रीति के अनुसार सभापति का चुनाव इस सम्मेलन में होना उचित है। अतएव मैं पूज्यवर महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी से प्रार्थना करता हूं कि वे इस प्रस्ताव को आप लोगों के सम्मुख उपस्थित करने की कृपा करें।"

इसके अनन्तर महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी के प्रस्ताव, पंडित श्यामबिहारी मिश्र के अनुमोदन तथा कई सज्जनों के समर्थन पर माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय सम्मेलन के सभापति चुने गए। मालवीय जी ने सभापति का आसन ग्रहण कर निम्नलिखित गंभीर और सरस वक्तृता दी।

"मुझको बहुत से लोग जानते हैं कि मैं वाचाल हूं लेकिन मुझको जब काम पड़ता है तब मैं देखता हूं कि मेरी वाणी रुक जाती है। यही दशा मेरी इस समय हो रही है। प्रथम तो जो अनुग्रह और आदर आप लोगों ने मेरा किया है उसके भार से ही मैं दब रहा हूं, इसके उपरान्त मेरे प्रिय मित्रों और पूज्य विद्वानों ने जिन शब्दों में मेरे सभापतित्व का प्रस्ताव किया है उसने मेरे थोड़े से सामर्थ्य को भी कम कर दिया है। सज्जनों! मैं अपने को बहुत बड़भागी समझता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि मैं उन प्रशंसावाक्य के सर्व हिस्से का भी अपने को पात्र समझता जो इस समय इन सज्जनों ने मेरे विषय में कहे हैं। हां, एक अंश में मैं बड़भागी अवश्य हूं। गुण न रहने पर भी मैं आप की मण्डली में गुणी के समान सम्मान पाता हूं। इसी के साथ मुझको खेद होता है कि इतने योग्य और विद्वानो के रहते हुए भी मैं इस पद के लिये चुना गया। फिर भी मैं आप के इस सम्मान का धन्यवाद करता हूं, जो अपने मेरा किया है। मेरा चित्त कहता है, कि इस स्थान में उपस्थित होने के लिये हमारे हिन्दी संसार में अनेक विद्वान थे और हैं जिन में कुछ यहां भी उपस्थित हैं और जिन को यदि आप इस कार्य्य में संयुक्त करते तो अच्छा होता और कार्य्य में सफलता और शोभा होती। अस्तु, बड़ों से एक उपदेश मैं ने सीखा है। वह यह है, कि अपनी बुद्धि में जो आवे उसे निवेदन कर देना। मित्रों की आज्ञा, मित्रों की मण्डली की आज्ञापालन करना मैं अपना परम धर्म्म समझता हूं। अनुरोध होने पर अन्त में मैं ने अपने प्यारे मित्रों से प्रेमपूर्व्वक निवेदन किया कि साहित्य सम्मेलन जिसका सभापति होने का सौभाग्य मुझे प्रदान किया गया है उसके कर्त्तव्य का पालन मेरा परम धर्म्म है। मैं आप से दूर रहता हूं। तो भी मैं कदाचित निर्भय कह सकता हूं कि हिन्दी साहित्य का रस पान करने में मुझको अन्य मित्रों की अपेक्षा कम स्वाद नहीं मिलता। उसके स्वाद लेने में मैं अपने किसी मित्र से पीछे नहीं। किन्तु अनेक कामों में रुका रहने के कारण मैं आप के बाहरी कामों का करने वाला सेवक हूं। इस काम के लिये मैं अपने को कदापि योग्य नहीं समझता हूं और इस अवसर में जिस में आप को पूर्व्व उन्नति के दृश्यों को देखना चाहिये था, किस में हिन्दी की भावी उन्नति का पथ प्रशस्त करना चाहिये था, किसी और ही मनुष्य को इस स्थान में बैठना चाहिये था; इस के योग्य मैं किसी प्रकार नहीं। अब यदि मैं इस स्थान में आकर आप की आज्ञा पालन करने का यत्न न करूं तो इस से अपराध होता है। केवल इसी कारण मैं इस सम्मान का धन्यवाद देता हूं और इस समय इस स्थान में आप लोगों की सेवा करने को तय्यार हुआ हूं।

हिन्दी साहित्य--सम्मेलन के विषय में जो मतभेद हो रहा है, जैसा कि मेरे प्रथम वक्ता महाशय ने कहा, इस में कोई संदेह नहीं, उसे स्वीकार करना चाहिये। हठधर्म्मी अच्छी नहीं। अनेक विद्वानों के मत से यह समय सम्मेलन के लिये उपयुक्त नहीं। नवरात्र दुर्गादेवी के पूजन का समय है, नवरात्र में सरस्वती शयन करती हैं। प्राचीन रीति के अनुसार तीन दिन सरस्वती शयन के दिन हैं। यह नियम आर्य्यजाति ने इस लिये रक्खा कि तीन सौ सत्तावन दिन संसार के व्यवहार करो, अपने मस्तिष्क को पीड़ा दे लो, किन्तु जाति की रक्षा के लिये इन तीन दिनों में लेखनी मत उठाओ, पत्रा मत पढ़ो, इन दिनों सरस्वती शयन करती है। ऐसे समय में मेरे मित्रों ने आप महाशयों को इधर उधर से खींचकर बुलाया है और इस के लिये मेरी बुद्धि में आता है कि मुझको आप के सामने उनकी ओर से उत्तर देना चाहिये। इसमें मैं इतना ही कहूंगा कि जितना मतभेद हो उसे आप को स्वीकार करना चाहिये और जिन लोगों का मत नहीं मिलता उन के मत का आदर करके उन से यही कहना चाहिये कि अब से यह समय उन्नति का होगा। इस के विचार में यह मेरी बुद्धि में आता है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लिये यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय बहुत ही उपयुक्त है। हिन्दी की दशा इस समय शोचनीय हो रही है। हिन्दी-साहित्य के इस शयन की अवस्था में सरस्वती शयन कैसा? इस ध्यान से हमारे हिन्दी प्रेमियों में बहुत से लोगों का यदि यह विचार है कि सरस्वती शयन कर रही हैं तो इससे क्या होता है? हम लोग इस सम्मेलन में उपयुक्त यत्न कर सरस्वती को जगायें। बात भी ऐसी ही है। जहां रात होती है वहीं सूर्य्यनारायण की लालिमा दिखाई देती है। रात के अन्धकार के पश्चात प्रातः काल होता है तो उस को देखना अच्छा लगता है। ऐसी अवस्था में इस सरस्वती शयन का समय मुझ को आशा देता है कि हिन्दी भाषा के शयन के समय में जब साहित्य-सम्मेलन होता है तब इस सरस्वती शयन के समय के उपरान्त जैसे विजयादशमी का दिन आता है वैसे ही मुझको विश्वास है कि सोई हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य के जागने का समय निकट है। प्राचीन समय से लोग दुर्गा अष्टमी में विद्या की वृद्धि के लिये देवी की उपासना करते आते हैं। जिस तरह पहिले उसी तरह आज भी हिन्दुस्थान में हिमालय के ऊंचे शिखर और लङ्का के छोर तक सहस्त्रों करोड़ों हमारे भाई इस नवरात्र में दुर्गा जी की स्तुति करते हैं। एक ही विद्या है, एक ही भाव है, केवल भाषा इसे पृथक करती है। तो इस से क्या हो सकता है? जब हम अपनी भाषा के साहित्य की उन्नति के दुःख में पड़े हुए हैं तब हमें क्या उचित नहीं कि इसकी उन्नति के लिये सब तरह के यत्न करें और उन के फल उपलब्ध कर उनका प्रकाश करें? (हर्ष नाद) मुझे आशा और विश्वास है कि आप के चित्त में मेरी बातें आ गई होंगी। और बातों में यह बात भी निवेदन करना है कि इस के उपरान्त विजयादशमी का दिन आता है। यह विजयादशमी वही विजयादशमी है जिस में भगवान रामचन्द्र जी ने राक्षसों का नाश करके देश में फिर से सुख शान्ति की मन्दाकिनी बहाई थी। यह वही विजयादशमी है जिसकी गूंज आज भी हिंदुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुनाई पड़ती है, जिस की प्रतिमा का अनुकरण आज भी हिंदुस्थान के नगर में लीलाओं द्वारा किया जाता है। देशी राज्यों में उस का अनुकरण किया जाता है जो कुछ पहले होता था, वही आज भी हो रहा है। पुराने समय में भगवान रामचन्द्र जी ने किया, अब वह देशी राज्यों में होता है। वही मारू बाजा बजता है, वही आर्य्यों के राजा महाराजाओं के विजय का डङ्का बजता है। अब विजय नहीं है, उनका शब्द है, उसे तो सुन लीजिये। आज भी केसरिया जामा पहिन राजे महाराजे अपने अपने गढ़ों से निकलते हैं। शक्ति के बढ़ाने में आज भी इस समय की प्रतिभा आप को दिखाई देती है। शक्ति ही ने यह बातें कीं और मेरे दुर्बल शरीर और चित में बल का सञ्चार किया। मैं आशा करता हूं कि मेरे और भाइयों के चित्त में भी इसी तरह बल का सञ्चार हुआ होगा। ऐसी दशा में हम लोग मिले हैं और मैं आशा करता हूं कि जो विरोध इस समय के ठन जाने का हुआ है उसको अब इसी वक्तृता के साथ समाप्त कर दीजिये। हम सब यही आशा करते हैं कि सङ्कट के समय में बड़े कार्य्य हो जाते हैं और इस दृष्टि से जो कुछ भूल चूक हुई हो उसको भुलाकर एकस्वर से, एक उद्देश्य से, हिन्दी की उन्नति के विचार से सम्मेलन होना चाहिये।

सम्मेलन हुआ है सम्मेलन के लिये। इसमें विजयादशमी का उत्सव मनाने का कुछ प्रयोजन नहीं। इन दिनों जितनी लीलायें होती हैं, उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य यही है कि एक दिन भारतवर्ष में ऐसा था कि विजय का डंका बजता था। इस दशहरे में इस सम्मेलन का भी यही उद्देश्य है और बहुत कुछ सम्भावना इस बात की होती है कि कोई रोग इस देश में यदि आगया हो तो सब एकत्र हो उसे मिटाने का प्रयत्न करें। गांव गांव और ज़िले ज़िले के बाहर लोग एक स्थान में बैठ कर परामर्श करें कि किस प्रकार ऐसी बला टल सकती है। दूसरा सम्मेलन इस श्रेणी का होता है कि काम चल रहा है लेकिन अच्छी तरह नहीं चल रहा है इसलिये यद्यपि कुछ सन्तोष का विषय है तथापि विशेष रूप से एकत्र होकर इस बात का विचार किया जाता है कि कार्य कैसे चले। मेरी बुद्धिमें तो हिन्दी का ऐसा सौभाग्य नहीं है। हम लोग वर्त्तमान समय में जो मिले हैं वह इस दूसरी श्रेणीका सम्मेलन है। कुछ लोगों के मत में हमारी उन्नति कुछ भी सन्तोषजनक नहीं है। अन्य लोगों के विचार ऐसे हैं कि यह कहना ठीक ठीक है। फिर भी प्रत्येक दशामें यह सम्मेलन आवश्यक हो गया है। अब इस सम्मेलन में यदि हम मिले हैं तो दूसरी या तीसरी कक्षा, जिसको ले लीजिये, उसीके अनुसार पहिले यह विचार कीजिये कि हमारी अवस्था क्या है। जब कोई वैद्य बुलाया जाता है तब निर्दिष्ट स्थान में पहुंच कर पहले वह यह जानना चाहता है कि रोगी की दशा क्या है, रोग कहां तक बढ़ा है, कितनी आशा है, कितना घटा है, रोगी में कितना बल आया है। यह आवश्यक है कि हम पहिले हिन्दी की दशा विचारें। किन्तु इससे पहिले कि हम इस बात का बिचार करें हमारे एक मित्र ने प्रश्न किया है कि पहिले यह तो बतलाइये कि हिन्दी है क्या? यह बड़ा टेढ़ा प्रश्न उठा है कि हिन्दी क्या है। ऐसी दशा में पहिले मैं इसीको लेता हूं। मुझको दुःख है कि मैं न संस्कृत का ऐसा विद्वान हूं कि इस विषय में प्रमाण के साथ कह सकूं, न भाषा का ऐसा विद्वान हूं कि इस विषय की चर्चा चलाऊं। किन्तु मैं आपके संमुख निवेदन करता हूं कि जब प्रमाण की रीति से कोई कुछ न कह सके तो उसका धर्म्म है कि वह अपने विचारों को उपस्थित करके जो प्रमाण दे सकता हो उन्हीं को दे। हिन्दी के विषय में बहुत सा विवाद है। हिन्दी के सम्बन्ध में हमारे देश के लिखने वालों में जो हुए वह तो हुए ही, हमारे यूरोपियन लिखनेवालों में विलायत के डाक्टर ग्रियर्सन एक बड़े शिरोमणि हैं। (हर्षध्वनि) आपने हिन्दी की बड़ी सेवा की है और हिन्दी की उन्नति में बड़ा यत्न किया है। आपने एक स्थान में लिखा है कि हिन्दी यूरोपियन सन् १८०३ ई० के लगभग लल्लू लालजी से लिखवाई गई। और भी लोगोंने इसी प्रकार की बात कही है। जो विदेशी हिन्दी के विद्वान हैं, वह तो यही कहते आए हैं कि हिंदी कोई भाषा नहीं है। इस भाषा का नाम उर्दू है। इसीका नाम हिंदुस्थानी है। यह लोग यह सब कहेंगे, किन्तु यह न कहेंगे कि यह भाषा हिंदी है (लज्जा)। लज्जा तो कुछ नहीं है, विचार की बात है। सज्जनों! ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित कितने ही अङ्गरेज अफसरों ने मुझसे पूछा था कि हिन्दी क्या है? इस प्रांत की भाषा तो हिंदुस्तानी है। मैं यह प्रश्न सुन दङ्ग रह गया। समझाने से जब उन्होंने स्वीकार नहीं किया तब मैंने कहा कि जिस भाषा को आप हिंदुस्थानी कहते हैं, वही हिंदी है। अब आप कहेंगे कि इसका अर्थ क्या हुआ? इसका अर्थ यह है कि न हमारी कही आप मानें, न उनकी कही। इसमें न्याय पूर्वक विचार कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर ग्रियर्सन का क्या कहना है ? मैं उनका सम्मान करता हूं किंतु उनकी बात पर न जाकर हमें यह देखना चाहिये कि यथार्थ तत्व क्या है । यहां इस मण्डली में बड़े बड़े विद्वान और विचारवान पुरुष हैं, वह इसे अच्छी रीति से कह सकेंगे। इसके विचारने में हमको अपने विचारों का दिग्दर्शन करना चाहिये । इसमें बहुत कुछ अन्तर हो सकता है । किन्तु मूल में कोई अन्तर हो नहीं सकता । हिंदी भाषा के सम्बन्ध में विचार करते हुए सब से पहिले संस्कृत की आकृति एक बार ध्यान में लाइये, हिंदीभाषा की आकृति को ध्यान में लाइये। इसके पीछे आप विचारिये कि हिंदी कौन भाषा है और उसकी उत्पत्ति कहां से है । संस्कृत की जितनी बेटियां हैं उनमें कौनसी बड़ी बेटी है । संस्कृत की बेटियों में हिंदी का कौन सा पद है । इसका संस्कृत से क्या सम्बन्ध है । संस्कृत, जैसा कि शब्द कहता है, नियमों से बांध दी गई है । जो व्यर्थ बातें थीं, वह निकाली गईं, अच्छी अच्छी बातें रक्खी गईं, नियमों और सूत्रों से बंधे शब्द रक्खे गये, जो शब्द नियम विरुद्ध थे उनके लिये कह दिया गया कि यह नियम से बाहर हैं । नियमबद्ध शब्दों का व्याकरण में उल्लेख हो गया । आप जानते हैं कि संकृत से प्राकृत हुई । जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत कभी बोली नहीं जाती थी, वह संस्कृत को नहीं जानते । वे थोड़ी प्राकृत पढ़ें तो उनको मालुम हो जायगा कि प्राकृत तो बोली जा नहीं सकती । संस्कृतके बोले जाने में कोई सन्देह नहीं । संस्कृत से प्राकृत हुई । उसके पीछे सौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री । कदाचित आपके ध्यान में होगा, कि दण्डी ८ वीं शताब्दि में थे । अपने समय में उन्होंने यह लिखा था कि भारत में चार भाषायें हैं—महाराष्ट्री, सौरसेनी, मागधी और भाषा । यही चार भाषायें चलीआई हैं ।

अब आपको मालूम हो गया होगा कि जो महाराष्ट्र भाषा थी मागधी भाषा थी इनके बीच में बहुत भेद था । मेरे शब्दों पर ध्यान दीजिये इन भाषाओं में संस्कृत भाषा के शब्दों के रूपका अनुरूप आपको मिलता है । यह जितना हिन्दी भाषा में मिलता है, उतना दूसरी किसी भाषा में नहीं मिलता । संस्कृत के शब्दों को ले लीजिये, अब देखिये कि हिन्दी में यह बात कहां से आई संस्कृत से इन भाषाओं का क्या सम्बन्ध था। शकुन्तला में "तुक मणि दबे बलीयमसणाणि" कहां से आया होगा। एक शब्द को आप लीजिये । उसको देखिये कि प्राकृत में उसका क्या रूप है और भाषा में क्या हुआ । इस प्राकृत को देखने से आपको मालूम होगा कि संस्कृत शब्दों का प्राकृत रूप कयासे क्या हो गया । भाषा के कितने ही रूप आपको मिल सकते हैं । परन्तु यह बात मेरे कहने से न मानिये । मेरे सामने इस समय चन्द कबि के रासोमें बहुत से रूप ऐसे हैं जिनको इस मण्डली में पंडित सुधाकर जी और दो तीन को छोड़ कर बहुत कम लोग जानते हैं। मैं तो उसका चौथाई भी समझ नहीं सकता । मैं जो देखता हूं वह आपके सामने उपस्थित करता हूं । आप ही देखकर यह कहें कि कौन ठीक है । संस्कृत से पाली, पालीसे प्राकृत और प्राकृत से तीसरा रूप हिन्दी दिखाई दिया । अब आप थोड़े से शब्दों पर बिचार करें । अग्ग का आग और योग का याग हो गया । चन्दके काव्य में तुलसीदास की एक चौपाई को बीच में यदि मैं रख दूं तो बहुत सज्जनों को यह न मालूम होगा कि दोनों के बीच कितना अन्तर है । संबत् ११२५ में चन्द कबि ने इसको लिखा । उनकी भाषा में जितने रूप देखते हैं वह रूप इस भारतवर्ष की किसी दूसरी भाषा के रूप से नहीं मिलते। मिलते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी से और उतने ही जितनी आजकी अंग्रेजी चौसरकी अङ्गरेजी से मिलती है। ऐसी दशा में यह कहना कि हिन्दी भाषा क्या है, इसका उत्तर यह है कि हिन्दी भाषा वह है जिसमें चन्द कविसे लेकर आज तक हिन्दी के ग्रन्थ लिखे गये। यह सही है कि पहिले इसका नाम भाषा था, हिन्दी भाषा या सूरसेनी।

क्या आप भाषा की उत्पत्ति पूछते हैं। कितने ही लोगों को अपनी मा का नाम नहीं मालूम। बहुत सी औरतें ऐसी हैं जिनको अपने लड़कों का नाम नहीं मालूम। प्रयाग और बनारस के कितने ही बालकों का नाम सिर्फ बच्चा है। पिता और दादा के नाम का पता लगाना और भी कठिन है। नाम रखते हैं किन्तु उसको याद नहीं रखते। अस्तु, देखना चाहिये कि चन्द के समय से जो भाषा लिखी जाती है वह एक है, उसीको हम हिन्दी भाषा कहते हैं। कभी कभी लोग उसका नाम बदल देते हैं। भीष्म को लीजिये देवव्रत उनका नाम था। जब उन्होंने पिता की प्रसन्नता के लिये राज्य त्याग किया, ब्रह्मचर्य अंगीकार कर कहा कि हम विवाह न करेंगे, केवल इस लिये कि पिता प्रसन्न होंगे, तब उस दिन से उनका नाम भीष्म हुआ, छठी के समय नहीं हुआ था। इसी तरह भाषा का भी नाम बदलता है। पहिले कुछ था, अब कुछ है। भाषा का नाम पहिले और था पर अब तो हिन्दी कह के इसे पूजते हैं, प्रेम करते हैं। इस हिन्दी भाषा का दूसरा प्रश्न यह उपस्थित होगा कि हिन्दी भाषा की और भाषाओं के साथ तुलना करने से क्या पता लगता है। इसमें भी मैं इतना कहूंगा कि हिन्दी सब बहिनों में मा की बड़ी और सुघर बेटी है। संस्कृत के बंश की बेटियों के २२ करोड़ बोलने वाले हैं, उनमें पांच या छः करोड़ मद्रास में तामिल और तेलगू बोलते हैं। उनकी भाषा में संस्कृत का भाण्डार भरा हुआ है, उनके वाक्यों में संस्कृत की लड़ी की लड़ी आती है। फलतः संस्कृत की महिमा इस देश में गाज रही है और बहुत दिन तक गाजेगी। अब रहा कि इन बहिनों में कौन बड़ी और कौन छोटी है। यह पक्षपात है कि हमारी भाषा हिन्दी है और हम हिन्दू हैं, हिन्दी का पक्ष करें या हमारा यह बिचार है कि (छोटे मुंह बड़ी बात होती है, मगर चित्त में जो कुछ है कह देंगे) दण्डी कविने भी उसमें पक्षपात किया है। किन्तु हिन्दी भाषा को यदि मैं आपके सामने यह कहूं कि यही सब बहनों में मा की अच्छी पहिली पुत्री है, अपने पिता और माता की होनहार मूर्ति है, तो अत्युक्ति न होगी। सौरसेनी में शब्द बंधे हुए हैं, फलते नहीं; महाराष्ट्री में उखड़ते पुखड़ते नाचते कूदते जाते हैं। आपको अनेक शब्द हिन्दी भाषा में मिलते हैं जिनके सात सात रूप हैं। भारतीय सभी भाषाओं में हिन्दी शब्दों की न्यूनाधिक झोली की झोली भरी पड़ी है। हां, यह मानना पड़ेगा कि इनके रूप में बड़ा परिवर्त्तन है। जैसे कि बनारस से नीचे बङ्गाल में चलिये तो आगे चलकर बिहार में बिहारी मिलेगी, बङ्गाल में जाइये तो लकारों का सङ्गीत पाया जाता है, हरिद्वार से जब गङ्गा चलीं और उनके सङ्ग में जो पत्थर के टुकड़े बहते हुए चले तो हरद्वार से काशी आते आते रगड़ते झगड़ते कोमल और चिकने हो गये, इसी प्रकार यह बिहार में गाजीपुर और बनारस से नीचे रगड़ कर प्रिय कोमल स्वरों के हो गये। जब आप बंगाल में पहुंचे तब आप को कोमलता का घर मिला। वहां आपकी भाषा भी अधिक कोमल दिखाई दी। यहां की भाषा का रूप देख हमारे युरोपियन विद्वान और देशी विद्वान भी भ्रम में पड़ गये हैं कि क्या हिन्दी महाराष्ट्री और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौरसैनी, पञ्जाबी और बंगला, सब वस्तुतः एक हैं। हमें भी स्वीकार कर लेना चाहिये कि इनके बीच बड़ा अन्तर हो गया है। संस्कृत शब्दों का हिन्दी ही में कितना परिवर्तन हो गया है। जो कर्ण था वह कान, नासिका थी वह नाक है, जो हस्त था वह हाथ है, पानीय का पानी है। यह परिवर्तन सभी जगह दिखाई देता है। लक्ष्मी को भाषा वालों ने लिखा लच्छमी या लक्खी। लच्छमी कहने में जो प्रेम आया वह लक्ष्मी कहने में नहीं। जैसे जैसे भाषा बंगाल की ओर बढ़ी वैसे वैसे कहा गया कि इसमें जितना कर्कशपन है उसे काट दो। अब बेटियों में बड़ा रूपान्तर हुआ। यहां तक यह कह दिया कि भाषा की उत्पत्ति क्या है। सिवाय इसके यह निवेदन करता हूं कि जितने और प्रमाण हैं जिनसे भाषा की अवस्था को जान सकते हैं, अब उसको जांचना चाहिये। भाषा के रूप की शब्दमाला क्या है? इन दोनों के विचारों से हिन्दी भाषा ही प्राचीन है। डाक्टर ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है। आप कहेंगे कि इसमें कौन फूहड़ मालूम होती है। यह मेरा कहना आवश्यक भी नहीं है। यह समझा जा सकता है कि मैं हिन्दू हूं और पक्षपात से कहता हूं।

आज मैं अपने बङ्गाली हिन्दुस्थानी गुजराती भाइयों से पुकार कर कहता हूं कि भाषा एक चली आई और संस्कृत भी एक है। जब प्राकृत हुई तब अङ्ग की प्राकृत हो गई किन्तु मूल में एक ही रही। जितनी भाषायें हैं, हमारी हैं। बङ्गाली हमारी भाषा, पञ्जाबी हमारी भाषा और गुजराती हमारी भाषा है। अब इसके विचार से, कौन किनको कहे कि कौन बुरी है।

हिन्दी अपनी बहिनों में सब से प्राचीनतम और बड़ी बहिन है और माता की रूप आकृति इस से बहुत मिलती जुलती है। यह सब जो बड़ी छोटी बातें मैं आप से निवेदन करता हूं इसका दूसरा प्रमाण मिलना चाहिये। शब्दमाला, शब्दों की रचना यह तो हो गया। दूसरा प्रमाण है ग्रन्थमाला। अधिक हिंदी ग्रन्थमाला का, भाषाओं की ग्रन्थमाला का शिवसिंहजी ने, जैसा कि मालूम होगा, इन बातों को दिखाया है। प्रथम हिन्दी भाषा का काव्य ७७० में हुआ। भाषा के ग्रन्थों में राजा मान की सहायता और आदेश से दूसरा जो हमें मिलता है, वह पूज्य कवि ८०२ में में हुआ और तीसरा लेख जो मिलता है, वह राव खुमान सिंह ने एक ग्रन्थ हिन्दी में लिखा। ९०० में खुमान रासो, पृथ्वीराज रासो, प्रसिद्ध किया। चौथा ग्रन्थ, जैसा कि मैं अभी आप से निवेदन कर चुका हूं, चन्द कवि कृत रासो है। जो भाषा के विद्वान हैं और जो भाषा की रूप-रचना जानते हैं, वह बिना शङ्का के यही कह देंगे कि जिस भाषा में चन्द कवि ने ग्रन्थ लिखा है वह भाषा बहुत पहिले से हुई है। यह नहीं हो सकता कि जिसकी भाषा प्रिय होने लगी उसी में ग्रन्थ लिख डाला। चन्द कवि से पहिले अनेक कवि हो चुके थे। उन्होंने उर्दू में लिखा, हिन्दी में नहीं। हिन्दुओं में ब्राह्मण और कायस्थ उर्दू अधिक पढ़नेवाले थे। पर हमारे क्षत्रिय भाइयों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। उन में पढ़ने का प्रचार कम हुआ। वह इस के बदले जमींदारी और खेतीबारी में रहे और उसी से प्रेम रहा और विद्या को कम पढ़ा। वैश्य जो हमारे भाई हैं, उन्हीं ने कहा, कि जिस को नौकरी करना हो वह पढ़ने जाये; उन्हे इतनी फुरसत कहां। वह दूसरी ओर उन्नति करते रहे। आप को उर्दू के ज्ञाता मिलेंगे—ब्राह्मण और कायस्थ। ब्राह्मणों में का-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीरी ब्राह्मण बुद्धि में प्रखर, भाषा के विशेष योग्य थे। इनका प्रेम उर्दू की ओर बढ़ गया और वे इसी तरफ झुके। कायस्थ भाइयों का भी यही हाल हुआ कि सरकारी दफ़्तरों में उर्दू राज रही थी, हिन्दी सभ्य भाषा भी नहीं समझी जाती थी। हमारे पण्डित मथुरा प्रसाद, राजा शिवप्रसाद कह गये हैं कि हिन्दी भाषा को यह कहना कि हिन्दी कोई भाषा ही नहीं अनुचित है। यह दशा थी। इसी कारण से हिन्दी की उन्नति न हुई। अब क्या होता है। इस बीच में और और प्रान्तों में उन्नति हुई। बङ्गाल में, जैसा कि मैं आप से निवेदन कर चुका हूं, भाषा का बड़ा सुधार हुआ। एक अंश में सर माइकल मधुसूदन को लीजिये। हेमचन्द्र, बङ्किमचन्द्र इत्यादि बङ्गाली बड़े बड़े कवि हुए हैं। उन्हों ने उपन्यास, इतिहास और काव्य से अपनी भाषा को बनाया, सजाया। इसके उपरान्त कबीरदास हुए, १५४० में मलिक मुहम्मद जायसी हुए। गोस्वामी तुलसीदास जी, श्रीकेशवदास जी, दादू दयाल जी, गुरु गोविन्द सिंह जी, बिहारी लाल को ही देखिये। हर एक की भाषा से हिन्दी के पुष्ट रूप दिखलाई पड़ रहे हैं। यह सिद्ध है कि भाषाओं में मरहठी भाषा में, जो सब से पुष्ट है, नामदेव १३ वीं सदी में थे। बङ्गला भाषा में, जिसे आज देख कर आनन्दित होते हैं और यदि सच कहूं तो ईर्षा भी होती है, चण्डीदास जी बड़े प्रसिद्ध १४ वीं सदी में हुए। चन्द के समय तक मराठी में, न बङ्गला में, न गुजराती, में तीनों में इतना बड़ा काव्य नहीं था जितना बड़ा काव्य चन्द कवि का हिन्दी में मिलता है। इस प्रकार से हिन्दी भाषा आरम्भ हुई। यदि यह जानना चाहते हैं कि किसका भाण्डार किसका रूप और कौन अधिक थी, तो इस के देखने के लिये मैं आप के सम्मुख कुछ बातें उपस्थित करता हूं। यह जो सन् १८५७ ई० में विप्लव हुआ, उस समय से भाषाओं की ओर उन्नति हुई। १८३५ ई० में बङ्गाल में पञ्जाब में फारसी भाषा दफ़्तरों में थी। अंगरेज़ी गवरमेंट ने इसको मिटाकर मराठी, गुजराती, बंगाली और उर्दू को इनके स्थान में किया। वहीं से देशी भाषाओं की उन्नति की रेखा बंधी। अब इस बात का विचार कीजिये कि सन् १८३५ के पूर्व और १८५८ के उपरान्त इन सब भाषाओं का कैसा भाण्डार था, इनमें ग्रन्थमाला कैसी थी? ७७० से लेकर आप केवल बड़े बड़े कवियों को लीजिये। उनके ग्रन्थ आज तक हिंदी भाषा का भाण्डार भर रहे हैं। चंद कवि के रासो को ले लीजिये। लल्लूजी, कबीरदास, गुरु नानक जी, मलिक मुहम्मद जायसी, भीमदेव, तुलसीदास, सूरदास अष्टछाप, केशवदास, दादूदास, गुरु गोविन्दसिंह जी, बिहारीलाल, किस किसके नाम गिनाऊं। मुझे सब गिनाना भी नहीं। बिहारीलाल को ले लीजिये। इन्होंने १६५० के लगभग ग्रन्थ लिखा है। बहुत वृक्ष वाटिकाओं में उगते हैं, कितने ही आपसे आप उगते हैं, उनका झाड़ भी बड़ा फैला हुआ होता है। जैसे जैसे वे ऊपर उठते हैं वैसे वैसे उनकी छाया अधिक होती जाती है। कुछ ऐसे होते हैं, जिन को आप काटकर मट्टी को बना कर किसी स्थान में लगाते हैं और अपनी वाटिकाओं में उगाते हैं। इसी तरह भाषा में जो बहुत शब्द हैं, जैसे कर्ण से कान, हस्त से हाथ संस्कृत से उत्पन्न हुए हैं वे प्राकृत रूप में अपने से आप उपजे। जो शब्द संस्कृत के उठाकर रख दिये हैं, वह वैसे ही हैं जैसे कि गुच्छा; कितने ही वृक्ष थोड़े समय में सूख जायंगे, फिर उनमें शक्ति नहीं कि वह दूसरे फल उत्पन्न करें। जहां यह मुर्झाये, फिर इन्हें हटाना ही पड़ेगा। इसी प्रकार से हिन्दी भाषा के तद्भव शब्द जो हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह निज की सम्पत्ति हैं; उनके निज के अवयव पुष्ट हैं, वह फूलें फलेंगे और अपने आप बढ़ते चले जायेंगे। यह सब प्रबल और पुष्ट होते हैं। किन्तु जिन शब्दों में किसी का पैवन्द लगा दिया जाता है, वह बनने को बन जाते हैं किन्तु पुष्ट नहीं होते। जो लिये हुए शब्द हैं, उन में भाषा की शक्ति नहीं। बच्चा माता के दूध से जितना पुष्ट होता है, ऊपरी दूध से उतना पुष्ट नहीं होता; जो बच्चा धीरे धीरे माता का दूध पीता है वह पुष्ट होता जाता है और अन्त में संसार में काम करने योग्य होता है। फिर भी हरेक भाषा में हरेक तरह के शब्द मिलेंगे ही; जैसे भोजन में दाल भात रोटी इत्यादि। और संस्कृत की जितनी बेटियां हैं, वह सब भी मा के गहनों को पहनेंगी, चाहे वह अच्छा हो चाहे बुरा, सब मा का गहना है। उन में एक गहना दो गहना चार गहना मा का है। मा के गहने से बड़ा प्रेम होता है। उस समय उन को धारण करने में विशेष आनन्द होता है। किन्तु जो सब गहने मा के ही हों तो सब कहेंगे कि यह सब मा की सम्पत्ति है। इस लिये हिन्दी भाषा का यह सौभाग्य है कि उस के जो शब्द हैं वह सब माता के ही प्रसाद हैं। किन्तु माता ने कहा—हे बेटी! यह तेरे हैं; तू इसका व्यवहार करना। बिहार में, बङ्गाल में विद्यापति जी ने हिन्दी भण्डार से फूल पत्ते ले जाकर अपने काव्य ग्रन्थ को भरा है। इस प्रकार आप देखेंगे कि दक्षिण में मराठी में भी जो शब्द का मेल है, उस में जो कुछ तद्भव शब्द व्यवहार में लाये जाते हैं वह यहीं के हैं। हम आप "मुझ, तुझ" कहते हैं मराठी में "मुझा, तुझा" कहते हैं। हां यह मानना पड़ेगा कि इन शब्दों का उच्चारण बङ्गाल में और है, महाराष्ट्र में और। हमें इस बात की ईर्षा नहीं है; अगर वह सबकी मा नहीं तो मौसी है। हम तो सब के बालक हैं; सब के पैरों पर लोटेंगे। मा ने भोजन दे दिया तो ले लेंगे; मौसी ने दे दिया तो ले लेंगे। वह हमारी; हम उन के हैं। आप देखेंगे कि हिन्दी-भाषा में शब्दों का अधिक भण्डार है; यह बड़ा प्रबल है और हिन्दी की यह बड़ी सम्पत्ति है। इस प्रकार से आप की ग्रन्थमाला की शब्दावली का भण्डार भरा हुआ है। सन् १८३५ से १८५८ तक महाभारत का प्रथम अनुवाद हुआ। इस के उपरान्त एक विशेष दशा आई। आप जानते हैं कि रीति जो पड़ जाती है, वह छोड़े नहीं छुटती। जब जब जिस जिस स्थान में आप देखेंगे, लता वृक्ष के सहारे फैलती पायेंगे। सब से बड़ा सहारा प्रत्येक भाषा का राजा ही होता है। बिहारी ने जयपुर के महाराज के यहां जाकर अपनी कविता शक्ति का चमत्कार दिखाया। शिवाजी महाराज के आश्रम में भूषण कवि ने अपनी कविताशक्ति का परिचय दिया। एक ओर युद्ध में तलवार नाचती थी; दूसरी ओर उनकी कविता नाचती थी। राजा का आश्रय दो प्रकार का होता है। एक तो प्रत्यक्ष, दूसरा गुप्त। इन दोनों की आवश्यकता है; किन्तु इस समय मैं प्रत्यक्ष को ही लूंगा। जब अङ्गरेजी गवरमेण्ट इस देश में आई, तब उस ने बड़ी ही सुव्यवस्था की, जिस के लिये उसे सच्चे हृदय से धन्यवाद देना चाहिये। इसने इस देश में ऐसा नियम स्थापित किया जिस से आज इतना बड़ा समारोह हो रहा है। याद रहे कि कोई व्यक्ति चाहे वह ऊंचे घर का बालक ही क्यों न हो, जब गिरता है, तब बुरा गिरता है। यह पवित्र आर्य्य जाति जो अपनी प्राचीन महिमा से गिरी तो ऐसी गिरी कि फिरसे उसका पुनरुद्धार न हुआ! इस आर्य्य जाति के पतन के कारण इससे महाराष्ट्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सिक्खों का अलगाव हुआ। जबसे अङ्गरेजी गवरमेंट आई तब से आप देखते हैं कि विद्या की चर्चा बढ़ गई। यन्त्रालय आया, साथ ही साथ बड़ी भारी शिक्षा आई। आपने देखा होगा कि अङ्गरेज लोग अपनी भाषा की कैसी उन्नति करते हैं अङ्गरेज़ी गवर्नमेंट ने यहां आ अङ्गरेज़ी विद्या के प्रचार का उपाय किया; साथ साथ आपकी संस्कृत भाषा की उन्नति का भी पथ प्रशस्त किया। इस काशीपुरी में सबसे पहिले क्वीन्स कालेज और संस्कृ-कालेज स्थापित हुआ, जिससे हिन्दुओं की भाषा की रक्षा हुई। गवर्नमेंट के उत्तम कार्य्यों का धन्यवाद हम हिन्दू किसी प्रकार कर नहीं सकते और आज जो आपके भारतवर्ष में कुछ जनों में संस्कृत का प्रचार देख पड़ता है, इस काशी ही में धुरन्धर पण्डित मिलते हैं जिनका सम्मान बड़े बड़े लोग करते हैं, उसका अन्यतम कारण अङ्गरेज सरकार का संस्कृत प्रचार है। मैंने आपसे इसको सुनकर नहीं कहा है। डाक्टर बालेण्टाइन जब प्रिन्सिपल थे तब उन्होंने लेख लिखा था कि हमको केवल संस्कृत के ग्रन्थों का अनुवाद करके हिन्दी भाषा में प्रचार करना चाहिये; सो उन्होंने अपने समय में जो आवश्यक था वह कर डाला। किन्तु खेद की बात है कि इतना अवसर पाने पर भी हम जगाये जाने से भी आप से आप नहीं जागे। गवर्नमेंट की सहायता से भी नहीं जागे। इस प्रान्त में भाषा की उन्नति का बीज सबसे पहिले बोया गया था; किन्तु आज उसी प्रान्त की हिन्दी भाषा अपनी और बहिनों के सामने मुंह मोड़े खड़ी है। अब १८३५ के लगभग आ जाइये। उस समय गवर्नमेंट के सरकारी दफ्तरों में फ़ारसी में काम होता था। गवरमेंट ने १८३५ में यह आज्ञा दी कि हिन्दुस्थान की भाषायें भी काम में लाई जांय। इस आज्ञा के फल से इस प्रान्त में उर्दू जारी हो गई; हिन्दी जारी नहीं हुई; इसका फल यह हुआ कि हिन्दी की बड़ी अवनति हुई। यह सत्य है कि सन् १८४४ ई० में जब टामसन साहब लफ्टिनेण्ट गवर्नर थे, सरकार ने हिन्दी भाषा का पढ़ना पढ़ाना आरम्भ किया। यदि यह न हुआ होता, तो आज आपको हिन्दी के जानने वाले इतने भी न मिलते जिनसे लोगों को पढ़ाने का अवसर मिलता। फिर भी, अदालतों में हिन्दी के प्रवेश न करने से हिन्दी की उतनी उन्नति नहीं हुई। उर्दू सरकारी दफ़्तरों में जारी थी उसी का प्रचार था। फिर भी उर्दू का वैसा प्रचार नहीं हुआ जैसा होना चाहिये था। उर्दू पुस्तकों की उतनी उन्नति नहीं हुई जितनी बङ्गाली, महाराष्ट्री और गुजराती की। मैं जानता हूं कि मुसलमान अब जागे हैं, किन्तु पचास साठ वर्ष तक उन्होंने उर्दू की वैसी उन्नति नहीं की जैसी करनी चाहिये थी। उर्दू की उन्नति में बाधा पड़ने का एक कारण यह है कि उर्दू, विशेष करके वह उर्दू जिसे अधिकतर उर्दू के प्रेमी लिखते हैं, अरबी और फारसी के शब्दों से भरी होती है, जिसके जानने वाले लोग कम हैं और जिसके लिखने वाले लोग भी कम हैं। सन् १८५८ में जब गवर्नमेंट ने विद्या के विभाग के नियम बनाये; उन्हीं दिनों स्कूल के लिये हिन्दी-पुस्तकें छपवाईं और बहुतेरे विद्वानों की सम्मति ली। गवरमेंट आफ इण्डिया ने सन् १८७३ के लगभग २३१ पुस्तकों का सञ्चय किया। गवरमेंट की सहायता से आदित्यराम-जी ने एक दो अनुवाद अङ्गरेजी पुस्तकों के किये राजा शिवप्रसाद जी से सम्मति ली गई। लोगों को इस पर ध्यान देना चाहिये कि हिन्दू मुसलमान दोनों की तरफ से, जहां तक मुझको मालूम हुआ है, इन पुस्तकों के पढ़ने वाले अधिक नहीं थे;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिये दोनों की उन्नति नहीं हुई। और प्रान्तवालों ने जिन्हों ने अङ्गरेजी पढ़ी, उनकी दूसरी भाषा मातृभाषा थी; बङ्गालियों ने अङ्गरेजी पढ़ी; उन की दूसरी भाषा बङ्गला थी। बङ्गालियों को ले लीजिये, चार विद्वानों ने बङ्गाली भाषा को जन्म दिया। पचास वर्ष में बङ्गला ने ऐसी उन्नति की कि उस को देख कर न केवल सन्तोष ही होता है बल्कि ईर्षा भी होती है। मराठी में ऐसा ही हुआ कि जिन्हों ने अङ्गरेजी पढ़ी उन्हों ने साथ साथ अपनी भाषा भी पढ़ी। गुजरात में वर्नाक्यूलर सोसाइटी बनी। संस्कृत से अनुवाद करना आरम्भ किया गया; उन की भाषा की पुस्तकें जितनी बिकने लगीं, वह सभी को मालूम है। अनुवाद का अन्त नहीं। आज ऐसा होता है कि अङ्गरेजी भाषा में जो अच्छी पुस्तकें छपती हैं, उन का अनुवाद हो जाता है। इधर हिन्दू, मुसलमान, काश्मीरी, कायस्थ, हमारे सब भाइयों ने सिर्फ उर्दू लिखना आरम्भ किया। "गुलजारे नसीम" पण्डित दयाशङ्कर नसीम ने लिखी। हिन्दुओं को यह तो शौक हुआ कि वह लिखें,लेकिन हिन्दी में लिखने का शौक नहीं हुआ। पण्डित रतननाथ सरशार ने "फिसानये आजाद" लिख कर उर्दू भाषा को अनमोल हार पहना दिया। पर हिन्दी जानने वालों को उस हार का पता नहीं कि वह कैसा है-मूंज का हार है या किसका। यह सत्य है कि मुसलमान कवियों ने हिन्दी भाषा की भी सेवा की है। मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत लिखा है; जब तक हिन्दी भाषा रहेगी उनका नाम रहेगा। किन्तु मैं आप को यह दशा दिखलाता हूं कि काश्मीरी भाइयों ने जो लिखा वह उर्दू में। हमारे हिन्दू, भाइयों में कायस्थ भाइयों ने बहुत समय से बहुत कुछ लिखा किन्तु वह भी उर्दू में। उन्हों ने विज्ञान काव्य की कितनी ही पुस्तकें लिखीं। हिन्दू मुसलमानों द्वारा उर्दू की उन्नति का यत्न किया गया सही, किन्तु हमें तो बङ्गला की उन्नति और वृद्धि से सन्तोष होता है। मराठी गुजराती से भी ऐसा ही होता है। वहां विद्या सरस्वती आप ही आप चली आई। इधर हिन्दी के लिये काम करने वाले नहीं। यह दशा आप की है। १८३५ और ५८ से पहिले आप की हिन्दी भाषा अपनी मा की सुन्दर छवि को लिये हुए अपने भण्डार को भरे आनन्द के साथ बैठी हुई आप को देखती है। १८३५ और ५८ के बाद इसकी और बहिनें आगे बढ़ गईं, यह जहां की तहां रह गई। कहते हुए दुःख होता है कि जिस हिन्दी के लिखने वालों में चन्दकवि, तुलसीदास, सूरदास, बिहारी लाल हो गये हैं, बबुआ हरिश्चन्द्र हो गये हैं, वह हिन्दी आज अपनी बहिनों के सामने आंखें नीची किये खड़ी है। हिन्दी के प्रेमियों! तुम्हारे और हमारे लिये यह बड़ी ही लज्जा की बात है। यह सच है कि अङ्गरेज़ी कार्य्यालयों में हिन्दी का प्रचार अधिक नहीं। १८५८ में जब राजा शिवप्रसाद विद्यमान थे, उस समय अनेक सज्जनों ने इस बात को कहा था कि सरकारी दफ़्रों में हिन्दी भाषा का प्रवेश हो; किन्तु उस समय यह बात बातों ही में रह गई।

अन्त में सर एण्टनी मेकडानल का भला हो, उन्हों ने यह आज्ञा दी कि कचहरियों में जो दरख्वास्तें दी जावें वह हिन्दी उर्दू दोनों में लिखी जावें। उस समय से हमलोग हिन्दी भाषा की विशेष उन्नति करने लगे हैं। जब रोगी दुर्बल हो सन्निपात की दशा को पहुंच जाता है, तब पहिले उसका ज्वर छुड़ाया जाता है, फिर उसका आहार आदि ठीक किया जाता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त में यह पहाड़ हट गया। किन्तु बड़े धिक्कार और बड़े लज्जा की बात है कि यद्यपि यह पहाड़ हमारे मार्ग से काट कर हटा दिया गया, तो भी हम लोगों ने आज तक इस से पूरा लाभ न उठाया। हम वकील, हम मुख्तार, हम व्यवहार करने वाले महाजन और वह लोग जो कचहरी में वकालत करते हैं और अपने हिन्दू भाइयों के मुक़द्दमे में उनका धन व्यय कराते हैं, वह लोग भी हिन्दी भाषा की ओर से उदासीन हैं। कितने लोग हैं, जो जाति का उपकार करते हैं। कहते हैं कि जाति बिना भाषा जीवित नहीं रह सकती; जैसे कि नाल के बिना बालक नहीं जीवित रह सकता। किन्तु क्या यह बात सत्य है? ज़रा बङ्गाली मराठी आदि को देखिये। हिन्दी भाषा के कितने लोग हैं जिनको इस बात से दुःख और लज्जा होती है कि यह आर्य्यावर्त्त देश, जहां कि आप देखेंगे कि लाखों लोग ऐसे हैं जो अपनी मा की बोली से परिचय नहीं रखते। सब आशा उन्नति को छोड़ दीजिये। उन्नति करने वालों के सामने खड़ा होना छोड़ दीजिये। जब तक आप इस लज्जा को न मिटावें, अपनी मा की बोली न सीखें, तब तक आप मुंह न दिखायें। मातृभाषा के सीखने में कौन लज्जा करता है? अब आप लोग अपने हृदय में आज से इस बात का प्रण कर लें कि जब तक आप मातृभाषा को सीख न लेंगे तब तक आप मस्तक ऊंचा न करेंगे। कोई अङ्गरेज जो अंगरेजी भाषा से परिचित न हो या कोई और देश का पुरुष जो अपने देश की भाषा न जानता हो, क्या कभी गौरवान्वित हो सकता है? जब हमारी यह दशा है तब क्यों न इस भाषा की दुर्दशा होगी और क्यों न हम को औरों के सामने दुर्बलता स्वीकार करनी पड़ेगी? यह सत्य है कि कुछ लोग अपनी मातृभाषा का काम करते हैं; किन्तु ऐसे लोग कितने हैं? मेरा यह प्रस्ताव नहीं है मेरा यह निवेदन है, कि जो हुआ वह हुआ; अब क्या करना चाहिये। आप को यह आवश्यक है, कि सरकारी दफ़्तरों से जो नकलें दी जाती हैं, उन को आप हिन्दी में लें; जो डिगरियां तजवीजें आदि मिलती हैं, उन को आप हिन्दी में लें। यह सब आप के लिये आवश्यक है। गवर्नमेंट ने आप को जो अवसर दिया है, उसे आप काम में नहीं लाते। इस के उपरान्त यह भी सत्य है कि आज तक इस कारण से आप के अंगरेजी पढ़ने वालों में केवल उर्दू का अधिक प्रचार है। अब मैं यह आशा करता हूं और सोचता हूं कि जब तक यह प्रचार रहेगा, तब तक हिन्दी भाषा की उन्नति में बड़ी रुकावट रहेगी। उर्दू भाषा रहे; कोई बुद्धिमान पुरुष यह नहीं कह सकता कि उर्दू मिट जाये। यह अवश्य रहे और इस के मिटाने का विचार वैसा ही होगा, जैसा हिन्दी भाषा के मिटाने का। दोनों भाषायें अमिट हैं; दोनो रहेंगी। उर्दू भाषा के प्रेमी करोड़ों हैं और इस पचास वर्ष में उन्हों ने बहुत कुछ उन्नति की है। मौलवी ज़काउल्लह साहब, मुहम्मद हुसेन आज़ाद और देहली के नज़ीर अहमद को लीजिये; उस शब्दकोष को लीजिये, जो निज़ाम हैदराबाद में छप कर तय्यार हो गया है। हैदराबाद में मुसलमान भाई २५ वर्ष से उर्दू की उन्नति का बड़ा यत्न कर रहे हैं। हम को सन्तोष और सुख होता है कि मौलवी शिबली के काम से उसकी उन्नति में अधिकता हुई है और उस की उन्नति हमारे देश की उन्नति है। हम इसकी भलाई चाहते हैं, किन्तु इसी के साथ साथ हमें यह भी कहना चाहिये, कि हिन्दी जानने वाले इस प्रान्त में बहुत हैं। पिछली मनुष्यगणना से जान पड़ा है कि एक उर्दू जानने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला है, तो चार हिन्दी जानने वाले। हमारे मुसलमान भाई जिनको इसका प्रेम है और जो देशभक्त हैं, जिन से हमारे देश की सब तरह की उन्नति है, वह उर्दू की उन्नति का यत्न करें और हिन्दी जाननेवाले हिन्दी की उन्नति का। इस देश में हिन्दी भाषा जाननेवालों की कमी नहीं; कोई दश बारह करोड़ हैं। इन की हिन्दी-भाषा की उन्नति करने के लिये हमें क्या उपाय करना चाहिये? जितना अब विचार हो चुका है, उस से आप ने यह देख लिया कि भाषाओं की अवस्था में कैसा उलट फेर हुआ और हिन्दी ज्यों की त्यों रही। यह दशा जो हमारी है, उस में क्या करने की आवश्यकता है। इस बात के विचारने में मैंने आप से कहा, कि राजा के सहारे से बड़ा सहारा होता है। यदि आप को, जैसा कि नागरी प्रचारिणी सभा के लिये गवर्न्मेंट सहारा देती चली आई है, राज साहाय्य मिले तो काम बहुत कुछ बन जा सकता है। किन्तु बड़े दुःख की बात यह है कि अङ्गरेजी गवर्न्मेंट ने इसका जितना प्रचार करना चाहा था, हमारी उपेक्षा से उसका उतना प्रचार नहीं हुआ। हम लोगों को जितना करना चाहिये था, उसका सिर्फ कुछ अंश हमने किया। अब यह सम्मेलन ही विचार करे कि इस की उन्नति का क्या उपाय होना चाहिये। इत्यादि।

सहानुभूति।

सभापति महाशय की वक्तृता समाप्त होने पर उन हिन्दी प्रेमियों तथा हिन्दी-हितैषियों के पत्र और तार पढ़े गये, जो कारणवश सम्मेलन में सम्मिलित नहीं हो सके थे। ऐसे सज्जनों की संख्या कम नहीं थी। स्थानाभावसे इन सब सज्जनों के पत्र और तार प्रकाशित नहीं किये जा सकते; सिर्फ उन के प्रेरकों के नाम प्रकाशित किये जाते हैं जो इसतरह हैं।

तार।

श्रीयुक्त आत्माराम, बड़ोदा; पं० माधवराव विनायक, इन्दौर; पं० बदरीनारायण चौधरी, मिरजापुर; पं० शिवनाथ शर्म्मा, लखनऊ; पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी, उयपुर; पं० सोमदेव गुलेरी, जयपुर; पं० भवानी दत्त, रीवां; मन्त्री नागरी प्रचारिणी सभा अमृतसर; श्रीयुत एस० बी० बोइस, बम्बई; बा० सारदा चरण मित्र, कलकत्ता; ब्यावर के विद्यार्थी; मन्त्री नशीपुर साहित्य परिषद्।

पत्र।

श्रीमती मिसेज एनीबेसण्ट, काशी; श्रीयुक्त सदाशिव कृष्णराव, खण्डवा; मिष्टर सच्चिदानन्द सिंह बारिस्टर बांकीपुर; बा० हनुमान प्रसाद, विजय राघवगढ़; बा० गुरुशरण लाल, गाजीपुर; पं० नारायण राव आगरे, मुलताई; पं० सोमेश्वरदत्त शुकुल, सीतापुर; पं० मुकुन्द शास्त्री जयपुर; पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, प्रयाग; बा० कालिकाप्रसाद, कलकत्ता; पं० चन्द्रशेखर शर्म्मा, चम्पारन; बा० पुत्तनलाल, कन्नौज; पं० सन्तराम शर्म्मा, लाहौर; कुंअर फतेहलाल मेहता उदयपुर; बा० जगन्नाथ सिंह वर्म्मा, हरदोई; पं० शिवप्रसाद शर्म्मा, कटनी; पं० ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य, बरेली; पं० देवीप्रसाद द्विवेदी, प्रयाग; महाराज काशिराज के प्रतिनिधि बा० मदनगोपाल; मन्त्री गुरुकुल कार्य्यालय, हरिद्वार; सम्पादक सांझवर्त्तमान, बम्बई; बा० हरि बहादुर सिंह, छत्रपुर; बा० राघवप्रसाद नारायण सिंह, बरांव; लाला सीताराम बी० ए०, प्रयाग; बा० मृत्युञ्जय भट्टाचार्य, बलिया; बा० गोबिन्दप्रसाद छपरा; मि० जार्ज जे० एन०, बांकीपुर; मि० लेम्बर्ट, मसूरी; डाक्टर ए० एफ़० रुडल्फ़ हार्नेले, जर्मनी; पं० पालसन्द्र राव, छत्रपुर; बा० गोकुलानन्द प्रसाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुजफ्फरपुर; बा० बासुदेव गोयेनका, कलकत्ता; बा० योगेन्द्रपाल सिंह, बदाऊं; बा० लक्ष्मीनारायण, मुरादाबाद; मन्त्री, गुजरात व० सो० अहमदाबाद।

और सब पत्रों की नकल न देकर भी मैं एक पत्र की नकल बिना दिये नहीं रह सकता। यह पत्र बड़ोदेके एजुकेशनल इन्सपेक्टर श्रीयुत आत्माराम महाशय का है। इनकी यथार्थ नकल इस प्रकार है:—

जावक नम्बर १९९

एजूकेशनल इन्सपेक्टर आफिस

बड़ोदा।

ता० ३—१०—१०

श्रीमन्मान्यवर श्रीमती नागरीप्रचारिणी काशीके

मन्त्री महाशय,

विद्वद्वर्य्य महाशय!

आपका तार ता० ३० सितम्बर को मिला। यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि श्रीमती नागरी प्रचारिणी सभा बनारस के हाल में हिन्दी कानफरेन्स श्रीयुत आनरेबल पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की अध्यक्षता में १०,११ अक्तोबर सन् १९१० को होने वाली है। आपने जो कृपापूर्वक मुझे निमन्त्रित किया है, मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हुआ निवेदन करता हूं कि उत्तरीय हिन्द के विपरीत बड़ोदे में दशहरा की केवल दो ही दिन की छुट्टी होती है, अधिक नहीं। इस तथा कई एक अनेक आवश्यकीय कारणों से मैं इस हिन्दी सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सकूंगा जिसके लिये आपसे क्षमाप्रार्थी हूं।

मैं ने आपका तार मिनिष्टर आफ एजुकेशन बड़ोदा ष्टेटको भी दिखाया है और उन्होंने मुझे बड़ी प्रसन्नता से आज्ञा दी है कि मैं आपको आपके तथा आपकी सभा के अपूर्व श्रमके लिये जो वह हिन्दी भाषा के लिये कर रही है उनका सन्तोष प्रकट करूं; वहां बड़ोदा राज्य में जो हिन्दी के प्रचारार्थ काम हुआ है, उसका सारांश बता दूं:—

(१) विदित हो कि १७ सितम्बर १९१० ई० को बड़ोदेके सम्पूर्ण वरनाकुलर स्कूलों की ५ वीं तथा ६ ठी श्रेणियों में हिन्दी भाषा का शिक्षण लाजिमी कर दिया गया है, जिन स्कूलों की संख्या २५०० है।

(२) बड़ोदा राज्य के एङ्ग्लो वरनाकुलर स्कूलों की १ ली, २ री, ३ री और ४ थी श्रेणी में भी हिन्दी शिक्षण लाजिमी किया गया है। और १० अण्डर ग्रेजुएट हिन्दी शिक्षक उत्तरीय हिन्द के नियत किये गये हैं।

(३) बड़ोदा मेल ट्रेनिङ्ग कालेज की मध्यम और उत्तम पदकी श्रेणियों में हिन्दी शिक्षण एक वर्ष से लाजिमी कर दिया जा चुका है।

(४) जापान के काउंट ओकुमा की जगद्विख्यात अङ्गरेजी पुस्तक की दो बड़ी भारी जिलदों का हिन्दी अनुवाद कराकर प्रकाशित करने की आज्ञा श्रीमान् महाराजा ने बड़ी कृपा से दे दी है। इस हिन्दी अनुवाद के प्रकाशित होनेपर हिन्दी साहित्य में वृद्धि होगी यह पूर्ण आशा है।

(५) "आज्ञापत्रिका बड़ोदा" जो कि राज्य का गजट है इसमें धारा Law सम्बन्धी बातें सदैव नागरी लिपिमें प्रकाशित होती हैं।

(६) हिन्दी की उत्तम और उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशकोंके उत्तेजनार्थ उचित सहायता दी जाती है।

आप इस सूचना को हिन्दी कानफरेन्स में या जहां उचित समझें उपयोग में ले सकते हैं।

आपका आज्ञाकारी सेवक

आत्माराम,

एजुकेशनल इन्सपेक्टर बड़ोदा राज्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन अर्थात् ११ अक्तूबर को ११ बजे से फिर सम्मेलन का कार्य्य आरम्भ हुआ और ६ बजे समाप्त हुआ तथा तीसरे दिन १२ बजे से कार्य्यारम्भ हुआ और ५ बजे कार्य समाप्त हुआ। इन अधिवेशनों में निम्न लिखित प्रस्ताव सम्मेलन के सम्मुख उपस्थित किए गए और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुएः—

(पहिला निश्चय)

यह सम्मेलन सम्राट सप्तम एडवर्ड की मृत्यु पर शोक प्रकाशित करता है और राजवंश के साथ इस दुःखमय घटना पर सहानुभूति प्रगट करता है।

(सभापति महाशय ने उपस्थित किया और उपस्थित सज्जनों ने खड़े हो कर स्वीकार किया।)

(दूसरा निश्चय)

यह सम्मेलन सम्राट पंचम जार्ज के सिंहासनारूढ़ होने पर उनको हृदय से राजभक्ति पूर्वक बधाई देता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वे चिरकाल तक राज्यसुख भोगें और अपनी भारतीय प्रजा के हित की उन्नति करें।

(सभापति महाशय ने उपस्थित किया और उपस्थित सज्जनों ने हर्ष प्रगट करते हुए स्वीकार किया)

(तीसरा निश्चय)

मि० रमेशचन्द्र दत्त, राजा कमलानन्द सिंह पण्डित उमापति दत्त शर्म्मा और राजा रमेशसिंह की असामयिक मृत्यु से हिन्दी के भविष्य को बहुत हानि पहुंची है और यह सम्मेलन इस दुर्घटना पर शोक प्रकाशित करता हुआ उनके सम्बन्धियों से सहानुभूति प्रगट करता है।

(सभापति महाशय ने उपस्थित किया और सर्व सज्जनों ने स्वीकार किया)

(चौथा निश्चय)

यह सम्मेलन इस बात पर शोक प्रगट करता है कि जिस आज्ञा को इन प्रान्तों की गवर्नमेंट ने हिन्दी जानने वाली प्रजा के हित के लिये अदालतों में नागरी अक्षरों के व्यवहार के विषय में १८ अप्रैल सन् १९०० की आज्ञानुसार जारी किया था उससे हिन्दी जानने वाली प्रजा को कहीं २ अमलों और हाकिमों के नागरी से पूरा परिचय न होने के कारण और कहीं कहीं वकीलों और मुख़्तारों के स्वार्थ अथवा उदासीनता के कारण उचित लाभ नहीं पहुंच रहा है। यह सम्मेलन इन प्रान्तों की गवर्नमेंट से प्रार्थना करता है कि वह समय समय पर इस बात की ज़ांच करा लिया करे कि गवर्नमेंट की ऊपर कही हुई आज्ञा का पालन ठीक ठीक होता है या नहीं—जो अमले अदालतों में नियत किये जाते हैं उनको दोनों लिपियों का परिचय काम करने योग्य है या नहीं। यह सम्मेलन गवर्नमेंट से नम्रता पूर्वक प्रार्थना करता है कि वह यह आज्ञा करदे कि जो लोग तजवीज और इज़हार आदि की नक़लें नागरी में लेने की प्रार्थना करें उनको वे सब नागरी में मिल जाया करें।

यह सम्मेलन गवर्नमेंट का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करता है कि जिस प्रकार युक्त प्रान्त का गवर्नमेंट गज़ट अंगरेज़ी के अतिरिक्त उर्दू में भी प्रकाशित होता है उसी प्रकार उसके नागरी अक्षरों में भी प्रकाशित होने की वह आज्ञा करदे।

यह सम्मेलन गवर्नमेंट का ध्यान इस ओर भी दिलाता है कि चुंगी तथा दूसरे टेक्सों की रसीदें तथा अन्य काग़ज़ात जो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिस्पिलिटियों से जारी होते हैं वे सब अधिकांश प्रजा के सुभीते के लिये नागरी अक्षरों में लिखे जाने चाहिएं और आशा करता है कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा म्यूनिस्पिलिटियां इस बात पर शीघ्र ध्यान देंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचार के लिये सम्मेलन उचित समझता है कि युक्तप्रान्त के प्रत्येक ज़िले में इस कार्य्य के सम्पादन के लिये हिन्दी प्रेमियों की एक एक सभा स्थापित हो और सम्मेलन की कमेटी उनके स्थापित होने में सहायता करे और उनके कार्य्य की जांच के लिये तथा उनके सम्बन्ध में अन्य कार्य्य करने के लिए एक इन्स्पेक्टर नियत करे।

यह सम्मेलन उन देशी राज्यों से ज़िन के दफ्तरों में अब तक हिन्दी का प्रचार नहीं हुआ अत्यन्त विनीत भाव से प्रार्थना करता है कि वे अपनी प्रजा के सुभीते तथा उन्नति के लिये राज्य के दफ़्तरों में हिन्दी का व्यवहार करने की आज्ञा जारी करदें।

इस सम्मेलन की सम्मति है कि अदालतों में नागरी प्रचार के कार्य्य तथा हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए एक कोश इकट्ठा किया जाय जो केवल उसी कार्य्य में लगाया जाय।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—बा० पुरुषोत्तमदास टंडन एम० ए०, एल एल० बी०, प्रयाग।

(२) अनुमोदन कर्त्ता—राय साहब पं० चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी अजमेर।

(३) समर्थक-पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, छत्रपुर

(४) बा० राधामोहन गोकुल जी गुप्त, कलकत्ता।

(५) बा० रामबीज सिंह, चक्रधरपुर।

इस प्रस्ताव के स्वीकृत होने के अनन्तर नागरी प्रचार के निमित्त एक पैसा फंड खोला गया और उपस्थित महाशयों ने उदारता पूर्वक इस में सहायता दी।

(पांचवां निश्चय)

इस सम्मेलन को इस बात का दुःख है कि युनिवर्सिटीज़ कमिशन की सम्मति कालिज क्लासों में देशभाषाओं की पढ़ाई के पक्ष में होने पर भी अब तक इस ओर भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों का पूरा २ ध्यान नहीं हुआ है। यह सम्मेलन इस बात पर दृढ़तापूर्वक सम्मति देता है कि कालेज क्लासों में देशभाषा की शिक्षा सब विद्यार्थियों के लिये बाध्य हो और विश्वविद्यालयों की प्रत्येक परीक्षा में इस विषय का ज्ञान आवश्यक माना जाय। यह सम्मेलन इस बात पर शोक प्रगट करता है कि कलकत्ते के प्रेसिडेंसी कालेज में हिन्दी के पढ़ने का प्रबन्ध उठा दिया गया है और यह बंगाल की गवर्नमेंट से प्रार्थना करता है कि उसका फिर शीघ्र ही प्रबन्ध किया जाय।

यह सम्मेलन यह भी आशा करता है कि युक्त प्रान्त में रुड़की के एंजीनियरिङ्ग कालेज और कानपुर के एग्रिकलचुरल कालेज में परीक्षा पास करने के लिये जिस प्रकार उर्दू आवश्यकीय कर दी गई है उसी प्रकार हिन्दी को भी स्थान दिया जाय।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० काशी। (२) अनुमोदनकर्त्ता—महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, काशी। (३) समर्थक-बाबू राजेन्द्रप्रसाद एम० ए०, कलकत्ता। (४) सभापति महाशय ने भी समर्थन किया।

(छठां निश्चय)

भिन्न २ प्रान्तों के स्कूलों और पाठशालाओं में हिन्दी पढ़ाने के लिये जो पुस्तकें नियत की जाती हैं उनका चुनाव अधिक सन्तोषजनक बनाने के लिये यह सम्मेलन सम्मति देता है कि उन प्रान्तों की टेक्स्ट बुक कमेटियों में जहां हिन्दी की पढ़ाई होती है हिन्दी की प्रधान सभाओं को अपना एक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया जाय। यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि काशी की नागरी प्रचारिणी सभा को संयुक्त प्रदेश की टेक्स्ट बुक कमेटी के लिये अपना एक प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि चुनने का अधिकार दिया जाय।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० जम्बू।

(२) अनुमोदन कर्त्ता—पं० सूर्यनारायण दीक्षित एम० ए०, एल एल० बी०, खीरी।

(सातवां निश्चय)

इस सम्मेलन को इस बात पर विशेष सन्तोष होता है कि भारतवर्ष के भिन्न २ प्रान्तों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा और नागरी को राष्ट्र लिपि मानने के पक्ष में मत पुष्ट हो रहा है और इस सदुद्योग की सिद्धि के लिये अनेक साहित्यसम्मेलन यत्नवान हो रहे हैं। यह सम्मेलन उन सब को हृदय से धन्यवाद देता है। इस कार्य्य में विशेष सफलता प्राप्त करने के लिये इस सम्मेलन की सम्मति में यह उचित जान पड़ता है कि बँगला मराठी, गुजराती, उर्दू और हिन्दी साहित्य सम्मेलनों के प्रतिनिधियों का एक संघ शीघ्र ही कहीं मिले और राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रलिपि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विचार करे।

यह सम्मेलन आशा करता है कि कलकत्ते का एक-लिपि-विस्तार परिषद और प्रयाग की नागरी-प्रवर्धिनी सभा इसका प्रबन्ध प्रयाग में बड़े दिनों की छुट्टी के समय करेंगे। इन दोनों सभाओं को यह भी सूचना दी जाय कि इस कार्य्य के लिये यदि आवश्यक हो तो यह सम्मेलन ५००) रु० की सहायता देगा।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—बाबू राधामोहन गोकुल जी गुप्त, कलकत्ता

(२) अनुमोदन कर्त्ता—प्रोफेसर हेमचन्द्र सरकार एम० ए०, कलकत्ता

(३) समर्थक—प्रोफेसर पाटनकर, काशी।

(४) ,, सेठ दामोदर दास राठी, ब्यावर।

(५) ,, महाशय धर्मपाल, लाहौर।

(आठवां निश्चय)

इस सम्मेलन के विचार में सर्कारी स्टाम्पों और सिक्कों में नागरी अक्षरों का प्रयोग होना आवश्यक और लाभदायी है और यह सम्मेलन गवर्नमेंट से प्रार्थना करता है कि वह इस विषय पर विचार कर नए बननेवाले सिक्कों और स्टाम्पों पर उनके मूल्य तथा सम्राट का नाम नागरी अक्षरों में अंकित किये जाने की आज्ञा दें।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—राय साहब पंडित चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी, अजमेर।

(२) अनुमोदनकर्त्ता—पण्डित रुद्रदत्त, आगरा।

(नवां निश्चय)

यह सम्मेलन युक्तप्रान्त की प्राविंशल कानफरेंसों, तथा भार्गव, भूमिहार, राजपूत, ब्राह्मण, आदि जातीय कानफरेंस के नेताओं से प्रार्थना करता है कि वे लोग अपनी २ कान्फरेंसों का काम हिन्दी भाषा में करें और अपनी जाति में हिन्दी का व्यवहार बढ़ा कर इस प्रकार हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने में सहायता दें।

यह सम्मेलन देशी ज़मीदारों और व्यापारियों से भी प्रार्थना करता है कि वे अपने काग़ज़ पत्र हिन्दी भाषा और नागरी अक्षरों में रक्खें और अपना सब व्यवहार उसी भाषा और लिपि में किया करें।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—पण्डित मन्नन द्विवेदी बी० ए०, प्रयाग।

(२) अनुमोदनकर्त्ता—पण्डित केदारनाथ भट्ट एम० ए०, आगरा।

(३) समर्थक—राय पूरन चन्द्र जी, पटना।

(दसवां निश्चय)

यह सम्मेलन इस बात पर अत्यन्त हर्ष प्रगट करता है कि श्रीमान् बड़ौदा नरेश ने अपने राज्य के स्कूलों में हिन्दी का पढ़ना बाध्य कर हिन्दी भाषा में उत्तम पुस्तकों के छपवाने का प्रबन्ध कर और अनेक अन्य उपायों का अवलम्बन कर अपने राज्य में हिन्दी भाषा को आदर का स्थान दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन कार्यों के लिये यह सम्मेलन श्रीमान् को हृदय से धन्यवाद देता है।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल एल० बी०, काशी।

(२) अनुमोदनकर्त्ता—राय शिवप्रसाद, काशी।

(ग्यारहवां निश्चय)

यह सम्मेलन उन सब नृपतिगणों को हृदय से धन्यवाद देता है जिन्होंने अपने राज्य में हिन्दी भाषा और नागरी अक्षरों का पूर्ण प्रचार किया है और प्रार्थना करता है कि अन्य नृपतिगण भी उस ओर ध्यान देकर अपने २ राज्यों में शीघ्र ही इसका प्रचार करेंगे।

(१) प्रस्तावकर्त्ता—बाबू राधामोहन गोकुल जी कलकत्ता।

(२) अनुमोदनकर्त्ता—बा० गंगा प्रसाद गुप्त, काशी।

(बारहवां निश्चय)

इस सम्मेलन का प्रबन्ध करने तथा इसके निश्चित सिद्धान्तों को कार्य में परिणत करने और इसके लिये एकत्रित धन का उपयुक्त संरक्षण आदि करने के लिये निम्न लिखित इकतालीस सभासदों की एक समिति नियत की जाती है जिसे अपने सम्बन्ध की सब बातों के निर्णय करने का पूरा अधिकार होगा। समितिके सम्मुख उपस्थित प्रत्येक विषय का निर्णय अधिक सम्मति द्वारा होगा और कोरम पांच सदस्यों का माना जायगा। सभासदों को पत्र द्वारा भी सम्मति देने का पूरा अधिकार होगा। यह समिति सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में अपने तथा सम्मेलन के लिये एक नियमावली बनाकर उपस्थित करेगी। जब तक इसके विशेष नियम न स्वीकृत हों तब तक प्रति वर्ष एक समिति चुन ली जाया करेगी। यदि सम्मेलन की तिथि के तीन मास पूर्व उसका सभापति स्वागतकारिणी सभा निश्चय न कर सकेगी तो इस समिति को सभापति स्थिर करने का अधिकार होगा। इसी प्रकार यदि विचारणीय विषयों का निश्चय अधिवेशन की तिथि के दो मास पूर्व न होगा तो यह समिति उस कार्य्य को भी करेगी।

(१) सम्मेलन के सभापति माननीय पंडित मदन मोहन मालवीय, प्रयाग।
(२) लाला देवराज, जालन्धर।
(३) लाला मुंशीराम, हरिद्वार।
(४) साहित्याचार्य काव्यतीर्थ पं० रामावतार पाण्डेय एम० ए०, बांकीपुर।
(५) बा० ब्रजनन्दन सहाय एम० ए०, बी० एल०, पटना।
(६) राय पूरनचन्द, पटना।
(७) बा० शारदाचरण मित्र एम० ए०, बी० एल०, कलकत्ता।
(८) सर गुरुदास बैनर्जी एम० ए०, डी० एल, कलकत्ता।
(९) बा० जगन्नाथ जी झुंझनूवाला, बर्दवान।
(१०) बा० हरिकृष्ण जौहर, हिन्दी बंगवासी, कलकत्ता।
(११) पं० अमृतलाल चक्रवर्ती, भारतमित्र, कलकत्ता
(१२) पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी, अजमेर।
(१३) राय साहब पं० चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी, अजमेर।
(१४) सेठ दामोदर दास राठी, ब्यावर।
(१५) लाला करोड़ी मल मालू।
(१६) पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, छत्रपुर।
(१७) मिस्टर आत्माराम, बड़ौदा।
(१८) मास्टर एम० आर० बोडस, बम्बई।
(१९) प्रोफेसर रङ्गाचार्य्य एम० ए०, मद्रास।
(२०) मिस्टर एस० एन० पण्डित, राजकोट।
(२१) पं० गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री, छुई खदान।
(२२) पं० गौरीपन्त जोशी, अमरावती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२३) बा० रामनारायण जी राठी, नागपुर।

(२४) राजा नरपति सिंह जी, चक्रधरपुर।

(२५) महामहोपाध्याय पं० आदित्यराम भट्टाचार्य्य एम० ए०, प्रयाग।

(२६) महामहोपाध्याय ठाकूर गङ्गानाथ झा एम० ए०, प्रयाग।

(२७) पं० सत्यानन्द जोशी बी० ए० प्रयाग।

(२८) पं० बालकृष्ण भट्ट, प्रयाग।

(२९) महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, काशी

(३०) पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, कानपुर।

(३१) बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए०, जम्बू।

(३२) पं० रामनारायण मिश्र बी० ए०, काशी।

(३३) पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित एम० ए०, एल एल० बी०, खीरी।

(३४) राजा पृथ्वीपाल सिंह, बाराबंकी।

(३५) पं० रुद्रदत्त, आगरा।

(३६) बा० गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल एल० बी०, काशी।

(३७) पं० शिवनाथ शर्म्मा, लखनऊ।

(३८) पं० देवी प्रसाद शुक्ल बी० ए०, कानपुर।

(३९) राय देवीप्रसाद बी० ए०, बी० एल०, कानपुर।

(४०) पं० राधाचरण गोस्वामी, वृन्दाबन।।

(४१) ठाकुर हनुमन्त सिंह, आगरा।

(१) प्रस्तावकर्त्ता--बा० गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०, काशी।

(२) अनुमोदनकर्त्ता--बा० हरिकृष्ण जौहर, सम्पादक हिन्दी बंगवासी, कलकत्ता।

समर्थक--पं० जीवनशङ्कर अलीगढ़।

(तेरहवां निश्चय)

यह सम्मेलन आगामी वर्ष के लिये बा० पुरुषोत्तम दास टंडन एम० ए०, एल० एल० बी०, को मंत्री और बा० मिश्री लाल गुप्त बी० एस सी० तथा पं० मुरलीधर मिश्र एम०ए०, एल एल० बी० को सहकारी मंत्री नियत करता है।

(१) प्रस्तावकर्ता--पं० सोमप्रकाश शर्मा बी० ए०

(२) अनुमोदन कर्ता--पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित एम० ए० एल एल० बी०, खीरी।

(चौदहवां निश्चय)

यह सम्मेलन सम्मेलनसमिति को अधिकार देता है कि वह भारतवर्ष के समस्त राजों महाराजों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन की संरक्षता स्वीकार करने की प्रार्थना करे।

(१) प्रस्तावकर्ता-पं० शुकदेव बिहारी मिश्र एम० ए० सीतापुर।

(२) अनुमोदन कर्ता-पं० केशवदेव शास्त्री काशी।

(पन्द्रहवां निश्चय)

इस सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन प्रयाग में होगा।

(१) निमंत्रण दाता-बा० मिश्रीलाल गुप्त बी० एस सी० मंत्री नागरी प्रवर्द्धिनी सभा, प्रयाग।

इस के उपरान्त बाबू श्यामसुन्दर दास जी बी० ए० ने सभापति महाशय को धन्यवाद दिया और बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल एल० बी० ने सब उपस्थित महाशयों को इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए धन्यवाद दिया। इस के अनन्तर यह सूचना दी गई कि ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी ने ५००) सम्मेलन को एक ऐसी पुस्तक के तैयार करने के लिए जिसमें व्यापार सम्बन्धी सब कानूनों आदि का सविस्तर वर्णन हिन्दी में हो और जिस से हिंदी पढ़े लिखे व्यापारियों को अपने कार्य में सहायता पहुंचे। इन्हीं महाशय ने ३००) रु० इस कार्य के लिये दिया कि जिस में एक महाशय राजपुताने में घूम कर सम्मेलन के कार्य की प्रसिद्धि करें और उसके लिये उत्साह और सहानुभूति उत्पन्न करें।

निम्नलिखित लेख सम्मेलन में उपस्थित किए गए थे। दो एक को छोड़ कर अन्य सब समयाभाव के कारण पढ़े नहीं जा सके। इनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह पुस्तकाकार शीघ्र ही छाप कर प्रकाशित किया जायगा।

(१) निवेदन पं० चन्द्रशेखरधर मिश्र। (२) मातृभाषा का महत्व पं० श्यामबिहारी मिश्र और पं० शुकदेव बिहारी मिश्र। (३) धर्म्मवीर पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय। (४) भाषा का महत्व और हिंदी पर विचार, पं० माधव शुक्ल। (५) सम्मेलन समित्याष्टक-पं० रामप्रसाद मिश्र। (६) वर्तमान नागरी अक्षरों की उत्पत्ति-पं० गौरीशंकर हीरा चंद ओझा (७) खड़ी बोली की कविता-पण्डित श्रीधर पाठक (८) हिंदी साहित्य महामहोपाध्याय पं० सुधाकरद्विवेदी (९) हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास प० गणेशबिहारी मिश्र, पं० श्यामबिहारी मिश्र और पं० शुकदेव बिहारी मिश्र। (१०) ब्रजभाषा-पं० राधाचरण गोस्वामी। (११) दादू दयाल और सूरदास-राय साहब पंडित चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी। (१२) राष्ट्र भाषा और राष्ट्रलिपि-बाबू शारदाचरण मित्र (१३) मुसलमानी राजत्व में हिन्दी-मुंशी देवीप्रसाद (१४) देशी रियासतों में नागरी अक्षरों का प्रचार-पंडित गणपत जानकी राम दुबे। (१५) नाटक और उपन्यास-बाबू गोपाल राम। (१६) भाषा लिटरेचर की बढ़ती के निमित्त खृष्टियान मिशनों का काम रेवरेण्ड जी० ए० इन। (१७) नागरी प्रचार देशोन्नति का द्वार है-बाबू गोपाल लाल खत्री (१८) हिन्दी भाषा-बाबू विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह (१९) हिन्दी की वर्तमान दशा और उसकी समुन्नति का उपाय-बाबू करोड़ी मल (२०) पंजाब में हिन्दी-पंडित संतराम शर्म्मा। (२१) हिन्दी में अखवारनवीसी-पं० रुद्रदत्त। (२२) बुन्देलखंड में हिन्दी-बाबू गोविंद दास।

इस सम्मेलन में जो सफलता हुई और उससे जो हिन्दी प्रेमियों का साहस और उत्साह बढ़ा उसके लिये हमें ईश्वर का धन्यवाद देना चाहिये आज कल किस चाह के साथ लोग हिन्दी के हितसाधन के अवसर की ताक में हैं इसका पता इस सम्मेलन से लग गया। नागरीप्रचार और सम्मेलन सम्बन्धी कार्यों के लिये बाबू रामचीज़ सिंह का पैसा फंड सम्बन्धी प्रस्ताव होते ही चारों ओर से पैसों की वर्षा होने लगी। इसी से यह सूचित होता है कि अभी हिन्दी के लिये कितना प्रेम है।

इधर पैसों की झड़ी लगी हुई थी कि पंडित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० ने उठकर यह आह्लादकारिणी सूचना दी कि एक सज्जन सभा का ६०००) का ऋण चुकाने का भार अपने ऊपर ले रहे हैं। इस समाचार ने एकत्रित महानुभावों को मुग्ध सा कर दिया। उस समय यही सूझने लगा कि अब हिन्दी के अच्छे दिन बहुत दूर नहीं हैं। सभा ने इस सम्मेलन में पढ़े जाने के लिए हिन्दी के अच्छे २ विद्वानों और लेखकों से लेख मांगे थे। सभा के प्रार्थनानुसार अनेक सज्जनों के लेख आए भी पर समयाभाव से सब पढ़े न जा सके। इन सब लेखों का संग्रह शीघ्र ही पुस्तकाकार निकलेगा। इस संग्रह के सम्पादक महाशय ने जो भूमिका लिखी है उससे कुछ वाक्य मैं उनकी आज्ञा से संग्रह के प्रकाशित होने के पूर्व ही उद्धृत करता हूं।

"यह सम्मेलन हिन्दी साहित्य सम्बन्धी था अतएव यह आवश्यक और उचित ही था कि हिन्दी के विद्वान उसके साहित्य से संबंध रखने वाले अनेक विषयों पर अपने सारगर्भित लेख उपस्थित करते। इस सम्मेलन के जन्मदाताओं ने अपना आदर्श योरप की इंटरनेशनल कांग्रेस आफ़ ओरियंटलिस्टस [International congress of Orientalists] अर्थात् पुरातत्वज्ञों का सार्वदेशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषद रक्खा था और उसीके अनुरूप वे इस सम्मेलन को चलाना चाहते हैं। परंतु अभी तो इसका पहिला ही अधिवेशन हुआ है इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि इन उद्देश्यों और मनोरथों में कहां तक सफलता प्राप्त होगी। इस स्थान पर इस उद्देश्य का निर्देश करना इसलिए आवश्यक है जिसमें इस हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नियन्ता अपनी कार्य्यप्रणाली में कहीं इसे भूल न जांय। युरोप के पुरातत्वज्ञों के सार्वदेशिक परिषद में बड़े बड़े गंभीर विषयों पर विचार किया जाता है और प्रत्येक विद्वान की यह इच्छा रहती है कि वह अपने आविष्कारों और सिद्धांतों को सर्व साधारण के सम्मुख प्रकाशित करने के पहिले इस परिषद के अधिवेशन में उपस्थित करे। इससे परिषद और पुरातत्वज्ञ दोनों के कार्य्यों को बहुत कुछ गौरव प्राप्त हो जाता है और यही कारण है कि इस परिषद के निश्चित सिद्धान्तों पर बड़े सम्मान की दृष्टि से ध्यान दिया जाता है और जहां तक सम्भव होता है प्रत्येक देश में उसके अनुसार कार्य्य करने का उद्योग किया जाता है।"

अत: इस सम्मेलन के विषय में यदि किसी को कुछ कहने का अवसर मिल सकता है तो यही कि साहित्य सम्मेलन होने पर भी इसमें साहित्य संबन्धी बातों पर कम विचार किया गया। सभा के प्रस्तावित मंतव्यों में तो कोश व्याकरण इतिहास आदि साहित्य के अंगों पर ध्यान आकर्षित किया गया था पर सम्मेलन ने उन विषयों की मीमांसा उचित न समझी। अस्तु क्या यह उचित न होगा कि इस सम्मेलन के दो विभाग कर दिए जांय, एक तो प्रचार विभाग और दूसरा साहित्य विभाग और इन विभागों के सभापति अलग अलग चुने जांय। प्रथम विभाग का सभापति कोई ऐसा पुरुष हो जो राज्य और समाज में प्रतिष्ठित हो और दूसरे विभाग का सभापति हिन्दी का कोई सर्वमान्य विद्वान वा ग्रन्थकार हो जिसने हिन्दी साहित्य के अंगों की पूर्ति में अपने जीवन का अधिक भाग लगाया हो और जिस पर साहित्य सेवियों की श्रद्धा हो। हमें आशा है कि इस प्रकार प्रबन्ध करने से हमारी हिन्दी के दोनों अंगों की यथेष्ट पूर्ति होगी और किसी को कुछ कहने का अवसर न मिलेगा। अस्तु, सब बातों पर विचार कर यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हिन्दी के प्रथम साहित्य सम्मेलन का कार्य अत्यन्त सफलता पूर्वक हुआ बंगावासी, हितवार्ता वीर भारत, अभ्युदय, बिहारबन्धु, भारतजीवन लक्ष्मी, हिन्दी साहित्य, सरस्वती, मिथिला मिहिर आदि के सम्पादकों तथा अन्य अनेक हिंदी के विद्वानों और प्रेमियों का संमेलन में उपस्थित होना इस विश्वास को दृढ़ करता है कि इसका कार्य सुचारु रूप से हुआ है और आगे होगा। ईश्वर करे यह सम्मेलन चिरजीवी और भाग्यशाली हो।

—::o:o::—

सभा का कार्यविवरण।

गताङ्क से आगे।

निश्चय हुआ कि इसके लिये उनसे एक रुपया मासिक लिया जाय और क्लब के कारण सभाभवन को यदि कोई हानि पहुंचे तो उसकी पूर्ति भी उन्हें कर देनी होगी। प्रार्थना पत्र के अनुसार स्थान तथा भूमि दी जाय।

(६) प्रयाग के पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियम का विरोध किया था कि सभा का कोई सभासद सभा के किसी कार्य वा निश्चय के विरुद्ध सभा के बाहर उस समय तक आन्दोलन नहीं कर सकता जब तक कि वह सभा का सभासद रहे। पंडित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल के पक्ष में पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर की सम्मति भी उपस्थित की गई।

बहुत विवाद के अनन्तर निश्चय हुआ कि इसके सम्बन्ध में नागरी प्रचारिणी पत्रिका द्वारा सब सभासदों की सम्मति मांगी जाय।

(७) समय अधिक हो जाने के कारण निश्चय हुआ कि सभा विसर्जित की जाय और जो कार्य शेष रह गए हैं वे अब आगामी अधिवेशन में उपस्थित किये जांय।

:o:

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २७ अगस्त १९१०- सन्ध्या के छ बजे

स्थान- सभाभवन

(१) पंडित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा के प्रस्ताव तथा पण्डित केशव देव शास्त्री के अनुमोदन पर पण्डित रामनारायण मिश्र सभापति चुने गए।

(२) ता० ३० जुलाई के मासिक अधिवेशन तथा १ अगस्त के वार्षिक अधिवेशन के कार्यविवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

(३) प्रबन्ध कारिणी समिति के ता० २ जुलाई १६ जुलाई और १३ अगस्त के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(४) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए :- (१) पं० बलदेव राम झा, रामघाट, काशी ५) (२) पं० भागू लाल दुबे, मिश्र जी की दुकान, सागर छावनी ३) (३) पं० देवकी नन्दन भट्ट, सुंडिया, काशी ३) (४) पं० शिव प्रसाद शर्म्मा, हेड मास्टर, बोर्ड स्कूल, कटनी-मुड़वारा १॥) (५) बाबू राजाराम अग्रवाल ओवर सीयर सतलज सर्वे डिवीजन लाहोर ३) (६) पं० बालकृष्ण भट्ट, प्रभुसतीर्थ, जम्मू, काश्मीर १॥)

(५) सभासद होने के लिये १७ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(६) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं:-(१) श्रीयुत डाइरेक्टर, शिक्षाविभाग, प्रयाग-पातञ्जलि का योगसूत्र (२) पं० धरनीधर वैद्य, सदर बाजार, सागर-श्रीरामबत्तीसी (३) संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट-District Gazetteer of Hamirpur and Jalaun. (४) बाबू हरिदास खन्डेलवाल मालगुजार, सिंगवारा, विजयराघवगढ़-मर्य्यादा (५) श्रीमान् राजा फतह सिंह वर्म्मा, पुवायां-वैदिकच्छन्दमाला २ प्रति (६) बाबू शीतल प्रसाद, प्रबन्धक, आर्य्य अनाथालय, मुंगेर-विहारमाता, बिलबिलाहट, पुरुषार्थ धर्म का जगत प्रचार, जाति नाशक शत्रु (७) स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण, श्री गुरुराम जी पुस्तकालय, गोंडा-वेदान्त सिद्धान्त सार, मधुर मंजुमाला, श्री तुलसीपत्र, बदरी मार्ग दीपिका। (८) Indian Antiquary for August 1910 (९) पंडित राम नारायण मिश्र बी०ए० काशी-तरीकः तन्दुरुस्ती की पहिली किताब, संस्कृत व्याकरण की प्रथम पुस्तक (१०) राय बहादुर पंडित बैजनाथ बी० ए०-थियासोफी की प्रथम पुस्तक, दैवी सहायक, धर्म शिक्षा (११) गोस्वामी ब्रजनाथ जी शर्म्मा, ७८२७ सीतलागली, आगरा-असभ्य रमणी (१२) श्रीपरमहंस महोपदेशक, गंगापुर, पो० ताजपुर, दरभङ्गा-ब्राह्मणराज परिचय, श्रीगंगा माहात्म्य कुलीन परिचय, उपदेशक परिचय (१३) पंडित देवी प्रसाद उपाध्याय, काशी-नवनिवेदनम्, नीलमणि, वासन्ती।

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशङ्करप्रसाद

मंत्री।

भारत प्रेस काशी में बाबू माधवप्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गवासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री वेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये!

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयों की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्टर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

परीक्षा के लिये।

छै प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

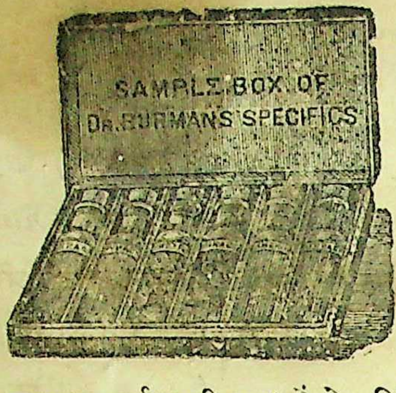

मूल्य १।।) डा० म०

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्टर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्टर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है। इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़े खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाईं हो सकती है।

दवाओं का नाम।

- अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।
- दमे की दवा—तत्काल दमे को दबाती है।
- कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।
- धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण
- जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।
- अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं:-

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से— आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाही गुण भी है बर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताब दिवरा जिला सारनसे—आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंह रईस पो० गौतरा जिला बदाऊं से—छैः मशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत १।।) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बखस पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाई गईहैं

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से—महाशय! अपने जो अपना परीक्षा का बकस और दादका मलहम भेजा सो दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक़स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि "रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

डा: एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित स० १८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचलितहै

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | १५ दिसम्बर १९१० । | संख्या ६

शोक ! शोक !! महाशोक !!!

आज यह शोक समाचार देते चित्त अत्यन्त व्यथित होता है कि गत २८ नवम्बर को इस सभा के पूज्य और बूढ़े सभापति गणित और ज्योतिष शास्त्र के एकमात्र स्तम्भ हिन्दी साहित्य के पूर्ण मर्म्मज्ञ प्राचीन परिपाटी के पंडित हो कर भी समयानुकूल संशोधन और उन्नति के पक्षपाती महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी जी ने इस लोक से सहसा अपना सम्बन्ध छोड़ परलोक का मार्ग लिया । इनकी मृत्यु से काशी की पंडित मंडली का एक अमूल्य रत्न ही नहीं खो गया वरन् दुःखिनी हिंदी का भी एक बड़ा भारी सहारा टूट गया ।

सुधाकर जी की संस्कृत और गणित की पारदर्शिता की तो चारो ओर धूम है पर हिन्दी के लिए उन्होंने जो जो कार्य्य किए कदाचित वे उतने प्रसिद्ध न हों । तुलसीदास जी के ग्रंथों के ये अच्छे ज्ञाता थे । काशी नागरीप्रचारिणी सभा की सहायता से प्रयाग के इण्डियन प्रेस ने रामचरित मानस का जो संस्करण छापा था उसके सम्पादन में सुधाकर जी ने बहुत कुछ परिश्रम किया था । तुलसी सतसई पर इन्हों ने कुंडलिया भी लिखी हैं तथा विनय पत्रिका का संस्कृत में अनुवाद किया है । मांड़ा के राजा साहब ने जो रामायण छपवाई है उसमें भी सुधाकर जी ने बड़ा शारीरिक और मानसिक प्रयास किया है । कई वर्ष हुए डाक्टर ग्रियर्सन ने "इंडियन एंटिक्वेरी" में गोस्वामी तुलसीदास पर एक लेखमाला छपवाई थी । कदाचित् यह कहना अनुचित न होगा कि इसकी सामग्री का बहुत कुछ संग्रह पंडित सुधाकर जी ही के प्रयत्नों से हुआ । एशियाटिक सो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साइटी जायसी की पद्मावती का एक सुन्दर संस्करण निकाल रही है जिसके कई भाग छप चुके हैं। टीका टिप्पणी के साथ इसको सम्पादन करने का भार सुधाकर जी पर था। तुलसीदास के रामचरितमानस का अनेक अर्थों से युक्त एक पद्यबद्ध संस्कृत अनुवाद भी ये "मानस पत्रिका" के नाम से निकालते थे। इस अनुवाद में विचित्रता यह है कि संस्कृत में भी वही छंद रक्खे गए हैं जो हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास जी ने रक्खे हैं। इनकी सम्पादित दादू दयाल की बानी भी सभा की ग्रंथमाला में निकल चुकी है। मलिक मुहम्मद जायसी की 'अखरावट' नाम की पुस्तक का भी इन्हों ने सम्पादन किया है। इनकी अन्तिम अभिलाषा "विनय पत्रिका" के एक उत्तम टीका टिप्पणी युक्त संस्करण निकालने की थी। पर खेद है कि हिन्दी के दुर्भाग्य से यह इच्छा उन्हीं के साथ चली गई।

अभी थोड़े दिन की बात है जब काशी में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का पहिला अधिवेशन हुआ था उस समय अनेक हिन्दी प्रेमियों ने इन के दर्शन किए थे और उनकी वक्तृता सुनी थी। सुधाकर जी का विचार था कि प्रयाग विश्वविद्यालय की भिन्न भिन्न परीक्षाओं में हिन्दी के समावेश का उद्योग हो। वे इसके लिए पूरा प्रयत्न करने पर कटिबद्ध थे। कदाचित् यह कहना किसी रहस्य को प्रगट करना न होगा कि माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय सेंडिकेट में इसका प्रस्ताव करने वाले थे और सुधाकर जी उसके अनुमोदन पर दृढ़ थे। पर हिन्दी के दुर्भाग्य से सुधाकर अस्त हो गए और मालवीय जी इस वर्ष युनिवर्सिटी के फ़ेलो न रहे।

अस्तु, काशी नागरीप्रचारिणी सभा को तो सुधाकर जी की मृत्यु से बड़ी हानि पहुंची है। इनके स्थान को पूरा करने वाला कोई दिखाई नहीं पड़ता। अभी थोड़े दिनों की बात है कि सभा के कार्य्य विशेष के लिए कुछ पद्य-रचना की आवश्यकता हुई। उस समय इस कार्य्य के योग्य और कोई न देख पड़ा। सुधाकर जी उन दिनों रुग्न शय्या पर पड़े थे, घोर ज्वर चढ़ा हुआ था। सभा के कार्य्यकर्त्ताओं ने उनके पास उपस्थित हो कर अपनी कठिनता कह सुनाई। वे इस बात के सुनते ही घोर ज्वर की अवस्था में भी उठ बैठे और उसी समय सभा का कार्य कर दिया। हिन्दी के प्रेमियो! आपने अपना एक अनमोल रत्न खोया। इस सभा को तो वे मानों अनाथ ही कर गए।

ऐसे महानुभाव के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाओं को जानने के लिए इस अवसर पर पाठक अवश्य आकुल होंगे। अतः हम उनका संक्षिप्त चरित्र 'कोविद रत्नमाला' से यहां उद्धृत करते हैं।

"बहुत दिन हुए चैनसुख नामक एक सरयूपारी दुबे ब्राह्मण काशी में संस्कृत पढ़ने आए। ये शिवपुर के पास मंडलाई गांव में एक उपाध्याय के यहां अध्ययन करने लगे। उपाध्याय जी की कोई सन्तति न होने के कारण चैनसुख ही उनकी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हुए। इनसे कई पीढ़ी पीछे शारंगधर और शिवराज दो भाई हुए। शारंगधर ने खजुरी सारनाथ आदि कई गावों की जमींदारी लेकर खजुरी में अपना निवासस्थान नियत किया। शिवराज उपाध्याय के तीन पुत्र हुए, जिन में रामप्रसाद सब से छोटे थे। इन के समय में केवल खजुरी की जमींदारी हाथ में रह गई थी। रामप्रसाद के पांच पुत्र हुए जिनमें कृपालुदत्त सबसे छोटे थे। कृपालुदत्त ज्योतिष विद्या में निपुण हुए और इन के हस्ताक्षर भी अच्छे होते थे। कीन्स कालेज के भीतों पर अंकित अक्षर इन्हीं के लिखे हुए हैं। पं० सुधाकर जी इन्हीं कृपालुदत्त के पुत्र हैं। स्मरण

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे कि पं० कृपालु दत्त स्वयं भाषाकाव्य के बड़े प्रेमी तथा कवि थे।

"जिस समय सुधाकर जी का जन्म हुआ इनके पिता मिर्ज़ा पुर में थे। इनके चाचा दरवाज़े पर बैठे थे। हाकिये ने आकर सुधाकर नामक पत्र उन के हाथ में दिया तब तक भीतर से लड़के के जन्म होने की खबर आई। आप ने कहा कि इस लड़के का नाम सुधाकर हुआ। इनका जन्म सम्वत् १९ ११ चैत्र शुक्ला चतुर्थी सोमवार को हुआ था। द्विवेदी जी की नौ मांस की अवस्था होते ही इन की माता का देहान्त हो गया इसलिये इनके लालन पालन का भार इन की दादी पर पड़ा। इन के पिता घर पर नहीं रहते थे और घर भर का इन पर विशेष प्यार था। इसी से आठ वर्ष की अवस्था तक इन की शिक्षा की ओर किसी ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इसके बाद जब इन के बड़े चाचा ने इन्हें पढ़ने को बैठाया तो इन्हों ने थोड़े ही समय में बहुत उन्नति कर दिखलाई। यज्ञोपवीत होते ही इनकी धारणा शक्ति ऐसी तीव्र हो गई कि जो पद्य एक बार देखा कंठस्थ हो गया।

"इनके बड़ों ने तो सोचा था कि इन्हें कुछ व्याकरण पढ़ा कर कथा पुराण बांचने योग्य बना दिया जाय पर इनकी तबीयत ज्योतिष शास्त्र में लग गई और केवल लीलावती पढ़ कर ये गणित के बड़े २ प्रश्नों को सहज में हल करने लगे। इन की ऐसी तीव्र बुद्धि देख पं० बापू देव शास्त्री इन से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने क्वीन्स कालेज के प्रिन्सिपल ग्रिफ़िथ साहब से इनकी बड़ी, प्रशंसा की। इससे इनका उत्साह और भी बढ़ गया। इन के बड़ों ने गणित के विशेष अध्ययन से उन्हें रोकना चाहा पर ये गणित के रंग में ऐसे रंग गये थे कि उस विद्या में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त किया। यों ही ज्योतिष विषय पर बातें होते होते एक दिन इनका बापू देव शास्त्री से कुछ झगड़ा हो गया जिससे दोनों में कुछ वैमनस्य होगया॥

"पं० सुधाकर जी ज्योतिष के जैसे पंडित हैं सो तो सभी जानते हैं परन्तु अपनी मातृभाषा हिन्दी के भी आप अनन्य प्रेमी और बड़े विद्वान हैं। आप तुलसीदास सूरदास कबीर तथा अन्यान्य भाषा के शिरोमणि कवियों के काव्यों में अच्छा प्रवेश रखते हैं। आप ऐसी सरल हिन्दी के पक्षपाती हैं जो कि सहज ही सर्व साधारण की समझ में आ सके। आपने सब मिला कर हिन्दी भाषा में कोई ११ पुस्तकें रची और सम्पादित की हैं आप बाबू हरिश्चन्द्र जी के प्रिय मित्रों में से हैं।

"सुधाकर जी की रहन सहन सादी स्वभाव सीधा और चाल सर्व प्रिय है। आपका सिद्धान्त है कि कोई छोटा बड़ा नहीं है। सब एक ही से जन्मते और एक ही से मरते हैं। ईश्वर ने जिस के शिर पर भार रख दिया है उसे अन्त तक निबाह ले जाना ही बड़प्पन है। आप इस समय क्वीन्स कालेज में गणित के प्राफेसर और नागरीप्रचारिणी सभा के सभापति हैं। आपकी विद्वत्ता पर मुग्ध हो कर गवर्नमेंट ने आप को महामहोपाध्याय की उपाधि से भूषित किया है। आपकी सुकीर्ति यूरप तक फैली हुई है।"

शोक सभा।

गत ३ दिसम्बर रविवार को सभा का एक विशेष अधिवेशन इस महादुःखदायिनी घटना पर शोक प्रकाशित करने के लिए हुआ। सभापति के आसन पर महामहोपाध्याय पंडित शिवकुमार शास्त्री सुशोभित थे। पहिले बनारस विभाग के कमिश्नर तथा मिस्टर वेनिस और नागरीप्रवर्द्धिनी सभा प्रयाग के भेजे हुए शोक और सहानुभूति सूचक पत्र पढ़े गए। इसके अनन्तर ज्योतिषाचार्य पं० मुरलीधर झा के प्रस्ताव और बाबू जगन्नाथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास बी० ए० के अनुमोदन तथा बाबू लक्ष्मीचन्द्र एम०ए० एम०एस० सी०, पं० अयोध्यानाथ जी ज्योतिषी, पं० श्रीकृष्णमोहन और पं० चन्द्रशेखर धर शर्मा के समर्थन पर निम्नलिखित पहिला मन्तव्य सर्व सम्मति से पास किया गया :—

"यह सभा महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी जी की असामयिक मृत्यु पर अत्यंत शोक प्रगट करती है। पंडित सुधाकर जी की मृत्यु से न केवल सभा को ही हानि पहुंची है—यद्यपि यह हानि भी असह्य है—वरञ्च गणित और ज्योतिष विद्या, हिन्दी साहित्य, प्रयाग विश्वविद्यालय तथा अनेक विद्याओं और संस्थाओं को उनकी मृत्यु से क्षति प्राप्त हुई है"।

इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए ज्योतिषाचार्य पं० मुरलीधर ओझा ने द्विवेदी जी के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली ये बातें कहीं :—

आप महाशयों से प्रथमतः मैं इसलिये क्षमा प्रार्थी हूं कि एक तो मैं मैथिल और ग्राम का रहने वाला हूं, दूसरे मेरा पढ़ा हुआ भी केवल थोड़ा सा ज्योतिष ही है। ये कारण ऐसे हैं जो स्पष्ट और विशुद्ध कथन के बाधक हैं। फिर आज तो मैं तथा मेरे और मित्रगण जो उनसे प्रतिदिन सदुपदेश प्राप्त करते थे, गणित पढ़ते थे, अपने सद्यः फलदाता अमूल्य रत्न सत्पुरुष परम पूज्य गुरुवर महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी की आकस्मिक परलोकयात्रा से अत्यन्त दुःखी क्या वस्तुतः विश्वनाथ की शरण में रह कर भी अनाथ और अशरण हो गए हैं। ऐसी दशा में मैं अपनी त्रुटिओं को कहां तक संभाल सकता हूं।

उक्त गुरुवर का जन्मस्थान खजुरी ग्राम है जो नगर से डेढ़ कोस पश्चिमोत्तर कोण में काशी पञ्चक्रोशान्तर्गत है। इनकी कोई जन्मपत्री नहीं है किन्तु कभी कभी ये कहते थे कि कालेज में जो मेरी अवस्था लिखी है उससे २-४ वर्षों का अन्तर है। कालेज के लेखानुसार उनकी अवस्था अभी ५१ वर्ष ५ मासकी हुई थी। पर मैंने यह प्रामाणिक लोगों से सुना है कि यहां सम्बत् १९१२ में कोई सुधाकर नाम का मासिक पत्र निकलता था वह गुरु जी के किसी पितृव्य को जिस समय में प्राप्त हुआ उसी समय उक्त गुरुवर की शुभ जन्मवार्त्ता भी सुनाई गई इसलिये इनका नाम सुधा कर रक्खा गया।

यह बाल्यावस्था ही से हिन्दी और गणित के परम अनुरागी थे। पिता की आज्ञा से कुछ दिनों तक व्याकरण के ग्रन्थों को पढ़ा भी किन्तु इनका जी गणित ही में लगता था। इसलिये इन्हों ने बनारस गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के द्वितीय गणिताध्यापक पण्डित देवकृष्णमिश्र के यहां व्यक्तगणित, अव्यक्तगणित और कुछ गोलाध्यायों को पढ़ा।

यहां एक बात कहना आवश्यक है जिसके लिए आपलोग मुझे क्षमा करेंगे। काशीस्थ तथा बाहर के लोगों को यह एक बड़ा भारी संशय है कि मेरे गुरु जी ने महामहोपाध्याय पं० बापूदेव शास्त्री जी सी०आई० ई० से पढ़ा था। प्रिय महोदय! सभ्यगण! आपलोग जानते हैं कि गुरुजी कैसे सत्यवादी और स्पष्टवक्ता थे। इसलिये उनके बारम्बार कहने से हमलोगों को निश्चय है कि उन्हों ने उक्त शास्त्री जी से नहीं पढ़ा था। संशयालु लोग इसका निश्चय कालेज के रजिस्टर से भी कर सकते हैं। हां, इतनी बात है कि जिस समय गुरुजी गणित पढ़ते थे कभी कभी उक्तशास्त्री जी के यहां भी जाया आया करते थे। शास्त्री जी के कठिन कठिन गणितों के शीघ्र उत्तर निकालने पर गुरुजी के ऊपर शास्त्री जी बहुत प्रसन्न होते थे। उन्होंने प्रसन्न होकर उन्हें कई बार पा-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषकर भी कालेज से दिलवाया था। उस समय शास्त्री जी के यहां विशेष कर ज्योतिष सिद्धान्त शिरोमणि का पाठ अनेकानेक युक्तिओं के साथ होता था जिसके पढ़ने वाले मैथिलगण ही प्रधान थे। उस मण्डल में लीलावती और बीज के पढ़ने वाले के लिये अवकाश कहां मिल सकता था? ऐसे ही अनेक कारण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि पं० बापूदेव जी शास्त्री से इन्होंने शिक्षा नहीं पाई थी।

सभासद महाशय! गुरूजी की बुद्धि और चरित्रवर्णन मुझ अल्पज्ञ से कहां तक हो सकता है। हाँ, इतना मैं स्पष्ट कहता हूं कि ऐसे प्रतिभाशाली मेधावी, परोपकारी और पुरुषार्थी सत्पुरुष कम जन्म लेते हैं। इस प्रकार संस्कृत के गणित ग्रन्थों को पढ़कर गुरूजी उक्त कालेज ही के एंग्लो डिपार्टमेन्ट में अङ्गरेजी पढ़ने लगे, और अङ्गरेजी के गणित ग्रन्थों को देखने लगे थे। गणितोपयोगी अंग्रेजी पढ़ लेने के उपरान्त इनका गणित और सिद्धान्त बराबर पुष्ट होता गया जिससे नगर में प्रसिद्धि फैलने लगी। उस समय के ज्योतिष सिद्धान्त रसिक मैथिल विद्यार्थी जो उक्त शास्त्री जी से पढ़ते थे वे आकर अपनी पढ़ी हुई युक्तियों को गुरूजी से कह देते थे। ये उन युक्तियों का खंडन कर देते थे। यह बात देख कर वे मैथिल विद्यार्थी इनसे पढ़ने लगे। शास्त्री जी को यह बात मालूम हुई। उन्होंने गुरूजी से कहा कि मैथिलों को तुम मत पढ़ाया करो। किन्तु गुरूजी पढ़ाते ही गये। उस समय परम प्रतिष्ठित जगद्विख्यात महामहोपाध्याय पण्डित बापूदेवशास्त्री जी सी० आइ० ई० की अप्रसन्नता के भय से गुरूजी के पिता ने भी इन्हें मना किया कि क्यों इन लोगों को पढ़ा कर ऐसे प्रतिष्ठित पण्डित से विरोध बढ़ाते हो। किन्तु, गुरूजी ने उनकी एक न सुनी; पढ़ाते ही गए। प्रत्युत एक समय अपने पिता के बहुत अप्रसन्न होने के कारण गुरूजी परदेश भी चले गये थे। किन्तु अवस्था प्रायः १८-१९ वर्ष की थी और शास्त्र भार अधिक था इसलिये अधिक प्रगल्भता के कारण जहां जहां गये वहां के पण्डितों से विरोध ही होता गया। अन्ततोगत्वा पुनः घर लौट आए और शिवलाल दुबे के बगीचे आदि स्थानों में पढ़ाने लगे। अनन्तर गुरूजी काशीनगरस्थ महाराज दरभङ्गा की पाठशाला मे पढ़ाने लगे। इसके बाद सन् १८८३ ईस्वी में बनारस गवर्नमेंट कालेज की संस्कृत लाइब्रेरी का कार्य कर ये सन् १८८९ में ज्योतिष शास्त्र के द्वितीय अध्यापक हुए। उस समय महामहोपाध्याय पण्डित बापूदेव शास्त्री जी प्रथमाध्यापक थे। ज्योतिषाध्यापक से पहिले ही इनको महामहोपाध्याय की पदवी दी गई। इसके पीछे ये इलाहाबाद युनिवर्सिटी के फ़ेलो नियत किये गये। इनके अनेक आत्मपौरुष के कार्य हैं जो इतने समय में सहस्रमुख से भी नहीं कहे जा सकते। अन्त में मुझे यही कहना है कि गुरूजी ने अपनी कीर्ति के लिये बहुत कुछ किया है। इनके तीन सुयोग्य पुत्र हैं जिनमें प्रथम तहसीलदार हैं, दूसरे डिपुटी कलेक्टर हैं और तीसरे अभी बी० ए० में पढ़ रहे हैं। ऐसे सत्पुरुष बार बार नहीं जन्म लेते।

इसके अनन्तर मुंशी संकटा प्रसाद ने नीचे लिखी हुई उर्दू कविता पढ़ी।

"सुधाकर जी सुद्ध आकर आपको बेचैन करती है।
हमें अफ़सोसो ग़म् में मुबतला दिनरैन करती है॥१॥
सुधाकर जी सुद्ध आकर आपको बेताब करती है।
हमारी क़ौम की आंखों को वह पुरआबकरती है॥२॥
सुधाकर जी के उठजाने का भारतवर्ष को ग़म् है।
हर एक जानिब से आती है सदा यह क़ौमी मातम् है॥३॥
सुधाकरजी गणित में आप यक्ता थे यगाना थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें था फ़ख़्रो नाज़ आप ऐसे अल्लामाये ज़मान थे॥४॥
वो गद्दी जिसपे मुतमक्किनथे बापूदेव शास्त्रीजी ।
रियाज़ीकी रियाज़त् से तुम्हारे जिसकी ज़ीनतथी॥५॥
गणितबिद्या में तुम भारत के और योरप केमाहिरथे
बड़े फ़ाज़िल थे पंडित सीधे सादे गो बज़ाहिर थे ६
नहीं काशी में अब पंडित कोई ऐसा रियाज़ीदां ।
सभापति नागरी परचारिणी के प्यारे हिन्दीदां॥७॥
लियाक़त का करिश्मा पाठशाला में वह दिखलाया
महामहोपाध्याय का टाईटल सरकार से पाया ॥८॥
हरएक विद्यार्थी के हाल पर नज़रे एनायतथी ।
पढ़े लिक्खे से हमदर्दी मुहब्बत और शफ़्क़ थी॥९॥
हरएक लड़के को अपने आपने तालीम आला दी ।
बहुत मरगूब ख़ातिर थी ग़रज़ तालीम अङ्गरेज़ी॥१०॥
सभा में पण्डितों के वह बड़ाही मान पाते थे ।
निगाहे क़द्र से अङ्गरेजों में भी देखे जाते थे ॥११ ॥
सुधाकरजी तुम्हारी ज़ात हम सबको ग़नीमत थी।
पढ़े लिक्खे के दिल में क़द्र थी इज्ज़त थीअज़मतथी१२
वह गो काशी के पंडित थे मगर यह ख़ास ख़ूबीथी ।
तरक़्क़ी वाली बातों से उन्हें थी सच्ची हमदर्दी॥१३॥
ज़रूरत आ पड़ी तो जोश से मैदान में आये ।
समुन्दर यात्रा का पक्ष ले मैदान में आये ॥ १४ ॥
तरक़्क़ी नागरी परचारिणी ने जिस क़द्र की है ।
हर एक बातों में दिलचस्पी नेहायत आपने ली है१५॥
नहीं कम आपकी कुछ हिन्दूकालिज से थी हमदर्दी।
तरक़्क़ी इल्म की हो ऐसे हर कामों में शिरकत की१६॥
तुम्हारे इल्म की शोहरत ने योरप तक रसाईकी ।
बढ़ाया मान भारत का हमारी रहनुमाई की ॥१७॥
ग़रज़ हरदिल अज़ीज़ी सादगी मशहूरे आलमथी ।
तुम्हारी सरपरस्ती हिन्दीदां लोगों को क्या कम थी१८
बड़ा अनमोल रतन हाथों से हम सबने गंवायाहै ।
सुधाकरजी के जानेसे बड़ा सदमा उठाया है ॥१९॥
ग़ज़ब है काशी वालोंने जवाहिर बेबहा खोया ।
यहां के विद्यवानों पण्डितों में स्तम्भ थे गोया ॥२०॥
उन्हीं की मर्ग बेहंगाम पर यों सोग करते हैं ।
जमा हो आज हम इज़हारग़म सब लोगकरतेहैं॥२१॥

अन्य वक्ताओं ने भी द्विवेदी जी का गुणगान किया और उनकी अचानक मृत्यु पर शोक प्रकट किया । अन्त में पं० चन्द्रशेखर धरमिश्र ने यह कविता पढ़ कर इस प्रस्ताव का समर्थन किया और वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ ।

ज्योतिर्विदां यो जनको बुधानां
पतिः सुविज्ञो द्विज तारकाणाम् ।
स्थानं कलानां प्रथितो य एकः
सुधाकरः किं भुवने द्वितीयः ॥

(हिन्दी रोला)

महामहोपाध्याय सुधाकर शर्म्मा द्विवेदी ।
भूमण्डल में गणित विज्ञ जो एक अभेदी ।
हाय अकाल राहुने उनको निगल लिया है ।
भारत क्या भूमण्डल में अन्धियार किया है ॥
हाय ! गणित विद्ये, शरणागत कहां जायगी ।
जोड़ा जोड़ा एक नहीं तूं जहां जायगी ॥
हिन्दी भाषे भक्त कहां ऐसा पावेगी ।
जिस के हा हा शरण कही भी तू जावेगी ॥
आज काशिका पुरी रतन तूने खोया है ।
ऊष्ण अश्रु से जनता के निज तन धोया है ॥
कौन सुधाकर-शत्रु न जिसने भी रोया है ।
मानो शोक बीज जगदीश्वर ने बोया है ॥
पण्डित की मण्डली हाय तेरी क्या गति है ।
सह सकती क्या बज्र हृदय हो ऐसी क्षति है ॥
ब्राह्मण गण सरयूपारी गण का बर लायक ।
हाय गया परलोक शोक में तज कर नायक ॥
विश्वनाथ हे नाथ ! हुई जो होनहार थी ।
मोक्षशान्ति गति मिले सुधाकर को पियार थी ॥
पर उन के मन की सब बातें पूरी होवैं ।
उनका हो परिवार सुखी जग संकट खोवैं ।

इस प्रस्ताव के स्वीकृत हो चुकने पर कविराज

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशवदेव शास्त्री ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि "यह सभा स्वर्गवासी पं० सुधाकर द्विवेदी जी के कुटुम्ब वालों से इस दुःख में अत्यन्त सहानुभूति प्रगट करती है।"

इस प्रस्ताव का अनुमोदन व्याकरणाचार्य पं० रामभवन शर्म्मा ने किया और निम्न लिखित संस्कृत कविता पढ़ी।

शोक ! शोक !! महाशोक !!!

हाहा कलासुकुशला विनृशन्त्ववज्ञां
राहोः कलाक्षयकरस्य सुधाकरस्य।
मूढोऽकलङ्कमपि पूर्णकलं दिवाऽयं
चन्द्रच्छलेन हरतेवसुधामरालम् ॥ १ ॥

किम्वागुरुर्दैत्यपतेः सुराणा
माचार्योऽथवा भ्राम्यति वीजगाल्याम्।
यत्संशयं छेतुमना विधाता
तूर्णं समाजूहुवदार्य्यवर्य्यम् ॥ २ ॥

आकाशधामा शिथिलोऽथवाऽभू
त्कलङ्कितत्वादयवानभीष्टः।
विधेर्द्विजेशोऽवनिसञ्चचारी
चक्रेऽधुना येन नभोविहारी ॥ ३ ॥

कलावनाश्लिष्यचिरप्ररूढं
यंभूद्युवृक्षं नवतामिवागात्।
छिन्नेऽय तस्मिन् कमिह प्रयायात्
समाश्रयेद्वा द्युतरुं परस्तात् ॥ ४ ॥

हा भारतावनिकथं विरसासि जाता
सञ्चेतुमिच्छसिपरानथवा गुणोघान्।
यद्विश्वभूतिविभवान् करुणाविहीना
स्वान्तर्दधासि विधवां विदधासि विद्याम् ५

हा भारतावनिकले विधवासि जाता
जाते सुधाकर बुधे विबुधाग्रगण्ये।
धीराऽथवा भव कियच्चिरमीश्वरोवै
यावन्नमृग्यति पदं सुधियां वरिष्ठम् ॥ ६ ॥

सुर्धांत्वमेवास्तमितं धरायां
धा माधवापेनमिलासुराणाम्।
क क्वाशिकायाः कलिना किमात्तं
रत्नं रमायाः किम वा विशीर्णम् ॥ ७ ॥

यत्कीर्त्या विशदीकृतं त्रिभुवनं जातं कलानां श्रिया। वाचा तुष्टिमितानि सर्वजनितास्वान्तानि भूतार्थया। चित्तं यस्य परोपकारनिरतं भक्तिः परास्वामिना। सोऽयं पश्यतपश्यतां क्षयमहाकाले नीतोदिवम् ॥ ८ ॥

लोके कलादर्शनमेव किम्वा
केदारनारायणदर्शनं वा।
आसीन्निमित्तं द्विजराजकान्तेः
सम्पाद्य यद्दिव्यतनुं दधार ॥ ९ ॥

ध्यायन् जनोयद्गुणजातमीश
माक्रोशनीयंननु निश्चिनोति।
येनाधुनाकारि विनाविचारं
सुधाकरार्य्यस्य दिवि प्रयाणम् ॥ १० ॥

धीराभवन्तु विकलाः सुकलाप्रवीणा
आकर्ण्य कर्णं कटुवज्रसमप्रपातम्।
सूतं सुधाकरसुधीविषयं यतोऽस्मि
न्नीतोषतः प्रतिविधानमवेयतेऽन्यत्र ॥ ११ ॥

हा सप्ताङ्गनवेन्दु सम्मितशरन्मार्गस्यपक्षेऽसिते द्वादश्यां मृडुपे सुधाकरसुधीरद्वैतविद्योदयः। दृष्ट्वा पुण्यपदानि रामचरितैः पूत्वांस्वकं मानसं ध्यात्वा ब्रह्मपदं विहायममलं भेजेपदं शास्वतम्

पं० जानकी शरण तिवारी और बाबू जगदीश नारायण सिंह के अनुमोदन करने पर यह प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ और सभा विसर्जित हुई।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा का कार्यालय इस शोकमय घटना के दिन बन्द रहा और सभा इस बात पर विचार कर रही है कि पंडित सुधाकर जी का स्मारक क्या स्थापित किया जाय।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शिष्य की शोकोक्ति ।

हाय कुटिल विधिवाम हाय अगहन दुख सागर ।
हाय, कृष्ण को पक्ष, हाय द्वादशि शशि वासर ॥
हाय, अशुभ अघधाम, साल बसुरस* सत सङ्कट !
हाय, काल बिकराल, दया नेसुक नहि तोहिं शठ
हाय सुधाकर गुणभवन, पंडितबर मंगलकरन ।
अब ज्योतिष अरु गणित कहु जइ हैं, कहँ काके शरन
हाय, आजु का भयो अँधेरो जग महँ छायो ।
हाय, शम्भुपुर आजु रतन अनमोल गंवायो ॥
हाय, आज को बीर देश हित तन मन दै हैं ?
हाय, मोद भरि आजु गोद हिन्दिहि को लैहैं ?
सत्य पंथ लगि कौन लोक अपवाद न डरिहैं ?
अतिशय नेह बढ़ाइ सदा लोगन मुद भरिहैं? २ ॥
हाय हितैषी देश, हाय गुणराशि बिप्रवर ।
पूजित सकल जहान, हाय जगविदित बिज्ञवर ॥
छोड़ि हमहि तुम आपु, आज कित को पगु धारयो
रोवत फाटत हाय, हाय नहिं दया बिचारयो ॥
छोड़ि जगत दुख सिन्धु को आपु गये सुरपुर सुखित
नहिं सोचेउ हिय मांझ टुक तुम बिनु सचराचर दुखित
काके बल अब गर्व करब हम भारत वासी ।
काके नाम प्रसिद्ध होइ अब यह पुर कासी ?
कौन गणित महँ आज सभ्य देशन यश पैहैं ।
को ज्योतिष महँ हाय, अटल यश भारत लैहैं ?
होइहै जब कहुं बाद सुविद्या ज्योतिष महँ अब ।
न्याय करावन हेतु काहि पैं जैहैं जग अब ? ॥ ४ ॥
रोवत सत संसार देखिये तव वियोग महं ।
भूमंडल महँ कौन देश, तव शोक नहीं कहं ॥
करि हम बज्र कठोर हृदय दुख असह मनावत ।
आपु सरिस जग आज हमहिं नहिं कोउ लखिआवत
सीख विविध विधि देइ कौन छात्रन मुद छैहैं ।
कापै अब जगदीश जाइ निज बिपति सुनैहैं ॥ ५ ॥
सुधा सुधाकर रखत याहि सब बुध जन भाखत ।
काल निकट नहिं जात सदा जगचांदनि राखत ॥
समय पाइ रुज राहु, निकट यद्यपि पगु धारत ।
पै करि सकत न हानि, पुनः सो ज्योति पसारत ॥
हा अनर्थ का भयो याहि लखि फाटति छाती ।
अब हम सब कहँ भयो, हाय सोइ दिन सोइ राती ॥ ६ ॥

दोहा

हाय सुधाकर गुण भवन, पंडितबर गुण ईश ।
बारि हीन जस मीन दुख, तुम बिनु तस जगदीश ॥

जगदीश नारायण सिंह ।

* १९६७ (२) काशी ।

सभा का कार्यविवरण ।

बोर्ड आफ़ ट्रस्टीज का विशेष अधिवेशन

सोमवार ता० ५ सितम्बर १९१०

स्थान-सभाभवन

उपस्थित

बाबू रामप्रसाद चौधरी- सभापति । बाबू गोविन्ददास । पं० कृष्ण राम मेहता बी० ए० एल०एल० बी० । पं० राम नारायण मिश्र बी० ए० बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० ।

(१) बाबू गोविन्द दास के प्रस्ताव तथा पंडित राम नारायण मिश्र के अनुमोदन पर बाबू राम प्रसाद चौधरी सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २३ जून १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) सहायक मंत्री ने सूचना दी कि बोर्ड ने इस वर्ष का हिसाब जांचने के लिये राव गोपाल दास तथा पण्डित रामनारायण मिश्र को नियत किया था पर ये दोनों सज्जन सभा के गत वार्षिक अधिवेशन में प्रबन्ध कारिणी समिति के सभासद चुने गए हैं और इस कारण वे नवीन नियमों के अनुसार आडिटर नहीं हो सकते ।

निश्चय हुआ कि सभा का इस वर्ष का हिसाब जांचने के लिये निम्न लिखित सज्जन नियत किए जांय अर्थात् पण्डित शोभा राम मेहता और बाबू दुर्गा प्रसाद बी०ए० ।

(४) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवन्धकारिणी समिति ।

गुरुवार ता० २२ सितम्बर १९१० सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति, बाबू जुगलकिशोर, बाबू बेणीप्रसाद, गोस्वामी रामपुरी, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, बाबू बालमुकुन्द वर्मा, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बाबू गौरीशंकरप्रसाद। पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर की सम्मति पत्र द्वारा आई ।

(१) गत अधिवेशन (ता० २० अगस्त १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का भाद्र पद कृ० ७ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बाबू भगवान दास एम० ए० ने Laws of Manu पर जो पुस्तक लिखी है उसका हिन्दी अनुवाद यदि सभा प्रकाशित करे तो उसकी छपाई का व्यय वे देंगे।

निश्चय हुआ कि यह पुस्तक सभा के नियमों के अनुसार प्रकाशित की जा सकती है अथवा नहीं इस पर विचार करने के लिये निम्न लिखित महाशयों की सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् गोस्वामी रामपुरी-बाबू बेणी प्रसाद, पण्डित कृष्ण राम मेहता ।

(३) हिन्दी कोश सम्बन्धी कार्यों के सम्बन्ध में सम्पादक की जूलाई और अगस्त १९१० की रिपोर्टें सूचनार्थ पढ़ी गईं। बाबू शिवप्रसाद गुप्त के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि कोश के सम्पादक से प्रार्थना की जाय कि वे कृपापूर्वक भविष्यत में यह रिपोर्ट हिन्दी में भेजा करें ।

(४) पण्डित बाबू राम अवस्थी का ८ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा इस बात का उद्योग करे कि इस बार की मनुष्य गणना के फ़ार्म हिन्दी में भी छपें। निश्चय हुआ कि गवर्नमेंट से यह पूछा जाय कि यह फार्म हिन्दी में भी छापे जांयगे अथवा नहीं ।

(५) निश्चय हुआ कि श्रीमान् वाईसराय के काशी पधारने के समय उनको सभा की ओर से एड्रेस दिया जाय । यदि श्रीमान् सभाभवन में न पधार सकें तो इस कार्य के लिये सभा का एक डेप्युटेशन उनकी सेवा में जाय । एड्रेस अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही में हो और इसके लिखने तथा अन्य आवश्यक प्रवन्ध करने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की सब-कमेटी बना दी जाय अर्थात् पण्डित राम नारायण मिश्र, बाबू श्यामसुन्दरदास पण्डित कृष्णाराम मेहता, बाबू भगवानदास एम० ए० मिस्टर ए० सी० मुकर्जी और बाबू गौरीशंकर प्रसाद । इस कमेटी को अधिकार होगा कि अन्य जिन सज्जनों को वह चाहे अपना सभासद बनाले ।

(६) ठाकुर राज बहादुर सिंह का ७ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि Deussen's Metaphysics का जो अनुवाद स्वर्गवासी ठा० गंगोत्तरी प्रसाद सिंह ने किया है उसका पुरस्कार उनकी विधवा स्त्री ठकुरानी राज देवी कुंवर को मिलना चाहिए। निश्चय हुआ कि अनुवाद का १५०) श्रीमान राजा साहब भिनगा के यहां से मंगवाकर उन की विधवा स्त्री को दिया जाय ।

(७) साहित्य सम्मेलन कमेटी के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए (क) सम्मेलन कमेटी के सभासदों की संख्या २१ से अधिक कर दी जाय (ख) भविष्यत में साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन प्रति वर्ष कांग्रेस के समय हुआ करे (ग) सम्मेलन के समय सभा अपनी पुस्तकों की बिक्री का प्रवन्ध करे और यह प्रवन्ध बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के द्वारा भली भांति हो सकेगा। निश्चय हुआ कि (क) सम्मेलन कमेटी को अधिकार दिया जाय कि वह आवश्यकतानुसार अपने सभासदों की संख्या बढ़ा ले (ख) इसका निर्णय साहित्य सम्मेलन स्वयं करेगा (ग) बाबू बाल मुकुन्द वर्म्मा से प्रार्थना की जाय कि वे इसका प्रवन्ध करदें ।

(८) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का भाद्रपद शु० १३ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने (१) पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी के वक्तव्य की नकल मांगी थी और (२) पूछा था कि बाबू गोकुलदास को Balfour Stewart Physics का जो हिन्दी अनुवाद भेजा गया है उसमें वे विषय के संशोधन के साथ ही साथ भाषा तथा व्याकरण की अशुद्धियों का भी संशोधन करें अथवा नहीं । निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ कि (१) यह विषय कार्यालय की रिपोर्ट के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय (२) बाबू गोकुलदासजी को सब प्रकार के संशोधन का अधिकार है। हस्तलिखित प्रति में वे कृपापूर्वक बीच बीच में सादे पृष्ठ लगवा कर उस पर संशोधन करें।

(९) बाबू शिवप्रसाद गुप्त और रायकृष्णदास का भाद्र पद सु० २ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि यदि सम्मेलन कमेटी में कोई सभासद किसी विषय को उपस्थित करे और उस पर यदि सम्मति भी लीजाय तो उसका कार्य विवरण में उल्लेख करना आवश्यक है अथवा नहीं। निश्चय हुआ कि यदि कोई कमेटी किसी विषय का कार्यविवरण में न देना निश्चित करे तो उसका लिखा जाना आवश्यक नहीं है।

(१०) निश्चय हुआ कि इङ्गलेण्ड में इस सभा के जो सभासद हैं उनके द्वारा वहां भी भारतवर्ष के सिक्कों पर नागरी रक्खे जाने के लिये उद्योग किया जाय।

(११) बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने हिन्दी कोश के सम्बन्ध में निम्न लिखित प्रश्न मंत्री से पूछे (१) सब स्लिपों की संख्या कितनी है (२) छपाई तथा सम्पादन में वर्तमान गति के अनुसार सब कितना व्यय लगेगा (३) तीन मास से स्लिपों के छांटने का कार्य सहायक सम्पादक कर रहे हैं जिससे हानि उठानी पड़ती है। ऐसी अवस्था में अन्य प्रबन्ध के अभाव में क्या किया जाय जिससे व्यर्थ अधिक व्यय न हो (४) कितने कर्मचारी और बढ़ाए जायं जिससे कार्य उत्तमता और शीघ्रता से सम्पादित होजाय अर्थात् कर्मचारियों के बढ़ा देने से कितने शब्द अधिक से अधिक प्रति मास सम्पादित हो सकेंगे (५) सम्पादक श्री नगर से कार्य का निरीक्षण किस प्रकार करते हैं। यदि कोई दैनिक रिपोर्ट उनके पास जाती हो तो उसकी प्रतिलिपि सभा में भी आनी चाहिए। निश्चय हुआ कि इन प्रश्नों का उत्तर केवल कोश के सम्पादक ही दे सकते हैं अत: उन से प्रार्थना की जाय कि वे इनका उत्तर भेजें।

(१२) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २४ सितम्बर १९१० सन्ध्या के छ बजे

स्थान-सभाभवन।

(१) पंडित केशवदेव शास्त्री के प्रस्ताव तथा बाबू गौरीशंकर प्रसाद के अनुमोदन पर मिस्टर ए० सी० मुकर्जी सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० २७ अगस्त १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) प्रबन्धक रिणी सभा का ता० २० अगस्त १९१० का कार्यविवरण सूचनार्थ पढ़ा गया।

(४) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए:-(१) बाबू विन्ध्येश्वरी प्रसाद वकील अर्दली बाजार बनारस ५) (२) बाबू रामखेलावन सिंह, मुदर्रिस मदरसा रेवती जि० बलिया १॥) (३) पं० वासुदेव राव विश्वास राव चांदवड़कर, राजीव त्रिम्बक का बाड़ा, राम घाट काशी ५) (४) बाबू लक्ष्मी चन्द एम० ए०, काशी १॥) (५) डाक्टर अमरनाथ बनर्जी, नील कंठ, काशी १॥) (६) बाबू महेश्वर प्रसाद, क्रिश्चियन कलेज, फोर्थ इयर क्लास, इलाहाबाद १॥) (७) बाबू रामस्वरूप वैश्य बी० ए० एल० टी०, असिस्टेंट मास्टर, डिस्ट्रिक्ट हाई स्कूल, सीतापुर १॥) (८) बाबू हरिदास माणिक, ९४ मिश्रपोखरा, काशी १॥) (९) बाबू अम्बिका प्रसाद, कबीरचौरा, काशी १॥) (१०) बाबू महादेव प्रसाद गुप्त, बरना का पुल, बनारस १॥) (११) बाबू महादेव प्रसाद गुप्त नवाब की ड्योढ़ी, काशी १॥) (१२) बाबू श्याम शरण दास, कन्हैया टोला, बरेली ३) (१३) बाबू सुखनन्दन सिंह, हेड मास्टर टाउन स्कूल, बांदा १॥) (१४) पंडित मोहन लाल मिश्र सब इन्सपेक्टर आफ पुलिस, रैपुरा, जि० बांदा ३) (१५) पंडित गोविन्दाचार्य नं० ४२।६३ त्रिपुरा भैरवी, काशी १॥) (१६) पण्डित बैजनाथ मेनेजर, अन्नपूर्णा फार्मेसी काशी १॥) (१७) पण्डित सरयू नारायण त्रिपाठी एम० ए०, पाटन दरवाजा, गायघाट, काशी ३)

(५) सभासद होने के लिये निम्न लिखित ३२ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किये गए।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तेफे उपस्थित किये गये और स्वीकृत हुए (१) पण्डित बाबू राव पद्माकर सेले डाइरेक्टर आफ टेलिग्राफ का दफ्तर, लखनऊ (२) बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छेदालाल सिंह डिस्ट्रिक्ट स्कूल, मिर्जापुर (३) बाबू भगेलू राम टीचर, हाइस्कूल बस्ती (४) पंडित रामदत्त पन्त असिस्टेन्ट इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स, बरेली (५) बाबू ब्रजमोहन लाल बी० ए० बलरामपुर, गोंडा (६) पंडित सीता शरण, महल्ला राजा का शहर, गोंडा (७) बाबू रामसेवक प्रसाद वर्म्मा, धमी टोला, गया (८) पण्डित तुरन्त नाथ शर्म्मा, मु० व्रड, पो० कछौना जि० हरदोई (९) बाबू नन्दन सिंह, सहत वार, जि० बलिया (१०) पण्डित हीरानन्द शास्त्री एम० ए०, लाहौर (११) पण्डित सानुकूल दुबे मुदर्रिस, शिवपुर कपूर दियर, पो० बैरिया, जि० बलिया (१२) पण्डित शिवचरन लाल तिवारी महोवा हमीरपुर (१३) बाबू हेमचन्द्र मोहर्रिर, हजराय डिगरी, मुन्सफी, सहारनपुर (१४) पण्डित नारायण प्रसाद, मेयो कालेज, अजमेर (१५) बाबू रामयश लाल, नरखोरिया, पो० छपिया, जि० बस्ती (१६) पण्डित पीताम्बर प्रसाद श्री वास्तव वकील, जबलपुर।

(७) मंत्री ने कालाकांकर के श्रीमान् राजा रमेश सिंह की असामयिक और दुखद मृत्यु की सूचना दी जो इस सभा के बड़े उत्साही सभासद और हिन्दी के बड़े प्रेमी थे।

निश्चय हुआ कि सभा को ऐसे राजा साहब की मृत्यु से विशेष शोक हुआ है।

८ मंत्री ने इस सभा के सभासद बाबू रामलाल गुप्त खवा, पो० दौसा राज्य जैपुर की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया।

(९) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं (१) बाबू राम सहाय लाल, सौदागर, कचहरी रोड, गया-श्री सीताराम झूला बहार, सुलभ नोट बुक (२) श्रीमान् राजा साहब बहादुर प्रतापगढ़-राज भक्ति, (३) बिहार बन्धु प्रेस बांकीपुर-महाभारत का भाषा अनुवाद आदि और सभा पर्व, जीव जन्तु दूसरा भाग, लोकनीति तत्व, आयुर्वेद विज्ञान, नल दमयन्ती, मन की चोरी या धनकी चोरी, रासेलस, महाश्वेता संसार सुख दूसरा और तीसरा भाग, सावित्री सत्य वान, स्वप्न में तीन दैत्य, कलकत्ते का मुख्तसर हाल, प्रातस्मरणीय श्लोक और पूजा विधि, Collection of riddles. (४) पंडित बैजनाथ कबीर चौरा, काशी नीति प्रकाश २ प्रति। (५) एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल कलकत्ता Journal and proceedings Vol. VI. Nos. 2. 3. 4 and 5. for February, March, Apriland May 1910 (६) Indian Antiquary for Septr. 1910. (७) खरीदीगईं- ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रम, बालनीति शिक्षा पहिला भाग।

(१) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता: २९ अक्तूबर १९१० सन्ध्या के ५॥ बजे

स्थान-सभा भवन।

(१) पण्डित राम नारायण मिश्र के प्रस्ताव तथा रायकृष्ण दास के अनुमोदन पर बाबू शिवप्रसाद गुप्त सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० २४ सितम्बर १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए (१) बाबू छन्नूलाल टीचर हरिश्चन्द्र हाई स्कूल काशी १॥) (२) बाबू जगन्नाथ दास बी० ए०, ५७ सुडिया स्ट्रीट काशी १॥) (३) पण्डित मुरलीधर शर्म्मा अध्यापक पाठशाला जरनल गंज कानपुर ३) (४) डाक्टर तेज बहादुर सप्रू एम० ए० एल० एल० डी०, एडवोकेट हाईकोर्ट इलाहाबाद १२) (५) पण्डित मदनमोहन भार्गव शास्त्री नं० ३।३ शकर कंद की गली काशी १॥) (शेष आगे)

विज्ञापन

संयुक्त प्रदेश की पाठशालाओं की प्राइमरी कक्षाओं में पढ़ाने के लिये नियत की जाने वाली वर्नाक्युलर रीडरों (पाठ्य पुस्तकों) के पाठों को लिखना चाहते हों वे इस विषय का प्रार्थनापत्र भेजें। जिनके प्रार्थना पत्र स्वीकृत होंगे उन्हें पूरा ब्योरा लिख भेजा जावेगा। प्रबन्ध की योग्यता के अनुसार पारितोषिक घट वा बढ़ सकता है अर्थात् आज कल की इण्डियन प्रेस रीडरों के समान प्रत्येक पेजों के लिये ३) से ५ तक हो सकता है। प्रार्थनापत्र नमूने के प्रबन्धों के साथ आवें या लेखक अपने किसी छपे हुए प्रबन्धों का पता देवें। सेक्रेटरी रूरल एजु केशन कमिटीसंयुक्त प्रदेश इलाहाबाद के दफ्तर में ३ जनवरी १९११ ई० तक प्रार्थनापत्र पहुंच जावें॥

ओ३म्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री वेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तबइनकी और औषधियां को भी सेवन करना चाहिये !

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयां की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियां के प्रचार होने पर सर्व साधारण, बंचक औषध बिक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियां के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे ।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

परीक्षा के लिये।

प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

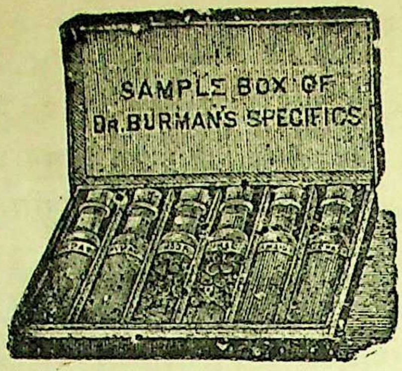

दाम (१॥) रु०

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है। इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशियों में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमाल है। थोड़े खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमें की दवा—तत्काल दमें को दगती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली —सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं:-

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से—आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाही गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताव दियरा जिला सारनसे—आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंह रईस पो० गौतरा जिला बदाऊं से—छैःमशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत१॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बख्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाइगइहै।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से-महाशय ! अपने जो अपना परीक्षा का बकस और दादका मलहम भेजा सा दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक्स की छोटी शीशियां का तो यही असर है कि" रविमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, महरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

डा: एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित स०१८८४।'२६ वर्षसे अधिक प्रचलितहै

भारत प्र० कार्यालय में बाबू माधव प्रसाद

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सें लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | जनवरी १९११। | संख्या ७

सूचना और सम्मति।

पाठकों को विदित ही होगा कि सभा ने नए सिक्कों पर नागरी अक्षरों को भी रखने के लिए भारतसरकार से प्रार्थना की थी। इसके उत्तर में गवर्नमेंट ने लिखा है:—

"देशभाषाओं के अक्षरों को स्थान देने में ढालने आदि की कई बाधाएँ हैं। फ़ारसी अक्षरों को जो स्थान दिया गया है वह इस कारण कि मुग़लों के समय से वे सिक्कों पर रहते आए हैं। सरकार ने परम्परा से चली आती हुई रीति में फेरफार करना उचित नहीं समझा।"

खेद है कि इस उत्तर से संतोष प्राप्त होने के स्थान पर निराशा होती है। नागरी अक्षरों का प्रचार फ़ारसी अक्षरों की अपेक्षा कहीं अधिक है। संस्कृत के ग्रन्थ नागरी अक्षरों ही में छपते हैं, इससे उत्तरीय भारत के अतिरिक्त दक्षिणखंड में भी सब पढ़े लिखे लोग उनसे परिचित हैं। अतः अनेक भिन्न भिन्न लिपियों को स्थान देने का आग्रह कोई नहीं कर सकता था। नागरी लिपि के दे देने ही से सारे भारतवासियों को संतोष हो जाता। सभा ने इस विषय पर फिर गवर्नमेंट को लिखा है।

और सुनिए। इधर बनारस ज़िले की मनुष्य गणना करने वालों को जो आदेश दिया गया उससे यह प्रतीत हुआ कि हिन्दी को फिर वही स्थान दिया जायगा जो तीस वर्ष पहिले उसे सर सैयद अहमद ने दिया था; अर्थात् वह गँवारी बोली समझी जायगी। सभा ने बनारस सिंसस आफ़िसर से इस संबंध में लिखापढ़ी की। वहां से जो उत्तर मिला वह यह है:—

४ जनवरी १९१०

महाशय,

आपके २० दिसंबर के पत्र नं० २२३९-१८ के लिए धन्यवाद। उत्तर में निवेदन है कि न तो हिन्दी के भाषा होने के संबन्ध में और न उसके विस्तार के सम्बन्ध में किसी प्रकार की भ्रान्ति है (देखिए सुपरिंटेंडेंट की रिपोर्ट का उद्धृत अंश)। मैं आपका ध्यान १३ वें नियम पर भी दिलाता हूं। गँवारी बोली शब्द से हिन्दी की ठीक परिभाषा नहीं की गई है वरन यह बतलाया गया है कि उसे लोग ऐसा कहते हैं (जिसको।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग गँवारी बोली कहते हैं)

भवदीय।

संयुक्त प्रान्त के सिंसस सुपरिंटेंडेंट के नोट का उद्धृत अंशः—

"७ कालम १३-भाषा—भाषा के सम्बन्ध में निम्न लिखित विचार नितान्त भ्रमात्मक हैं:—

(१) सब दिहाती हिन्दी बोलते हैं।

(२) सब हिंदू हिंदी बोलते हैं।

(३) नीच जाति के सब लोग हिंदी बोलते हैं

(४) सब मुसलमान लोग उर्दू बोलते हैं।

(५) शिक्षितों की भाषा उर्दू है और अशिक्षितों की हिन्दी।

पश्चिम में विशेषतः रुहेलखंड में, सब नहीं तो बहुतेरे दिहाती चाहे हिन्दू हों चाहे मुसल्मान उर्दू बोलते हैं। बहुत से शिक्षित हिंदू उर्दू बोलते हैं। मैंने कहीं कहीं शिक्षित हिन्दुओं को इस बात पर जोर देते देखा है कि उनकी भाषा उर्दू है। बहुत से मुसल्मान विशेषतः पूर्व के—और उनमें भी बनाए हुए—हिंदी बोलते हैं। मुझे एक शिक्षित व्यक्ति मिले जो अंग्रेजी जानते थे पर हिन्दी के सिवाय कुछ नहीं बोलते थे।"

उपर्युक्त नोट के विषय में मुझे कुछ कहना है। जो ५ बातें भ्रमात्मक बतलाई गई हैं वे सब ऐसी नहीं हैं। (१) सब दिहाती लोग हिन्दी बोलते हैं। इसमें झूठ क्या है? ये दिहाती लोग न अरब से आने का दावा करते हैं न ईरान से। फिर ये हिन्दी न बोलेंगे तो और बोलेंगे क्या? यदि इनमें से किसी ने पेट पालने के लिए मदरसे में उर्दू पढ़ी भी तो वह घर में अपनी बोल चाल नहीं बदल देता। रुहेलखंड आदि पश्चिमीय जिलों के लोग उर्दू बोलते हैं इस अपूर्व आविष्कार का आधार क्या है? उर्दू आप कहते किसको हैं? शायद खड़ी हिंदी बोली को, जिसके मुंह से "मैं आता हूं" और "वह जाता है" आपने सुना उसे चट उर्दू बोलने वाला क़रार दिया और जिसके मुंह से "हम आवत हैं" "ऊ जात बा" सुना उसकी भाषा को आपने हिन्दी समझा। यही बात है न? हा! इस अंधेर का भी कहीं ठिकाना है! यदि यही धारणा रही तब तो दिल्ली, आगरा, मेरट सारे ज़िलों की भाषा उर्दू लिखी जायगी क्योंकि वहाँ के लोग प्रायः वही शुद्ध खड़ी बोली बोलते हैं जो कि टकसाली हिन्दी मानी गई है और जो पुस्तकों और सामयिक पत्रों में व्यवहृत होती है। काशी में भी जो खत्री, अग्रवाल आदि पश्चिम से आए हुए लोग हैं उन के घरों मे भी खड़ी बोली ही बोली जाती है और पंडित लोग भी खड़ी बोली में बातचीत करते हैं तथा अपनी कथा वार्ता भी "को है सो" और "कर कर के" करके खड़ी बोली ही में सुनाते हैं। अतः इनकी भाषा भी उर्दू लिख डालिए; भाषातत्ववेत्ता लोग बैठे झख मारा करें। डाक्टर हार्नली और डाक्टर ग्रियर्सन लाख 'पूर्वी हिन्दी' और "पश्चिमी हिन्दी" का भेद समझाया करें पर यहां तो सारे पश्चिमी जिलों के दिहातों की बोली उर्दू लिखी जायगी।

(२) सब हिन्दू हिन्दी बोलते हैं। इसमें भी संदेह करने की कोई बात नहीं है। खड़ी बोली तब तक उर्दू नहीं कही जा सकती जब तक उसमें ठेठ और अपभ्रंशी शब्दों के रहते हुए भी अरबी और फ़ारसी के शब्द तथा महावरे न ठूसे जायँ। अब अपने घर में इन अरबी और फ़ारसी शब्दों को लाने की आवश्यकता हिन्दुओं को क्यों पड़ने लगी? दफ़्तर वा कचहरियों के कर्मचारियों वा सहयोगियों के साथ चाहे वे उर्दू भले ही बोल लें पर अपने घरों में तथा बाहर नित्य के व्यवहार के निर्वाह के लिये वे हिन्दी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलते हैं चाहे पूर्वी चाहे पश्चिमी।

सब नीच जाति के लोग हिंदी बोलते हैं। यह बिचार भी ठीक और भ्रमशून्य है।

प्रयाग संहिता विभागका केन्द्रस्थल।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा से जब कोश विभाग का दफ्तर काश्मीर चला गया और मैं कई कारणोंसे काश्मीर न जा सका, तब मुझे जुलाई से दिसम्बर मास तक प्रयाग में रहना पड़ा। इसके पूर्व मैं कभी प्रयाग एक सप्ताह से अधिक नहीं रहा था। यहां रहने पर मुझे मालूम हुआ कि इस ज़िले में एक अथर्वन नाम का परगना है। मैंने यहां के बहुतेरे शिक्षकों से तथा अपने अन्य इष्टमित्रों से पूछा कि इस परगने का अथर्वन क्यों नाम पड़ा, पर किसीने इस का कारण न बताया। मैंने यहां के कायस्थ पाठशाला के पुस्तकालय से ले कर इलाहाबाद के गज़टियर में ढूंढा पर उसमें भी इस परगने के ऐसा नाम होने का कोई कारण नहीं मिला। हताश होकर मैं कई महीने इसीके कारण ढूंढने के उलट फेरमें पड़ा रहा। नाना तरङ्ग चित्त में उठती थीं बहुत कुछ सोचता था पर कोई सन्तोष जनक समाधान चित्त में नहीं आता था। एक दिन प्रसङ्ग वश निरुक्तालोचन के इस वाक्य पर दृष्टि पड़ी।

अथर्वा नामर्षिरेवहि यज्ञक्रियायाः प्रथमप्रकाशकः। अतः स एव हैात्रादिकार्य्य सौकार्यायैवम्।ादिनाम्नावेदविभाजकश्चेत्यपिमम्भाव्यते"

मैंने बिचार किया क्या यह सम्भव हो सकता है कि इसी पुण्य स्थान में अथर्वा ऋषिने यज्ञ के लिए वेद के संहिताओं का विभाग किया हो और चातुर्होत्र कर्म की नींव डाली हो जिसके विषय में यज्ञैरथर्वा प्रथमःपथस्तते इत्यादि मन्त्रों में ऋगादि वेदों में वर्णन है। मैं बिचार करता गया और यह अनुमान दिन २ पुष्ट होता गया। विशेष कर प्रयाग शब्द जिसका अर्थ प्रकर्षेण यजन्तियत्र सः प्रयागः जहां बहुत यज्ञ हो उसे प्रयाग कहते हैं, मेरे इस अनुमान का पोषक हुआ फिर क्या था मेरे सामने वैदिक इतिहास के एक अन्तिम घटना का चित्र चित्रित हो गया जिसका वर्णन पाठको के लिये मैं निम्नलिखित वाक्यों में करता हूं।

जब तक आर्य्यों की आबादी पंजाब में थी संहिताभिाग नही हुआ था ऋषिगण नाना घटनाओं पर मन्त्र बनाते रहे। साधारण लोग उन मन्त्रों को कण्ठाग्र रखते थे, और अग्निहोत्र के अतिरिक्त अन्य यज्ञों की क्रिया से अनभिज्ञ थे। वे पशुहिंसा भी नहीं करते थे और यही कारण है कि पंजाब देश के ब्राह्मणों में मांसभक्षण का प्रचार नहीं है और वे लोग यज्ञ की क्रियाओं से अनभिज्ञ हैं। जब आर्य्यों की बस्ती बढ़ी और वे लोग पंजाब से गंगा के सिंचित मैदानों की ओर बढ़े तब ब्राह्मणों की दशा में कुछ परिवर्तन होने लगा और ये लोग याजक के काम में लगे। प्रयाग के पास पहुंच कर इन लोगों के प्रधान अथर्वा ऋषिने चातुर्होत्र कर्म के सुबीते के लिये मन्त्रों का संग्रह करके उन्हें चार संहिताओं में विभक्त किया। वह स्थान जहां पर संहिताओं का विभाग किया गया आज के दिन लों अथर्वाऋषि के नाम से अथर्वन (अथर्वण) प्रख्यात हैं। संभव है कि यहां पर हैात्रादि कर्म के शिक्षार्थ एक बिहार भी स्थापित किया हो जिसका ठीक पता बहुत काल बीतने के कारण नहीं लगता। होता अध्वर्यु उद्गाता और ब्रह्मा में ब्रह्मा ही श्रेष्ठ है और ब्रह्मा ही वैदिककर्म्मों का प्रधान शिक्षक होता था, निरुक्त में लिखा है

"ब्रह्मा सर्वविद्यः सर्वं वेदितुमर्हति"

महात्मा गौतम बुद्धने भी लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो तेसं परमो आसी ब्रह्मा दढ़ परक्कमो।
सचापि मेथुनं धम्म सुपिनन्तेन नागम

फिर इन कर्मों का प्रयोग प्रयाग में हुआ, नाना प्रकार के यज्ञ यहां पर किये गये जिस कारण से इसका नाम प्रयाग हुवा। कान्यकुब्ज तथा सरयूपारी ब्राह्मणों का मांसभक्षी होना तथा कर्मकाण्ड और पौरोहित्य में इनकी विशेष रुचि भी इस बात का साक्षी है कि यज्ञ कर्म्म का आविर्भाव इसी पुण्य भूमि में हुआ।

मेरा यह विचार किसी पाश्चात्य वा प्रतीच्य विद्वान के लेख के आधार पर नहीं है किन्तु मेरी आत्मा में जैसा भान हुआ वैसा आप लोगों के सामने विचारार्थ उपस्थित किया।

जगन्मोहन बर्म्मा।

परलोकवासी पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र

यह वर्ष भी हिन्दी प्रेमियों को दुःख देता हुआ जा रहा है।

हिन्दी सम्वादपत्रों के पथप्रदर्शक, लोकोपकारी कार्य्यों के उत्तेजक, राजनैतिक रहस्यों के मर्मज्ञ, अनेक देशभाषाओं के जानने वाले, अपनी अपूर्व उक्तियों से रुष्ट और रोतों को हंसाने वाले, पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र इस लोक से चल बसे। मिश्र जी को कुछ दिनों से ग्रहणी रोग के लक्षण दिखाई दे रहे थे। वे जलवायु परिवर्त्तन के विचार से काशमीर की राजधानी श्रीनगर गए। पर वहां जाने से उन्हें लाभ के बदले हानि हुई। उनका रोग घटने के स्थान पर और बढ़ गया। अन्त में वे जंबू लौट आए और वहां दो महीने रह कर कलकत्ते चले गए जहां चिकित्सा का अच्छा से अच्छा प्रबंध रहते हुये भी उस दारुण रोग ने उनकी विशाल निर्द्वन्द्व और हंसती हुई मूर्ति का सदैव के लिए अदर्शन करा ही दिया। हा शोक! इनके अंग हिलाने मात्र से समाज, जाति वा भाषा का कुछ न कुछ हितसाधन हो ही जाता था। अपने "उचित वक्ता" पत्र से इन्हों ने आधुनिक हिन्दी की प्रारम्भिक दशा में हिन्दीपाठकों के बीच कैसे २ दृढ़ और परिपक्व भावों का प्रचार किया यह हमारी भाषा की नवीन गति से परिचय रखने वालेमात्र जानते हैं। इनमें गुण एक से एक बढ़ कर थे। ये उदार और गंभीर भावों से परिपूर्ण होने पर भी सांसारिक व्यवहारों में इतने कुशल थे कि पक्के से पक्के धूर्त की भी इनके सामने दाल नहीं गल सकती थी। इनके स्वार्थत्याग और विलक्षण गुणों के कारण बड़े बड़े राजा महाराजा तथा विद्वान् लोग इनका बहुत आदर करते थे, और इनके परामर्शों की प्रौढ़ता को स्वीकार करते थे। ये विनोदप्रिय भी बड़े भारी थे। कभी कभी ऐसे चुटकुले छोड़ते थे कि हंसते २ पेट में बल पड़ने लगता था। जंबू में मुझे इनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमारी हिन्दी के लिए तो मानो इन्हों ने जन्म ही लिया था। कलकत्ते के बड़े बड़े बंगाली ग्रन्थकारों की सहानुभूति हिन्दी की ओर खींचने में इन्हों ने कोई बात उठा नहीं रक्खी। इनका जन्म जंबू राज्य के अन्तर्गत सांबा ग्राम में हुआ था अतः इनकी यह बड़ी भारी अभिलाषा थी कि निजदेशबासी डोगरे लोगों के बीच हिन्दी भाषा का प्रचार हो। इधर इनका बिचार जंबू में एक बड़ी डोगरा पाठशाला स्थापित करने का था जिसमें संस्कृत के साथ हिन्दी का पढ़ना आवश्यक हो। बीमारी के समय में भी ये जब तक जंबू रहे इस कार्य्य के लिए उद्योग करते रहे। बहुत से लोगों को इन्हों ने इस कल्याणकर कार्य्य में धन की मासिक सहायता देने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध किया था। साथ ही इनका विचार जंबू वा उसके आस पास एक हिन्दी पुस्तकालय खोलने का भी था। संतोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विषय है कि उनकी उत्तेजना से जम्बू में दो एक महाशय पुस्तकालय स्थापन के लिए उद्यत हो गए और अब उसके प्रयत्न में हैं। ईश्वर ऐसे देशहितैषी और मातृभाषाभिमानी महात्मा की आत्मा को शान्ति और उनके कुटुंबियों को धैर्य्य दे।

एक लिपि विस्तार कान्फरेंस।

गत २९ दिसंबर को कांग्रेस पंडाल में एक लिपि विस्तार कान्फरेंस की बैठक हुई। श्रीमान् शारदा चरण मित्र महोदय ने कान्फरेंस का कार्य्य आरंभ किया। रायबहादुर लाला लालचंद के प्रस्ताव और राजा पृथ्वीपाल सिंह के अनुमोदन पर मद्रास के जस्टिस कृष्णस्वामी ऐयर सभापति चुने गए। सभापति महाशय ने एक अत्यन्त युक्तिपूर्ण और मनोहर वक्तृता दी जिसका सारांश यह है:—

"मैं केवल इसी कारण सभापति बनाया गया हूं कि मैं एक ऐसे प्रान्त का हूं जहां इस एकलिपि प्रचार की ओर लोगों का बहुत कम ध्यान है और जहां के लोगों को उस लिपि को ग्रहण करने पर उद्यत करना अत्यन्त कठिन है जिसकी उत्पत्ति दक्षिणी लिपि से भिन्न है। वर्ष के इस अवसर पर कांग्रेस और कान्फरेंसों की धूम रहती है। यद्यपि यह एकलिपिविस्तार कान्फरेंस सब से पीछे की है पर महत्व में यह किसी से घटकर नहीं है। देश में एक नई जागृति और एकता का जातीय भाव फैल रहा है। पर जातीय एकता के भाव का तब तक कुछ फल नहीं हो सकता जब तक कि हम एक भाषा और एक लिपि स्थापित करने का प्रयत्न न करें। इस सभा में हम एक भाषा का विषय नहीं लेते हैं, हम पहिले अपने देशवासियों को एक लिपि ग्रहण करने की उपयोगिता को बतलाना चाहते हैं। एकता तब तक पूर्णरूप से स्थापित नहीं हो सकती जब तक हम उन विभेदों को दूर न करदें जो हम में बहुत अधिक हैं। एक जाति वा समाज बनाने के लिए एक भाषा और एक लिपि प्रधान सामग्रियां हैं। पर प्रायः २०००० लिपियों और १४७ भाषाओं के होते हुए एक लिपि और एक भाषा का प्रचलित होना पहिले पहिल एक असम्भव स्वप्न समझा जायगा। पर कुछ ऐसे उन्नत दृष्टि के लोग भी हैं जो यह देख रहे हैं कि जो आज एक स्वप्न है और कल एक आशा मात्र है वही परसों एक प्रत्यक्ष बात हो जायगी। विधाता के यहां कोई बात अनहोनी नहीं है। इस समय २९ करोड़ मनुष्य आर्य्य भाषाएं बोलते हैं और साढ़े पांच करोड़ मनुष्य द्राविड़ भाषाएं जिनका उद्भव संस्कृत से स्वतंत्र समझा जाता है। अतः यदि भारतवासी अपनी निज की भाषा और लिपि के अतिरिक्त एक और व्यापक भाषा और लिपि का व्यवहार करने लगें तो इससे उपर्युक्त अनेक बोलियों और लिपियों पर किसी प्रकार का व्याघात न पहुंचेगा। विचार कीजिए कि भिन्न २ लिपियों के होने से हमें कितनी हानि है। भिन्न भिन्न भाषाओं के होने पर भी यदि लिपि एक हो तो किसी एक भाषा का देश में समझा जाना सम्भव है क्यों कि उनमें से अधिकांश आर्य्य हैं और उनके कुछ न कुछ शब्द सब भाषाओं में समान रूप से मिले जुले हैं। अब जब कि इतने उत्कृष्ट लेखक देशीभाषाओं के साहित्य की पूर्त्ति कर रहे हैं और उन सब देशी साहित्यों का उठान प्राचीन आर्य्य साहित्य से है तब क्या एक भाषा की सम्पत्ति को दूसरी के पास पहुंचाना आवश्यक नहीं है? यदि आवश्यक है तो क्या इसका साधन एक लिपि के द्वारा धीरे धीरे सम्भव नहीं है? जहां तक मैं समझता हूँ अब लोगों को एक लिपि की आवश्यकता समझाने की ज़रूरत नहीं है। अब ज़रूरत है इस बात के बतलाने की कि एक लिपि का होना सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम यदि किसी एक लिपि को ग्रहण करना चाहें तो हमारे सामने कई लिपियां हैं। एक ओर अरबी लिपि है जिसे यदि सब नहीं तो अधिकांश मुसलमान अपने संकीर्ण जातीय ममत्व के वशीभूत हो कर अपनाए हुए हैं। कुछ लोग रोमन अक्षरों को उपयुक्त बतलाते हैं। फिर देवनागरी लिपि है जिसमें आज कल हिन्दी और प्रायः समस्त भारतीय भाषाओं की जड़ संस्कृत लिखी जाती है। अब यदि आप को एक लिपि स्वीकार करना है तो यह प्रश्न अवश्य उठेगा कि व्यापक लिपि होने के लिए गुण क्या होने चाहिएं। सब से पहिले तो यह जरूरी है कि वह सर्वांगपूर्ण हो, उसमें व्यर्थ अक्षरों की भरती न हो, प्रत्येक ध्वनि को सूचित करने के लिए अक्षरों की कमी न हो। इनके अतिरिक्त यह भी देखना है कि वह लिपि सुगमता से सीखी लिखी और छापी जाने के योग्य हो।

अब मैं इन तीनों लिपियों पर एक एक करके विचार करता हूं। अरबी लिपि तो इस कारण तिरस्कृत है कि वह अपूर्ण भी है और उसमें व्यर्थ अक्षरों की भरती भी है (अनुमोदन ध्वनि) उसमें कई ऐसे अक्षर हैं जो एक ही ध्वनि को सूचित करते हैं। कुछ ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए इस अरबी वर्णमाला में स्वतंत्र अक्षर भी नहीं हैं। आज मुझे इस विषय के अच्छे ज्ञाता मि० सैयद अली बिलग्रामी का यह निश्चित मत सुनाया गया कि अरबी लिपि भारतीय लिपि होने के योग्य नहीं है और मुसलमानों को भी चाहिये कि वे इस लिपि को शीघ्र परित्याग कर उस लिपि को ग्रहण करें जिसका चलन सारे देश में है और जिस से सब काम काज निकल सकते हैं।

रोमन अक्षरों के विषय में हम यह तो अवश्य कहेंगे कि उसे स्वीकार कर लेने में कई सुबीते हैं। अंग्रेजी तथा यूरोप की प्रायः सब भाषाएं जिनमें वर्त्तमान काल की सर्वोच्च सभ्यता का विकाश है इन्ही अक्षरों में लिखी जाती हैं। यदि ये अक्षर प्रचलित हो जांय तो देश के एक भाग के निवासियों को दूसरे भाग के निवासियों के साथ व्यवहार रखने में सुबिधा हो जायगी। साधारण यात्री के लिये हिन्दी भाषा और रोमन अक्षरों में छपे हुए टाइमटेबुल से बहुत सहारा मिलेगा। यदि आपको दक्षिण में यात्रा करनी पड़े तो यह विदित हो जाय कि मेरे ऐसे आदमी को उत्तरीय भारत के बीच यात्रा करने में कितनी कठिनाइयां पड़ती हैं। पर मैं यह कहने के लिए उद्यत नहीं हूं कि रोमन अक्षरों के ग्रहण से हानियां न होंगी। बहुत संभव है कि इससे लोगों के जातीय भाव को धक्का पहुंचे जैसे कि अरबी को हटाने से मुसलमान लोगों के जातीय भाव में धक्का पहुंचना संभव बतलाया जाता है। मैंने रोमन के पक्ष में लिखे हुए लेखों को सहमत होने के बिचार से पढ़ा। पर जितनी ही मैंने इस की परीक्षा की उतना ही मुझे उसका स्वीकार किया जाना असम्भव प्रतीत हुआ (अनुमोदन ध्वनि)। असम्भव इस कारण कि अपूर्णता और व्यर्थ की भरती के कारण यह लेखन का एक अनुपयुक्त साधन है। अंग्रेजी वर्णमाला का कोई अक्षर लेकर देखिए। A लीजिए। यह आ, ए, ऐ आदि अनेक ध्वनियों को सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है। U को देखिए। इससे यू (Acute) उ (Put) औ अ (Cut) आदि अनेक ध्वनियों का काम लिया जाता है। अंग्रेजी भाषा को सीखने में बड़ी भारी अड़चन उसकी वर्णमाला की गड़बड़ के कारण है। कुछ लोग इस अपूर्णता को दूर करने के लिए कुछ संकेतों की सृष्टि का उपदेश देते हैं। पर मैं नहीं समझता कि जब वहां कई ध्वनियों को सूचित करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए अक्षर ही नहीं हैं तब इन संकेतों से क्या होगा ? मैं यह मानता हूं कि a और u लिख कर औ निकाला जा सकता है। पर यह भी स्मरण रखना चाहिए कि अधिकांश भाषाओं में सन्धि का प्रयोग है। अतः इस रीति से भी हमारा काम नहीं चल सकता।

भिन्न२ ध्वनियों को अक्षरों द्वारा व्यञ्जित करने में भारतवासी सबसे बढ़े चढ़े हैं। उन्होंने जिह्वा, तालु, कण्ठ आदि उच्चारण स्थानों के अनुसार नाद के विभाग किए हैं। पर इस पूर्ण प्राय लेखशैली में भी कुछ त्रुटियां हैं ; जैसे नागरी वा उससे निकली हुई वर्णमालाओं में रोमन और अरबी के 'फ़' और 'ग़' के लिए कोई स्वतंत्र संकेत नहीं हैं। दक्षिण की तामिल, तैलंगी, और मलयलाम आदि भाषाओं में भी कुछ ऐसी ध्वनि हैं जिनके लिए नागरी वर्णमाला में कोई स्थान नहीं। पर नागरी अक्षरों को ग्रहण करने में यह कोई बड़ी भारी बाधा नहीं है। जो जो संकेत नहीं हैं वे बना लिए जा सकते हैं। यूरोपियन विद्वानों ने भी संस्कृत के लिए इसी नागरी लिपि को स्वीकार किया है और गवर्नमेंट की अध्यक्षता में सम्पादित संस्कृत पुस्तकें भी इसी नागरी लिपि में छपती हैं। इन बातों का बहुत विस्तृत प्रभाव पड़ा है और तैलंग, कनाड़ी, मलयलामी आदि सब दक्षिणी लोग जो पहिले अपनी भिन्न२ लिपियों में संस्कृत ग्रन्थों को छपाने के पक्षपाती थे अब संस्कृत पुस्तकें नागरी अक्षरों ही में छपाते हैं। मेरे मित्र बाबू शारदाचरण मित्र कहते हैं कि बंगाल में भी यही अवस्था है। महाशयो, मैं ने सुना है कि जर्मनी और जापान के लोग भी, जिनके समान देशभक्त संसार में नहीं हैं, अपनी निजकी लिपि को छोड़ सर्वव्यापक लिपि को ग्रहण कर रहे हैं वा ग्रहण करने पर उद्यत हो रहे हैं। अब मेरी यह प्रार्थना क्या निष्फल होगी कि पंजाब, बंगाल युक्त प्रदेश आदि के लोग अपनी भिन्न २ लिपियों को छोड़ जो प्रायः सब की सब या तो नागरी से निकली हैं या उससे मिलती जुलती हैं, देश के हित के लिए नागरी अक्षरों का व्यवहार स्वीकार करें ?" इत्यादि। वक्तृता के उपरान्त निम्नलिखित प्रस्ताव पास किए गए:—

पहले प्रस्ताव में भिन्न २ प्रान्तों में सामाजिक और साहित्य विषयक बातों में अधिक मेल बढ़ाने विद्या के प्रचार करने और आपस के विचारों को फैलाने के लिए भिन्न२ भाषाओं के लिखने में एक राष्ट्र लिपि व्यवहृत होने की आवश्यकता स्वीकार की गई। इस प्रस्ताव को 'माडर्नरिव्यू' के प्रसिद्ध सम्पादक बाबू रामानन्द चैटरजी ने उपस्थित किया और मद्रास के मि० जी० ए० नैटसन और लखनऊ के पं० गोकर्णनाथ मिश्र ने इसका समर्थन किया। दूसरे प्रस्ताव द्वारा यह निश्चय हुआ कि भारत की राष्ट्र लिपि होने के लिए देवनागरी लिपि ही सब से उत्तम लिपि है। इस प्रस्ताव को राय बहादुर लाला बैजनाथ ने उपस्थित किया और मि० बी० एन० मित्र पं० श्रीकृष्ण जोशी, मि० महादेव राजाराम बोडस और विज़गापटम के मि० पी० एल० नरसिंहम ने इसका समर्थन किया। तीसरे प्रस्ताव में स्वीकार किया गया कि भारत की एक राष्ट्रलिपि होने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि इसकी उपयोगिता दिखाने के लिए सरक्यूलर और सूचनापत्र निकाले जांय। इसका प्रचार करने के लिए उपदेशक भेजे जांय और भारत की भिन्न भिन्न भाषाओं की पुस्तकें देवनागरी लिपि में छापी जांय और विद्यार्थियों को सुन्दर नागरी अक्षर लिखने के लिए पदक और पारितोषिक दिए जांय। इस प्रस्ताव को पंजाब के प्रोफेसर रामदेव ने उपस्थित किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मारिशस के डाक्टर मन्नीलाल ने इसका समर्थन किया। चौथे प्रस्ताव में यह निश्चय हुआ कि उक्त प्रस्तावों को कार्य्य में परिणत करने के लिये भिन्न भिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधियों की एक प्रधान कमेटी बनाई जाय और सब प्रान्तों में इसकी शाखा सभाएं स्थापित की जांय। इस प्रस्ताव को पं० श्यामबिहारी मिश्र ने उपस्थित किया और पं० रामनारायण मिश्र ने इसका समर्थन किया. इस कमेटी में मि० जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर, पं० मदनमोहन मालवीय, बा० शारदाचरण मित्र, पं० श्रीकृष्ण जोशी, माननीय मि० हरचन्दराय, डाकृर सतीशचन्द्र बैनरजी, लाला लालचन्द, लाला मुंशीराम सर गुरुदास बैनरजी प्रो० रंगाचारी मि० अप्पाराव, बाबू गोबिन्ददास और मि० मोहनचन्द कर्मचन्द गांधी चुने गए और इस कमेटी को यह अधिकार दिया गया कि वह इस कमेटी में और लोगों को भी बढ़ा सकती है। छठे प्रस्ताव में इस बात पर खेद प्रगट किया गया कि भारतबर्ष के अधिकांश लोगों में देवनागरी लिपि का प्रचार होने पर भी नए करेन्सी नोटों से वह निकाल दी गई, और प्रार्थना की गई कि अब जो नए नोट वनें उन पर उनका मूल्य नागरी अक्षरों में भी दिया जाय। इस प्रस्ताव को बा० बलदेव प्रसाद ने उपस्थित किया और बा० शिवप्रसाद गुप्त ने इसका समर्थन किया। सातवें प्रस्ताव में गवर्मेंट से प्रार्थना की गई कि नए सिक्कों पर उनका मूल्य नागरी में भी लिखा रहे। इस प्रस्ताव को पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित ने उपस्थित किया और बा० गौरीशङ्कर प्रसाद ने इसका समर्थन किया। माननीय पं० मदनमोहन मालवीय ने सभापति और श्रीमान् शारदाचरण मित्र को धन्यबाद दिया और सभापति को धन्यवाद देने के प्रस्ताव का श्रीमान् शारदाचरण मित्र के समर्थन करने पर यह कान्फरेन्स भंग हुई।

इस कान्फरेंस में और जो हुआ सो अच्छा ही हुआ पर चौथे प्रस्ताव के सम्बन्ध में मुझे कुछ कहना है। प्रतिनिधियों की जो कमेटी बनाई गई है वह किस बात का लक्ष्य करके? हिन्दी के प्रसिद्ध प्रसिद्ध ग्रंथकारों और लेखकों में से किसीका नाम न देख संदेह होता है कि शायद इन प्रस्तावों को कार्य्य में परिणत करने के लिए उन लोगों में से किसी की आवश्यकता नहीं है जिन्हों ने मान मर्यादा बढ़ाने की चिन्ता छोड़ अपने जीवन का मुख्य भाग हिन्दी भाषा का भंडार भरने में लगाया है। पंडित महाबीर प्रसाद द्विवेदी बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए०, उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी, पंडित अमृतलाल चक्रवर्ती, आदि में से क्या किसी का सम्बन्ध इन प्रस्तावित विषयों से नहीं है? अन्त में हम यही कहते हैं कि जब तक भारतवासियों के हृदय से दिखावट और तड़क भड़क की रुचि न जायगी तब तक कोई सच्चा हितकर कार्य्य नहीं हो सकता।

सभा सम्बन्धी समाचार।

(१) तारीख २० अगस्त १९१० के कार्यविवरण को देखने से सभा के सब सभासदों को यह विदित हुआ होगा कि कुछ सज्जनों की यह सम्मति है कि सभा में यह नियम न होना चाहिए कि "सभा का कोई सभासद सभा के किसी कार्य वा निश्चय के विरुद्ध सभा के बाहर उस समय तक आन्दोलन नहीं कर सकता जब तक कि वह सभा का सभासद रहे।" प्रार्थना है कि इस प्रस्ताव के विरुद्ध अथवा इसके पक्ष में जिन सभासदों की जो सम्मति हो उसे वे शीघ्र भेज कर अनुगृहीत करें।

(२) सभा का साधारण मासिक अधिवेशन प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज़ी महीने के अन्तिम शनिवार को सन्ध्या के पांच बजे हुआ करता है। इस में सब सभासदों से उपस्थित होने की प्रार्थना है।

साहित्य सम्मेलन के लेख आदि पुस्तकाकार छप गए हैं। मूल्य ॥ी) है।

हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज विषयक मासिक रिपोर्ट।

सितम्बर १९१०

इस मास में खोज का काम काशी में ही होता रहा। अनेक सज्जनों के पास सभा का एजण्ट बारम्बार जाता रहा पर विशेष सफलता न हो सकी। पं० रघुनाथ राम शर्मा के यहां पुस्तकों का अच्छा संग्रह है पर उन्हें अवकाश कम रहा करता है। आशा है वे कृपा पूर्वक इस उपयोगी काम में सभा की सहायता करेंगे।

अक्तूबर १९१०

काशी में ही काम होता रहा। कई दिन एजण्ट को साहित्य-सम्मेलन के काम में लगे और बाद को वे छुट्टी पर घर गए। केवल थोड़े ही दिन इस मास में काम हुआ।

नवम्बर १९१०

काशी में काम जारी रहा और २४ पुस्तकों के नोटिस लिए गए।

दिसम्बर १९१०

काशी में ही काम होता गया। अब समाप्त प्राय है। इस मास में ४७ पुस्तकों के नोटिस हुए। कोई विशेष बात लिखने योग्य नहीं है।

श्यामविहारी मिश्र
छतरपुर।

—:0:—

सभा का कार्य्यविवरण।

(गताङ्क के आगे)

६ पंडित सूर्य्यबली बाजपेयी गवर्नमेंट कृषिफार्म काशी १॥) ७ स्वामी पूर्णानन्द जी मणिकर्णिकाघाट नरसिंह चौक काशी १॥) ८ पण्डित जानकीप्रसाद शर्म्मा धर्म्मकूप काशी १॥) ९ बा० हरिकृष्ण जौहर, ६४ हेरिसनरोड कलकत्ता ५) १० बा० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ३२ आरमेनियन स्ट्रीट कलकत्ता ३) ११ बा० अमृतलाल चक्रवर्ती ९७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट कलकत्ता ५) १२ पण्डित रामानन्द द्विवेदी वीर भारत आफ़िस कलकत्ता ३) १३ बा० नौजादिक लाल श्री वास्तव ११९ हाली स्ट्रीट कलकत्ता ३) १४ बा० दामोदर दास खत्री ६९।१ क्रास स्ट्रीट कलकत्ता ५) १५ बा० कन्हैयालाल, चौक, पटना सिटी १॥) १६ पण्डित बलदेव शर्म्मा काव्यतीर्थ सत्यसुधाकर प्रेस पटना सिटी १॥) १७ पण्डित पुरुषोत्तम। भट्ट मेनेजर विहार बन्धु प्रेस बांकीपुर ३) १८ पण्डित केवल रामभट्ट, मधुरिया टोला बिहार ३) १९ बा० रामनारायण खन्ना ६९।१ सूता पट्टी कलकत्ता १॥) २० पण्डित रामदास मिश्र ६९।१ सूतापट्टी कलकत्ता १॥) २१ बा० ललिता प्रसाद बी० ए० असिस्टेन्ट मास्टर क्वीन्सकालिजिएट स्कूल काशी १॥) २२ बा० गोविन्द राम पञ्जाबी ९४ लोअर चितपुर रोड कलकता ३) २३ बा० चन्द्रिका प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० वकील गाजीपुर ३) २४ बाबू कुलवन्त प्रसाद बी० ए० वकील गाज़ीपुर ३) २५ बाबू ब्रजबहादुर लाल बर्म्मा बी० ए० वकील गाज़ीपुर ३) २६ बाबू बांके विहारी लाल बी० एस० सी० २१ बुलानाला काशी १॥) २७ बाबू भगवान प्रसाद सिंह लक्ष्मीपुर बेलवा पो० पिंडरा जिलाबनारस १॥) २८ बा० बागेश्वरी दयाल पियरीकलां काशी १॥) २९ बा० बालक राम शर्म्मा सन्त सदन गोंडा १॥) ३० पण्डित नन्दराम कुमुद शर्म्मा वैद्यरत्न शान्ति कुटीर भीमगोंड़ा हरिद्वार १॥) ३१ ठा० शिवदत्त सिंह रईस गीरा पो० बिहार जि० उन्नांव १॥) ३२ बा० गोकुल चन्द्र खत्री० बुलानाला काशी १॥)

(४) सभासद होने के लिये ६५ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(५) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईः- बाबू जीवन दास, भुतहीइमली, काशी-चैतन्य चन्द्रोदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(संस्कृत) बा० लक्ष्मीप्रसाद बी० ए० बी० एल० वकील छपरा, सारन-उर्वशी नाटक--

संयुक्तप्रदेश की गवर्मेंट--(1) The Fauna of British India (2) Dist Gazetteers of Jhansi and Shahjahanpore.

स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण, श्री गुरुराम जी पुस्तकालय, गोंडा-वैश्य धर्म्म प्रकाश श्रीयुत वहिर बार रघुबीर सिंह जी रईस और जागीरदार जबलपुर-शास्त्र सिद्धान्त सार, पण्डित रामकृष्ण ब्रह्मचारी शान्तिकुटीर भीमगोड़ा हरद्वार-श्री ब्रजराज विलास। बा० माधवदास, कालभैरव, काशी। नखशिख २ प्रति-बा० गौरीशंकर प्रसाद बी० ए० एलएल० बी० काशी Chairman's Hand Book मुन्शी रघुनन्दन प्रसाद, कालीमहल, काशी-चित्र गुप्तेश्वर पुराण। बा० बलरामदास एम० ए० बुलानाला, काशी-अशौचनिर्णय चिंगल्लू की, डुमरांव की जुमाइशी जिरात, कृषि विद्या की प्रथम पुस्तक, मवेशी की मुहलिक बीमारियों की किताब, रिसाला इलाजुल बहायम मुल्क मु० भगवानदीन लक्ष्मीप्रेस गया-बीर बालक, बा० बलभद्र सिंह, छावनी-सिहोर सौन्दर्य कुसुम। पण्डित गौरी प्रसाद मिश्र, वकील भागलपुर गौरीशङ्करायण रामपूजन पद्धति, श्री वैद्यनाथ स्तुति, श्री सत्यनारायण कथा भाषानुवाद, श्री महादेव स्तुति, काली विनोद। पंडित नन्दप्रसाद मिश्र राजवैद्य, टिकारी, जि० गया-ब्रह्मदेव यशोमंजरी ५ प्रति Indian antiquary

(६) जबलपुर के बा० स्वरूप लाल नन्है।रिया का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी समिति।

सोमवार ता०३१ अक्तूबर १९१०-सन्ध्या के ५½ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०-सभापति, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, बाबू गौरीशंकर साद, बाबू बेणी प्रसाद, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, बाबू बालमुकुन्द बर्म्मा।

सम्मति भेजने वाले

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०

पं० श्यामबिहारी मिश्र

बाबू जुगल किशोर अखौरी

१ गत अधिवेशन (ता० २२ सितम्बर १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) उन्नाव की पब्लिक लाइब्रेरी, गोरखपुर के नागरी पुस्तकालय और मेरठ के देवनागरी स्कूल पुस्तकालय के पत्र उपस्थित किये गए जिनमें उन्हों ने सभा सेपुस्तकों की सहायता मांगी थी। निश्चय हुआ कि ये पत्र आगामी अधिवेशन में बाबू जुगल किशोर अखौरी की सम्मति के सहित उपस्थित किये जांय।

(३) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सब सभासदों को यह अधिकार दिया जाय कि वे सभा के सब पत्रों को देखें, छपे पत्रों को लें या खरीदें और लिखित पत्रों को हर समय देखें और उनकी लिपि अपने व्यय से लें।

इस पर बहुत वाद विवाद के अनन्तर समय अधिक हो जाने के कारण निश्चय हुआ कि इस समय सभा का अधिवेशन समाप्त किया जाय और शनिवार ता० ५ नवम्बर १९१० को सन्ध्या के पांच बजे पुनः अधिवेशन हो।

प्रबन्धकारिणी समिति।

शनिवार ता० ५ नवम्बर १९१०-सन्ध्या के ५ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०-सभापति, पण्डित केशव देव शास्त्री, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू बालमुकुन्द बर्म्मा, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एलएल बी० बाबू बलभद्र दास बी० ए० एलएल बी०।

(१) बाबू माधव प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि वे वनिता विनोद और बङ्ग विजेता के कापीराइट के लिये १५०) रु० से अधिक नहीं दे सकते क्योंकि उनका विचार वनिताविनोद का मूल्य घटाने का है। निश्चय हुआ कि इन दोनों पुस्तकों का कापी राइट बाबू माधवप्रसाद को १५०) रु० पर दि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्तों पर दिया जाय कि वे इन पुस्तकों का मूल्य बारह बारह आना नियत करें और इनकी पचीस पचीस प्रतियां सभा को बिना मूल्य दें ।

(२) निश्चय हुआ कि सभा के लिये आर्थिक सहायता प्राप्त करने के अभिप्राय से पण्डित गोविन्दाचार्य २०) रु० मासिक वेतन पर छ मास के लिये परीक्षार्थ नियत किए जांय । इसके अतिरिक्त इनका जो रेल भाड़े वा एक्के भाड़े में वास्तविक व्यय हो वह भी सभा से दिया जाय । इन्हें प्रति दिन के कार्यों का विवरण तथा यात्राव्यय का हिसाब सभा में भेजना होगा ।

(३) पण्डित रामनारायण मिश्र के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए (१) सभाद्वारा प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य घटाकर आधा कर दिया जाय (२) आनरेबल मिस्टर जस्टिस कृष्ण स्वामी अय्यर और डाक्टर राम कृष्ण भण्डारकर सभा के आनरेरी सभासद चुने जांय

निश्चय हुआ कि (१) इस विषय पर विचार कर सभा को सम्मति देने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की एक सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बाबू माधवप्रसाद, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बाबू गंगा प्रसाद गुप्त और गोपाल दास (२) साधारण सभा के आगामी अधिवेशन में यह प्रस्ताव उपस्थित किया जाय कि इस समिति की सम्मति से इन सज्जनों को सभा का आनरेरी सभासद चुनना चाहिए ।

(४) पण्डित दौलत राम शर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा दस रुपए के नये नोटों में भी देवनागरी अक्षरों के रखवाने का उद्योग करे । साथ ही लाला टेक चन्द का पत्र भी उपस्थित किया गया कि ५०) रु० के नोटों पर भी नागरी अक्षर रहने चाहिये । निश्चय हुआ कि इसके लिये गवर्न्मेंट की सेवा में एक मेमोरियल भेजा जाय और आनरेबल पण्डित मदन मोहन मालवीय तथा काउन्सिल के अन्य मेम्बरों के द्वारा काउन्सिल में यह प्रश्न कराया जाय कि नए नोटों में नागरी अक्षर क्यों नहीं रक्खे गए।

मेमोरियल बनाने के लिये मेहता कृष्णाराम, पं० रामनारायण मिश्र और गौरीशंकर प्रसाद की सब कमेटी नियत की गई ॥

(५) बाबू श्यामसुन्दर दास का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्हों ने लिखा था कि समिति कोश के कार्य के लिये एक वा दो योग्य पुरुषों को शीघ्र भेजे निश्चय हुआ कि इसके लिये बाबू पद्म सिंह शर्म्मा ५०) रु० मासिक वेतन तथा १०) रु० मासिक भत्ते पर नियत किये जांय और उनकी स्वीकृति आने पर उन्हें कार्यारम्भ करा दिया जाय । और दूसरे व्यक्ति को मंत्री नियत करदें ।

(६) श्रीमान् वाइसराय के लिये अभिनन्दन पत्र पढ़ा और संशोधित किया गया । निश्चय हुआ कि श्रीमान् की स्वीकृति आने पर अभिनन्दन पत्र के साथ निम्न लिखित सज्जन जांय अर्थात् १ प्रबन्धकारिणी समिति और बोर्ड आफ ट्रष्टीज के जो सभासद काशी में हों, २ मिस्टर ए० सी० मुकर्जी, ३ बाबू भगवानदास एम० ए० ४ मिसेस एनी बेसेन्ट ५ मिस्टर ज्योर्ज एस० अरण्डेल ६ प्रोफ़ेसर जे० एन० उनवाला ।

यह भी निश्चय हुआ कि हिन्दी का अभिनन्दन पत्र महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी पढ़ें और अंग्रेजी का पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०

(यहां पर कुछ समय के लिये सभापति के सभ्य उठ गए)

(७) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के सब सभासदों को यह अधिकार दिया जाय कि वे सभा के सब पत्रों को देखें, छपे पत्रों को लें या खरीदें और लिखित पत्रों को हर समय देखें और उनकी लिपि अपने व्यय से लेलें ।

अनेक प्रस्तावों के अनन्तर अन्त में निश्चय हुआ कि प्रत्येक सभासद को सभा के सब पत्रों को सभा के कार्यालय में आकर देखने और वहीं अपने व्यय से उनकी नकल लेने का अधिकार है । जिन पत्रों के देखने की उन्हें आवश्यकता हो उनकी सूचना उन्हें मंत्री को दो सप्ताह पूर्व दे देनी चाहिये । पत्रों के देखने और उनकी नकल लेने का समय दोपहर को एक बजे से दो बजे तक होगा ।

(८) बाबू लक्ष्मीचन्द का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि विज्ञान प्रचारिणी सभा के कार्यों के लिए कुछ समय तक के लिए उन्हें सभा भवन में कुछ स्थान दिया जाय ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय । (शेषआगे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री वेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तबइनकी और औषधियां को भी सेवन करना चाहिये !

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयां की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्टर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, बंचक औषध बिक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे ।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

परीक्षा के लिये।

छै प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

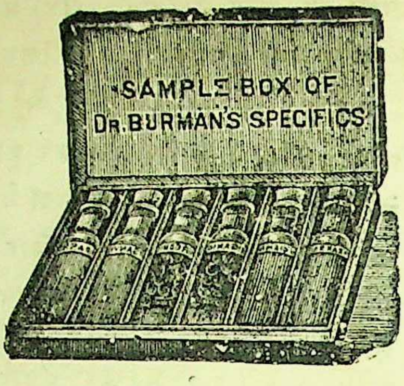

मूल्य १।।) डा० म० ।)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्टर बैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्टर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनायाहै। इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमाल है। थोड़ खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

- अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।
- दमे की दवा—तत्काल दमें को दवाती है।
- कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।
- धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण
- जुलाब की गोली —सहज में पेट साफ करती है।
- अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते

बाबू बनारसी लाल दौम ... लाबाद, जिला भागलपुर से-आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसे गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं

लाला मुलचन्द, जवला हरसौर जिला अजमेर से—हमने के कार्यालय से दवाइयां अजमा लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई इस्तमाल में ली गई हकीकत में आ दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनु ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद सिताब दिवरा जिला सारन-आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स भेजे थे उसमें से अर्क कपूर राम से कम नहीं है कई एक आदमी हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंह रईस गौतरा जिला बदाऊ से-हुर दवाइयां एक ही बकस में जिस कीमत१।।) है उनमें से अर्क कपूर पुदीना वो कोलाटानिक का इस्त किया गया वाकई निहायत मुफी सेहत बख्स पाये गये और २ दवा जिसकी तारीफ आपने अपने किता तहरीर की है मुताबिक उसीके पाइ

सुबेदार पेन्सनर बिश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर-महाशय ! अपने जो अपना परीक्षा बकस और दादका मलहम भेजा दाद को ऐसा असर किया कि आप एहसान और औषध की जादू असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर भूल सक्ता और आपके बक़स की शीशियों का तो यही असर है रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय त्रिभुवन तम भागा"। और मैं ता नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी कर शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे[illegible] ... लाल बल्लभराम ...

स्थापित सं०१८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | फरवरी १९११ । | संख्या ७

सूचना और सम्मति ।

गत २४ जनवरी को प्रयाग के हिन्दू बोर्डिंग हाउस में श्रीमान् महाराजसाहब गायकवाड़ को नागरीप्रवर्द्धिनी सभा द्वारा एक अभिनंदन पत्र बड़ी धूमधाम से दिया गया था जिसमें श्रीमान् की राजधर्म परायणता और उदारता के उल्लेख के उपरान्त कहा गया था :--

"श्रीमान् अपने राज्य में हिन्दी के प्रचार के लिए जो प्रबल और वास्तविक उद्योग कर रहे हैं उसे सुनकर जो आनन्द और उत्साह हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता । श्रीमान् ने २५०० वर्नाकुलर स्कूलों, एंग्लो वर्नाकुलर स्कूलों और मेल ट्रेनिंग कालेज की कुछ श्रेणियों में हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य्य बनाकर, काउंट ओकुमा की जगद्विख्यात पुस्तक के हिन्दी अनुवाद किए जाने और 'आज्ञा पत्रिका' बड़ौदा की नियम सम्बन्धी बातें नागरी लिपि में प्रकाशित किए जाने की आज्ञा देकर, तथा हिन्दी की उत्तम और उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशकों के उत्तेजनार्थ सहायता देकर हिन्दी का जो वास्तविक उपकार किया है उसके लिये हिन्दी के प्रेमी श्रीमान् को यथोचित धन्यवाद देने में असमर्थ हैं" ।

इसके उत्तर में श्रीमान् का जो व्याख्यान हुआ वह अत्यन्त विचार पूर्ण, प्रभावशाली और उत्साह वर्द्धक था ।

—:o:o:—

भारतीय-उर्दू-सम्मेलन आगामी मार्च महीने में पूना में होगा । सम्मेलन-समिति ने लाहौर के बैरिस्टर आनरेबल खां बहादुर मियां मोहम्मद शफ़ी को सभापति चुना है । प्रायः एक हज़ार प्रतिनिधियों के आने की आशा है ।

—:o:o:—

लाहौर के पैसा अख़बार को पंजाब और युक्त प्रान्त की आर्य्य प्रतिनिधि सभा का यह परामर्श बहुत बुरा लगा है कि सब आर्य्य समाजी लोग मनुष्य गणना में अपनी जाति आर्य्य, अपना धर्म्म वैदिक, और अपनी भाषा आर्य्यभाषा वा हिन्दी लिखावें । फिर दूसरी संख्या में "उर्दू भाषा को भ्रष्ट करने का प्रयत्न" शीर्षक लेख के अन्तर्गत वह अपर प्राइमरी विभाग की रीडरों में बोलचाल की भाषा रक्खी जाने पर बड़ा क्रोध प्रगट करता है और कहता है कि यह उर्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शान के खिलाफ़ भी है और इससे उर्दू की पवित्रता और सरसता में भी फ़र्क़ पड़ेगा।

नए सिक्के और नागरी।

इस सम्बन्ध में सभा और भारत गवर्नमेण्ट के बीच जो लिखा पढ़ी हुई वह नीचे दी जाती है।

No. 1219/18-The 1st. September 1910

The Secretary.

Finance Department.

Govt. of India.

SIMLA.

I have the honor most respectfully to submit the following lines in persuance of Resolution No. 4 passed by the Kashi-Nagari Pracharni Sabha of Benares held on 6th. June 1910 already submitted to you by wire for the kind consideration of the Government of India.

The Devanagri Script is used and read by the largest number of His Majesty's Indian Subjects. It is the most widely known character in India. The ancient and modern Sanskrit and Hindi Literatures, sacred and profane, are written in Nagari character. The Hindi speaking population of India which generally uses this character number 85. 68 millions. To the Guzarati and Marathi speaking populations which number 10. 62 and 18. 89 millions respectively and the Bengalis generally who number 41. 34 millions, the Devanagri charactor is well-known in as much as their more or less common sacred books are written in that character.

So far as the United Provinces are concerned the extent to which this character is used can be gathtered by reference to the Census Report (P.157) Part 1 of 1901 Vol. XVI in which it is stated that there were ten lakhs sixteen thousands and sixty nine persons who declared themselves literate in Nagari or Kaithi (a character allied to Nagari) only and that the number of those literate in Nagri only as compared to the number of those literate in Persian character only was 4:1 This leaves out of account those persons who are acquainted with other characters also in addition to Nagari and the Sabha believes that the number of such persons is very large.

The facts stated above are of special importance in connection with the issue of new coins bearing the image of His Majesty King George V. It is the opinion of the Sabha that the value of the new coins that may be issued should be indicated in such Indian scripts as may be very widely known, and that amongst the various characters used in India, the Nagari character occupies the foremost position by reason of its being most extensively known and used. The subject is not altogether without an historical precedent. In the Mohammedan coins from the time of Shahabuddeen Mohammed Ghori to that of Gayasuddin Tughlak Devanagari character was invariably used.

The Sabha therefore prays that having regard to the fact stated above the Government of India may be pleased to consider the necessity and importance of ordering that the value of all the coins of the new reign be indicated in the Devanagari character also.

No. 6519-7

GOVERNMENT OF INDIA

Finance Department

Calcutta the 13th December 1910

From.

The Under Secretary to the Govt. of India.

To

The Honorary Secretary

N. P. SABHA, BENARES.

Sir,

1 am directed to acknowledge the receipt of your memorial No. 1219-188, dated the 1st September last praying that the value of all the new coins to be issued bearing the effigy of His Majesty King George should be indicated upon them in the Devanagari script.

2. In reply I am to say that while the Government of India sympathize with the objects of the Sabha, they regret that they are unable to accede to the prayer. The present practice of indicating the value of the coins in Persian is an inheritance from the Moghal Emperors and in retaining the Persian script the Government of India merely carries on the continuity ef neumismatic tradition. There

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

are also serious minting difficulties in accommodating two vernacular scripts on the coins.

I have the honor to be
Sir
your most obedient servant

For under Secretary to the Govt. of India. F. P.

Copyforwarded to the Nagari Pracharni, Sabha, with reference to their letter No. 293, dated the 30th August 1910 and to the N. P. Sabha, Meerut, with reference to their Resolution of the 6th November 1910 Submitted to His Excellency the Viceroy.

No. 2258-18-Dated the 3rd December 1910.

The Secretary to
The Government of India.
Finance Department.
Calcutta.

Sir.

I beg to acknowledge receipt of your office No. 6519 F. dated the 13th. December 1910 in regard to the Sabha prayer for the indication of value in Hindi of the new coins and to thank you for the same.

I have to submit further in connection with the above question.

(1) That the Sabha never meant in its memorial that Hindi script should be used in place of Urdu but they should be used in addition to it.

(2) That even during the reign of Moghal Emperors Hindi was used on their coins.

(3) The Sabha does not think that the use of the Hindi on the coins as prayed for would cause serious minting difficulies' in view of the fact that the present one anna pieces contian four vernaculars besides English.

(4) That if the indication of value on coins is at all necessary, it should be done in scripts known to the mejority of persons among whom its circulation is expected.

It is hoped that considering the importance of the question under discussion the Government of India would be pleased to reconsider its decision as Communicated to the Sabha and pass favourable orders for which the whole of the Hindi reading public in general and the Sabha in perticular would feel highly obliged.

No. 286-F.
GOVERNMENT OF INDIA
FINANCE DEPARTMENT
Calcutta, the 17th January 1911

From
J. E. C. Jukes. Esqr, I. C. S.
Under Secretary to the Government of India.

To
The Honorary Secretory
Nagari Pracharni Sabha. Benares.

Sir,

I am directed to acknowledge the receipt of your letter No. 2258-18, dated the 23rd. December last, in which, in view of the considerations detailed there in, you express the hope that the Government of India will be pleased to reconsider their decision as communicated to the Sabha in the letter, from this Department No. 6519-F. dated the 13th December 1910.

(2) In reply I am to say that as the design of the new Rupee is now practically complete, and the addition of the *Devanagari inscription* would involve changes which the Government *of India* are not prepared to undertake, thay regret that they are unable to reconsider their decision of the 13th. December last.

(3) I am to add that this reply should be regarded as final.

I have the honour to be,
Sir
Your most obedent Servant
Under Secetary to the Govt. of India.

—:0:0:—

(अनुवाद)

नं० १२१९ । १८ ता० १५ सितंबर १९१०
श्रीयुक्त मंत्री, अर्थ विभाग
भारत गवर्नमेंट
शिमला

महाशय,

मैं काशी नागरी प्रचारिणी सभा के ६ जून १९१० के अधिवेशन में स्थिर किए हुए चौथे मन्तव्य के अनुसार जो श्रीमान् की सेवा में भारत गवर्नमेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विचारार्थ पहिले भेजा जा चुका है, इन निम्न लिखित पंक्तियों को सादर उपस्थित करता हूं।

देवनागरी अक्षरों को भारतीय प्रजा की सब से अधिक संख्या लिखती और पढ़ती है। भारत वर्ष में इनका प्रचार सब से विस्तृत है। संस्कृत और हिन्दी का नया और पुराना लौकिक तथा धर्म सम्बन्धी साहित्य नागरी लिपि ही में है। हिन्दुस्तान की हिन्दी बोलनेवाली जनसंख्या जो प्रायः इसी लिपि का व्यवहार करती है साढ़े आठ करोड़ है। डेढ़ करोड़ गुजराती बोलने वाले प्रायः दो करोड़ मराठी बोलनेवाले और चार करोड़ बंगाली सब देवनागरी लिपि से अच्छी तरह परिचित हैं क्योंकि इन सब के धर्म्म ग्रन्थ उसी लिपि में हैं।

संयुक्त प्रान्त में इस लिपि का कहां तक प्रचार है इसका अनुमान मनुष्यगणना की रिपोर्ट (पृ० १५१) भाग १ सन् १९०१ जिल्द १६ को देखने से हो सकता है जिसमें लिखा है कि दस लाख सोलह हज़ार उनहत्तर आदमी ऐसे मिले जिन्होंने अपने को केवल नागरी वा कैथी (नागरी से बिलकुल मिलती हुई एक लिपि) जाननेवाला बतलाया और केवल नागरी पढ़नेवालों की गिनती केवल उर्दू पढ़नेवालों से चौगुनी थी। इस लेखे में वे लोग नहीं आए हैं जो नागरी के अतिरिक्त और २ लिपियों से भी परिचित हैं और जिनकी संख्या सभा समझती है कि बहुत अधिक है।

श्रीमान् सम्राट पञ्चम जार्ज के नए सिक्कों के संम्बन्ध में ऊपर लिखी बातें ध्यान देने योग्य हैं। सभा की सम्मति है कि जो नए सिक्के बनें उनका मूल्य उन पर उन्हीं अक्षरों में अङ्कित होना चाहिए जिनका देश में बहुत प्रचार हो और भारतवर्ष की सारी लिपियों में सब से अधिक परिचित और प्रयुक्त होने के कारण देवनागरी का स्थान पहिला है। यह विषय ऐतिहासिक आदर्श से भी नितान्त शून्य नहीं है। शहाबुद्दीन ग़ोरी से लेकर ग़यासुद्दीन तुग़लक के समय तक के मुसलमानी सिक्कों पर नागरी अक्षर बराबर रहे हैं।

अतः सभा प्रार्थना करती है कि ऊपर लिखी बातों पर ध्यान देकर भारत सरकार अनुग्रह पूर्वक नए सिक्कों पर देवनागरी अक्षरों में भी मूल्य अंकण की आज्ञा देने की आवश्यकता और गुरुता को समझेगी।

—:o:o:—

नं० ६५१९-७

भारत गवर्न्मेंट अर्थविभाग।

कलकत्ता १३ दिसंबर १९१०।

मंत्री-नागरी प्रचारिणी सभा

बनारस सिटी

महाशय,

मुझे आपके ता० १५ सितंबर के मेमोरियल नं० १२१८-१८ के प्राप्ति स्वीकार की आज्ञा मिली है जिसमें श्रीमान् सम्राट पंचम जार्ज के नए सिक्कों का मूल्य उन पर देवनागरी अक्षरों में देने की प्रार्थना की गई है।

उत्तर में मुझे कहना है कि भारत गवर्नमेंट सभा के उद्देश्यों से सहानुभूति रखती है पर उसे खेद है कि वह इस प्रार्थना को स्वीकार नहीं कर सकती। आजकल जो सिक्कों पर फ़ारसी अक्षरों में मूल्य अंकित करने की रीति है वह मुगल बादशाहों के समय से चली आती है, अतः फ़ारसी लिपि को रखकर सरकार केवल परम्परा का पालन कर रही है। सिक्कों पर दो लिपियां बैठाने में ढालने की भी गहिरी कठिनाई है।

भवदीय

अंडर-सैक्रेटरी, भारत गवर्नमेंट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नं० २२५८-१८ नागरीप्रचारिणी सभा
ता० ३ दिसंबर १९१० बनारस सिटी
मंत्री, भारत गवर्नमेंट अर्थविभाग
कलकत्ता।

महाशय,

नए सिक्कों पर हिन्दी में मूल्य अंकित करने की सभा की प्रार्थना के सम्बन्ध में मैं आपके ता० १३ दिसम्बर १९१० के पत्र नं० ६५१९ एफ़ की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूं और उसके लिये धन्यवाद देता हूं।

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में इतना और निवेदन है कि

(१) सभा का यह अभिप्राय कभी नहीं था कि हिन्दी लिपि उर्दू के स्थान पर रक्खी जाय वरन् उसके अतिरिक्त रक्खी जाय।

(२) मुगल बादशाहों के राजत्व में भी सिक्कों पर हिन्दी रही है।

(३) सभा यह नहीं समझती कि हिन्दी को रखने से ढालने में घोर बाधाएं उपस्थित होंगी, क्योंकि आजकल की एकन्नियों पर अंग्रेज़ी के सिवाय चार भिन्न भिन्न भाषाएं रहती ही हैं।

(४) यदि सिक्कों पर मूल्यांकण की कुछ भी आवश्यकता है तो वह उसी लिपि में होना चाहिये जिसे उनमें से अधिकांश लोग जानते हैं जिनके बीच उसे चलाना है।

आशा है कि इस विषय की गुरुता पर ध्यान देकर भारत सरकार अपने निश्चय पर फिर विचार करेगी और अनुकूल आज्ञा देगी जिसके लिये साधारणतः समस्त हिन्दी पठित समाज और विशेषतः सभा अत्यन्त कृतज्ञ रहेगी।

—:o:o:—

नं० २८६ एफ़ भारतगवर्नमेंट, अर्थविभाग
कलकत्ता १७ जनवरी १९११

जे० ई० सी० ज्यूक्स आई० सी० एस०
अंडर-सेक्रेटरी, भारत गवर्नमेंट की ओर से
मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा
बनारस सिटी, के प्रति

महाशय,

मुझे आपके ता० २३ दिसम्बर के पत्र नंबर २२५८-१८ के प्राप्तिस्वीकार की आज्ञा मिली है जिसमें आपने कुछ बातों को दिखला कर यह आशा प्रगट की थी कि भारतसरकार अपने उस निश्चय पर फिर से विचार करेगी जिसकी सूचना आपको इस विभाग के १३ दिसम्बर १९१० के पत्र नंबर ६५१९ एफ़ द्वारा मिली है।

उत्तर में मुझे यह कहना है कि नए रुपये का ढांचा प्रायः अब बन चुका है और देवनागरी लिपि को बढ़ाने से कुछ ऐसे हेरफेर करने पड़ेंगे जिनके लिए भारत सरकार तैयार नहीं है। उसे खेद है कि वह अपने १३ दिसम्बर के निश्चय पर फिर विचार नहीं कर सकती।

मुझे इतना और कहना है कि यह उत्तर अब अन्तिम समझा जाय।

त्वदीय
अंडर-सेक्रेटरी भारत गवर्नमेंट।

जनवरी १९११ की खोज विषयक संक्षिप्त रिपोर्ट।

इस मास में सभा के एजंट ने काशी में ही हिन्दी हस्त लिखित पुस्तकों की खोज का काम किया। यहां एक महाशय पं० रघुनाथ राम शर्मा हैं जिनके कहां हिन्दीहस्तलिखित ग्रन्थों का अच्छा भांडार है पर कई कारणों से उन्हें अवकाश कम रहा करता है अतः एजंट को उनके यहां विशेष दौड़ना पड़ता है। अस्तु आप के यहां की २० पुस्तकों की नोटिसें इस मास में ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जासकीं । और और लोगों से भी पूछपाछ की गई। पर अन्य कहीं और ग्रन्थों का पता नहीं चला ।

श्याम बिहारी मिश्र ।
सुपरिंटेंडेन्ट, खोज छतरपुर ।

सभा का कार्यविवरण ।

(गताङ्क से आगे)

(९) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के साधारण अधिवेशनों की सूचना बाहरी सभासदों के पास भी भेजी जानी चाहिए। निश्चय हुआ कि भविष्यत में इन अधिवेशनों की सूचना केवल पत्रिका में प्रति मास छपा करे और नगरस्थ सभासदों को इस बात की सूचना देदी जाय कि भविष्यत में इन अधिवेशनों की जुदी सूचना नहीं भेजी जायगी।

(१०) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी समिति ।

बृहस्पतिवार ता० १७ नवम्बर १९१० सन्ध्या के ४ बजे

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एलएल० बी०, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, पण्डित केशवदेव शास्त्री, राय शिवप्रसाद बाबू शिवप्रसाद गुप्त, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा

सम्मति भेजने वाले-पण्डित माधवप्रसाद पाठक ।

(१) गत अधिवेशनों (ता० ३१ अक्तूबर १९१० और ५ नवम्बर १९१०)के कार्य विवरण उपस्थित किये गए और संशोधन के उपरान्त स्वीकृत हुए।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने कहा कि ता० ५ नवम्बर के अधिवेशन में निश्चय नं० ७ से जो कार्य हुवा वह नियम विरुद्ध था। अधिक सम्मति से यह निश्चय हुआ कि वह सब पूर्णतया नियमानुसार था।

(२) उन्नाव की प्राइवेट लाइब्रेरी, गोरखपुर के नागरी पुस्तकालय और मेरठ के देवनागरी स्कूल पुस्तकालय के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्हों ने सभा से पुस्तकों की सहायता के लिये प्रार्थना की थी।

निश्चय हुआ कि इन पुस्तकालयों तथा भविष्यत में अन्य जिन पुस्तकालयों से पुस्तकों की सहायता के लिये पत्र आवें उनकी स्थिति जानने के लिये एक प्रश्नावली बनाई जाय जो उन पुस्तकालयों के पास उत्तर के लिये भेजी जाया करे। यह प्रश्नावली तयार करने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की एक सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित केशवदेव शास्त्री और बाबू गौरीशंकर प्रसाद ।

(३) हिन्दी कोश के कार्यों के सम्बन्ध में सम्पादक की जूलाई, अगस्त और सितम्बर १९१० की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

पण्डित केशवदेव शास्त्री ने पूछा कि कोश का कार्यालय ता० ३ अक्तूबर से १७ अक्तूबर १९१० तक प्रबन्धकारिणी समिति की विशेष आज्ञा के बिना क्यों बन्द किया गया। बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने कहा कि कार्यकर्ताओं को छ मास तक साधारण छुट्टियां नहीं दी गई थीं अतः छ मास में पन्द्रह दिन की यह छुट्टी एक साथ दीगई। निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और कोश कार्यालय के लिये छुट्टियों के नियम बना दिए जांय। निश्चय हुआ कि कोश का नाम "हिन्दी शब्द सागर" रक्खा जाय और जूलाई, अगस्त और सितम्बर की रिपोर्ट स्वीकार कीजांय।

(४) बाबू श्यामसुन्दर दास का २८ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी कोश के सम्बन्ध में वे जो मासिक रिपोर्ट सभा में भेजते हैं उनकी दो प्रतियां उन्हें रखनी पड़ती हैं इस कारण टाइप राइटर से अंग्रेज़ी में यह रिपोर्ट लिखने में ही उन्हें सुगमता होती है।

निश्चय हुआ कि सभा के कार्यालय से इन रिपोर्टों का अनुवाद हिन्दी में हुआ करे और भविष्यत में वे हिन्दी अनुवाद सहित समिति के सम्मुख उपस्थित की जाया करें।

(५) बाबू जगन्नाथ झुंझनू वाले बाबू शिवप्रसाद गुप्त और बाबू दामोदर दास राठी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने प्रस्ताव किया था कि एक प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारिणी सभा बनाई जाय जो कोश सम्बन्धी आर्थिक तथा सम्पादन सम्बन्धी कुल कार्य करे और कोश का कार्यालय निश्चित रूप से ऐसे स्थान में रहे जहां यह सभा सुगमता से मिल सके। निश्चय हुआ कि कोशके आर्थिक प्रबन्ध के लिये निम्नलिखित सज्जनों की एक कमेटी बनाई जाय अर्थात् सभा के मंत्री, माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीय, पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० बाबू जगन्नाथ झुंझनूवाले, सेठ दामोदर दास राठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स० पण्डित कृष्णाराम मेहता, पण्डित केशवदेव शास्त्री, महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी और रावगोपाल दास। इस कमेटी का प्रथम अधिवेशन पं० कृष्णाराम मेहता करेंगे और कमेटी अपना मंत्री स्वयं चुन लेगी इसका कोरम तीन सभ्यों का होगा। इस कमेटी के अधिकार और कर्तव्य इन प्रकार होंगे अर्थात् कोश के लिये द्रव्य संग्रह करना, प्रबन्धकारिणी समिति की स्वीकृति से बजेट बनाना तथा उसके अनुसार व्यय करना कार्य कर्ताओं की छुट्टियों के नियम बनाना और कार्यकर्ताओं को नियुक्त करना तथा पदच्युत करना, परन्तु ५०) रु० तक मासिक वेतन पानेवाले कर्मचारियों को उनकी संख्या वा मासिक वेतन बिना बढ़ाए हुए, नियत करने वा पद च्युत करने का अधिकार सम्पादक को होगा (बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने इसके विरुद्ध सम्मति दी थी)।

निश्चय हुआ कि कार्य कर्ताओं के मासिक वेतन तथा कार्यालय के फुटकर व्यय के बिलों को सम्पादक पास किया करें और अन्य बिलों को आर्थिक कमेटी के मंत्री (बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने इसके विरुद्ध सम्मति दी थी। पं० केशवदेव शास्त्री ने इन नियमों से सहमत न होने के कारण कमेटी का सभ्य होना अस्वीकार किया और उनके स्थान पर बाबू मोतीचन्द जी कमेटी के सभ्य नियत किए गए)। निश्चय हुआ कि इनके अतिरिक्त कोश सम्बन्धी सब कार्यों को प्रबन्धकारिणी समिति करेगी।

निश्चय हुआ कि कोश की बड़ी कमेटी से प्रार्थना की जाय कि वह अपने में से कम से कम ३ और अधिक से अधिक ५ सज्जनों की एक कमेटी चुन दे कि जो कोश के सम्पादक को कोष के सम्पादन के कार्य में सहायता दे

बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने प्रस्ताव किया कि कोश का कार्यालय काशी में रहना चाहिए।

निश्चय हुआ कि इसका कार्यालय कहां रहे यह सम्पादक की इच्छा पर छोड़ा जाय।

(६) बनारस के कमिश्नर का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि समयाभाव से श्रीमान् वाइसराय सभा का अभिनन्दनपत्र नहीं ले सकेंगे।

(७) पण्डित रामनारायण मिश्र का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि हिन्दी पुस्तकों की खोज के साथ ही साथ सभा को बिना मूल्य हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह का भी उद्योग करना चाहिए। यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(८) बाबू श्यामसुन्दर दास का ८ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि वे केवल निम्न लिखित नियमों पर कोश के सम्पादन का कार्य कर सकते हैं अर्थात् (१) वे कार्य की रिपोर्ट और हिसाब का ब्योरा प्रति मास सभा में भेजेंगे (२) कार्य कर्ताओं को पदच्युत करने वा नियत करने का अधिकार उन्हें होगा (३) सभा ५००००) रु० कोश के प्रकाशित करने के लिये एकत्रित कर देने का भार अपने ऊपर ले (४) यदि इससे अधिक धन की आवश्यकता होगी तो उसके उत्तरदाता वे होंगे (५) अबसे उन के द्वारा जो धन प्राप्त हो वह कोश के लिये उनका रक्षित धन समझा जाय।

निश्चय हुआ कि (१) यह स्वीकार है (२) इस सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास ने आज के निश्चय नं० ५ को स्वीकार किया (३) कोश के लिये जितना एस्टिमेट किया गया है उतना धन एकत्रित कर देने के लिये सभा प्रयत्न करेगी (४) सम्पादक तब तक कार्य करने का प्रयत्न करेंगे जब तक सभा आवश्यक द्रव्य व्यय करने में समर्थ होगी बाबू श्यामसुन्दर दास ने इस बात को कहा कि वे इस कोश के कार्य को तभी तक कर सकेंगे जब तक आज के निश्चित सिद्धान्तों में अब पुनः कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा और सभा ने आश्वासन दिया कि ऐसा ही होगा।

(५) बाबू श्यामसुन्दर दास का २८ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने समिति के २२ सितम्बर १९१० के निश्चय नं० ११ के सम्बन्ध में निम्न लिखित सूचना दी थी (१) स्लिपों की संख्या लगभग ८ लाख के होगी (२) व्यय के लिये जितना अनुमान पहिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा चुका है उससे अधिक की सम्भावना नहीं है। (३) सहायक सम्पादकों ने स्लिपों के छांटने का कार्य बहुत कम किया है और इस सम्बन्ध में इतना कार्य उन्हें करना ही होगा (४) सहायक सम्पादकों की संख्या बढ़ाने से कार्य में शीघ्रता नहीं होगी (५) कार्यालय उनके साथ श्रीनगर जाना चाहिए था पर इस बार वे उसे नहीं ले गये। उन्हें अपने सहायकों पर भी पूरा विश्वास है।

(१०) बाबू श्यामसुन्दर दास के १ अगस्त १९१० के पत्र पर निश्चय हुआ कि कोश सम्बन्धी आर्थिक रिपोर्ट उन के पास प्रतिमास भेजी जाया करे।

(११) जड़ावर के लिये सुखनन्दन चपरासी का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया और बाबू शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि जड़ावर के लिये सभा के वैतनिक कार्यकर्ताओं को हर वर्ष एक मास का वेतन अधिक मिला करे।

निश्चय हुआ कि चपरासी और चौकीदार को दूसरे वर्ष एक मास के वेतन तक की जड़ावर बनवा दी जाय।

(१२) पण्डित रामनारायण मिश्र ने प्रार्थना की कि यदि आवश्यता हो तो उन्हें हरिश्चन्द्र स्कूल के लिये सभाभवन में कुछ समय तक के लिये स्थान दिया जाय।

निश्चय हुआ कि आवश्यकता होने पर उन्हें दो मास के लिये सभाभवन में स्थान दिया जाय।

(१३) मंत्री ने सूचना दी कि पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र का बैकुण्ठ वास होगया। निश्चय हुआ कि उक्त मिश्र जी की मृत्यु पर सभा को विशेष दुःख है और उनके परलोक वास हो जाने से हिन्दी साहित्य को बड़ी क्षति पहुंची है। यह भी निश्चय हुआ कि उक्त मिश्र जी के फ़ोटो का बड़ा चित्र सभाभवन में लगाया जाय।

(१४) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २६ नवम्बर १९१० सन्ध्या को ५॥ बजे

स्थान-सभाभवन।

(१) पं० रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव तथा बाबू गौरीशंकर प्रसाद के अनुमोदन पर पंडित केशव देव शास्त्री सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० २८ अक्तूबर १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति के २२ सितम्बर, ३१ अक्तूबर और ५ नवम्बर १९१० के कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(४) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए। (१) बाबू श्यामसुन्दराचार्य्य वैश्य काशी ५) (२) बाबू घनश्याम दास नमक मंडी आगरा १॥) (३) बाबू हरीदास वल्लभ दास जायसवाल, तकिया दानूशाह, मिर्ज़ापुर, १॥) (४) बाबू चम्पालाल, बुलानाला, काशी, ५) (५) बाबू शिवचरण लाल जायसवाल, नारघाट, मिर्ज़ापुर १॥) (६) पं० बद्री नारायण कृष्ण त्रिपाठी, सोहगौरा, बलुआ पो० रिगवली, जि० गोरखपुर १॥) (७) बाबू सर्यूप्रसाद चौधरी, सोनौरा पो० रिगौली जि० गोरखपुर १॥) (८) पं० धनुषधारी ओझा, इन्द्रपुर, शिवपुर काशी १॥) (९) पं० देवशरण उपाध्याय, खुरमा चौड़ा बागान, पो० आदमपुर, सिलहट, ५) (१०) पं० अमृतमिश्र यतनवर, काशी १॥) (११) बाबू जगपतिराय, वाटरवर्कस इन्सपेक्टर, ४८ अवधगर्वी, काशी ३) (१२) बाबू टेकचन्द, नं० १० साक्षी विनायक, काशी १॥) (१३) बाबू कृष्ण दास गुप्त, ठठेरीबाजार, काशी, ३) (१४) पं० चन्द्रशेखर पाठक सम्पादक, मारवाड़ी नागपुर १॥) (१५) पं० नन्दकुमार देव शर्म्मा, विहार बंधु आफिस, बांकीपुर १॥) (१६) पं० रूप नारायण पांड़े, भारतधर्म्म महामंडल, काशी, १॥) (१७) पं० बद्रीनाथ शर्म्मा वैद्य मिर्ज़ापुर ३) (१८) पं० माधवराम शर्म्मा गुर्जर, भारतधर्म्म महामंडल, काशी १॥) (१९) पं० चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी, जोन्सगंज, अजमेर ५) (२०) बाबू जगधर प्रसाद, मो० चम्पानगर, भागलपुर १॥) (२१) बाबू रघुनाथ प्रसाद कपूर, श्री एडवर्ड हिन्दी पुस्तकालय, हाथरस १॥) (२२) पण्डित प्रतापनारायण दुबे, कक्षा १० जैनारायण स्कूल, काशी १॥) (२३) बाबू गोपाललाल खत्री, इलाहाबाद बंक, चौक, लखनऊ १॥) (२४) बाबू लक्ष्मी नारायण लाल वकील, लक्ष्मी प्रेस, गया ३) (२५) बाबू गयाप्रसाद मालिक-पेशकार मुंसफी, गया ३) (२६) पण्डित हरिवंश प्रसाद तिवारी, मौ० रामपुर, पो० घुघली, जि० गोरखपुर ३) (२७) पण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजमणि त्रिपाठी, नकलनवीस, त० पड़रवना, गोरखपुर १॥) (२८) पण्डित मन्नन द्विवेदी गजपुरी बी० ए० प्रोवेशनरी तहसीलदार, इलाहाबाद ५) (२९) बाबू पुरोत्तमदास टंडन, अहियापुर, इलाहाबाद ५) (३०) पण्डित रामप्रसाद मिश्र, मंत्री, हिन्दी साहित्य सभा, गिलिश बाजार, कानपुर १॥) (३१) बाबू रखालदास बन्दोपाध्याय, इन्डियन म्यूजियम, कलकत्ता ५) (३२) बाबू राधा मोहन गोकुलजी, १९९-९८ हेरिसन रोड, सत्यसनातन धर्म्म कलकत्ता ५) (३३) बाबू गंगा प्रसाद गुप्त एम० ए० आक्सफर्ड एण्ड केम्ब्रिज होस्टल, इलाहाबाद १॥) (३४) पण्डित जैजैरामत्रिवेदी, ठि० बाबू वृन्दावन अग्रवाल, कटरा, प्रयाग ५) (३५) पण्डित मुरलीधरमिश्र वकील हाईकोर्ट, मुट्ठीगंज, प्रयाग १॥) (३६) बाबू मिश्री लाल, कोठा पारचा, प्रयाग १॥) (३७) बाबू हीरालाल, हिन्दू बोर्डिंग प्रयाग १॥) (३८) बाबू काशीप्रसाद, हिन्दूछात्रवास, प्रयाग १॥) (३९) बाबू वालेश्वरलाल, हेड पण्डित, मिडिल इंगलिश स्कूल, खरसवां, जि० सिंहभूम १॥) (४०) बाबू बांकेबिहारी वर्म्मा, हिन्दूकालेज, काशी ३) (४१) प्रो० बी०एन० पाटंकर, सेन्ट्रल हिन्दूकालेज, काशी ३) (४२) पं० रामकिशोर पांडेय सब इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स, डालटैनगंज, पलामू १॥) (४३) पं० मानिकलाल जोशी रिटायर्ड डिपटी कलेक्टर राजमंदिर, काशी ५) (४४) पं० सहदेवाचार्य्य, अस्सीघाट काशी १॥) (४५) बाबू हनुमान प्रसाद हनुमान सेमिनरी, काशी ६) (४६) पं० वासुदेवशर्मा मुंसफी आजमगढ़ २॥) (४७) पं० रामलगन त्रिपाठी, राजादरवाजा मंदिर, काशी १॥) (४८) बाबू विट्ठलदास, गवर्नमेंट स्कूल नैनीताल ३) (४९) पं० शिवप्रसाद शर्म्मा. हेड पण्डित गवर्नमेंट हाई स्कूल, बस्ती ३) (५०) बाबू० नन्दकिशोर राम, असिस्टेंट मास्टर, जिला स्कूल, आरा १॥) (५१) पं० रामशंकर व्यास, रेशमकटरा, बनारस १॥) (५२) पं० जानकी राम तिवारी, हेड मास्टर, मझिआंव, अ० प्रा० स्कूल, पलामऊ १॥) (५३) पं० रामदत्त उपाध्याय, इन्स्पेक्टिङ्ग पण्डित, पलामू १॥) (५४) पं० चुन्नीलाल मालवीय पुरानी अंजही, मिर्जापुर १॥) (५५) बाबू वासुदेव नारायणसिंह, आनरेरी मजिस्ट्रेट, सूरजपुर, आजमगढ़ ३) (५६) बा० सिद्धेश्वर मैत्र बी० ए० एल० एल० बी० मुंसिफ अमरोह १३) (५७) मिस्टर इब्राहिम बेग, सब इन्स्पेक्टर, कोतवाली, बरेली १॥) (५८) बा० बलवन्त सिंह सब इन्स्पेक्टर, सिधौली, सीतापुर १॥) (५९) पं० बिहारीलाल चौबे, मथुरापुर, जौनपुर १॥) (६०) रावत चतुर्गुन ग्वाला, गोड़गांवां, पो० महुआ, जि० मुज़फ्फरपुर १॥) (६१) बा० रामफल कूमर, क्लार्क, बनारस छावनी रेलवे स्टेशन १॥) (६२) बा० जगन्नाथ स्वरूप, फाटक रंगील दास, काशी ५) (६३) पं० उदयराम शर्म्मा, बारिया, ई० अ ई० रेलवे ३) (६४) पं० कन्हैयालाल शर्म्मा, ठि० जगन्नाथ राम जी दास, ४६ मसहरी पट्टी, कलकत्ता ३) (६५) बा० मनोहर दास, काल भैरव, काशी १॥)!

(५) सभासद होने के लिये ४८ नवीन सज्जनों के आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं।

एशियाटिक सोसायटी आफ़ बंगाल कलकत्ता—Journal and Proceedings Vol. VI Nos. 6 7 and 8 for June, July and August 1910. संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट-District Gazetteer of Gorakhpur vol. XXXI, संयुक्त प्रदेश के उद्यम और कारबार की बाबत रिपोर्ट, N.W.P. Gazetter Vols I-XIV. सेन्ट्रल हिन्दू कालेज बनारस-Eleventh Annual Report. पण्डित ताराचन्द शर्म्मा, काशी—भगवद्गीतादि पञ्चरत्न। पण्डित राधेलाल चौबे वकील मेरट-महाभारत द्रोण पर्व। एक लिपिविस्तार परिषद कलकत्ता-विद्यापति ठाकुर की पद्यावली। खरीदी गई-महारानी बायजा बाई सेंधिया।

(६) मंत्री ने सूचना दी कि मनुष्यगणना के लिये गणना करने वालों को जो नियम बांटे गए हैं उनमें १३ वें नियम में यह लिखा है कि हिन्दी भाषा से वही भाषा समझी जानी चाहिए जो साधारणतः गँवारी बोली कही जाती है।

निश्चय हुआ कि संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट, इस प्रान्त के सेन्सस कमिश्नर तथा बनारस के सेन्सस आफ़िसर को लिखा जाय कि सभा को इस नियम के देखने से बड़ा दुःख हुआ है। हिन्दी भाषा वह नहीं है जिसे लोग गंवारी बोली कहते हैं। गवांरी बोली ग्रामों में बोली जाती है और हिन्दी भाषा बड़े बड़े नगरों में बोली जाती है। बहुतेरे मुसल्मान भी हिन्दी भाषा बोलते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः सभा की प्रार्थना है कि इस नियम में आवश्यक संशोधन कर दिया जाय ॥

(८) प्रबन्धकारिणी समिति का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि आनरेब्ल मिस्टर जस्टिस कृष्ण स्वामी अय्यर और डाकृर रामकृष्ण भंडारकर सभा के आनरेरी सभासद चुने जांय ।

सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

(९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

प्रबन्धकारिणी समिति ।

शुक्रवार ता० १६ दिसम्बर १९१० सन्ध्या के ५ बजे स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति, बाबू शिवप्रसादगुप्त, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबूबलभद्रदास, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा और बा० जुगल किशोर ।

सम्मति भेजने वाले-बा० श्यामसुन्दरदास बी० ए०

(१) गत अधिवेशन (ता० १७ नवम्बर १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और संशोधन के उपरान्त स्वीकृत हुआ ।

(२) पण्डित रामनारायण मिश्र के ये प्रस्ताव उपस्थित किए गए कि (१) महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी के स्मारक के लिये सभा प्रतिवर्ष एक स्वर्ण पदक दे (२) उनका एक फोटो सभाभवन में लगाया जाय (३) काशी नरेश के स्वतंत्र राज्य होने पर उन्हें बधाई दीजाय और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे अपने राज्य में नागरी के प्रचार की आज्ञा दें ।

निश्चय हुआ कि (१) महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी के स्मारक के लिये कम से कम २००० रु० का चन्दा किया जाय और द्रव्य एकत्रित होने पर स्वर्ण पदक प्रति वर्ष देने का प्रबन्ध किया जाय । यह पदक किस विषय पर दिया जाय, यह द्रव्य एकत्रित होने पर निश्चित किया जायगा । इसके लिये उपस्थित सज्जनों ने इस प्रकार चन्दा देना स्वीकार किया अर्थात् बा० शिवप्रसाद गुप्त २००) रु०, बाबू गौरीशंकर प्रसाद १०) रु०, पण्डित रामनारायण मिश्र १०) रु० और बा० जुगलकिशोर १०) रु० (२) उनका एक तैलचित्र सभाभवन में लगाया जाय (३) श्रीमान् काशी नरेश को इसके लिये बधाई दी जाय और प्रार्थना की जाय कि श्रीमान् राज्य कार्यों में नागरी के व्यवहार की आज्ञा दें ।

(३) बा० दामोदरदास राठी का पत्र उपस्थित कियागया जिसमें उन्होंने पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी के वक्तव्य के सम्बन्ध में प्रबन्धकारिणी सभा और साधारण सभा के सब प्रस्तावों की नक़ल मांगी थी और प्रस्ताव किया था कि उनका वक्तव्य छपवा दिया जाय और सभा के तत्कालीन प्रबन्धकर्ता इस विषय में यदि कोई लेख प्रगट करना उचित समझें तो वहभी छपवा दिया जाय साथ ही द्विवेदी जी सम्मान पूर्वक सभा के आनरेरी सभासद चुने जांय ।

बहुसम्मति से निश्चय हुआ कि पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी के आनरेरी सभासद चुने जाने के लिये साधारण सभा में प्रस्ताव किया जाय और बाबू दामोदर दास राठी जी से पूछा जाय कि क्या वक्तव्य का छपवाना वे द्विवेदी जी के आनरेरी सभासद चुने जाने पर भी आवश्यक समझते हैं ।

(४) बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने प्रस्ताव किया कि पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का वक्तव्य छपवाया जाय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव बाबू दामोदर दास राठी के उत्तर के साथ आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय ।

(५) बाबू वंशीधर वैश्य का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि (१) सभा के वार्षिक विवरण में समाचार पत्रों के नाम के आगे उनका वार्षिक मूल्य छपा करे और (२) हिन्दी की उन पुस्तकों की नामावली भी छपा करे जो ज़ब्त हो गई हों ।

निश्चय हुआ कि (१) मूल्य दे दिया जाया करे (२) ऐसी पुस्तकों की सूची गवर्नमैंट से मंगवाई जाय और उनकी सूची सभा में रक्खी जाय ।

(६) निश्चय हुआ कि महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी की मृत्यु से प्रबन्धकारिणी समिति में जो स्थान खाली हुआ है उसके लिये महामहोपाध्याय पण्डित शिवकुमार शास्त्री चुने जांय और वे ही समिति के प्रधान हों ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने प्रस्ताव किया था कि (१) सभाभवन में महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी का चित्र लगाया जाय (२) सभा का एक विशेष अधिवेशन दिसम्बर में प्रयाग में हो (३) सभा का उपदेशक इस समय प्रयाग में जाय (४) सभाभवन सामाजिक बातों केलिये मंगनी न दिया जाय। निश्चय हुआकि(१) चित्र लगवाने के लिये सभा [illegible] चुकी है (२) यह प्रस्ताव बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा ने उठा लिया (३) उपदेशक भेजा जाय (४) यह आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(८) निश्चय हुआ कि इस समय सभा विसर्जित की जाय और शेष कार्य आगामी अधिवेशन में उपस्थित किए जांय।

बनारस के मशहूर डाक्टर गनेशप्रसाद भार्गवका बनाया हुआ

नमकसुलेमानी

यह भारतवर्ष में सब से ज्यादा प्रसिद्ध है और इसका सेवन राजा महाराजा, नवाब, बड़े २ सरकारी ओहदेदार वैद्य डाक्टर हकीम और सब लोग करते हैं और इसके गुणों से फ़ायदा उठाकर प्रशंसापत्र भेजते हैं।

यह नमक सुलेमानी पेट के सब रोगों को नाश करके पाचनशक्ति को बढ़ाता है। और पेट का दर्द, खट्टी या घूंटोंकी डकारोंका आना, कलेजे की जलन कब्ज़, बवासीर, गठिया, दमा, बहुमूत्र, संग्रहणी अफरा, अपच, और स्त्रियों के मासिक धर्म के विकार इसके सेवन से तुरन्त अच्छे हो जाते हैं। यह नमक सुलेमानी सब से पहिले बनाया गया और यह कारखाना भारतवर्ष में सबसे पुराना है। इसकी उन्नति देखकर हमारे इश्तहारों की नकल बहुत से महापुरुषों ने करके विज्ञापन जारी कर दिये हैं। इस लिये ग्राहकोंकी सावधानी के लिये हमको यह लिखना पड़ा कि नमक सुलेमानी जिसको डाक्टर गनेशप्रसाद भार्गव ने तैयार किया है वह इसी कारखाने से मिल सक्ता है।

मूल्य फी शीशी १) डा: म: ।) फ़ी बोतल ५) डा: म: ।=)

हजारों में से दो चार प्रशंसापत्र।

(१) छोटा नागपुर के महाराजा श्रीपरताप उदयनाथ साह देव साहबमुकाम रातूगढ़ से लिखते हैं कि आपका नमक सुलेमानी निहायत फायदेमन्द है और मैं उसको बड़ी खुशी से इस्तेमाल करता हूं।

[२] श्रीमहामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी लिखते है कि मेरे यहां चार पांच बरस से आपका नमक सुलेमानी आता है पेटका दर्द अजीर्ण [बदहज़मी] हैज़ा, पित्त की खराबी वगैरह बीमारियों में रामबाण के समान फायदा पहुंचाता है। मेरे करीब के हजारों आदमी इसके इस्तेमाल करने से अच्छे हो गये और अच्छे होते जाते हैं। इसकी वजह से मैं अपने गांव और मुहल्ले में बड़ा नामी हो गया। लोगों को चाहिये कि एक मरतबा इसका इस्तेमाल करके मेरी बात का जरूर इतमीनान करें।

[३] श्रीमान् डाक्टर टी० नारायण स्वामी राजू मुकाम खड़गपुर से लिखते हैं कि आपके जादू भरे नमक सुलेमानी से मेरे एक रोगी को जो कि जकृत और पेटकी बीमारियों से बहुत दुखी था बड़ा लाभ हुआ अब वह बहुत अच्छा है कृपा करके १ शीशी नमक सुलेमानी और भेज दीजिये।

[४] सर्दार हरिराम साहब साबिक सेक्रेटरी महाराजा साहेब फरीदकोट लिखते हैं कि आपका नमकसुलेमानी बहुत उमदा है। मैंने दूसरी जगहों से भी नमक सुलेमानी मंगवाया लेकिन आपके नमक के मुकाबिले में वह सब तुच्छ है।

मिलने का पता:—नौनिहाल सिंह भार्गव मेनेजर
कारखाना नमकसुलेमानी महल्ला [illegible]घाट शहर बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये!

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दबाइयां मुसाफ़िरी में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयों की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

६ प्रकार दवाई एक ही बक्स में

मूल्य (१॥) रु०

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेंण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़े खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमे की दवा—तत्काल दमें को दगाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं।

बाबू बनारसी लाल दोस जलालाबाद, जिला भागलपुर से—आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसा ही गुण भी है वणन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाईयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताब दिवरा जिला सारनसे-आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से-छैःमशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत१॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बक्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताव में तहरीर की है मुताबिक उसी के पाइगइहा

सुबेदार पेन्शनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से-महाशय! अपने जो अपना परीक्षा का बकस और दादका मलहम भेजा था दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक़्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि "रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

स्थापित सं०१८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचलित

डा॰ एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त श्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत प्रेस काशी में बाबू माधवप्रसाद, के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | मार्च १९११ । | संख्या ८

सूचना और सम्मति ।

गत २० फ़रवरी को मेरट कालेज के सरस्वती रीडिंगरूम में एक सभा हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए हुई । कालेज के बहुत से छात्र तथा अध्यापक सम्मिलित थे । लाला मूलचन्द्र ने सभा के उद्देश्यों को बतलाकर देश की उन्नति के लिए ऐसी सभाओं की आवश्यकता का वर्णन किया । उन्होंने कहा कि ऐसी सभा से सारे समाज का हित तो हो होगा पर छात्रसमुदाय को छात्रावस्था की समाप्ति के पीछे अध्ययन और लोकोपकार करने की भी बड़ी भारी उत्तेजना मिलेगी । शिक्षितों को कार्य्य करने के लिए क्षेत्र मिल जायगा । यद्यपि यह आशा तो न करनी चाहिए कि इस सभा के सब सदस्य अच्छे ग्रन्थ लिख डालेंगे पर उनका इस ओर प्रवृत्त हो जाना ही क्या कम है ? और बातों को छोड़ इस सभा से उन ग्रन्थकारों को भी बहुत कुछ सहायता पहुंचेगी जो अपने व्यय से अपनी पुस्तकों को नहीं छपा सकते।

सम्यक विचार के उपरान्त यह स्थिर हुआ कि "हिन्दी साहित्य विवर्द्धिनी" नाम की एक सभा स्थापित की जाय जो गणित, दर्शन, विज्ञान, अर्थशास्त्र, काव्य आदि विषयों के ग्रंथ लिखवाने तथा अनुवाद कराने का प्रबन्ध करे । संस्कृत के अध्यापक पंडित बी० बी० सोरानी सभा के सभापति और मिस्टर यच० सी० मुकर्जी, जे० पी० बैनाल, सी० यच० राय तथा यस० यन राय उपसभापति चुने गए । लाला मूलचन्द्र जी ने मंत्री का पद ग्रहण किया । भिन्न भिन्न स्थानों में उद्योग करने के लिए निम्नलिखित महाशय सभा के प्रतिनिधि चुने गए:—मेरट--बाबू मुरारीशरण । मुज़फ़्फ़रनगर-पं० मनमोहनलाल गुर्टू । सहारनपूर--लाला चरणदास और चन्द्रकीर्त्तिदास । रुड़की--बा० आत्माराम । मवाना (ज़िला-मेरट)--बा० रघुनन्दनशरण। ग़ाज़ियाबाद—लाला बनारसीदास ।

सभा का केन्द्रस्थल मेरट रहेगा और सभासदों से १) वार्षिक चन्दा लिया जायगा । नियमावली शीघ्र प्रकाशित होने वाली है । इस संबन्ध में उद्योग करने वाले सज्जनों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है । यदि इसका अनुकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और और कालेजों तथा बोर्डिंग हाउसों में हो तो क्या हिन्दी की दशा सुधरते कुछ देर लगे?

—:o:—

गतवर्ष बदाऊँ में उर्दू प्रेमियों का सम्मिलन हुआ और इस वर्ष वहाँ के मुसलमानों ने मर्दुम शुमारी के सम्बन्ध में प्रार्थना की कि सर्वसाधारण की भाषा हिंदी न लिखी जाय।

—:o:o:—

फीरोज़ाबाद (आगरा) में कुछ उत्साही नवयुवक छात्रों के प्रयत्न से एक 'भारती भवन' खोला गया है जिसमें हिन्दी की पुस्तकें और सामयिक पत्र रक्खे जायँगे। हिन्दी हितेच्छुकों को इस भवन की सहायता करनी चाहिए।

—:o:§:o:—

एंग्लो-संस्कृत हाईस्कूल मेरट के सुयोग्य हेडमास्टर बाबू विनोदविहारी सेन एम० ए० 'ने बालहितैषी' नामक एक मासिक पत्र निकाला है जिसका उद्देश्य बालकों में हिन्दी भाषा और नागरी अक्षरों का प्रेम उत्पन्न करना और उनके विचारों को उन्नत करना है। वार्षिक मूल्य १॥)

हिन्दी की पूर्व और वर्त्तमान स्थिति।

समस्त उत्तरीय भारत के बीच हिन्दी की स्थिति क्या थी और अब क्या है इसका संक्षेप बिचार आवश्यक जान पड़ता है। देश के गार्हस्थ्य, सामाजिक, राजनैतिक तथा धर्म सम्बन्धी जीवन से इसका कितना लगाव रहा है तथा और देशभाषाओं से इसका क्या सम्बन्ध चला आ रहा है यही देखने का थोड़ा बहुत प्रयत्न हम यहां करेंगे।

कोई भाषा जितने ही अधिक व्यापारों में मनुष्य का साथ देगी उसके विकाश और प्रचार की उतनी ही अधिक संभावना होगी। वह भाषा जो किसी विशेष अवसर वा स्थान के लिए गढ़ी जाती है लाख उपाय करने पर भी जन साधारण के नित्य प्रति के व्यवहार में नहीं घुस सकती। जिन बातों को हम अधिक सुनते हैं, जिन वस्तुओं को हम अधिक देखते हैं, जिन शब्दों हम अधिक बोलते हैं उन्हीं को लक्ष्य किए हुए जो साहित्य चला है वही हमारा साहित्य है और वही भूले भटकों को प्रकाश का काम देगा। हमारे हृदय को उन शब्दों को सुनकर द्रवीभूत होने का अभ्यास अधिक रहता है जो हमारे घरों में सुनाई पड़ते हैं क्योंकि वहां प्रकृति से हमारा अधिक मेल रहता है। अब यदि हम इन शब्दों और वाक्यों को बिलकुल छोड़दें तो हमारी लिखने पढ़ने की भाषा में वह शक्ति नहीं रह जाती। समाज भी इसी गार्हस्थ्य जीवन का एक विकाश है अत: हमारी हिन्दी को जो प्रेरणा इतिहास की बड़ी बड़ी घटनाओं को मिली है वह किसी से छिपी नहीं है। लाहौर के चन्द बरदाई की बीर रसोद्गारिणी कविता युद्ध में अग्रसर होते हुए महाराज पृथ्वीराज के कानों में बराबर पड़ती रही। बीकानेर के पृथ्वीराज के एक दोहे ने महाराणा प्रतापसिंह पर जादू का असर किया। भूषण के कवित्त महाराष्ट्र बीर छत्रपति शिवाजी के मन में औरंगजेब के अन्याय को दमन करने की उत्तेजना बराबर बनाए रही। शेख़ बुरहान के चेले कुतवन और मलिक मुहम्मद जायसी ऐसे हिंदूभावों से सहानुभूति रखने वाले कवि हुसैनशाह और शेरशाह को लोकप्रिय और प्रजापालक बनाने में सहायक हुए। १५ वीं शताब्दी से देश में हिन्दी द्वारा भक्ति का जो स्रोत उमड़ा उसने सारे उत्तरीय भारत को प्रेम और शांत रस में मग्न कर दिया। सारांश यह कि ८०० वर्ष से जातीय जीवन में जितने उलट फेर होते आए उन सब का आभास हिन्दीसाहित्य में विद्यमान है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी जाति के साहित्य का यही लक्षण है। हिन्दी आरंभ ही से उत्तरीय भारत के एक बड़े भूखंड की लिखने की भाषा रही। उसीमें जाति का सर्व अनुभव संचित है और अब भी उसी तक जनसाधारण की पहुँच है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार देश में फैल रहा है। हिन्दी की शब्दावली को कुछ रूपान्तरों के साथ बँगला, मराठी और गुजराती आदि में व्याप्त देख दूरदर्शियों को यह सूझने लगा है कि हिन्दी उन स्थानों की भी साहित्य भाषा अच्छी तरह हो सकती है जहां उपर्युक्त भाषाएं बर्त्ती जाती हैं। यद्यपि लोगों का ध्यान इस ओर अब आकर्षित हुआ है पर यह स्थिति हिन्दी को प्राचीन समय में प्राप्त थी और उसने उसके बल पर अपनी सीमा के बाहर हाथ पैर भी फैलाए थे पर पीछे से भिन्न भिन्न देशभाषाओं में साहित्य की वृद्धि हो जाने पर वह कुछ सिमट सी गई। हिन्दी सारे उत्तरीय भारत की राष्ट्रभाषा पुराने समय में भी थी। मैथिल कवि विद्यापति ठाकुर ने अपने पदों को हिन्दी से मिलती जुलती भाषा में लिखने के अतिरिक्त कुछ कविताएं शुद्ध हिन्दी में भी रची हैं। बंग भाषा के पुराने कवि भारतचन्द राय ने भी हिन्दी में कुछ कविताएँ की हैं। इससे प्रतीत होता है कि उत्तरीय भारत में हिंदी किसी समय साहित्य की परिष्कृत भाषा समझी जाती थी। गुजराती के पुराने नाटकों में पहिले पात्रों का कथोपकथन ब्रजभाषा में कराया जाता था। अब भी गुजरात में ब्रजभाषा का व्यवहार बहुतहै। तुलसी सूर आदि महाकबिओं के पद बहुत दूर दूर तक फैले। जंबू में "सुदामा मंदिर देख डरे" आदि पद स्त्रियो में बराबर प्रचलित हैं। महाराष्ट्र के राजदरबारों में हिंदी कवियों का बड़ा मान होता था। हिन्दीपद्य महाराष्ट्र देश में बड़ी चाह से सुने जाते थे। पहिली ही भेट में भूषण के कवित्तों को सुनकर शिवाजी का प्रसन्न होना यह सूचित करता है कि शिवाजी लिखने पढ़ने की हिन्दी अच्छी तरह जानते थे। पूना, नागपुर इंदौर आदि के मरहठे दरबारों में हिन्दी कवियों के रहने का पता बराबर लगता है। अतः यह मान लेने में कोई संकोच नहीं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का रूप पहिले से प्राप्त है। हाँ यह ठीक है कि जान बूझ कर किसी ने एक भाषा फैलाने के विचार से कोई प्रयत्न नहीं किया था। कुछ और ही कारणों से उसने अपने लिए आपसे आप जगह की थी। उसी स्थान की प्रचलित भाषा (समुदाय विशेष की गढ़ी हुई नहीं) का लोग दूर दूर तक अनुकरण करते हैं जहां सामाजिक, राजनैतिक तथा धर्मसम्बंधी अभिप्रायों से भिन्न २ प्रान्तों के लोग कुछ दिन आकर रहते हैं। दिल्ली और आगरा बहुत दिनों तक भारतवर्ष के प्रधान नगर रहे जहां अनेक भिन्न प्रदेशों के लोगों का समागम होता था। उसके अतिरिक्त करोड़ों यात्रियों का मथुरा (आगरे के पास ही है) में आकर कथा वार्त्ता में दिन बिताना भी पश्चिमी हिन्दी के प्रचार का उत्तेजक हुआ। अष्टछाप के कवियों ने तो ब्रजभाषा का सिक्का और भी जमा दिया औरवह साहित्य की टकसाली भाषा बन गई। यहां तक कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी, जिनके रामचरित मानस को डाक्टर ग्रियर्सन साहब अवधी बोली में लिखा बतलाते हैं कवितावली आदि की भाषा प्रायः ब्रजभाषा ही रक्खी है। दिल्ली मेरट की खड़ी बोली भी यद्यपि वह साहित्य क्षेत्र में अग्रसर न हो सकी, लोगों की बोलचाल पर अपना अधिकार करती रही। भिन्न २ प्रान्तीय बोलियाँ बोलने वाले लोग बड़े नगरों में परस्पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बोली का व्यवहार बोलचाल में करने लगे। जब मौलवी लोगों ने देखा कि बोलचाल में खड़ी बोली का प्रचार खूब हो रहा है तब उन्हों ने एक कपोल कल्पना की कि शाहजहां के लश्कर से एक नई ज़बान उर्दू पैदा हुई है और उसमें किताबें लिखने लगे। पीछे से ज़बान की तहक़ीक़ात करने वाले आलिमों ने उसे "बिरज भाषा, फ़ारसी, अरबी और तुरकी का एक मुरक्कब बतलाया", यह न सोचा कि इस तरह से भी संसार में कोई नई भाषा बनी है। किसी देश की भाषा में चाहे और देश के शब्द मिल जायं, और मिलते ही हैं, तथा उसका कुछ रूपान्तर हो जाय पर एक नई भाषा नहीं बन सकती। अत: उर्दू को एक नई भाषा बतलाना भ्रम है; वह यथार्थ में फ़ारसी अरबी मिश्रित खड़ी हिन्दी है। यही बात डाक्टर ग्रियर्सन ने भी स्वीकार की है और हिन्दुस्तानी को पश्चिमी हिन्दी का एक भेद माना है।

इसी प्रकार जिस भाषा का व्यापार, लेन देन वा केवल राजकाज ही में अधिक काम पड़ता है वह सर्वप्रिय साहित्य भाषा नहीं बन सकती। क्योंकि उसकी पहुंच थोड़े से ऐसे मानव व्यापारों ही तक होती है जिनकी अवधि और सीमा बहुत थोड़ी तथा जिनका योगफल जीवन के और और व्यापारों से बहुत कम होता है।

पाठक जानते ही होंगे कि कलकत्ते में कई सज्जनों के उद्योग से एक नागरीप्रचारिणी सभा स्थापित हुई है। इस सभा द्वारा 'साहित्यरत्नमाला' नामकी एक मासिक पुस्तक प्रकाशित होगी। इसके हर एक अंक में सात फ़ार्म यानी छप्पन पृष्ठ होंगे। इसमें संस्कृत, अंग्रेज़ी, फ़ारसी, उर्दू, बंगला प्रभृति विविधि भाषाओं के उपयोगी ग्रंथों का अनुवाद प्रकाशित होगा। पहिले अंक में हाजीबाबा, अपना सहारा, नेपोलियन की जीवनी, ध्रुव लोक का शीतकाल आदि विविध भाषाओं से अनुवादित भिन्न भिन्न विषयों की सात पुस्तकें आरम्भ की जायंगी। कितनी ही पुस्तकें सचित्र होंगी। आगामी चैत्र मास के आरम्भ में इसका प्रथम अंक छप कर तैयार हो जायगा। वार्षिक मूल्य दो रुपए; नमूने की संख्या का मूल्य चार आने। पता श्रीदामोदर दास खत्री। मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा। ६९।१ सूतापट्टी कलकत्ता।

—:o:o:—

सातवीं शताब्दी में चीनी और नैपाली सेना का भारतवर्ष पर चढ़ाई करने का वृत्तान्त डाक्टर वाडेल ने "एशियाटिक क्वार्टर्ली रिव्यू" में दिया है। डाक्टर वाडेल तिब्बत के इतिहास और पुरातत्व के बड़े भारी ज्ञाता हैं और अपने सिद्धांतों को प्राचीन पत्रों और शिलालेखों के आधार पर स्थिर करते हैं। उन्होंने लिखा है कि ६४० ई० में भारत के चक्रवर्ती राजा हर्ष शिलादित्य ने चीन के बादशाह के पास अपने राजदूतों के हाथ कुछ भेंट भेजी। चीन के तत्कालीन सम्राट तंग ने उसे सादर स्वीकार कर बदले में अपने यहां से भी कुछ चीजें भेजीं। इसके अनंतर भारतवर्ष से फिर बहुमूल्य वस्तुएं भेंट में भेजी गईं जिनके परिवर्त्तन में चीनराज ने अत्यन्त अमूल्य पदार्थों के साथ अपने प्रतिनिधि रवाना किए। ये लोग मार्ग ही में थे कि हर्षशिलादित्य का देहान्त हो गया और छल से अर्जुन राजसिंहासन पर बैठा। जब चीनी प्रतिनिधि राजधानी में पहुंचे तब अर्जुन ने उन्हें लूटने और उनपर आक्रमण करने की आज्ञा देदी। इस पर चीन के अधीश्वर ने अत्यन्त रुष्ट होकर भारत पर आक्रमण करने के लिए सेना भेजी। यह चीनी सेना तिब्बतियों को साथ में लेती हुई नैपाल के रास्ते से भारत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षों आ धमकी। अर्जुन ने गंडकी नदी के किनारे इस दल का सामना किया, पर हार खाई। इस लड़ाई के सम्बन्ध में एक चीनी इतिहास लेखक लिखता है—"तीन हजार सिर काटे गए और दस हजार आदमी नदी में डुबा दिए गए"। पहिले तो अर्जुन भागा पर पीछे से बहुत बड़ी सेना ले कर खेन में आया और स्त्री पुत्र समेत बन्दी कर लिया गया। एक अन्य चीनी लेखक लिखता है: "तब भारतवर्ष काँप उठा। ५८० नगर अधीन हुए और पूर्वीय भारत तथा आसाम के राजाओं ने कर दिया।" सेना अर्जुन को पकड़ कर चीन में ले गई पर चीन सम्राट ने कुछ दिन के उपरान्त दया करके उसे अपने राज्य में लौट जाने की आज्ञा दे दी।

प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य्य विवरण दूसरा भाग।

यह यथार्थ में उन सब लेखों और कविताओं का संग्रह है जो सम्मेलन में पढ़ने के लिये उपस्थित किए गए थे और जिन्हें देखने के लिए लोग इतने उत्सुक थे। इसमें हिन्दी के बहुत से बड़े बड़े लेखकों और विद्वानों द्वारा उन विषयों का निरूपण है जिनके वे पूरे जानकार माने जाते हैं। यदि पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का बतलाया हुआ नागरी अक्षरों का कुछ पुराना वृत्तान्त, मुंशीदेवी प्रसाद मुंसिफ़ के मुसलमानी समय के हिन्दी संबंधी चुटकुले, पण्डित श्रीधर पाठक का खड़ी बोली पर विचार, पण्डित राधाचरण गोस्वमी का ब्रजभाषा की विशेषताओं पर वक्तव्य आदि एक साथ पढ़ने को मिलें तो इससे और अच्छी क्या बात हो सकती है। अतः इस रिपोर्ट के सम्बन्ध में इतना ही कह देना बहुत है कि इसमें ऐसे लेखों का समावेशन है।

मूल्य ।।।)

प्रबन्धकारिणी समिति।

सोमवार ता० २३ जनवरी १९११-सन्ध्या के ५½ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०-सभापति, पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए०, एल एल० बी०, बाबू गौरी शंकर प्रसाद बी० ए० एल एल बी०, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बाबू जुगल किशोर और बाबू बलभद्र दास बी० ए० एल० एल० बी०। सम्मति भेजने वाले-बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर, और बाबू युगल किशोर अखौरी।

(१) गत अधिवेशन (ता० १९ दिसम्बर १९१०) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) बाबू जगन्मोहन वर्म्मा, पण्डित ब्रजभूषण ओझा, बाबू विष्णु सहाय, पण्डित द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, पण्डित बदरी नारायण मिश्र, और बाबू भगवान दास हालना का पत्र तथा नागरी प्रवर्द्धिनी सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा जो कोश बना रही है उनमें "ब" और "व" वाले शब्दों को ब के अन्तर्गत रखने की प्रणाली बड़ी दूषित है और इस पर विचार करने के लिये सभा का एक विशेष अधिवेशन होना चाहिये।

निश्चय हुआ कि इस सम्बन्ध में कोश की बड़ी कमेटी से सम्मति ली जाय। साथही बाबू शिव प्रसाद गुप्त के प्रस्ताव पर यह निश्चय हुआ कि इस कमेटी से यह भी सम्मति ली जाय कि कोश में अनुस्वार और पंचम वर्ण का भेद माना जाय या नहीं।

(३) बाबू गोकुल चन्द जगन्नाथ वकील का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा जयपुरनरेश के हिन्दी भर्तृहरिशतक का एक शुद्ध संस्करण निकाले, सुदामा चरित्र और रामायण आदि की कथाओं को नाटक रूप में प्रकाशित करे जिस में सर्वसाधारण की रुचि का सुधार हो और विवाहादि में गाने योग्य गीत तयार करावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि बाबू गोकुलचन्द जगन्नाथ वकील से प्रार्थना की जाय कि वे इस पुस्तक की एक प्रति सभा को देखने के लिये भेज दें और यह भी सूचित करें कि इनके छपवाने के लिये वे सभा को द्रव्य की सहायता का कहां तक प्रबन्ध कर सकते हैं।

(४) श्रीयुत जे० एल० दुबेजी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा वर्तमान बृटिश राज्य के लाभों पर एक पुस्तक सरल भाषा में उनके लिये बनवावे और वे इसके लिये ५०) रु० का एक स्वर्ण पदक लेखक को देंगे।

निश्चय हुआ कि यह विषय राजनैतिक है। अतः इस विषय पर पुस्तक लिखवाना सभा के नियम ३ के विरुद्ध होगा।

(५) पण्डित हृदय नारायण जी का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि जिन हिन्दू राज्यों में अब तक नागरी का प्रचार नहीं हुआ है उनकी सेवा में इसके लिये डेप्युटेशन भेजा जाय।

निश्चय हुआ कि नागरी का प्रचार किन किन राज्यों में नहीं हुआ है इस विषय की सूचना उन राज्यों से, वहां इस सभा के जो सभासद हों उनके द्वारा तथा नागरी प्रचारिणी पत्रिका एवं अन्य समाचार पत्रों के द्वारा मंगवाई जाय।

(६) भारत गवर्न्मेंट के फाइनेंशल डिपार्टमेण्ट के १३ दिसम्बर का पत्र नं० ६५१८ एफ़ और १७ जनवरी का पत्र नं० २८६ एफ़ उपस्थित किया गया जिसमें लिखा था कि सिक्कों में फ़ारसी अक्षर मुसलमान बादशाहों के समय से चले आते हैं और उनमें दो देशी भाषाओं के अक्षर रखने से उनके बनाने में बड़ी कठिनाइयां होंगी। अब नये सिक्कों का चित्र एक प्रकार से पूरा हो गया है और उसमें देवनागरी अक्षरों के रखने से जो परिवर्तन करने पड़ेंगे उनके लिये गवर्न्मेंट तयार नहीं है।

निश्चय हुआ कि इस विषय में गवर्न्मेंट से जो पत्र व्यवहार हुआ है उसकी पूरी नकल अंग्रेज़ी और हिन्दी समाचार पत्रों के पास भेज दी जाय।

(७) पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभाभवन में गमलों और घास की रक्षा के लिये २) रु० मासिक व्यय स्वीकार किया जाय।

निश्चय हुआ कि इसके लिये २) रु० मासिक वेतन पर एक माली नियत किया जाय।

(८) अलवर राज्य में नागरी का प्रचार हो जाने के विषय में मुंशी मुक्ता प्रसाद का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि श्रीमान् अलवर नरेश को इसके लिये धन्यवाद दिया जाय और सभा की रिपोर्ट तथा अन्य पत्र उनकी सेवा में सूचना के लिये भेज दिये जांय।

(९) हिन्दी पुस्तकों की खोज के एजेन्ट को १५ रु० मासिक भत्ता देने के स्थान पर उनका वेतन २५) रु० से ३०) रु० कर देने के सम्बन्ध में पण्डित श्याम विहारी मिश्र की सम्मति उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि अब से एजेन्ट को भत्ता न दिया जाय और उनका मासिक वेतन ३०) रु० कर दिया जाय।

(१०) संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का १८ जनवरी का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि खोज की गत त्रैवार्षिक रिपोर्ट सभा स्वयं छपवा सकती है और उसके छपाने के लिये गवर्नमेंट ने सभा को ३६३) रु० देना स्वीकार किया है।

(११) अरवल के सरस्वतीभवन पुस्तकालय के मंत्री का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अपने पुस्तकालय के लिये अर्द्ध मूल्य पर मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि पुस्तकालयों को पुस्तकें देने के सम्बन्ध में प्रश्नावली तयार करने के लिये जो सब कमेटी बनाई गई है उसका उत्तर आने पर यह पत्र विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(१२) पारितोषिक के लिये आये हुये पण्डित सुदर्शनाचार्य, पण्डित राम करण और बाबू गंगा प्रसाद के हिन्दी व्याकरण उपस्थित किये गए।

निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्न लिखित सज्जनों की सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, पण्डित रामावतार पाण्डेय, पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र, पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी, पण्डित श्याम विहारी मिश्र एम० ए०, पण्डित श्रीधर पाठक और पण्डित लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) मंत्री ने ४८ सज्जनों की नामावली उपस्थित की जिनके यहां दो वर्ष से अधिक का चन्दा बाकी पड़ गया था:—

निश्चय हुआ कि इन सज्जनों की सेवा में सूचना भेजी जाय कि यदि वे मार्च के अन्त तक अपना चन्दा न दे देंगे तो नियमानुसार इनका नाम सूची ख में लिखा जायगा।

(१४) वेतन बढ़ाए जाने के सम्बन्ध में पण्डित देवीदत्त पुस्तकाध्यक्ष का प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह पुस्तकालय के निरीक्षक की सम्मति के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(१५) बाबू शिव प्रसाद गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि (१) १९ दिसम्बर के कार्य विवरण के नोट्स के फटे हुए टुकड़े जिन पर उनके हस्ताक्षर थे उपस्थित किए जांय (२) उन्हें पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी का वक्तव्य क्यों नहीं दिया जाता (३) इस वक्तव्य की एक नकल उन्हें दी जाय जिसका व्यय वे देंगे (४) बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने १९ दिसम्बर के कार्यविवरण में जो संशोधन किया था वह उचित था अथवा नहीं (५) कोश का कार्यालय क्या अब काशी में आगया है (६) यहां कार्यालय का निरीक्षण कौन करता है (७) उन्हें कोश सम्बन्धी पुस्तकों के निरीक्षण करने तथा उनमें से कुछ नकल लेने की आज्ञा दी जाय (८) कोश के सम्बन्ध में पण्डित केशवदेव शास्त्री की रिपोर्ट उपस्थित की जाय (९) पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी को जितने पत्र सभा से लिखेगये हों अथवा उनके जितने पत्र सभा में आये हों उनकी नकल उन्हें दी जाय।

(१) ये टुकड़े उपस्थित किए गए और बाबू शिव प्रसाद गुप्त के मांगने पर उन्हें दे दिये गये (२) मंत्री ने सूचना दी कि बाबू शिव प्रसाद गुप्त के मांगने पर "वक्तव्य" नियत समय पर सभा में रक्खा था परन्तु उसे देखने के लिये कोई सज्जन नहीं आये (३) निश्चय हुआ कि वे किसी लेखक को सभा में भेज कर इसकी नकल करा सकते हैं (४) सहायक मंत्री ने कहा कि उन्होंने बाबू श्यामसुन्दर दास से प्रार्थना की थी कि वे कृपा कर कार्यविवरण का संशोधन करदें जिस पर उन्होंने संशोधन किया था और उक्त कार्य विवरण के संशोधित भाग में उचित परिवर्तन भी कर दिया गया था (५) कार्यालय अब काशी में आगया है (६) यहां सभा की ओर से अभी कोई निरीक्षक नियत नहीं हुआ है और इसका कार्य अभी बाबू श्यामसुन्दर दास जी की जिम्मेदारी पर यहां होता है (७) वे नियमानुसार सब पुस्तकें देख सकते हैं और उनकी नकल ले सकते हैं (८) पं० केशवदेव शास्त्री की रिपोर्ट बाबू श्यामसुन्दर दास जी के यहां से मंगवाकर आगामी अधिवेशन में उपस्थित की जाय।

(१६) लेखमाला के सम्पादन के कार्य से पण्डित रामनारायण मिश्र का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू शिवप्रसाद गुप्त इस के सम्पादक नियत किये जायं।

(१७) पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि इधर सभा के कार्यालय में कार्य की बड़ी अधिकता है। अतः पत्रों की नकल के लिये कापीइङ्ग प्रेस रक्खा जाय जिससे कार्य में बहुत कुछ कमी हो जायगी। यह भी निश्चय हुआ कि बाबू शिवप्रसाद गुप्त से प्रार्थना की जाय कि वे एक कापीइङ्ग प्रेस सभा को प्रदान करें।

(१८) बाबू जुगल किशोर के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि सभा के निश्चयों के नोट लिखने के निमित्त एक पुस्तक रक्खा जाय जिस पर अधिवेशन में ही पूरे पूरे नोट लिख लिये जांय और उस पर उसी दिन सभापति के हस्ताक्षर करवा लिये जांय।

(१९) समय अधिक हो जाने के कारण निश्चय हुआ कि सभा विसर्जित की जाय और शेष कार्यों के लिये पुनः रविवार ता० २९ जनवरी १९११ को दिन के ३½ बजे इस का अधिवेशन हो।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २८ जनवरी १९११ सन्ध्या के ४¾ बजे

स्थान-सभाभवन।

(१) मौंफ़ेसर जे० एन० उनवाला साहब सभापति चुने गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) गत अधिवेशन (ता० २६ नवम्बर १८९०) का कार्य विवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(३) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गये।

१-बाबू अमीर चन्द्र अग्रवाल-ठि० वैष्णव दास बगाई पेशावर १॥) २-बाबू शिवबालक राम-मेनेजर-काशी को आपरेटिव बंक-बुलानाला-काशी १॥) ३-पं० डालूराम शर्म्मा-पुजारी-रानीगंज-ई० आई० आर १॥) ४-बा० सिद्धनाथ मिरहोत्रा-ठि० मिसर्स मुन्नालाल एन्ड सन्स नौगांव सी० आई० ५) ५-बाबू गोपीराम खेताण-पो० जहानाबाद जि० गया ३) ६-कुं० महेश प्रताप सिंह-तहसीलदार-मऊ-जि० बांदा ३) ७-बा० कृष्ण किशोर चन्द्र- शाहमारूफ़-गोरखपुर ३) ८-बा० जगद्बिहारी सेठ- आवस फ़र्ड एन्ड केम्ब्रिज हे.स्टल-इलाहाबाद ५) ९-बा० अनन्त प्रसाद बर्म्मन-ठि० मथुरादास कृष्णदास-काशी ५) १०-बाबू रामकुमार सोन्थलिया-मंडावा-जयपुर ३) ११-बा० प्रागनारायण पंसारी-औरैया-जि० इटावा १॥) १२-बा० शिवदत्त राय खेमाणी पांचागली-कलकत्ता १॥) १३-बा० नागर मलराजगढ़िया सूतापट्टी-कलकत्ता १॥) १४-बा० देवी बक्स सराफ़-८२ सूतापट्टी-कलकत्ता १॥) १५-बा० नागर मल मोदी-१८० हेरिसन रोड-कलकत्ता १॥) १६ बा० रामदेव चोखानी-मण्डावा-जि० सीकर ३) १७ बा० मुसद्दी राम मास्टर-अपर प्राइमरी स्कूल-बकठपुर-पो०राजापकर-जि० मुजफ़्फ़रपुर १॥) १८ बा० रामचन्द्रराय-असिस्टेन्ट मास्टर-ट्रेनिंगस्कूल बांकीपुर १॥) १९ बा० नन्दलाल-कुंजगली-काशी १॥) २० पं० देव कृष्णमिश्र-मिश्रौली-पो० फरसाटांड-ज़ि० बलिया १॥) २१ बा० योगीन्द्रप्रसाद मैत्र-नशोपुर-मुर्शिदाबाद १॥) २२ बा० जगन्नाथप्रसाद-डिपटी सुपरेन्टेण्डेण्ट आफ़ पुलिस गोरखपुर ५) २३ बा० महावीर प्रसाद-सरबराहकार बा० मथुराप्रसाद रईस-अलीनगर-गोरखपुर ३) २४ बाबू महावीर प्रसाद अग्रवाल-अलीनगर-गोरखपुर ५) २५ बा० विष्णुदास बर्म्मा-दफ़्तर चीफ़ आडिटर-बी० एन० डबल्यू रेलवे गोरखपुर १॥) २६ ठाकुर हनुमान सिंह-डिपटी कलेक्टर गोरखपुर ३) २७ बा० कुन्दनलाल भार्गव-डिपटी कलेक्टर गोरखपुर ३) २८ पण्डित राम नारायणतिवारी-अलीनगर-गोरखपुर ३) २९ पण्डित अक्षयवर प्रसाद पांडेय मौज़ा पकरडीहा-पो० पैसिया-जि० गोरखपुर १॥) ३० बा० गोरखप्रसाद मुख़्तार-गोरखपुर १॥) ३१ पण्डित तीर्थ राजमणि त्रिपाठी वकील-अलीनगर-गोरखपुर १॥) ३२ बा० सरस्वती प्रसाद वकील-गोरखपुर ५) ३३ बा० अभयनन्दन प्रसाद मुख़्तार-अलीनगर-गोरखपुर ३) ३४ बा० शेखर चन्द-गोरखपुर ३, ३५ बा० अभय चरण सिंह वकील गोरखपुर १॥) ३६ बा० अवध बिहारी शरण भगत-वकील-गोरखपुर १॥) ३७ पं० यमुनाधर दुबे मुख़्तार, गोरखपुर १॥) ३८ बा० युगलकिशोर वकील-गोरखपुर ३) ३९ बा० जैगोपाल लाल अष्ठाना-नायब मेनेजर-कायस्थ बंक-गोरखपुर ३) ४० बा० राम गरीब लाल मेनेजर-कायस्थ कम्पनी गोरखपुर ३) ४१ आनरेबल बा० नृसिंह प्रसाद वकील मुफ़्तीपुर-गोरखपुर २) ४२ बा० नरसिंह सहाय वकील गोरखपुर ३) ४३ बा० भवानी प्रसाद श्रीनाथ अग्रवाल, अलीनगर-गोरखपुर ३) ४४ बा० विष्णुमोहन सहाय-बसन्तपुर-गोरखपुर ३) ४५ बा० नारायणदास-अलीनगर-गोरखपुर २) ४६ बा० कृष्णदास-नन्दन साहु की गली काशी ३) ४७ बा० शिवनारायण सिंह-सम्पादक-भारतमित्र-कलकत्ता ५)·४८ बा० हरदेवराम व्यास-१६६ हेरिसनरोड-बड़ा बाजार कलकत्ता १॥)।

(४) सभासद होने के लिये ४८ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(५) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं। पं० लक्ष्मीनारायण जी, लक्ष्मीनारायण प्रेस,मुरादाबाद-नखसिख, पूर्ण विलास, दिलबहलाने को दवा, कार्णिकण्ठाभरण। लाला देवीदयाल इम्पीरियल बुकडिपो,दिल्ली-शाकभाजी। बा० गंगाप्रसाद गुप्त-काशी रामाभिषेक नाटक। बङ्गीयसाहित्य परिषद, कलकत्ता-साहित्य परिषद पत्रिका भाग १७ संख्या २। भारत धर्म महामंडल. काशी-श्रीभारत धर्म महामंडल की बाल्या वस्था,शास्त्र सोपान। बा० सिद्धपाल सिंह,रियासत धनगढ़,पो० संग्रामगढ़,जि० प्रतापगढ़-प्रतिभाविलास। पं० ब्रजनाथ धौंचक, आगरा-सरबिलियम वेडरवर्न का जीवन चरित्र। बा० गिरधरधर वकील,समस्तीपुर,जि० शाहाबाद-रामवनयात्रानाटक। पण्डित सुदर्शनाचार्य,काशी-श्रीभगवद्गीता सतसई। स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती,काशी-पांच पैर की गौ। श्री वैष्णव साधु सुधारिणीसभा,बड़ोदा-भारतीय मत दर्पण, भारतवर्ष और वैश्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ता, श्रीमद्भगवता मृत सार, सम्राट शोक समन। बा० पन्नालाल सिंह, निहालिया, पो० जैगंग, मुर्शिदाबाद-गीतार्थ-प्रकाश। पण्डित राम नारायण मिश्र, काशी-विधवा विवाह, संयुक्त प्रांत की प्रदर्शिनी Indian Antiquary for October December and January. Indian Thaught Vol II Nos. 3 & 4. खरीदी गई तथा परिवर्तन में प्रेम-राजर्षि, मुकुट, महाभारत, रणवीर चौथा भाग, माधवी माधव दूसरा भाग भूतनाथ की जीवनी दूसरा और तीसरा भाग, चक्कर दार चोरी, देवी उपन्यास, गुलेनार, लक्ष्मीदेवी, रानी पन्ना, अमीर हमजा।

(६) पण्डित दुर्गा शङ्कर गौर का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(७) संयुक्त प्रदेश के मनुष्यगणना के सुपरेंटेण्डेण्ट का पत्र नं० ८८३ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि मनुष्यगणना के नए कागजों में हिन्दी "गवांरी भाषा" नहीं लिखी गई है।

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी समिति।

रविवार ता० २९ जनवरी १९११ दिन के ३½ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित राम नारायण मिश्र—सभापति, बाबू जुगल किशोर, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्मा, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बाबू बलभद्रदास।

(१) गत अधिवेशन (ता० २३ जनवरी १९११) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के हिसाब में आना पाई हिन्दी रीति के अनुसार लिखी जाय।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव हिसाब जांचने वालों तथा सहायक मंत्री की सम्मति के सहित मई मास में उपस्थित किया जाय और सभा में उपस्थित होने के पूर्व इन सज्जनों की सम्मतियां बाबू शिवप्रसाद गुप्त को दिखला दी जांय।

(३) मंत्री ने सूचना दी कि गोपाल लाल खत्री जो द्वितीय क्लर्क के पद पर नियत किए गए थे बहुत दिनों से बिना प्रार्थनापत्र भेजे हुए नहीं आते और उनका कार्य भी संतोषजनक नहीं था।

निश्चय हुआ कि वे पदच्युत किए जांय और उनके स्थान पर पण्डित गोपाल लाल १० रु० मासिक वेतन पर तीन मास के लिये परीक्षार्थ नियत किए जांय।

(४) बाबू श्यामसुन्दर दास का १२ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने हिन्दी कोश की छपाई के लिये स्वदेशी कागज का नमूना भेजा था।

निश्चय हुआ कि समिति को इस कागज के मूल्य की सूचना दी जाय और मंत्री जी कई स्थानों से भिन्न भिन्न कागजों के नमूने मूल्य सहित मंगवा कर उन्हें अपनी तथा बाबू श्यामसुन्दर दास जी की सम्मति के सहित उपस्थित करें।

(५) अग्रवाल स्पोर्टिंग क्लब का २३ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभाभवन में उनके साप्ताहिक अधिवेशनों के लिये जो उनसे ३) मासिक लिया जाता है इसमें सभा कमी करदे और भवन में एक अलमारी रखने के लिये उन्हें स्थान दिया जाय।

निश्चय हुआ कि उन से केवल आठ आना प्रति मास लिया जाय पर अलमारी रखने के लिये सभाभवन में स्थान नहीं दिया जा सकेगा।

(६) बाबू कन्हैया लाल का २१ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा के पुस्तकालय का जो नया सूचीपत्र बन रहा है उसमें प्रत्येक पुस्तक के आगे उसकी पृष्ठ संख्या भी छपवाई जाय। पृष्ठ संख्या लिखने का भार वे अपने ऊपर ले सकते हैं और इस कार्य्य को एक मास में समाप्त कर देंगे।

निश्चय हुआ कि यदि बाबू कन्हैया लाल प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठसंख्या एक मास में लिख दें तो वह नई सूची में प्रत्येक पुस्तक के नाम के आगे छपवा दी जाय।

(७) रेमिङ्गटन टाइपराइटर कम्पनी के एजेन्ट का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने ३६५) रु० पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का टाइपराइटर सभा को देने के लिये लिखा था और १२१) रु० पर अपना चित्र पत दो वर्ष के लिये नागरी प्रचारिणी पत्रिका और ग्रन्थमाला में छपवाना स्वीकार किया था।

निश्चय हुआ कि यह आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(८) वेतन बढ़ाये जाने के लिये मुन्नी लाल दफ्तरी का प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह बजेट के समय विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(६) अजमेर की मुन्ना लाल नागरी प्रचारिणी सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें लिखा था कि वह सभा इस सभा की शाखा सभा बनाई जाय।

निश्चय हुआ कि यह पत्र अजमेर के पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा की सम्मति के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय और भविष्यत में शाखा सभा बनाए जाने के लिये जिन सभाओं के पत्र आवें उन का पूरा पूरा वृतान्त जानने के लिये एक प्रश्नावली तयार की जाय। इसे तयार करने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की सब-कमेटी बनाई जाय अर्थात् पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित केशवदेव शास्त्री और सभा के मंत्री।

(१०) पण्डित ब्रजभूषण ओझा का २१ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभासद होने के लिये जिन सज्जनों के पत्र आते हैं वे एक अधिवेशन में सूचनार्थ उपस्थित किए जाते हैं और दूसरे अधिवेशन में चुनाव होता है। इसके स्थान पर पहिले अधिवेशन में ही उन सज्जनों का चुनाव हो जाना चाहिये।

निश्चय हुआ कि भविष्यत में नियमों में जब संशोधन किया जाय तो इस प्रस्ताव पर भी ध्यान रक्खा जाय।

(११) पण्डित केशवदेव शास्त्री का २३ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि (१) कोशविभाग के सम्बन्ध में उनकी गत वर्ष की रिपोर्ट विचारार्थ उपस्थित की जाय (२) बाबू जगन्मोहन वर्म्मा को पहिले कितना वेतन मिलता था और अब कितना दिया जाता है (३) मुंशी भगवानदीन के एक बार पदच्युत हो कर पुनः नियत किए जाने पर विचार किया जाय (४) कोष विभाग के वर्तमान प्रबन्ध और निरीक्षण पर विचार किया जाय।

निश्चय हुआ कि (१) बाबू श्यामसुन्दर दास के यहां से यह रिपोर्ट आने पर वह उपस्थित की जाय (२) यह आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय (३) इस सम्बन्ध के सब पत्र आगामी अधिवेशन में उपस्थित किए जांय (४) यह भी आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(१२) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभाभवन सामाजिक बातों के लिये मंगनी न दिया जाय।

उक्त बाबू साहब ने अपना यह प्रस्ताव उठा लिया।

(१३) वेतन बढ़ाए जाने के सम्बन्ध में सुखनन्दन चपरासी का प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह बजेट के समय विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(१४) बा० गोपाल दास का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि वनिता विनोद का कापी राइट न बेचा जाय और यह पुस्तक सभा द्वारा पुनः प्रकाशित की जाय।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव पण्डित रामनारायण मिश्र की सम्मति के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(१५) पण्डित रामनारायण मिश्र का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि स्वर्गवासी महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी के स्मारक के लिये सब से पहिले सभा को उनका तैलचित्र सभाभवन में लगवाने के लिये काशी ही के सभासदों में चन्दा कर लेना चाहिये और इसके पीछे छात्रवृत्ति अथवा पदक देने का विचार करना चाहिये।

यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(१६) डाक्टर छन्नूलाल स्मारक पदक के लिये शिशुपालन पर बाबू सन्तूलाल गुप्त का लेख उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि इसकी परीक्षा के लिये निम्न लिखित सज्जनों की सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् पण्डित शोभाराम, पं० केशवदेव शास्त्री और डाक्टर अमर नाथ।

(शेष आगामी अंक में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनारस के मशहूर डाक्टर गनेशप्रसाद भार्गवका बनाया हुआ

नमकसुलेमानी

यह भारतवर्ष में सब से ज्यादा प्रसिद्ध है और इसका सेवन राजा महाराजा, नवाब, बड़े २ सरकारी ओहदेदार वैद्य डाक्टर हकीम और सब लोग करते हैं और इसके गुणों से फ़ायदा उठाकर प्रशंसापत्र भेजते हैं।

यह नमक सुलेमानी पेट के सब रोगों को नाश करके पाचनशक्ति को बढ़ाता है। और पेट का दर्द, खट्टी या धूंटोंकी डकारों का आना, कलेजे की जलन, कब्ज़, बवासीर, गठिया, दमा, बहुमूत्र, संग्रहणी अफरा, अपच, और स्त्रियों के मासिक धर्म के विकार इसके सेवन से तुरन्त अच्छे हो जाते हैं। यह नमक सुलेमानी सब से पहिले बनाया गया और यह कारखाना भारतवर्ष में सबसे पुराना है। इसकी उन्नति देखकर हमारे इश्तहारों की नकल बहुत से महापुरुषों ने करके विज्ञापन जारी कर दिये हैं। इस लिये ग्राहकोंकी सावधानी के लिये हमको यह लिखना पड़ा कि नमक सुलेमानी जिसको डाक्टर गनेशप्रसाद भार्गव ने तैयार किया है वह इसी कारखाने से मिल सक्ता है।

मूल्य फी शीशी १) डा: म: ।) फ़ी बोतल ५) डा: म: ।≈)

हजारों में से दो चार प्रशंसापत्र।

(१) छोटा नागपुर के महाराजा श्रीपरताप उदयनाथ साह देव साहब मुकाम रातूगढ़ से लिखते हैं कि आपका नमक सुलेमानी निहायत फायदेमन्द है और मैं उसको बड़ी खुशी से इस्तेमाल करता हूं।

[२] श्रीमहामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी लिखते हैं कि मेरे यहां चार पांच बरस से आपका नमक सुलेमानी आता है पेटका दर्द अजीर्ण [बदहज़मी] हैज़ा, पित्त की खराबी वगैरह बीमारियों में रामबाण के समान फायदा पहुंचाता है। मेरे करीब के हजारों आदमी इसके इस्तेमाल करने से अच्छे हो गये और अच्छे होते जाते हैं। इसकी वजह से मैं अपने गांव और मुहल्ले में बड़ा नामी हो गया। लोगों को चाहिये कि एक मरतबा इसका इस्तेमाल करके मेरी बात का जरूर इतमीनान करें।

[३] श्रीमान् डाक्टर टी० नारायण स्वामी राजू मुकाम खड़गपुर से लिखते हैं कि आपके जादू भरे नमक सुलेमानी से मेरे एक रोगी को जो कि जकृत और पेटकी बीमारियों से बहुत दुखी था बड़ा लाभ हुआ अब वह बहुत अच्छा है कृपा करके १ शीशी नमक सुलेमानी और भेज दीजिये।

[४] सर्दार हरिराम साहब साबिक सेक्रेटरी महाराजा साहेब फरीदकोट लिखते हैं कि आपका नमकसुलेमानी बहुत उमदा है। मैंने दूसरी जगहों से भी नमक सुलेमानी मंगवाया लेकिन आपके नमक के मुकाबिले में वह सब तुच्छ है।

मिलने का पता:—मौनिहाल सिंह भार्गव मेनेजर

कारखाना नमक सुलेमानी महल्ला गायघाट शहर बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होतीं अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेङ्कटेश्वर समाचार— जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये।

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रासिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २। १ दवाइयां की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता- डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं. उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध बिक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेंण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

६ प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

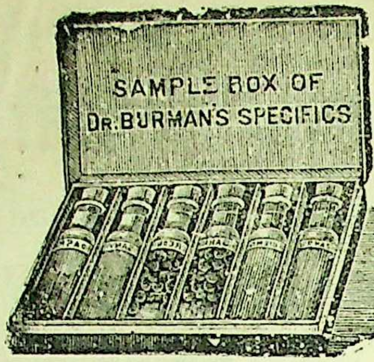

मूल्य १।) डा० म० ।)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर बैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेन्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़ खर्च में डा० वर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

- अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।
- दमे की दवा—तत्काल दमें को दवाती है।
- कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।
- धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण
- जुलाब की गोली —सहज में पेट साफ करती है।
- अर्कपुदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो वादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं:-

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से- आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसा ही गुण भी है बर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से- हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० शिताब दिरा जिला सारनसे- आपने छै प्रासिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से-छैः मशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत१।) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बख्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारिफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाइगइ है।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से- दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि "रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

डा: एस.के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित स०१८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचलित है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत प्रेस काशी में बाबू माधवप्रसाद, के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | अप्रैल १९११। | भारतेन्दु संवत् २८ | संख्या १०

सूचना और सम्मति।

गत २० मार्च को पादरी जे० नोल्स Revd J. Knowles साहब ने लण्डन के ईस्ट इंडिया असोसिएशन के सामने सारे भारतवर्ष के लिए एक लिपि ढूंढ़ निकालने की बहादुरी दिखाई। उन्हों ने कहा कि केवल तीन ही लिपियां ऐसी हैं जो राष्ट्रलिपि होने का दावा कर सकती हैं अरबी, नागरी और रोमन। इनमें से अरबी लिपि तो ध्यान ही के योग्य नहीं है क्योंकि उसे बहुत थोड़े लोग जानते हैं। नागरी अक्षर यद्यपि भारतवर्ष के कई भागों में प्रचलित हैं पर भारत के बाहर वे 'भैंस के बराबर हैं"। उनको ग्रहण करने से भारतवर्ष सारे संसार से अलग हुआ जाता है। अतः रोमन ही सब से सुगम और उपयुक्त है। पादरी साहब की इन पवित्र बातों को लोगों ने भिन्न भिन्न भावों से सुना। यूरोपियन सज्जनों ने तो कुछ हाँ हूँ किया पर समस्त उपस्थित भारतवासियों ने एक स्वर से विरोध किया। पंडित भगवानदीन दूबे ने साफ कह दिया कि हिन्दू लोग तो देवनागरी को राष्ट्रलिपि मान चुके हैं। मिस्टर व्यासराव और बिपिनचन्द्रपाल ने भी विवाद में पड़ कर पादरी साहब के प्रस्ताव को व्यर्थ ठहराया।

—:o:§:o:—

कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर मिस्टर जास्टिस आशुतोष मुकर्जी ने अपने कनवोकेशन के एड्रेस में प्राचीन ऐतिहासिक खोज की ओर यथार्थ ध्यान न दिए जाने पर खेद प्रगट करते हुए कहा:—

"चार वर्ष से अधिक हुए कि यूरोप के विद्वान यह बात सुनकर चकित हुए थे कि मसोपोटामिया के पश्चिमीय भाग में बहुत प्राचीन अक्षरों में लिखे हुए ऐसे लेख मिले हैं जिनमें और और देवताओं के विलक्षण नामों के साथ चार वैदिक देवताओं के भी नाम आए हैं। इस लेख की ओर जो ईसा से १५०० वर्ष पूर्व का है और जिसमें आर्य्यों का सब से प्राचीन ऐतिहासिक पता लगता है तुरन्त यूरोप के इतिहासज्ञ विद्वानों का ध्यान गया और इस विषय पर वाद विवाद प्रत्येक विद्यालय में छिड़ गया जिससे एशिया के पुरातत्व के समस्त छात्र इससे जानकार हो गए। इफ़रात नदी के किनारे मितानी के राजाओं का हमारे वैदिक पूर्वजों के देवताओं का आह्वान करना कितनी विलक्षण बात है पर इस पर भारत में किसी का ध्यान गया? किसी भारतीय विद्वान ने इस विषय की कुछ छानबीन की? किसी कालिज में इतिहास की व्याख्या के समय इसका उल्लेख हुआ?"

ऐसे विषयों पर यहां ध्यान जाय किसका? जो कोरे संस्कृतवेत्ता हैं उन्हें अनपढ़े आदमियों से भी एक दरजा नीचे समझना चाहिए क्योंकि उन्हें आरम्भ ही से विचार शक्ति से काम न लेने और बिना समझी हुई बातों को रटने का अभ्यास कराया जाता है। रहे संस्कृत के साथ अंग्रेजी की भी उच्चशिक्षा पाए हुए लोग। वे उस मनोयोग और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन का इस देश में कोई प्रत्यक्ष फल नहीं देखते जो इन विषयों के निरूपण के लिए आवश्यक हैं।

---o---

लालगोला के राजा जोगेन्द्रोनाथ राय बहादुर ने बंगीय साहित्य परिषद् को गुप्तवंश का एक सिक्का अर्पित किया है। सिक्के पर के लेख से विदित होता है कि जब महाराज समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया था तब ऐसे सिक्के ब्राह्मणों को दक्षिणा देने के लिए बनवाए थे। सिक्के पर एक ओर स्तूप से बँधा हुआ यज्ञ का घोड़ा है।

---o---

लाहौर के डाक्टर प्रभुदत्त शास्त्री जो अब तक आक्सफर्ड में थे यूरोप के प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्यापीठों में अध्ययन और अनुभव के निमित्त घूम रहे हैं।

---o---

कांगड़ी के गुरुकुल में वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक साहित्य परिषद् स्थापितहुआ है जिसमें निम्न लिखित मन्तव्य १६ अप्रैल को स्थिर हुए:—

(१) इस सम्मेलन की सम्मति में आर्य्य सन्तान के धर्म और सभ्यता को सुरक्षित और स्थिर रखने के लिये यह परम आवश्यक है कि आर्य्य भाषा का प्रचार विशेष रूप से किया जाय।

प्रा० १. म. ब्रजनाथ वकील।

अ० २. पं० पूर्णानन्द जी।

(२) इस सम्मेलन की सम्मति में यह समय आगया है कि सब सनातन जैन तथा आर्य्य समाज तथा आर्य्य जाति की अन्य संस्थायें अपनी सम्पूर्ण कार्य्यवाही आर्य्य भाषा में किया करें और इस बात का प्रबन्ध करें कि उक्त संस्थाओं के सभ्य पुरुषों को आर्य्य भाषा का जानना आवश्यक है।

प्रा० म० भवानी प्रसाद गुप्ता।

अ० बा० बलदेव प्रसाद सागर।

(३) इस सम्मेलन के विचार में आर्य्य लोगों के अधीन जितनी पाठशालायें है उनमें प्रथम श्रेणी से ही आर्य्य भाषा पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाय और सम्पूर्ण आवश्यक विषय आर्य्य भाषा द्वारा ही पढ़ाये जांय।

प्रा० स्वामी सत्यानन्द जी।

अ० प्रोफ़ेसर महेश चरण सिंह जी।

(४) यह सम्मेलन इस बात पर संतोष प्रकट करता है कि पंजाब प्रान्त में आर्य्य सन्तान द्वारा सम्पादित हुए समाचार पत्रादि दिन २ आर्य्य भाषा के शब्दों को अधिक प्रयोग करते हैं और आशा प्रकट करता है कि आर्य्य सन्तान के लोक मत के पर्य्याप्त रीति से प्रबल होने पर वे अपनी लिपि भी बदल देंगे।

प्रा० पं० रुद्र दत्त जी।

महा० गोवर्धन जी।

(५) इस बात को जानते हुए कि विशुद्ध पंजाबी आर्य्य भाषा का केवल एक विशेष रूप है इस सम्मेलन की यह सम्मति है कि पंजाबी साहित्य देवनागर लिपि में लिखा जाय।

प्रा० स्वामी ब्रह्मानन्द जी।

अ० पं० धर्मदेव।

(६) यह सम्मेलन गवर्नमेंट से प्रार्थना करता है:—

(क) पंजाब प्रान्त के सब डांकवाले आर्य्य भाषा पढ़े हुए होने चाहिये।

(ख) रेलवे टिकट तथा अन्य प्रकार के नोटिस आर्य्य भाषा में होना चाहिये।

प्रा० पं० बा० जगन्मोहन वर्म्मा (काशी)

अ० पं० विष्णुदत्त वकील।

(७) (क) जो समाचार पत्र तथा मासिक पत्र तथा मासिक अन्य लिपियों में निकलते हैं उनसे प्रार्थना की जाय कि वे मास में एक छोटा लेख उसी भाषा का देव नागरी लिपि में छापा करें।

(ख) जो साप्ताहिक तथा मासिक पत्र अन्य भाषाओं में प्रकाशित होते हैं उनसे प्रार्थना की जाय कि उस उस प्रान्त की लिपि में अथवा देव नागरी लिपि में आर्य्य भाषा के लेख छापा करें।

महाशय गोवर्धन जी बी० ए० इस सम्मेलन के साधारण मंत्री नियत किए गए और सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

मद्रास में कुछ आर्य्य समाजी सज्जनों के उद्योग से एक हिंदी का फ्री स्कूल खोला गया है। छात्रों की संख्या सन्तोषजनक है। ये अच्छे लक्षण हैं।

कुशीनार।

गोरखपूर ज़िले में कसया नामक एक बस्ती है जो देउरिया रेलवे स्टेशन से अनुमान २० मील की दूरी पर है। यहां जंटी कचहरी भी है। इससे एक मील पच्छिम माथा कुँवर नामक एक स्थान है जिसे पूर्वकाल में कुशीनार कहते थे। यहां एक मन्दिर में महात्मा बुद्ध देव की एक बहुत बड़ी मूर्त्ति उत्तर सिर किए पड़ी है। मूर्त्ति एक हाथ को मोड़ कर तकिए की तरह सिर के नीचे रक्खे हुए बड़ी भावपूर्ण निद्रा से लेटी है। सामने दो तीन छोटी छोटी मूर्त्तियां हैं। दक्षिण की ओर कुछ दूर पर एक काले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर की बुद्धदेव की मूर्त्ति है जिसे आसपास के गांव वाले माथाकुंवर बाबा कहते हैं और अपनी अपनी मानता के अनुसार कड़ाही (पूड़ी) चढ़ाते हैं तथा सिंदूर और तेल लगाते हैं। यह मूर्त्ति कुछ टूटी हुई है जिसके जोड़ने का प्रबन्ध हो रहा है। इस स्थान के आसपास खंड़हर भी बहुत हैं जिनसे अनुमान होता है कि कभी यहां एक बहुत बड़ा विहार रहा होगा। आध मील पूर्व जाने से एक ऊँचा चैत्य धनेख के आकार का पड़ता है जिसकी खोदाई इस समय सरकारी पुरातत्व विभाग द्वारा हो रही है।

इस स्थान का नाम माथाकुंवर उस काली मूर्त्ति ही के कारण पड़ा है। पाली भाषा में "महात्मा कुमार" को 'महत्ता कुमार' कहते हैं जिससे बिगाड़ कर महता कुंअर और फिर "माथा कुंवर" हुआ। महात्मा बुद्धदेव इसी देश के थे अतः उनके बुद्ध होने पर भी लोग उन्हें कुमार ही कहते थे यद्यपि आदरार्थ उन्होंने उसके आगे 'महत्ता' शब्द जोड़ दिया था।

कुशीनार का नाम बौद्ध ग्रंथों में प्रायः आया है। कहते हैं कि गौतम बुद्ध के बहुत पूर्व यहां पर हिरण्यवती (इसे आज कल कुसंभी* कहते हैं) नदी के किनारे कुशवती नाम की एक बड़ी नगरी थी। यहां पर पूर्व में बुद्ध भगवान सुदर्शन नामक अवतार लेकर चक्रवर्ती राजा हुए थे और समस्त जगत में उन्होंने अहिंसादि दश लक्षणात्मक धर्म स्थापित किया था। यह नगर कालान्तर में नष्ट हो गया और वहां एक बड़ा शाल बन हो गया। महात्मा बुद्ध के समय में यह मल्ल राजाओं के अधिकार में था जिनके वंश में मझौली के राजा लोग हैं। यह इतिहास त्रिपिटक के महावग्ग नामक प्रस्थान, सुदर्शन सुत्त, तथा जातक में लिखा है।

"परिनिर्वाण सुत्त" में लिखा है कि बुद्धदेव ने यहीं पर अपना शरीर त्याग कर निवार्ण प्राप्त किया था। यद्यपि उस समय में यह एक बहुत तुच्छ स्थान और शाल का बन था तथापि महात्मा बुद्ध के यहां शरीर त्याग करने के तीन प्रधान करण कहे गए हैं। प्रथम तो पूर्वजन्म में वे यहां चक्रवर्ती सम्राट हो चुके थे। दूसरे यहां पर महात्मा द्रोणाचार्य्य नामक एक बड़े प्रभावशाली विद्वान रहते थे जिनका दबाव भारत के सभी राजाओं पर था। महात्मा बुद्ध के अन्यत्र शरीरपात करने से उनके धातु (भस्म, अस्थि आदि) के लिए घोर महाभारत मचने की आशंका थी। पर यहाँ यह जनसंहार महात्मा द्रोण के बीच बिचाव करने से न होने पाया। तीसरे यहां सुभद्र नामक एक बड़े योग्य परिव्राजक ने उपदेश किया था। इसका विशेष विवरण "महापरिनिर्वाण सुत्त" में दिया हुआ है।

* स्यात् इसी नदी को वाल्मीकीय रामायण में कौशिकी कहा हो।

आज कल इसके पास के चैत्य की खोदाई पुरातत्व विभाग द्वारा सरकार की ओर से हो रही है। इस विभाग की ओर से पंडित हीरानन्द शास्त्री एम० ए० वहां पर ठहरे हुए हैं और चैत्य के भीतर से चीज़ों को निकालने का काम सुरंग खोद कर हो रहा है। अभी काम लगा हुआ है इसी से रिपोर्ट नहीं निकली है। अब तक खोदने से नीचे लिखी चीज़ निकली हैः—

१—एक ताम्रपत्र जिस पर कुछ खुदा हुआ है और कुछ स्याही से लिखा हुआ है।

२—जयगुप्त के समय के कुछ सिक्के।

३—एक तांबे का बरतन जिसमें मोती आदि रत्न और बालू भरा था। इस पात्र के भीतर एक और तांबे का सम्पुट निकला जिसके भीतर एक चांदी की डिबिया थी।

जगन्मोहन वर्म्मा।

हरिश्चन्द्र-समीक्षा।

बाबू हरिश्चन्द्र के हिन्दी को नए रास्ते पर लगाने की बात हम पहिले कह चुके हैं। अब यह देखना है कि यदि वे कवि थे तो किस ढंग के थे। जिन लोगों ने कविता पर लिखे हुए मेरे सब निबन्धों को ध्यान पूर्वक पढ़ा होगा उन्हें विदित होगा कि मनोरञ्जन के साथ ही साथ मैंने काव्य के दो उपयोगी कार्य्य माने हैः—

१. कल्पना की शुद्धि।

२. मनोवेगों का परिष्कार।

इन दोनों कार्य्यों का साधन कवि लोग प्रकृति के दो विभाग कर के करते हैं, वाह्य प्रकृति [External nature] और मानव प्रकृति [Human nature]। प्रथम कार्य्य का साधन तो कवि बन, पर्वत, नदी, निर्झर लता वृक्ष आदि प्राकृतिक वस्तुओं को कल्पना में उपस्थित करके करता है और दूसरे का मनोवेगों के उत्कर्ष तथा सृष्टि के बीच उनके उचित और सुन्दर स्थानों को दिखा कर। इनमें से कोई कोई महाकवि तो दोनों कार्य्यों में कुशल होते हैं, जैसे वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति और तुलसीदास, कोई प्रथम में और कोई द्वितीय में। बाबू हरिश्चन्द्र अधिकांश भाषा कवियों के समान इन तीसरे प्रकार के कवियों में थे। यद्यपि इन्होंने अपनी कविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा नए नए प्रभाव उत्पन्न किए पर उसके साधनों को परम्परानुसार ही रक्खा। मानव व्यापारों ही के उत्तेजक अंशों को छाँट कर इन्हों ने मनोवेगों को उभाड़ने और ठीक करने का प्रयत्न किया, और और प्राकृतिक पदार्थों और व्यापारों की शक्ति पर बहुत कम ध्यान दिया। इन्होंने मनुष्य को सारी सृष्टि के बीच रख कर नहीं देखा वरन उसे उसी के उठाए हुए घेरे में रख कर देखा। मनुष्य की दृष्टि को उसके फैलाए हुए प्रपंचावरण से बाहर प्राकृतिक दृश्यों की ओर ले जाने का प्रयत्न इन्हों ने नहीं किया जिनसे वह अपनी स्थिति के विस्तार को देख मनुष्यमात्र ही होने से सन्तोष कर सकता है। पर किया क्या जाता? हिन्दी साहित्य का उत्थान ही ऐसे समय में हुआ जब लोगों की रुचि बिगड़ चुकी थी। वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति के आदर्श लोगों के सामने से हट चुके थे।

हमारे आदि कवि वाल्मीकि के हृदय में जिस कविता का प्रादुर्भाव हुआ था वही सच्ची कविता थी। उन्हों ने जो मार्ग दिखलाया था वही सच्चा मार्ग था। देखिए वर्षा का कैसा प्राकृतिक चित्र उन्हों ने खींचा है:—

क्वचित्प्रकाशं क्वचिदप्रकाशं,
नभः प्रकीर्णाम्बु घनं विभाति।
क्वचित् क्वचित्पर्वत संनिरुद्धं,
रूपं यथा शान्तमहार्णवस्य॥
व्यामिश्रितं सर्जकदम्बपुष्पै,
र्नवं जलं पर्वतधातुताम्रम्।
मयूरकेकाभिरनुप्रयातं,
शैलापगाः शीघ्रतरं वहन्ति॥
मेघाभिकामा परिसम्पतन्ती,
संमोदिता भाति बलाकपंक्तिः।
वातावधूतावर पौण्डरीकी,
लम्बेव माला रुचिराम्बरस्य॥
बालेन्द्र गोपान्तरचित्रितेन,
विभाति भूमिर्नवशाद्वलेन।
गात्रानुपृक्तेन शुकप्रभेण,
नारीव लाक्षोक्षित कम्बलेन॥
समुद्वहन्तः सलिलातिभारं,
बलाकिनो वारिधरा नदन्तः।
महत्सु शृङ्गेषु महीधराणां,
विश्रम्य विश्रम्य पुनः प्रयान्ति॥
प्रहर्षिता केतकिपुष्पगन्ध,
माघ्राय मत्ता वननिर्झरेषु।
प्रपात शब्दाकुलिता गजेन्द्राः,
सार्द्धं मयूरैः समदा नदन्ति॥
अङ्गार चूर्णोत्कर सन्निकाशैः
फलैः सुपर्य्याप्तरसैः समृद्धैः।
जम्बूद्रुमाणां प्रविभाति शाखा,
निपीयमाना इव षट्पदौघैः॥
महान्ति कूटानि महीधराणां,
धाराविधौतान्यधिकं विभान्ति।
महा प्रमाणै र्विपुलैः प्रपातै,
र्मुक्ताकलापैरिव लम्बमानैः॥

उपर्युक्त वर्णन में किस सूक्ष्मता के साथ कविकुलगुरु ने ऐसे प्राकृतिक व्यापारों का निरीक्षण किया है जिनको बिना किसी उक्ति के गिना देना ही कल्पना पर प्रभाव डाल उसे नीरोग करने के लिए बहुत है। कालिदास के कुमार सम्भव का हिमालय वर्णन, रघुवंश में उस वन का वर्णन जहां नान्दिनी को लेकर दिलीप गए हैं, तथा मेघदूत में यक्ष के बताए हुए मार्ग का वर्णन बार बार पढ़ने योग्य हैं। भवभूति का तो कहना ही क्या है। देखिए:—

एतेत एव गिरयो विरुवन्मयूरा।
स्तान्येव मत्तहरिणानि वनस्थलानि॥
आमञ्जु वञ्जुल लतानि च तान्यमूनि।
नीरन्ध्रनीलनिचुलानि सरित्तटानि॥

इस तरह की कविता क्या इनके पीछे फिर भारतवर्ष में हुई? यहीं से तो उसने दूसरा मार्ग पकड़ा।

इन महाकवियों के प्रसंग वश नहीं वरन् केवल वर्णन की रोचकता के लिए जहां मानुषी व्यापार दिखाने की इच्छा हुई है वहां उन्होंने ऐसे ही स्थलों के व्यापारों को दिखलाया है जहां मनुष्य से प्रकृति की सन्निकटता है। जैसे ग्रामों के आसपास किसानों का खेत जोतना वा काटना, ग्वालों का गाय चराना इत्यादि इत्यादि। जैसे मेघदूत में यक्ष मेघ से कहता है।

(क) त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविकारानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः॥
सद्यस्सीरोत्कषणसुरभिः क्षेत्रमारुह्य मालं।
किञ्चित्पश्चाद्व्रज लघुगतिः किञ्चिदेवोत्तरेण॥
(ख) कृषी निरावहिं चतुर किसाना।
जिमि बुध तजहिं मोह मद माना॥

सच्चे कवि ऋतु आदि के वर्णन में ऐसे ही व्यापारों को सामने लाए हैं। ऐसे कवि ग्रीष्म में छाया के नीचे बैठ कर हाँफते हुए कुत्तों और पानी में पैठी हुई भैंसों का उल्लेख चाहे भले ही कर जायँ पर पसीने से तर रोकड़ मिलाते हुए मुनीब जी की ओर ध्यान न देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के व्यापार परिमित और संकुचित हैं। अतः वाह्य प्रकृति के अनंत और असीम व्यापारों के सूक्ष्म से सूक्ष्म अंशों को तारतम्य पूर्वक दिखा कर कल्पना को शुद्ध और विस्तृत करना भी कवि का धर्म्म है धीरे धीरे लोग इस बात को भूल चले। इधर उच्च श्रेणी के भी जो कवि हुए उन्हों ने अधिकतर मनुष्य की चित्त वृत्तियों के विविध रूपों को बड़े कौशल और तीव्रता के साथ दिखाया पर वाह्यप्रकृति की स्वच्छन्द क्रीड़ा की ओर कम ध्यान दिया। पीछे से तो राजाश्रयलोलुप मँगते कवियों के कारण कविता केवल वाक्पटुता वा शब्दों का शतरंज बन गई; विषयी लोगों के काम की चीज़ हो गई। भर्तृहरि के समय ही से यह दुरवस्था आरंभ हो गई थी जिस पर उन्हों ने दुःख के साथ कहा:—

पुरा विद्वत्तासीदुपशमवतां क्लेशहतये,।
गता कालेनासौ विषयसुखसिध्यैविषयिणाम्॥

बन, नदी, पर्वत आदि इन याचक कवियों को क्या दे देते जो उनका वर्णन करते। जायसी, सूर और तुलसी आदि स्वच्छन्द कवियों ने हिन्दी कविता को उठा कर खड़ा ही किया था कि केशव ने पैर छान कर उसे गंदे बाज़ारों में चरने के लिए छोड़ दिया। फिर क्या था, नायिकाओं के पैरों में मखमल के सुर्ख बिछौने गड़ने लगे। यदि कोई षटऋतु की लीक पीटने खड़े हुए तो कहीं शरद की चांदनी से किसी विरहिणी का शरीर जलाया, कहीं कोयल की कूक से कलेजों के टूक किए कहीं किसी को प्रमोद से प्रमत्त किया; क्योंकि उन्हें तो इन ऋतुओं के वर्णनों को उद्दीपन मात्र मान संयोग वा वियोग शृँगार के अन्तर्गत ही लाना था। उनकी दृष्टि प्रकृति के इन व्यापारों पर तो जमती नहीं थी, नायक वा नायिका ही पर दौड़ दौड़ कर जाती थी। अतः इनके नायक नायिका की अवस्था विशेष और प्रकृति की दो चार इनी गिनी वस्तुओं से जो सम्बन्ध होता था उसी को दिखा कर ये किनारे हो जाते थे।

बाबू हरिश्चन्द्र ने भी यद्यपि समयानुकूल प्रसंगों को छेड़ नए नए भाव उत्पन्न किए पर उन्हों ने प्रकृति पर कुछ प्रेम न दिखाया। इनका जीवनवृत्तान्त पढ़ने से भी पता लगता है कि वे प्रकृति के उपासक न थे। उन्हें जंगल पहाड़ नदी आदि को देखने का उतना शौक न था। वे अपने भाव "दस तरह के आदमियों के साथ उठ बैठ कर" प्राप्त करते थे। इसी से मनुष्यों के गुण स्वभाव को यथातथ्य अंकित करने में ये अद्वितीय हुए हैं। हिन्दी में इनके जोड़ का दूसरा मुशकिल से मिलेगा। भारतदुर्दशा, नीलदेवी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, विषस्य विषमौषधम् आदि देखने से यह बात अच्छी तरह मन में बैठ जायगी।

ऐसा भी कहा जाता है कि एक दिन इनके यहां बैठकर एक रंडी गा रही थी जिसे देख कर इन्हों ने कोई कविता बनाई और पास के लोगों से कहा "देखो, यदि हम इनका सत्संग न रक्खें तो ये भाव कहां से सूझें ?"। ये उर्दू कविता के भी प्रेमी थे जिसमें वाह्य प्रकृति के निरीक्षण की चाल ही नहीं और जिसमें कल्पना के सामने आने वाले चित्रों (Imagery) के बीभत्सपूर्ण और घिनौने होने की कुछ परवा न कर उद्वेगों के उत्कर्ष ही की ओर ध्यान रक्खा जाता है। यदि ऐसा न होता तो 'मरे हूं पै आंखें ये खुली ही रहि जायँगी" और "बिदा के समय सब कंठ लगावैं" वाले पद्य ये न लिखते। मनोवेगों का उत्कर्ष तो इन्हों ने खूब दिखलाया है जिसकी विस्तृत समीक्षा आगे की जायगी यहां पर तो मुझे यही दिखाना है कि बन, नदी, पर्वत आदि के चित्रों द्वारा इन्हों ने मनुष्य की कल्पना की मैल छांट उसे स्वच्छ और स्वस्थ करने का भार अपने ऊपर नहीं लिया था।

इनकी रचनाओं में विशुद्ध प्राकृतिक वर्णनों का अभाव बराबर पाया जाता है। वस्तुवर्णन में इन्हों ने मनुष्य की कृति ही की ओर अधिक रुचि दिखाई। जैसे 'सत्यहरिश्चन्द्र' के गङ्गा के इस वर्णन में:—

नव उज्जल जल धार हार हीरक सी सोहति।
बिच बिच छहरत बूंद मध्य मुक्ता मनु पोहति॥
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इमि आवत।
जिमि नरगन मन विविध मनोरथ करत मिटावत॥
कासी कहँ प्रिय जानि ललकि भेंट्यो उठि धाई।
सपनेहू नहिं तजी रही अङ्कम लपटाई॥
कहूं बंधे नव घाट उच्च गिरिवर सम सोहत।
कहुं छतरी, कहुं मढ़ी बढ़ी मन मोहत जोहत॥
धवल धाम चहुं ओर फरहरत धुजा पताका।
घहरत घंटा धुनि, धमकत धौंसा करि साका॥
मधुरी नौबत बजति, कहूं नारी नर गावत।
वेद पढ़त कहुं द्विज, कहुं योगी ध्यान लगावत॥

काशी के लोगों के विलक्षण स्वभाव तथा ऊंची ऊंची हवेलियों और तंग गलियों का वर्णन करने ही के लिए "काशी के छायाचित्र" लिखा गया।

'चन्द्रावली नाटिका' में एक जगह यमुना के तट का वर्णन आया है। पर वह भी नियमानुगत और परम्परायुक्त (Conventional) ही है, उसमें उपमाओं की भरमार इस बात को सूचित करती है कि कवि का मन उल्लिखित प्राकृतिक वस्तुओं पर रमता नहीं था, हट हट जाता था। देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे उसका कुछ अंश देता हूं।

१ तरनितनूजा तट तमाल तरुवर बहुछाए।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहुं सुहाए॥
किधौं मुकुर में लखत उझकि सब निज निज सोभा।
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा॥
मनु आतप वारन तीर को सिमिटि सबै छाए रहत।
कै हरि सेवा हित नै रहे निरखि नैन मन सुख लहत॥

२ कहूं तीर पर कमल अमल सोभित बहु भांतिन।
कहुं सैवालन मध्य कुमुदुनी लगि रहि पांतिन॥
मनु दृग धारि अनेक जमुन निरखति ब्रज सोभा।
कै उमगे पिय प्रिया प्रेम के अगनित गोभा॥
कै करिके कर बहु, पीय को टेरत निज ढिग सोहई।
कै पूजन को उपचार लै चलति मिलन मन मोहई॥

३ कै पिय पद उपमान जानि यहि निज उर धारत।
कै मुख करि बहु भृंगन मिस अस्तुति उच्चारत॥
कै ब्रज तियगन बदन कमल की झलकति झांई।
कै ब्रज हरिपद परस हेतु कमला बहु आई॥
कै सात्विक अरु अनुराग दोउ ब्रज मंडल बगरे फिरत।
कै जानि लच्छमी भौन यहि करि सतधा निज जल धरत॥

सभा सम्बन्धी समाचार।

इस वर्ष सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं, इन विषयों के लेख ३१ दिसम्बर १८११ तक सभा में आ जाने चाहिए।

राधाकृष्ण दास पदक।

नागरी अक्षरों की उत्पत्ति और भारतवर्षीय प्रधान प्रधान प्रचलित अक्षरों से उनका सम्बन्ध।

रेडिचे पदक।

(१) बिना तार के टेलीग्राफ़ी (Wirless Telegraphy)

डाक्टर छन्नू लाल मिमोरियल मेडल।

यह सोने का मेडल इस वर्ष उस सज्जन को दिया जायगा जो "भारतवर्ष में बच्चों की मृत्यु की संख्या में अधिकता का कारण और उसके उपाय" पर सब से उत्तम लेख भेजेगा। यह लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ३१ दिसम्बर १८११ तक आ जाना चाहिए।

सभा के नियमानुसार सब सभासदों से प्रार्थना है कि आगामी वर्ष के चुनाव के लिये यदि उनको कुछ प्रस्ताव करना हो तो वे कृपा पूर्वक उसकी सूचना ता० ३० जून १८११ तक मेरे पास भेजदें जिसमें सभा उन प्रस्तावों पर विचार कर भिन्न भिन्न पदों के लिये सभासदों को अंकित करे। वर्ष की समाप्ति के कारण इस वर्ष निम्न लिखित सज्जनों के पद खाली होंगे—

एक सभापति।
दो उप सभापति।
एक मन्त्री।
एक उपमंत्री।

प्रबन्धकारिणी समिति के सभासद

काशी से-बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बा० बेणी प्रसाद, बलभद्र दास और पं० केशव देव शास्त्री के पद।

मध्य भारत से-पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए०।

संयुक्त प्रदेश से-पं० माधव प्रसाद पाठक।

राजपुताने से-कुंवर फतह लाल मेहता—

इनके अतिरिक्त ३० जून १८११ तक काशी निवासी जो सभासद समिति के चार अधिवेशनों में उपस्थित न होंगे और जो बाहरी सभासद चार अधिवेशनों के कार्य्यविवरण के विषय में अपनी सम्मति न भेजेंगे अथवा दो अधिवेशनों में स्वयं उपस्थित न होंगे उनके पद भी खाली हो जांयगे।

सभा का कार्य विवरण

(गतांक से आगे)

(१७) निश्चय हुआ कि रेडिचे पदक और राधाकृष्ण दास पदक के लिये इस वर्ष निम्न लिखित विषय नियत किए जांय।

रेडिचे पदक।

बिना तार की टेलिग्राफ़ी (Wireless telegraphy)

राधाकृष्ण दास पदक।

नागरी अक्षरों की उत्पत्ति और भारतवर्षीय प्रधान प्रधान प्रचलित अक्षरों से उनका सम्बन्ध।

(१८) बाबू शिव प्रसाद गुप्त ने कहा कि वे सभा के कुछ निश्चयों के विरुद्ध हैं और इनके सम्बन्ध में सभासदों के पास भेजने के लिये उन्होंने कुछ पत्र छपवाए हैं। ये पत्र नागरीप्रचारिणी पत्रिका के साथ बिनामूल्य बांट दिए जांय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि सभा के मंत्री और पं० रामनारायण मिश्र को अधिकार दिया जाय कि वे लोग यदि इस पत्र को देख कर उसे पत्रिका के साथ बटवाना उचित समझें तो इसे बिना मूल्य उसके साथ बंटवा दें ।

(१८) निश्चय हुआ कि सिक्कों पर नागरी अक्षरों के छपने के सम्बन्ध में गवर्न्मेंट से जो पत्रव्यवहार हुआ है उसकी नकल समाचारपत्रों में भेजने की आवश्यकता नहीं है । इसकी नकल केवल सभा की पत्रिका में छाप दी जाय और साथ ही इस विषय का एक नोट दे दिया जाय कि जब गवर्न्मेंट ने लिखा है कि इस विषय पर उनका उत्तर अन्तिम समझा जाय तो विवश हो कर सभा इस विषय को छोड़ देना ही उचित समझती है ।

(२०) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ फरवरी १९११ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

(१) बाबू माधव प्रसाद के प्रस्ताव तथा बाबू गौरी शंकर प्रसाद के अनुमोदन पर पं० रामनारायण मिश्र सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २८ जनवरी १९११) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति के ता० १७ नवम्बर १९१० १६ दिसम्बर १९१० और २३ जनवरी १९११ के कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(४) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए ।

(१) पं० रामचन्द्र आनन्द राव देशपांडे, सीनियर टीचर हाईस्कूल, बालाघाट १॥) (२) बाबू बलदेव शरण सिंह, हरिहरपुर, पो० सकड्डी, जि० सारन ३) (३) बाबू जगमोहन लाल, एकौण्टेण्ट, गवर्न्मेंट आफिस, गोरखपुर १॥) (४) पं० सुदर्शन नारायण पांडे, चौबेपुर, कानपुर २) (५) पं० अम्बिका प्रसाद मिश्र, जैनारायन्स स्कूल, स्पेशल क्लास, काशी १॥) (६) बाबू शोभाचन्द्र जमड़, सरदार शहर ५) (७) बाबू विश्वनाथ सहाय सिंह, बारिस्टर, अर्दली बाजार काशी ५) (८) बाबू हरनाथ सहाय सिंह बी० ए० एल एल बी०, अर्दली बाजार, काशी ३) (९) श्रीकृष्ण मोहन शर्म्मा कार्तान्तिक, कार्तान्तिक ज्योतिर्विद्यालय, चन्द्रबाग बी०पी० टैंक, बम्बई ५) (१०) बाबू ज्योति प्रसाद, मेनेजर, गवर्न्मेंट एग्रिकलचुरल फार्म, बनारस १॥) (११) पं० रामावतार मिश्र, राजादरवाजा, काशी १॥) (१२) बाबू आशुतोष काव्य विशारद एम० ए०, बी० एल०, वकील, रानीगंज १॥) (१३) बाबू जैरामलाल, सेन पुरा, बनारस १॥) (१४) बाबू श्री नारायण लाल, सेनपुरा, काशी १॥) (१५) बाबू श्री भूषण वर्म्मा, सेनपुरा, काशी १॥) (१६) बाबू रामकृष्ण लाल, त्रिलोचन, काशी १॥) (१७) बाबू तारा दत्त, रेजिमेण्ट स्कूल मास्टर, २/८ गोरखा पल्टन लैन्सडौन गढ़वाल ३) (१८) वैद्य शंकर लाल हरिशंकर जी, आयुर्वेदोद्धारक औषधालय, मुरादाबाद १॥) (१९) बाबू लक्ष्मी नारायण खन्ना, चौराहा गली, मुरादाबाद १॥) (२०) बाबू लाल गोपाल, वकील, अमरोहा, जि० मुरादाबाद ३) (२१) बाबू विश्वम्भर नाथ वकील, अमरोहा, जि० मुरादाबाद १॥) (२२) बाबू शमशेर सिंह, ठि० बाबू अमीर सिंह सौदागर, मुरादाबाद १॥) (२३) बाबू सीताराम, ठि० सीताराम लक्ष्मण दास, नं० नया बाड़ा, चौनी बाजार, काशी १॥) (२४) श्रीयुत सोती शंकर लाल जी, बिजनौर २) (२५) गोस्वामी श्री गोकुल नाथ जी महाराज, बड़ा मन्दिर, तीसरा भोईवाड़ा, बम्बई नं० २-१००) स्थायी (२६) श्रीयुत एन० एच० भट्ट, बड़ा मंदिर, तीसरा भोईवाड़ा बम्बई नं० २, ३) (२७) पं० मुनिमाधव तिवारी, सूर्य्यपुर, आज़मगढ़ १॥) (२८) बाबू गुलाब चन्द्र श्रीवास्तव, सेनपुरा, काशी ३) (२९) बाबू जयन्ती सहाय, असिस्टेंट मास्टर, गवर्न्मेंट हाई स्कूल, फर्रुखाबाद ५) (३०) पं० गणेश शंकर विद्यार्थी, कापर गंज, कानपुर १॥) (३१) बाबू जयनारायण सिंह, विश्वेश्वर गंज, काशी १॥) (३२) बाबू चुन्नीलाल हिन्दू बोर्डिंग, इलाहाबाद १॥) (३३) पं० कृष्ण गोपाल दीक्षित, सेक्रेटरी, बी० एन० डबल्यू रेलवे इन्स्टीट्यूट, गोरखपुर ५) (३४) पं० मुरलीधर झा, प्रोफेसर, संस्कृत कालेज, रामकटोरा, काशी ५) (३५) बाबू अशर्फी लाल बादशाही मंडी, इलाहाबाद १॥) (३६) बाबू मदन लाल, दफ्तर गवर्नर, जम्मू, काश्मीर १॥) (३७) बाबू हरवंश दयाल, बड़ी पियरी, काशी १॥) (३८) पं० काशी नाथ नायक पालना, महल्ला भिखारी दास, काशी १॥) (३९) पं० गोपाल राव वेभ, महल्ला नारायण दीक्षित, नं० ३३।१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी १॥) (४०) राय बैजनाथ दास शाहपुरी, कोतवालपुरा, काशी ६) (४१) बाबू ब्रजभवन दास, १० केण्टून्मेण्ट काशी १॥) (४२) बाबू विनायक प्रसाद सिंह, मेगुरा, पो० मझवार, तहसील चन्दौली, बनारस ३) (४३) पं० भैरव लाल सेठ, महल्ला नन्दनसाहु, काशी १॥) (४४) बाबू शीतल प्रसाद, ठि० भगवानदास प्रभूदयाल, सौदागर, अल्मोड़ा १॥) (४५) साहित्योपाध्याय त्रिपाठी शिवदत्त काव्यतीर्थ, गवर्न्मेंट कालेज, अजमेर १॥) (४६) पं० हरदीन त्रिपाठी सेकेण्ड मास्टर, स्कूल दोस्त पुर, जिला सुल्तां पुर १॥) (४७) बाबू रेवती प्रसाद कटारिया, असिस्टेण्ट टीचर फर्स्ट ग्रेड मिडिल स्कूल, कटनी, मुड़वारा ३) (४८) बाबू रामानन्द सिंह, सोनबरसा, पे० बैरिया, बलिया १॥)

(५) सभासद होने के लिये २२ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(६) निश्चय हुआ कि पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी भाषा और साहित्य की जो निरन्तर सेवा की है उसके लिये सभा उनको आनरेरी सभासद नियत करती है। सभा इस बात पर भी खेद प्रकट करती है कि सन् १८०७ में कई कारणों से उनको सभा से इस्तीफा देना पड़ा था ।

(७) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए–१ पं० किशोरी लाल गोस्वामी, वृन्दावन २ बाबू महावीर सिंह वर्म्मा, अटिया, रसूलाबाद, जि० उन्नाव ।

निश्चय हुआ कि इनके इस्तीफे स्वीकार किए जांय और इन सज्जनों से प्रार्थना की जाय कि इनके यहां सभा का जो चन्दा बाकी है उसे वे भेज दें ।

(८) पं० तुलसीराम एम० ए० का कार्ड उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि उन्हों ने अपना जीवन गुरुकुल को प्रदान कर दिया है और अब उनकी आर्थिक दशा ऐसी नहीं है कि सभा का चन्दा दे सकें ।

निश्चय हुआ कि वे विना चन्दा दिये ही सभासद रहें।

(९) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं :–

पं० सुदर्शना चार्य्य बी० ए०, गृहलक्ष्मी कार्य्यालय, कर्नलगंज, प्रयाग-गृहिणी । संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट The Sacred Books of the Hindus vol. III बाबू रामशरण लाल, रिटायर्ड डिप्टी पोस्टमास्टर, काशी-छान डुलास २ प्रति । बाबू जानकी शरण बुलाकीलाल वर्म्मा, लक्ष्मी सराय-भक्ति रस बिन्दु । डाक्टर महेंद्र लाल गर्ग-बम्बई मेडिकल कांग्रेस । पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० काशी-Speech delivered by Sir J. P. Hewett at the opening of U.P. Exhibition on 1st December 1910 पं० क्षेत्र पाल शर्म्मा, सुख संचारक कम्पनी, मथुरा-सफलता के सिद्धान्त। पं० त्र्यम्बक राव लेले प्राइवेट सेक्रेटरी का आफिस, लश्कर-चन्द जरूरी नसीहतें। पं० गंगानाथ झा, इलाहाबाद, Indian Thought Vol III No I एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता Journal and Proceedings Vol VI no 9 and Extra number, Memoirs Vol III Nos 1, 2, 3, and Vol IV No 1. Indian Antiquary for February 1911.

(१०) सभा पति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी समिति ।

शनिवार ता० १८ मार्च १९११–सन्ध्या के ५½ बजे

स्थान-सभाभवन

उपस्थित ।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति, बाबू गौरी शंकर प्रसाद बी० ए०, एल एल० बी०, पण्डित केशव देव शास्त्री, पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए०, एल एल० बी०, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा और बाबू जुगल किशोर ।

(१) गत अधिवेशन (ता० २८ जनवरी १९११) का कार्य-विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) हिन्दी कोश के सम्पादक की अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर १९१०, जनवरी १९११ और फ़रवरी १९११ की रिपोर्टें पढ़ी गईं जिनमें कोश कार्यालय के काशी में आने की सूचना थी तथा सम्पादक ने प्रस्ताव किया था कि काशी में पण्डित रामनारायण मिश्र कोश कार्यालय के निरीक्षक नियत किए जांय, कोश का सम्पादित अंश उनके पास प्रति सोमवार को भेजा जाय और वे उसे अपनी टिप्पणियों के सहित ३ दिन में लौटा दिया करेंगे, तब उनकी टिप्पणियों के अनुसार यह दोहराया जाय और साफ़ करा कर उनके पास मूल प्रति के साथ भेजा जाय, वे शुद्ध प्रति को पुनः देख कर प्रेस में भेज देंगे, प्रूफ़ वे देखेंगे और छपे हुए फ़र्मों की दो प्रतियां कार्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय तथा निरीक्षक के लिये भेजा करेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी प्रस्ताव किया था कि कोश के सहायक सम्पादकों की संख्या ४ के स्थान पर ६ कर दी जाय और दो दो सहायक मिल कर तीन जुदे जुदे विभागों में कार्य करें।

निश्चय हुआ कि सम्पादक की रिपोर्ट स्वीकार की जाय और बनारस में कार्यालय के निरीक्षण तथा कोश के सम्पादन सम्बन्धी कार्यों के विषय में सम्पादक ने जो प्रस्ताव किए हैं वे भी स्वीकार किए जांय। इन प्रस्तावों की एक नकल कोश कार्यालय को भेजी जाय। सहायकों की संख्या बढ़ाने के सम्बन्ध में सम्पादक को लिखा जाय कि सभा इसे तब तक नहीं कर सकेगी जब तक कि कोश फ़ण्ड में आवश्यक धन न आ जाय।

पं० केशव देव शास्त्री ने प्रस्ताव किया कि दिसम्बर की रिपोर्ट में जिन चार उपसम्पादकों को सम्पादक ने नियुक्त किया था उनमें से लाला भगवान दीन को उप-सम्पादक नियत करना अनुचित था, क्योंकि सम्पादक महाशय के ही अनुरोध से वे पदच्युत किए गए थे। निश्चय हुआ कि सभा मुंशी भगवान दीन के नियुक्त किए जाने को अनुचित समझती है।

(३) पण्डित केशवदेव शास्त्री का २३ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि (१) कोश विभाग के सम्बन्ध में उनकी गत वर्ष की रिपोर्ट विचारार्थ उपस्थित की जाय (२) बाबू जगन्मोहन वर्म्मा को पहिले कितना वेतन मिलता था और अब कितना दिया जाता है इसकी सूचना उन्हें दी जाय (३) मुं० भगवान दीन के एक बार पदच्युत हो कर पुनः नियत किए जाने पर विचार किया जाय (४) कोश विभाग के वर्तमान प्रबन्ध और निरीक्षण की उन्हें सूचना दी जाय।

मंत्री ने सूचना दी कि (१) उनकी रिपोर्ट लौटाने के लिये कोश के सम्पादक को लिखा गया था पर वह अभी लौट कर नहीं आई। निश्चय हुआ कि यह शीघ्र मंगवा कर उपस्थित की जाय (२) बाबू जगन्मोहन वर्म्मा को पहिले २५) रु० मासिक वेतन मिलता था, जब वे बाहर चन्दा एकत्रित करने गए थे तो भत्ते के सहित उन्हें ३५) रु० मासिक दिया जाता था और इस समय उन्हें ५०) रु० मासिक दिया जाता है (३) आज के निश्चय नं० २ में इस सम्बन्ध में विचार हो चुका है (४) बाबू श्याम सुन्दर दास जी कोश के सम्पादक हैं, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू अमीर सिंह, बाबू जगन्मोहन वर्म्मा और बाबू गंगाप्रसाद गुप्त सहायक सम्पादक हैं, पण्डित ब्रजभूषण ओझा लेखक हैं और पंडित रामनारायण मिश्र काशी में कार्यालय के निरीक्षक हैं।

(४) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि एक कमेटी कोश के कुल कार्य्यों के करने के लिये बनाई जाय जो सम्पादन प्रकाशन तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी कार्यों को करे और यह कमेटी केवल प्रबन्धकारिणी समिति के ही अन्तर्गत रहे।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव बाबू शिवप्रसाद गुप्त के सामने विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(५) हरिश्चन्द्र स्कूल के हेडमास्टर का ७ फ़रवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभाभवन में उनका स्कूल रहने के लिये १५ मई १९११ तक का समय बढ़ा दिया जाय।

निश्चय हुआ कि जिन नियमों पर हरिश्चन्द्र स्कूल को भवन दिया गया है उन्हीं नियमों पर यह समय बढ़ा दिया जाय।

(६) बाबू दामोदर दास राठी का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के सभासद चुने जाने पर उनके वक्तव्य के छपवाने की आवश्यकता नहीं है।

(७) रेमिङ्गटन टाइपराइटर कम्पनी के एजेण्ट का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने ३६५) रु० पर हिन्दी का टाइपराइटर सभा को देने के लिये लिखा था और मंत्री ने सूचना दी कि यदि सभा यह टाइपराइटर लेना स्वीकार करे तो उन्होंने अपना विज्ञापन भी १२१) रु० देकर सभा की पत्रिका और ग्रन्थमाला में दो वर्ष के लिये छपवाना स्वीकार किया है।

निश्चय हुआ कि धनाभाव से इस समय यह टाइपराइटर नहीं लिया जा सकता।

(८) वनिता विनोद के सम्बन्ध में पं० रामनारायण मिश्र की यह सम्मति उपस्थित की गई कि सभा पूर्व निश्चय के अनुसार इस पुस्तक का कापीराइट बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधव प्रसाद को ही दे क्योंकि वे इस पुस्तक के लिये नये टाइप खरीद चुके हैं और इसके बिना वे बंग बिजयता का कापी राइट भी नहीं लेंगे।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(८) सभा से पुस्तकों की सहायता मांगने के लिये जिन पुस्तकालयों वा सभाओं आदि के पत्र आवें और जिन सभाओं के पत्र शाखा सभा बनाए जाने के लिये आवें उनका वृत्तान्त जानने के लिये सब-कमेटी की प्रश्नावली उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि (क) जिन पुस्तकालयों वा सभाओं आदि के पत्र पुस्तकों की सहायता के लिये आवें उनकी स्थिति जानने के लिये निम्न लिखित प्रश्नावली भेजी जाया करे अर्थात् (१) पुस्तकालय का नाम (२) पुस्तकालय किसने स्थापित किया? (३) किस सन् में स्थापित हुआ? (४) इसके उद्देश्य क्या हैं? (५) इसमें किस विषय की पुस्तकें अथवा पत्र अधिक रहते हैं? (६) क्या इसका प्रबन्ध किसी कमेटी द्वारा होता है? (७) इस कमेटी के प्रत्येक कार्यकर्ता और कुछ सुप्रसिद्ध सभासदों के नाम? (८) क्या कमेटी रजिस्टर्ड है? (९) क्या अन्य किसी स्थान से पुस्तकालय को पुस्तकें अथवा पत्र बिना मूल्य आए हैं अथवा आते हैं? (१०) इस समय पुस्तकालय में किस किस भाषा की कितनी पुस्तकें हैं और हर एक भाषा के कितने पत्र आते हैं? (११) पुस्तकालय का खर्च किस प्रकार चलता है? (१२) पुस्तकालय में आने वालों की हर रोज क्या संख्या रहती है? (१३) क्या आप के नगर में कोई और भी पुस्तकालय है और यदि है तो उससे आपके पुस्तकालय में क्या विशेषता है? (१४) पुस्तकालय कमेटी के हाथ में कितना धन है और मासिक आय कितनी है? (१५) आपके पुस्तकालय द्वारा नागरी का कितना प्रचार हुआ है? (१६) कम से कम कितने मूल्य पर आप पुस्तकें ले सकते हैं?

(ख) जिन सभाओं के पत्र शाखा सभा बनाए जाने के लिये आवें उनके पास निम्न लिखित प्रश्नावली भेजी जाया करे अर्थात् (१) सभा का नाम (२) सभा किसने स्थापित की? (३) किस सन् में स्थापित हुई? (४) इसके उद्देश्य क्या हैं? (५) काशी नागरीप्रचारिणी सभा के उद्देश्यों से आप की सभा में कौन कौन से उद्देश्य अधिक हैं अथवा न्यून? (६) आप की सभा का प्रबन्ध किस प्रकार होता है? (७) अपनी सभा के कार्यकर्ताओं और सभासदों की सूची तथा नियमावली भेजिये (८) यदि आप की सभा का कोई पुस्तकालय भी हो तो उसकी एक सूची तथा जो समाचारपत्र उसमें आते हों उनके नाम लिख कर भेजिये। (९) आप की सभा का सम्बन्ध किसी राजनैतिक अथवा धार्मिक संस्था के साथ है या नहीं? यदि है तो किसके साथ? (१०) क्या आप की सभा रजिस्टर्ड है? (११) आप अपनी सभा को किस प्रयोजन से काशी नागरीप्रचारिणी सभा की शाखा सभा बनाते हैं? (१२) आप की सभा ने अब तक जो कार्य किए हैं उनका संक्षिप्त विवरण लिख भेजिए अथवा यदि कोई छपी हुई रिपोर्ट हो तो भेज दीजिए? (१३) आपकी सभा के कितने सभासद हैं और वार्षिक आयव्यय क्या है?

(१०) अर्द्ध मूल्य पर सभा की पुस्तकें लेने के लिये निम्न लिखित संस्थाओं के पत्र उपस्थित किए गए अर्थात् काशीपुर का एडवर्ड पुस्तकालय, कानपुर की विद्याधर्मप्रचारिणी सभा, फ़ीरोज़ाबाद का भारती भवन पुस्तकालय, अरवल का सरस्वतीभवन पुस्तकालय और हाथरस का एडवर्ड हिन्दी पुस्तकालय। निश्चय हुआ कि इन्हें सभा की पुस्तकें अर्द्धमूल्य पर दी जांय।

(११) मुलतान के सिटी रीडिङ्ग रूम एण्ड लाइब्रेरी, बलिया के हिन्दी पुस्तकालय और नवलगढ़ के विद्यावर्द्धिनी पुस्तकालय के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्होंने सभाद्वारा प्रकाशित पुस्तकें वा पत्रिका आदि बिना मूल्य मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि निश्चय नं० ८ के अनुसार इनके पास प्रश्नावली भेजी जाय।

(१२) निश्चय हुआ कि सन् १९११ के लिये डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल का विषय "भारतवर्ष में बच्चों की मृत्यु की संख्या में अधिकता का कारण और उसका उपाय" नियत किया जाय।

(१३) बा० गोपालदास का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा में छोटे छोटे कार्यों की छपाई में प्रति वर्ष बहुत व्यय होता है। ऐसे कार्यों के लिये यदि कलकत्ते के प्रोफ़ेसर बसू का प्रेस, टाइप तथा अन्य आवश्यक सामान के सहित, ३५) रु० में मंगवा लिया जाय तो छपाई में कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कम १००) रु० की वार्षिक बचत हो जाय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव पं० केशवदेव शास्त्री और बाबू माधव प्रसाद जी की सम्मति के सहित उपस्थित किया जाय ।

(१४) मंत्री ने यह सूचना दी कि संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट ने हिन्दी पुस्तकों की खोज की त्रैवार्षिक रिपोर्ट भेज दी है और इसकी छपाई के लिये भारत प्रेस और तारा प्रेस के एस्टिमेट उपस्थित किए ।

निश्चय हुआ कि इसकी ढाई सै प्रतियां भारत प्रेस से छपवाई जांय और जिल्द बंधाई में इस प्रेस के मूल्य में कमी कराई जाय । साथ ही यह भी तै कर लिया जाय कि गवर्न्मेंट प्रेस में खोज की जो रिपोर्टें छपी हैं उन से इसकी छपाई में कुछ भी अन्तर न होना चाहिए ।

(१५) पण्डित श्याम बिहारी मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया, जिसमें उन्हों ने लिखा था कि सभा उनके "हिन्दी भाषा के इतिहास" को प्रयाग की हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशक मंडली द्वारा प्रकाशित होने की आज्ञा दे ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और पण्डित श्याम बिहारी मिश्र जी से प्रार्थना की जाय कि वे इस पुस्तक की पचास प्रतियां मंडली से इस सभा को दिलवा दें । पण्डित जी को यह भी लिखा जाय कि सभा की सम्मति में इस पुस्तक का मिस्टर आर० सी० दत्त को समर्पित किया जाना उचित होगा क्योंकि उन्हों ने ही इस पुस्तक के लिखवाने के लिये सभा में प्रस्ताव भेजा था ।

(१६) बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि सभा ने उनका वेतन बिना भत्ते के जो ३०) रु० नियत किया है वह न्यून है । सभा इस पर पुनः विचार कर उनका वेतन ३५) रु० मासिक कर दे ।

निश्चय हुआ कि इस समय इस पर पुनः विचार नहीं हो सकता ।

(१७) बाबू सन्नूलाल गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि मनुष्यगणना में अशिक्षित हिन्दुओं की बोली भी उर्दू लिखी जा रही है।

निश्चय हुआ कि बाबू सन्नूलाल गुप्त को लिखा जाय कि सभा ने इस सम्बन्ध में उचित उद्योग किया है और समाचारपत्रों में भी इस विषय का आन्दोलन किया गया है ।

(१८) निश्चय हुआ कि स्वामी सत्गुरु प्रसाद शरण और पोथीमिश्र रमज़ान बिना चन्दे के इस सभा के सभासद नियत किए जांय ।

(१९) बाबू राजेन्द्र लाल का पत्र उपस्थित किया गया कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का सम्वत् नागरीप्रचारिणी पत्रिका में छपा करे और सभा इस सम्वत् के प्रचार का उद्योग करे ।

निश्चय हुआ कि पत्रिका में यह सम्वत् छपा करे ।

(२० पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पण्डित रमाशंकर मिश्र हिन्दी कोश के सहकारी सम्पादक नियत किए जांय और सम्पादक से इस विषय में सम्मति लीजाय कि उनके कार्य का विभाग किस प्रकार होना चाहिए ।

(२१) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

—:o:o:—

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ मार्च १९११ सन्ध्या के ५½ बजे

स्थान-सभाभवन ।

(१) बाबू गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव तथा पण्डित राम नारायण मिश्र के अनुमोदन पर बाबू जुगल किशोर सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २५ फ़रवरी १९११) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति का ता० २८ जनवरी का कार्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

(४) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए ।

(१) बाबू रामचन्द्र स्वरूप-रईस-मेरठ ५) (२) बाबू बनारसी दास धनपत राय-मेरठ शहर ५) (३) बाबू ईश्वर दास जैनी, साइन्स मास्टर, हिन्दू कालेज, काशी १॥) (४) बाबू सीताराम बी० ए०, एल० एल बी०, वकील, मेरठ ३) (५) पं० नर सिंह नारायण मिश्र वैद्य, ठि० श्रीमान् राजा साहब बांसी, ज़ि० बस्ती ५) (६) पं० गंगादत्त पांडे वैद्य, महल्ला साहूकारी, बरेली ३) (७) पं० लक्ष्मण महतो, हेड पण्डित, गुरु ट्रेनिङ्ग स्कूल, मधेपुरा, भागलपुर ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) आनरेबल राय रामानुज दयाल बहादुर मेरठ १००) (९) आनरेबल लाला सुखबीर सिंह जी, मुजफ्फरनगर १००) (१०) बाबू श्यामलाल पचौरी, अध्यापक, देवनागरी पाठशाला, मेरठ १॥) (११) राय विश्वम्भर नाथ साहब, कानपुर १००) (१२) बाबू मदन मोहन लाल बी० ए०, एल एल० बी०, मेम्बर आफ़ काउन्सिल, उदयपुर १॥) (१३) पंडित ललिता प्रसाद द्विवेदी, मेकडानल हिन्दू बोर्डिंग हाउस प्रयाग ५) (१४) बाबू हरदयाल सिंह, ठि० बाबू रघुबर दयाल खजानची, गवर्न्मेंट प्रेस, इलहाबाद १॥) (१५) पण्डित जय नारायण मिश्र ठेकेदार, गणेशगंज, लखनऊ ५) (१६) मो० जूल्स ब्लाक 57 Bonlevard de Vangirard, Paris XV ५) (१७) बाबू विश्वेश्वर सिंह हौज कटोरा, काशी १॥) (१८) बाबू गोविन्द दास, बीबी हटिया, काशी १॥) (१९) पंडित रमाशंकर मिश्र, काशी ५)(२०) बाबू रामदेव, ठि० बाबू नाथूराम वर्म्मा, कण्ट्रैक्टर गया १॥) (२१) बाबू प्रसादीलाल, रईस, खैर, जि० अलीगढ़ १॥) (२२) श्रीमन्त राव बलवंत जोग, कर्वी, जि० बांदा ५)

(५) सभासद होने के लिये २२ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(६) मंत्री ने निम्न लिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी अर्थात् मिस्टर सखावत हुसेन बी० ए०, मेरठ; ठाकुर कान सिंह जी, खवा, दौसा और पं० जगन्नाथ शर्म्मा, खवा, दौसा।

सभा ने इन सज्जनों की मृत्यु पर शोक प्रगट किया।

(७) मुरादाबाद के पंडित कृष्णानन्द जोशी का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(८) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं। गोस्वामी रामपुरी, साक्षी विनायक, काशी-धर्म्म समीक्षा, विवाद दिग्विजय, मर्यादा। संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट Annual Progress Report, Fauna of British India Part I. पण्डित गोविन्द शास्त्री दुग्वेकर, बीबी हटिया, काशी-सुभद्रा हरण नाटक। पंडित मंगल देवजी साधु-ईश्वर स्तुति विचार, पांच पैर की गौ। स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण, श्रीगुरु राम जी पुस्तकालय, गोंडा-शोक प्रकाश रामभक्त यशोलहरी, आयुष्य विद्या। श्रीयुत बाबू कोड़ी मल जी माल, नीमच-शीतलाभरण। पंडित हरदीन त्रिपाठी, स्कूल दोस्तपुर, जि० सुलतानपुर-प्रबन्ध दीपक पण्डित मीठा लाल व्यास, ब्यावर, राजपूताना-सन् १८९८ का भावीफल, सिद्धान्तसार, पुष्करणे ब्राह्मणों की मांगीनता, उपश्रुति शकुन, वैद्य गाइड। बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा, काशी-श्री नारद मोह। पण्डित नीलकण्ठ द्वारिका प्रसाद, अमीनाबाद, लखनऊ-प्रभु-चरित्र। खरीदी गई-भारत वर्ष में पश्चिमीय शिक्षा।

(९) सभा पति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

लाभ की बात।

मातृभाषा की सेवा

लाभ उठाइये! सुअवसर है!! फिर हाथ न आवेगा!!!

पचास रुपये इनाम

निम्नांकित शीर्षक पर निबन्ध लिखनेवाले को दिया जावेगा
"Shri Ramchandra, An ideal Man".

॥ श्री रामचन्द्र-मर्यादापुरुषोत्तम ॥

यह निबन्ध सरल सरस हिन्दी भाषा में लिखा जाना चाहिये। लेख फुलिस्केप कागज के २४ पृष्ठ से कम न हो। निबन्ध निवेदक के पास १५ जून सन् १९११ तक अवश्य पहुंच जाना चाहिये। यह बात विज्ञापित रहे कि निबन्ध हस्ताक्षरी की मिलकियत होगी और हमको स्वत्व प्राप्त रहेगा कि लेख को प्रकाशित करावें अथवा उसके भाषानुवाद को किसी आवश्यक न्यूनाधिक्य (रद्दोबदल) के साथ छपवावें। निम्न लिखित महानुभावों ने कृपा करके इस निबन्ध का समालोचक बनना स्वीकार किया है:—

१. महामहोपाध्याय श्री पं० गंगानाथ झा एम० ए० संस्कृत प्रोफेसर म्योर सन्ट्रल कालिज प्रयाग।

२. श्री पं० काशीराम जी एम० ए० स्पेशल इन्स्पेक्टर आफ़ संस्कृत संयुक्त प्रान्त।

३. श्री बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० मन्त्री नागरी प्रचारिणी सभा बनारस।

४. श्री बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० श्रीनगर (काश्मीर)

पारितोषिक पानेवाले को पत्र द्वारा सूचित कर दिया जावेगा और यदि सम्भव हुआ तो किसी प्रसिद्ध समाचार पत्र में नाम भी प्रकाशित कर दिया जावेगा।

जो निबन्ध अस्वीकार होंगे लौटाये न जायँगे।

प्रकाशक— हरज्ञानसिंह
राम-सभा कार्यालय, सिकन्दराबाद
ज़िला बुलन्दशहर-यू. पी.

भारत प्रेस काशी में बाबू माधवप्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५ | मई १९११ । | भारतेन्दु संवत् २८ | संख्या ११

सूचना और सम्मति ।

ढाका ज़िले में दौरा करते हुए पुरातत्व विभाग के मिस्टर आर० डी० बैनर्जी को एक नई चीज़ का पता लगा है। उन्हें ढाका के दाल बाज़ार में रक्खी हुई चंडी देवी की मूर्त्ति पर अंकित बंग देश के राजा लक्ष्मणसेन का एक शिलालेख मिला है। शिलालेख से विदित होता है कि इस चंडी की मूर्त्ति को दामोदर नामक एक न्यायाधीश ने लक्ष्मण सेन देव के राजत्वकाल के तृतीय वर्ष में अर्थात ११२२ इसवी में स्थापित किया था। इस अनुसन्धान से बंगदेश के इतिहास के उस अंश का उद्धार सम्भव है जो अधिकतर अनुमान के आधार पर स्थिर किया जाता था। लक्ष्मण सेन का अभिषेक १११९ इसवी में हुआ था और वह बंगदेश का अन्तिम स्वाधीन राजा था। प्रचलित मत के अनुसार लक्ष्मण सेन मुसलमानों के कारण नदिया से भागे थे। पर इस शिलालेख से विदित हो गया है कि लक्ष्मण सेन मुसलमानों के आने के तीस वर्ष पहिले मर चुके थे। इनका राज्य काशी से ले कर गारो की पहाड़ियों तक तथा हिमालय से समुद्र पर्य्यन्त कहा जाता है। वह लक्ष्मण सेन जो मुसलमानों के डर से भागा था कोई दूसरा रहा होगा। इस लक्ष्मण सेन का तो सम्बत उसके राजत्व काल अर्थात् १११९ ईसवी से आरम्भ हुआ था। कहते हैं कि ये लक्ष्मण सेन अच्छे कवि थे और इनके रचे हुए कुछ श्लोक एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में रक्खे हुए हैं। मूर्त्ति की कारीगरी बहुत अच्छी है। यह शिव की अर्द्धाङ्गिनी चंड़ी की आभूषणों से लदी हुइ चतुर्भुजी मूर्त्ति है। शिलालेख से यह भी विदित होता है कि यह नारायण नामक किसी शिल्पी की बनाई हुई है।

बरमा के बौद्ध लोग अपने पाली और संस्कृत ग्रंथों को नागरी अक्षरों में छपाने का विचार कर रहे हैं। उनका विचार काशी में कहीं पर ज़मीन लेकर एक मागधी पुस्तकालय स्थापित करने का है। इस कार्य्य के लिए मुख्य उद्योग श्री चंद्रमणि भिक्खु जी का है जिसके लिए हम उन का कृतज्ञ होना चाहिए। आप अराकान के रहने वाले हैं और हिन्दी अच्छी लिखते हैं। आपने 'धम्मपद' का बहुत अच्छा अनुवाद हिन्दी में किया है। यह डाकव्यय के लिए एक आने का टिकट भेजने पर बिना मूल्य निम्न लिखित पते पर मिल सकता है:—

श्री चन्द्रमणि भिक्खु बौद्धधर्मशाला,
सारनाथ, बनारस। अथवा—
बा० जगन्मोहन वर्म्मा कोशविभाग,
नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी।

प्राचीनआर्य्य ।

मनुष्य जाति क़ब से हुई और उसने कैसे कैसे सभ्यता प्राप्त की इस विषय में प्राचीन काल से लेकर आज तक के विद्वान सिर तोड़ कोशिश करने पर भी इत्यमेव निर्धारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में असमर्थ हुए हैं। मत वाले लोग सृष्टि की उत्पत्ति का काल और परिक्रिया नियत करते हैं, वैज्ञानिक लोग भी अनुमान द्वारा सृष्टि के नियम और काल का अनुसन्धान करते हैं तो भी यह सब कल्पना प्रसूत होने से तथा मतभेदों से दूषित होने के कारण न तो सर्वतन्त्रसिद्धान्त ही माने जा सकते हैं और न विश्वसनीय ही ठहर सकते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में भी ऐसी कल्पनामूलक तथा विज्ञानपरक आख्यायिकायें बहुत हैं जिनके विषय में महर्षि यास्काचार्य्य ने अपने रचे निरुक्त में लिखा है।

" बहुभक्तिवादीनिहि ब्राह्मणानिभवन्ति "

ब्राह्मण ग्रन्थों में इस विषय पर मतभेद है एक सम्मति नहीं। वेदों में तो स्पष्ट शब्दों में कहा गया है:—

कोददर्श प्रथमं जायमानम् ऋ १.१६४.४.

पहिले सृष्टि होते किसने देखा अर्थात् किसी ने नहीं देखा। फलतः सृष्टि कब और कैसे हुई कब तक रहेगी और कैसे लय होगी इत्यादि विषयों पर सिर खपाना मानसमोदक खाना और व्यर्थ श्रम करना है। अनिर्दिष्ट काल से आज तक लोग श्रम करते आये और पारावार को नहीं पहुंचे और अनन्तकाल तक लोग श्रम करते जांयगे और परिणाम को न पहुंचेंगे।

इसी मनुष्य जाति के अन्तर्गत आर्य्य लोग भी हैं जिन्होंने सब से पहिले सभ्यता प्राप्त की और जो अपनी भाषा को इस योग्य बनाने में कृतकार्य्य हुए कि उसमें अपने आन्तरिक अभिप्रायों को प्रकाश करसकें। भारतवासी ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य अपने को इन्हीं आर्य्यों का सन्तान मानते हैं। संस्कृत भाषा में आर्य्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ और उत्तम हैं। निरुक्तकार यास्काचार्य्य ने निरुक्त में लिखा है **आर्य्य ईश्वरपुत्रः** । ६. ५. ३. आर्य्य शब्द का अर्थ ईश्वर का पुत्र है। ईश्वर शब्द का अर्थ परमात्मा और ऐश्वर्य्यवान् वा मालिक है। यह अर्थ दोनों विचारों से युक्तिसंगत प्रतीत होता है। यद्यपि परमात्मा का पुत्र कहने में कुछ थोड़ीसी अत्युक्ति है पर तो भी संसार की अन्य जातियों में भी यह प्रथा देखी जाती है कि वह अपने पूज्य पूर्वजों के विषय में कोई न कोई अप्राकृतिक घटना बतलाते हैं। प्राचीन यूनानी लोग अपनी वंशपरम्परा किसी न किसी देवता से मानते थे और सिकन्दर को जूपिटर देवता का पुत्र कहते थे। ईसाई लोग क्राइस्ट को ईश्वर का पुत्र और पवित्रात्मा से उत्पन्न मानते हैं। मुसल्मान लोग मुहम्मद साहेब को ईश्वर का मित्र मानते हैं। इसी प्रकार पारसी, मिश्री आदि सभी अपने अपने पूज्यों और पूर्वजों के विषय में कुछ न कुछ अलौकिक बात कहलाते हैं। फिर भारतवासी आर्य्य लोगों ने जिनके पूर्वज सब से पहिले इस भूमण्डल में सभ्यता सोपानारूढ़ हुए और सब से आधिक रूप वलविद्या सत्यवादित्व साहस आदि शुभ गुण सम्पन्न हुए, यदि अपने पूर्वजों को ईश्वर अर्थात् परमात्मा का पुत्र कहा तो इसमें विस्मय वा आश्चर्य्य ही क्या है। प्रजापति कश्यप ने भी निघण्टु में अर्य शब्द ईश्वर के नामों में लिखा है और पाणिनि जी ने भी अष्टाध्यायी में **" अर्यः स्वामिवैश्ययोः "** अर्थात् अर्य शब्द का प्रयोग स्वामी और वैश्य के अर्थ में होता है, लिखा है। वास्तव में बात तो यों प्रतीत होती है कि जब इनके पूर्वजों ने सभ्यता प्राप्तकी और अन्य जातियों को उन्होंने अपने वशीभूत किया तब उनका नाम अर्य अर्थात् स्वामी ईश्वर वा मालिक पड़ा और इन्हीं के वंशवाले पीछे आर्य्य कहलाये। पाश्चात्यों का यह विचार कि आर्य्य हल जोतने वाले को कहते हैं कहां तक युक्तिसंगत है पाठक स्वयं विचार सकते हैं।

इन आर्य्यों को सभ्यता प्राप्त करने में तथा अपनी भाषा को प्रौढ़ करने में कितना काल लगा होगा इसका अनुमान करना हमारे लिये अत्यन्त कठिन है। यह तो निश्चित और युक्तिसंगत है कि मनुष्य की भाषा पहिले पहिल एसी परिष्कृत न थी कि वे अपने आन्तरिक अभिप्रायों को यथातथ्यं प्रकाश कर सकें और न वह बहुवच शब्दों को बोल सकते रहे होंगे। पहिले उनलोगों ने चेष्टा द्वारा अपना भाव प्रकाश करने का प्रयत्न किया होगा और बहुत दिनों तक इस प्रकार अटूट प्रयत्न करने में जब कृतकार्य्य न हुए होंगे तब मुंह से कुछ एकाध शब्द निकालने लगे होंगे। ये एकाध शब्द कालान्तर में नाना शब्दों में पारणित हुए होंगे और भाषा के वीज वा धातु बने होंगे। पदार्थों के नाम पहिले साधर्म्य के विचार से रक्खे गये * और बहुत काल पीछे जब उन लोगों को वैधर्म्य का बोध हुआ तब और और नाम रक्खे गये। इस प्रकार बहुत युग पीछे इनकी भाषा इतनी प्रौढ़ होगई कि यह अपने विचारों को कुशलता से प्रकाशित करने लगे।

हम प्राचीन काल की इस विषय में एक आख्यायिका लिखते हैं जिसे महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि ने उदाहृत किया है और जिससे इस अनुमान की पुष्टि होती है।

---

* निरुक्तादि में पद पठित शब्दों के बहुत अर्थ दिखलाये गए हैं। यहां उदाहरण के लिए हम पहिले सोम शब्द को लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन्द्रश्चाध्येता बृहस्पतिरध्यापको दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकालस्तथापि शब्दशास्त्रं पारं न जगाम"॥

अर्थात् इन्द्र पढ़नेवाला था और बृहस्पति पढ़ानेवाला और दिव्य सहस्र वर्ष अध्ययनकाल फिर भी शब्द शास्त्र पार न हुआ। यहां पर इन्द्र शब्द का अर्थ इन्द्रियों का स्वामी और बृहस्पति का अर्थ विवेचन शक्ति वा बुद्धि के है। इन्द्र शब्द इदि ऐश्वर्य्य धातु से बनता है जिसका अर्थ ईश्वर स्वामी आदि के है जो अर्य शब्द का समानार्थक है। बृहस्पति बृहत् और पति से बना है बृहत् शब्द बृह वर्धने धातु से निकलता है वृद्धि विवेचना से होती है और विवेचना साधर्म्य और वैधर्म्य से होती है। पति शब्द का अर्थ रक्षा करने वाला है अतः बृहस्पति शब्द का अर्थ विवेक वा बुद्धि के है। यहां यह भी बतला देना आवश्यक है कि इन्द्र शब्द इस लिये आया है कि उस समय इनकी आर्य संज्ञा न थी किन्तु अर्य थी जिनके ये वंशधर थे।

यद्यपि प्राचीन ग्रन्थों के देखने यह स्पष्ट रूप से निश्चित होता है कि वेदों के पहिले भी इनकी एक भाषा थी क्योंकि **तस्माद्रसंसन्तं रयमित्या चक्षते। तमिदन्द्रं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते** इत्यादिवाक्य प्राचीन ग्रन्थों में

सोमः पवते जनिता मतीनाम् ऋ ८।८।६।४

(१) सोमः सूर्य्यः प्रसवनात (१) सोम आत्माप्येतस्मात् निरु १३।२।१२

(३) सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति। अथ० ११।६।७

(४) यः सोमपीथ मिच्छेत्...उ दङ्सइ यात्।

यहां क्रम से (१) सूर्य्य (२) आत्मा (३) चन्द्रमा (४) सोमवल्ली अर्थ हैं। क्योंकि जिससे उत्पत्ति पुष्टि आदि हो उसे साम कहते हैं। इसी प्रकार "अग्नि" शब्द लीजिए।

अग्निमीळे पुरोहितम्।१।१।१

यहां पर अधियज्ञ, अधि दैवत अध्यात्मपक्ष से "अग्नि" शब्द का अर्थ आदरणीय होने से (१) अग्नि (२) सूर्य्य, (३) परमात्मा, और (४) जीव के हो सकते हैं। इसी प्रकार अन्य शब्दों को भी समझ लीजिए। विशेष ज्ञान वेदों के देखने से होगा।

पहिले वेदों में साधर्म्म विचार से "योगिक" शब्द का प्रयोग हुआ पीछे लौकिक संस्कृत में (वा वेदों ही के काल

मिलते है। यहां नहीं किन्तु वैदिक काल के पूर्व एक नदी का नाम भी निरुक्त में लिखा है **"अर्जीकीयां विपाडित्याहुः पूर्वमासीद्दुरुञ्जिरा"** अर्जीकीया को विपाट् कहते हैं और पहिले इस का नाम दुरुञ्जिरा था। अर्जीकीया और विपाट् शब्द तो वेदों में हैं पर दुरुञ्जिरा नहीं है जिससे अनुमान होता है कि यह नाम वैदिक काल के पूर्व का है। पर यह भाषा इतनी परिमार्जित न थी कि इसमें किसी ऐसे वाक्य की रचना की जा सके जो पीछे के काल तक रहे और न यह ऐसी विस्तृत ही थी कि इसमें समस्त विचारों और भावों का समावेश हो सके। वेद ही मनुष्यों की भाषा की पहिली पुस्तक है जो आज कल संसार में उपलब्ध होती है। यह भारतवासियों के लिये कुछ कम गौरव की बात नहीं है कि सभ्यसमाज के सामने सबसे प्राचीन ग्रन्थ को उपस्थित करने का सौभाग्य इन्हीं को प्राप्त हुआ। यद्यपि आज कल कतिपय यूरोपीय विद्वानों का कथन है कि एक छोटासा लेख जिसमें दो किसानों की कथायें हैं और जो थोड़े दिन हुए बाबुल में मिली है वेदों से प्राचीन है पर फिर भी यह सोचने की बात है कि कथा लिखने की शक्ति मनुष्यों में मन्त्र की रचना से कितने पीछे उत्पन्न होती है और जैसा कि हम पीछे दिखावेंगे वैदिक काल में बाबुल तक आर्यों ही का सम्राज्य और बस्ती थी।

संस्कृत भाषा में वेद शब्द का अर्थ ज्ञान के हैं और वेदों में यह शब्द ज्ञान और विद्या ही के अर्थ में आया है। पीछे ब्राह्मण काल में यह शब्द कहीं कहीं मंत्र संहिता के अर्थों में प्रयोग में आने लगा। उसके पीछे मन्त्र और ब्राह्मण दोनों को वेद कहने लगे। पर साम्प्रति वेद शब्द से मन्त्रों की संहिताओं का ही ग्रहण होता है। मन्त्र संहिता वा वेद

में कुछ कुछ शब्द) वैधर्म्य के ज्ञान से विशेष अर्थों में प्रयोग होने लगे। वैदिक काल में वैधर्म्य का उतना बोध नहीं था तभी तो निरुक्त कार ने लिखा है।

नामान्याख्यातजानीतिशाकटायनो नैरुक्तसमयश्च।

अर्थात् सब शब्द योगिक हैं यह शकटायन का मत है। मीमांसा में भी कहा है।

परन्तु श्रुतिसामान्यमात्रम्।१।१२

वेदों में शब्दो का अर्थ समान्य मात्र वा साधर्म्य से यौगिक लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भारत वासी लोग अपौरुषेय मानते हैं। कुछ लोग इस को ब्रह्मा जी के चार मुखों से निसृत और ईश्वर का निःश्वास मानते हैं और और कुछ लोग अग्नि वायु सूर्य्य और अंगिरा ऋषियों द्वारा उत्पन्न ईश्वर का वाक्य मानते हैं। कुछ हो चाहे यह ब्रह्मा से माने जायँ वा अग्नि आदि से मानेजायँ संसार में इनकी प्रकटता के लिये मनुष्यों ही का सहारा सब को ढूंढना पड़ता है। वास्तविक बात तो यों है कि यह ऋषियों के वाक्यों का संग्रह है। सर्वतन्त्र स्वतन्त्र यास्काचार्य्य जी ने एक प्राचीन आख्यायिका निरुक्त में लिखी है।

साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। ते अवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्म्मभ्यः उपदेशेन मन्त्रान्त्संप्रादुः। उपदेशायग्लायन्तोऽवरेबिल्मग्रहणायेमंग्रन्थंसमाम्नासिषुर्वेदं चवेदाङ्गानिच

ऋषि लोग साक्षात्कृतधर्म थे वे लोग नाना घटनाओं पर पदार्थों के धर्म को साक्षात कर मन्त्र की रचना करते गये। ये मन्त्र उन मनुष्यों के लिये रचे गये जो किसी पदार्थ के धर्म को साक्षात् नहीं कर सकते थे। जब उनके स्मरण रखने और समझ में आने में कठिनाई पड़ने लगी तब नासमझों के लिये ये संहिता में एकत्र किये गये और ग्रन्थ रूप में संगृहीत हुए और जब इसमें भी कठिनाई पड़ने लगी तब ब्राह्मण, व्याकरणादि इनके अर्थों को समझने के लिये बनाये गये। यह तो स्पष्टवक्ता नैरुक्तकों का मत हुआ, रहा मत वालों का अपौरुषेय मानना सो भी यद्यपि कुछ न कुछ अत्युक्तिदोषग्रस्त है तो भी किसी अंश में ठीक है। ये मन्त्र नाना विद्याओं के आकर सब से प्राचीन आदिसभ्यता-प्राप्त आर्य्य ऋषियों के वाक्य असाधारण विचार शक्ति के फल थे। इसके अतिरिक्त भारतवासियों के पूर्वज पितामहों के ध्यान में यह बात बहुत पूर्व आचुकी थी कि ज्ञान का आधार ज्ञाता नहीं किन्तु ज्ञेय है। सूर्य्य चन्द्रादि में उनके ज्ञान अनादि काल से संचित थे। जब मनुष्यों ने उस ज्ञान को प्राप्त किया उसके बहुत पूर्व ही से वह उन पदार्थों में सगारंभ से था और जब सब लोग इस ज्ञान को भूल जायँगे तब भी यह ज्ञान उन ज्ञेय पदार्थों में उपस्थित रहेगा। न्यूटन को वा प्राचीन वैदिक महार्षियों को जब पृथ्वीस्थ आकर्षण शक्ति का साक्षात हुआ उससे पहिले भी यह शक्ति पृथिवी में थी और जब सारे मनुष्य उस को भूल जायंगे वा उसका कोई ज्ञाता न रह जायगा तब भी साक्षात् कृतधर्म्मों को इसका ज्ञान वैसे ही प्राप्त होगा जैसे प्राचीन आर्य्य ऋषियों वा न्यूटन को इस का ज्ञान प्राप्त हुआ। यही कारण है कि प्राचीन आर्य्य महार्षियोंने वेदों को नित्य और अपौरुषेय माना है जो सर्वथाही युक्ति संगत है। वाच्य और वाचक वा शब्द और अर्थ में अभेद मान यदि उन लोगों ने इन शब्द वाक्य समूह मन्त्रात्मक संहिताओं को वेद माना और उसे भी अपौरुषेय और नित्य कहा तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं अस्तु।

(क्रमशः)

जगन्मोहन वर्म्मा,

द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

मान्यवर महाशय!

द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन का समय तथा सम्मेलन सम्बन्धी कुछ अन्य बातों को निश्चित करना अत्यन्त आवश्यक है। इस विचार से आपकी सम्मति के लिये निम्न लिखित प्रश्न आपकी सेवा में भेजे जाते हैं। प्रार्थना है कि आप उन पर यथोचित विचार कर अधिक से अधिक ३० मई तक अपनी सम्मति प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे।

१-आपकी सम्मति में अधिवेशन किस समय होना चाहिये?

नोट-इस वर्ष पांच ऐसे अवसर हैं जब सम्मेलन का अधिवेशन सुभीते के साथ हो सकता है।

[१] ईद-आश्विन अमावास्या शुक्रवारसे आश्विन शुक्ल चतुर्थी मङ्गलवार (२२ सितबर से २६ सितम्बर) तक।

[२] दुर्गा पूजा- आश्विन शुक्ल सप्तमी से आश्विन शुक्ल एकादशी तक। इस समय के संबन्ध में कदाचित आपको याद होगा कि गत वर्ष बहुत मतभेत था।

[३] दीपावली-कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी शनिवार से कार्तिक शुक्ल द्वितीया मङ्गलवार (३१ अक्तूबर २४ अक्तूबर) तक'

[४] मुहर्रम व बड़ादिन-पौष शुक्ल चतुर्थी रविबार से पौष शुक्ल द्वादशी सोमवार (२४ दिसम्बर-१ जनवरी) तक।

[५] अर्द्धकुम्भी का समय। माघ कृष्ण ३० (१९ जनवरी)

२-आप की सम्मति में द्वितीय साहित्य सम्मेलन का सभापति कौन चुना जाय?

३-सम्मेलन के अवसर पर आपकी सम्मति में किनर विषयों पर विचार किया जाना चाहिये?

४-यदि आप स्वयं अथवा आप के कोई इष्ट मित्र किसी विषय में लेख लिखने और पढ़ने की कृपा करें तो कृपा पूर्वक लेख का विषय भी सूचित कर दीजियेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष द्रष्टव्य-आपके विचार में यदि कोई ऐसे सज्जन हैं जिनके पास यह पत्र न पहुंचा हो और उनके पास इस पत्र के भेजने की आवश्यकता हो तो कृपा कर उनके नाम व पते से सूचित कीजिये। विनीत—

मिती वैसाख शुक्ल सं० १९६८ } **लक्ष्मीनारायण नागर,** बी० ए० एल० एल० बी० मन्त्री—नागरी प्रवर्द्धिनी सभा-प्रयाग।

हिन्दी में लिंगनियम।

१२ मई के लीडर में एक महाशय हिन्दी भाषा के लिंगसम्बन्धी नियमों के विषय में लिखते हैं:—

"(१) वर्तमान समय में बिहार और छोटा नागपुर के लोग अपने युक्तप्रान्त और पंजाब के भाइयों के साथ हिन्दी बोलने में बड़ा संकोच करते हैं क्योंकि बिहारी लोग सम्बन्ध कारक, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में उर्दू व्याकरण के नियमों का सदैव पालन नहीं कर सकते। इससे पश्चिमी प्रान्त के लोग इनकी कुछ हँसी उड़ाते हैं जो कि इन्हें बहुत बुरी लगती है। परिणाम यह होता है कि इन दोनों के बीच न वैसी घुलकर बातचीत होती है और न हेलमेल होता है। यह मेल की बाधा बहुत जल्दी दूर हो सकती है यदि उर्दू के लिंग सम्बन्धी अनावश्यक नियम हिन्दी से निकाल दिए जांय।"

"(२) हिन्दी बोलनेवाले लड़कों के मस्तिष्क पर इन सम्बन्धकारक, सर्वनाम विशेषण और क्रिया के लिंगसम्ब-न्धी नियमों के सीखने में व्यर्थ का बोझ पड़ता है। इन लड़कों के अपनी भाषा सीखने के मार्ग में यह एक बड़ी भारी अड़चन है जिसके कारण वे अपनी भाषा अच्छी तरह सीख नहीं सकते। इन नियमों को उड़ा देने से हिन्दी भाषा बहुत जनप्रिय और घरके बच्चों के लिये बहुत सुगम हो जायगी।"

"(३) भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों में हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने का बहुत सच्चा प्रयत्न हो रहा है। पर दूसरे प्रान्त के निवासियों को इस भाषा के सीखने में जो बड़ी भारी अड़चन है वह सम्बन्ध कारक, विशेषण, और क्रिया आदि का लिंगसम्बन्धी नियम है। हम हिन्दी भाषियों को इस बात पर गर्व करना चाहिए कि हमारी भाषा राष्ट्र भाषा बनाई जानेवाली है। हम सब लोगों को उन अन्य भाषा-भाषियों की हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए जो हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रशंसनीय प्रयत्न कर रहे हैं तथा उन लोगों के लिये जिनकी वह मातृभाषा नहीं है जहां तक हो सके उसका सीखना आसान कर देना चाहिए।

"(४) दूसरा प्रशंसनीय उद्योग हिन्दीभाषा और हिन्दी-साहित्य की उन्नति के लिये हो रहा है। इस उद्योग में तभी सफलता होगी जब हम आँख मूंद कर दूसरी भाषाओं का अनुकरण करना छोड़ दें। उर्दू हमारी मातृभाषा नहीं है इस लिए कोई आवश्यक नहीं है कि हम व्यर्थ के बंधन में अपने को डालें जब हम जानते हैं कि उस बंधन से भाव और विचार प्रगट करने में किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती और जो केवल मकतब के मुसलमान मौलवियों का सिखाया हुआ है। अब तक उर्दू हिन्दी का पोषण करनेवाली समझी जाती रही है जो कि इतिहास से बिलकुल विरुद्ध है। अतः जब तक हम उर्दू के अनावश्यक बंधनों को न तोड़ फेकेंगे तब तक हमारी भाषा की उन्नति न होगी, क्योंकि स्वच्छन्दताही वृद्धि का मूल और उसका अभाव ही उसका बाधक है।"

"(५) इस समय उच्चश्रेणी के लोगों और निम्नश्रेणी के लोगों की हिन्दी में बड़ा अन्तर है। व्याकरणसम्ब-न्धी बंधन जिनके कारण शुद्ध भाषा का सीखना साधारण जनों के लिए कठिन होता है जितने ही अधिक होंगे उतना ही शुद्ध हिन्दी और गँवारू हिन्दी, लिखने पढ़ने की हिन्दी तथा बोलने चालने की हिन्दी में अन्तर पड़ेगा। इन व्या-करण के अनावश्यक बंधनों को दूर कर दीजिए फिर शुद्ध हिन्दी और साधारण हिन्दी, लिखने की हिन्दी और बोलने की हिन्दी में वह अंतर नहीं रह जायगा और हमारी भाषा और अपभ्रष्ट न होगी।"

"(६) भिन्न २ वस्तुओं के नाम हिन्दी में २०००० से कम न होंगे अतः सम्बन्ध कारक, विशेषण और क्रिया आदि के नियमों का पालन करने के लिए इनमें से प्रत्येक शब्द के जुदे जुदे लिंगों को जो मनमाने निर्धारित किए गए हैं, याद करना पड़ता है। यह धारणाशक्ति पर एक बड़ा भारी बोझ डालना है जिसका जीवन में कुछ फल नहीं है। हिन्दी में उन जड़ पदार्थों के लिंग का निर्णय करने के लिये कोई नियम नहीं है जो और सब भाषाओं में क्लीव माने जाते हैं। अंग्रेज़ी भाषा में बहुत थोड़े से जड़ पदार्थ ऐसे हैं जो स्त्री लिंग माने जाते हैं जैसे Ship, Train, Earth etc. पर उसमें सम्बन्ध विशेषण वा क्रिया के लिए कोई लिंग-नियम नहीं है। पर हिन्दी में ऐसे शब्दों की संख्या पर ध्यान दीजिए; उसमें न जाने कै हज़ार शब्द ऐसे मिलेंगे जिनके लिंग का कोई नियम नहीं और जिनके अनुसार सम्बन्ध, विशेषण और क्रियाओं के रूप होते हैं। इनको सीखना व्यर्थ के लिए परिश्रम करना है जब कि इनसे विचारों को प्रकाशित करने में कोई विशेष सहायता नहीं मिलती।

"(७) भाषा का उद्देश एक दूसरे पर अपने विचारों को प्रगट करना है। अतः व्याकरण का कोई ऐसा नियम जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें सहायता देने के स्थान पर बाधा डाले सर्वथा त्याज्य है। यदि भाव पर विचार किया जाय तो उसकी बीबी और उसका बीबी, गाड़ी आती है और गाड़ी आता है, तथा लूह चलती है और लूह चलता है में कोई अन्तर नहीं है। अस्तु अपनी भाषा को हम ऐसे अनावश्यक बंधनों से क्यों जकड़ दें जिनसे सीखनेवालों के मस्तिष्क और धारणाशक्ति पर व्यर्थ का बोझ पड़े और वे हतोत्साह होकर उससे किनारा खींचें?

"(८) उर्दू को छोड़ और कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसमें भूमंडल की समस्त वस्तुओं के लिए इस प्रकार मनमाने लिंगनियत हों और जिसमें सम्बन्ध, विशेषण और क्रियाओं के रूपों में लिंग का नियम हो। उड़िया बंगाली और अंग्रेज़ी आदि किसी भाषा में यह बात नहीं है। क्या कोई बुद्धिसम्पन्न मनुष्य यह कहेगा कि इसके बिना ये भाषाएं कम मधुर हैं? यह सच है कि कई पीढ़ियों से सुनते सुनते हमें उनका अभ्यास पड़ गया है। पर यह भी सच है कि थोड़े ही दिनों के अभ्यास से वह दूर भी हो सकता है। यह आशा की जा सकती है कि यदि यह अनावश्यक बंधन न केवल पुस्तकों और सामाजिक पत्रों से वरन लोगों की बोलचाल से भी निकाल दिया जाय तो बहुत नहीं दस वर्षों में हमें उसके अभाव का फिर अभ्यास हो जायगा।"

"(९) प्रायः देखा गया है कि बंगालिन स्त्रियों को हिन्दी सीखने की अभिलाषा होती है जिससे वे अपनी हिन्दी बोलने वाली बहिनों से हिलमिल सकें। भिन्न भिन्न प्रान्तों की स्त्रियों के परस्पर मिलने की आवश्यकता पुरुषों के परस्पर हेल मेल बढ़ाने की आवश्यकता से भी बढ़कर है क्योंकि इस के लिए एक भाषा का होना परम आवश्यक है और हिन्दी ही इस योग्य है कि वह परस्पर की भाषा हो सके यदि उसका व्याकरणसम्बन्धी यह मूढ़ विश्वास दूर हो जाय जो कई सौ वर्ष के मुसलमानी शासन के कारण उत्पन्न होगया है। हिन्दी अब अपनी उन्नति के लक्षण दिखा रही है अतः इस अवसर पर उसे राष्ट्रभाषा होनेयोग्य करने का यत्न करना चाहिये।"

इस लेख में जो विषय उठाया गया है वह अवश्य हिन्दी-प्रेमियों के ध्यान देने योग्य है पर उसमें जो दो चार बातें कही गई है वे ठीक नहीं है, पहिले तो सम्बन्ध कारक, विशेषण और क्रियाओं के लिंग सम्बन्धी नियमों को उर्दू के नियम बतलाना बिलकुल असम्मत है। यह रूपान्तर का नियम हिन्दी का है और बराबर चन्द कवि से लेकर आज तक व्यवहृत होता आया है। प्रान्तिक बोलचाल में भी इन नियमों का पालन पंजाब से लेकर विहार तक बराबर होता है। यह लिंगनियम संस्कृत से हिन्दी में आया है मुसलमानों के समय से नहीं चला है। विशेषण में लिंगभेद तो संस्कृत के अनुसार ही है। अब रही क्रिया की बात। लेखक महाशय को जानना चाहिए कि हिन्दी की क्रियाएँ प्रायः कृदन्ती है। कृदन्त प्रातिपदिक के तुल्य माना जाता है। अतः इसमें लिंग आदि का विधान होहीगा।

काशी राज्य के स्टेट गज़ट को केवल अंग्रेजी और उर्दू में देख समस्त हिन्दीहितैषियों को बड़ा खेद हुआ है। काशिराज से हिन्दी प्रेमी बहुत कुछ उपकार की आशा रखते हैं। बनारस के ज़िले में प्रायः सब लोग हिन्दी ही जानते हैं और नागरी अक्षरों ही से परिचित हैं, उर्दू बहुत थोड़े से लोग जानते हैं। बनारस के जुलाहे तथा अन्य रोज़गारी मुसलमानों के हिसाब किताब सब हिन्दी में हैं। न जाने क्या समझ कर महाराज काशिराज ने हिन्दी को अपने दफ्तरों में स्थान देना उचित नहीं समझा। मैं समझता हूं किसी अस्थायी कारण वश ही महाराज साहब ने ऐसा किया है और आगे चल कर वे इस आवश्यक विषय की ओर ध्यान देंगे और हिन्दी को स्थान दे कर राज्य के शुभ की वृद्धि करेंगे।

जरमनी में उत्तेजक उपन्यासों को पढ़ कर नवयुवकों में आत्महत्या करने का रोग फैल गया है। हिन्दीवालों को भी सावधान होना चाहिए।

हाली उर्दू भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। आप का उर्दू के लेखकों के दिलों में अच्छा मान हैं। आप एक उर्दू पुस्तक की समालोचना करते हुए लुधियाना के आर्मी न्यूज़ में लिखते हैं—

"उपर्य्युक्त विरोध के विषय में हिन्दुओं पर जो दोष (यह दोष कि वे उर्दू का विरोध करते हैं) लगाया जाता है, वह उस से भी अधिक सख्ती के साथ मुसल्मानों पर लगाया जा सकता है। कैान नहीं जानता कि यद्यपि मुसलमान एक हज़ार सालों से भारतवर्ष में आबाद हैं उन में से कुछ एक को छोड़ कर किसी ने भी संस्कृत या ब्रजभाषा की ओर नज़र उठा कर भी नहीं देखा। जिस संस्कृत को यूरोप के बिद्वान लेटिन और ग्रीक से अधिक विस्तृत नियमित तथा परिपूर्ण कहते हैं और जिस के सीखने के लिये जीवन व्यतीत करते हैं, मुसल्मानों ने उसे पढ़ने योग्य नहीं समझा। यदि कहा जाय कि संस्कृत का सीखना कोई आसान काम नहीं तो ब्रजभाषा जो संस्कृत की अपेक्षा सरल है और जिसकी कविता बड़ी स्वादुयुक्त और ललित है, इस को भी सदा वे प्रायः बेगाने की नज़रों से देखते आये हैं। यद्यपि जो उर्दू इन को इस क़दर अज़ीज़ है उसका व्याकरण ब्रज भाषा तथा संस्कृत के व्याकरण पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रित है। अर्बी फ़ारसी से इसका केवल इतना सम्बन्ध है कि उनके अनेक शब्द इस में आ गये हैं। शेष सब वाक्य जिनके बिना किसी भाषा की कविता सार्थक नहीं हो सकती, ब्रजभाषा तथा संस्कृत से आए हैं। सच यह है कि मुसल्मानों का हिन्दुस्थान में रहना और संस्कृत या कम से कम ब्रजभाषा से अनभिज्ञ रहना उन्हें इस कहावत का पात्र बनाता है 'दरिया मे रहना और मगर मच्छ से वैर"

हमारे मुसल्मान भाई शम्सुलुल्मा मौलाना हाली की इस सम्मति पर विचार करते हुए संस्कृत तथा ब्रजभाषा में लगन लगावें तो भारत में फूट का एक बीज तो नष्ट हो जावे।

सद्धर्म प्रचारक।

देवनागरी अक्षरों पर।

एक मुसलमान बैरिस्टर की राय।

लाहोर के उर्दू पत्र 'हिन्दोस्तान' में मिस्टर मुहम्मद अकबर साहब बैरिस्टर-एट--ला हरदोई का एक पत्र छपा है। इसमें से ('आर्य्यगज़ट' के संकलना के सहारे) कुछ अंश हिन्दीप्रेमियों को भेट किया जाता है। निबन्ध साहित्य के ध्यान से तथा देश के हित के विचार से लिखा गया है और इस योग्य है कि और हमारे मुसलमान भाई भी इस पर सोचे समझें। मिस्टर अकबर मुहम्मद लिखते हैं:—

'ज़बान का एक क़लम एक हो जाना नामुमकिन है। इस लिये इस मसले को फिलहाल अगर अलहद: भी रख दिया जावे तो हर्ज नहीं है। जो बात कि फ़ौरन मुमकिन है और जिसका हो जाना आसान है-सहल है--वह **"हुरूफ़ तहरीर का हमशकल होना है"** हरफ़ों (अक्षरों) में इख़्तिलाफ़ (रूपभेद) होने से हिन्दीस्तान पर हर रोज़ ऐसा ववाल नाज़िल हो रहा है कि एक दिन गुज़र जाने के बाद दूसरी सुबह को इसकी तलाफ़ी नामुम्किन हो जाती है। इस लिये यह मसला ऐसा है कि इस को शाम से पहले हल हो जाना चाहिये।"

अर्थात् मिस्टर मुहम्मद अकबर के कहने का तात्पर्य्य यह है कि सारे देश में एकही भाषा या बोली का पसार हो जाना अभी नहीं हो सकता सो अभी इस झंझट को अलग रहने दिया जाय। लेकिन सारे देश की सारी बोलियां एकही रूप रंग के अक्षरों में लिखी जांय यह तुरन्त हो सकता है और सहल में हो जा सकता है इस लिये पहले इसे ही उठाना चाहिये। एक ही देश में नाना वर्ण के अक्षरों के होने से हिन्दुस्तान पर नित्य एक नयी बला पड़ा करती है, ऐसा कि आज सांझ को अगर इस बला के टालने में टालमटोल किया जाय तो दूसरे ही दिन सवेरे इस विपत्ति का दूर करना कठिन हो जाता है। इस लिये इस झगड़े को सांझ तो क्या सांझ से पहले ही निपटा डालना चाहिये।

"इस बात पर तो मुल्क को इत्तफ़ाक होगा कि मुख्तलिफ़ ज़बानों के लिये अगर एकही हुरूफ़ अख़तियार कर लिये जावें, तो वह ऐसे हुरूफ़ होने चाहियें जो कुल आवाज़ों (उच्चारणों) को अदा कर सकें। और उन हुरूफ में लिखे अलफाज़ (शब्द पद) तलफ्फुज (उच्चारण) से पढ़े जा सकें। अगर यहां तक इत्तिफ़ाक़ हो गया तो फिर मुल्क भर में एक ही हुरूफ़ रायज हो जाना मुश्किल काम नहीं है। जो कुछ दरियाफ्त करना बाक़ी रह गया वह सिर्फ इसी क़दर है कि वह कौन से हुरूफ़ हैं जो ऐसे मुकम्मिल हैं या हो सकते हैं।"

"मेरे खयाल में अगर बजाय साल हा साल शोर व ग़ौग़ा करने के कि फ़लां हुरूफ न हों या फलां हों-हम सिर्फ़ एक हफ्ता भर के लिये इस तहक़ीक़ात में मसरूफ़ हो जावें कि कौन से हुरूफ आसानी से मुकम्मिल हो सकते हैं तो बनिस्बत झगड़े और फ़साद के किसी सहीह और अमली नतीजा पर पहुंच सकते हैं········इससे क़ब्ल हमारे मुल्क के लीडरों ने इस मसला पर ग़ौर किया और उनकी राय यह है कि **नागरी ही इस क़िस्म के हुरूफ़ हैं जिन से यह मंशा पूरी हो सकती है।**

"जो हुरूफ़ नागरी में मौजूद नहीं हैं वह दूसरी जबानों के हुरूफ़ से ले लिये जा सकते हैं, मसलन् खे-से-ज़ाद क़ाफ़ ग़ैन वग़ैर: यह ऐसे हुरूफ़ हैं जो कई ज़बानों में अपनी आवाज़ें रखते हैं। लेकिन यह हुरूफ सिवाय अरबी के और ज़बानों में नदारद हैं········'इसी तरह हिन्दुस्तान और दीगर मुमालिक की ज़बानों में भी चन्द ग़ैरमुरावह (अनुपम) हुरूफ़ हैं। मगर वह सब के सब नागरी में शामिल हो सकते हैं और इसी तरह "नागरी हुरूफ़ हमारे मुल्की हुरूफ बन सकते हैं।" मेरे मुकरम दोस्त शमशुल-उलमा मौलवी डाक्टर सैयद अली बिलग्रामी ने भी इत्तफ़ाक किया है कि "फ़ारसी हुरूफ़ ऐसे हुरूफ नहीं हैं जो मुल्की हुरूफ़ क़रार दिये जा सकें।" इससे बढ़ कर हमें और किस फ़तवे की जुरूरत हो सकती है। हिन्दोस्तान या युरोप की शायद ही कोई ज़बान ऐसी होगी जिससे साहब मौसूफ़ को मालूमियत न हो। और वह दुनिया की अकसर ज़बानों की आवाज़ों से वाक़िफ हैं। ग़र्ज़ यह अम्र क़तयी समझना चाहिये कि "फ़ारसी हुरूफ़ मुल्की हुरूफ़ नहीं बन सकते' दूसरी तरफ़ 'नागरी से ज़ियाद: मुकम्मिल हुरूफ़ मिलना न सिर्फ़ दुशवार बल्कि नामुम्किन है।" इस लिये हमें फ़ौरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात पर आमादः हो जाना चाहिये कि **हम नागरी हुरूफ़ को मुल्की हुरूफ़ बनालें।**

"जो हुरूफ़ नागरी में मौजूद नहीं वह और ज़बानों से लिये जा सकते हैं............गर्ज़ यह है कि जब हम पर साबित हो जाए कि मुल्क में एकही क़िस्म के हुरूफ़ का होना मुल्क की बेहबूदी के लिये लाज़िमी है और वह हुरूफ़ नागरी हैं तो हमें बक़ौल मौलाना अल्ताफ़ हुसेन साहब हाली तअस्सुब को छोड़ देना चाहिये और उन हुरूफ़ को फ़ौरन अख़तियार कर लेना चाहिये।" अभ्युदय

देशीभाषाओं का पुनरुज्जीवन।

मराठी के प्रसिद्ध पत्र 'केसरी' में आज कल उपर्युक्त शीर्षक की लेखमाला निकल रही है। अब तक जो अंश निकला है उसका सार यह है:—

पचास वर्ष से देश में अंग्रेज़ी भाषा का प्रचार खूब हो रहा है। मेरी समझ में अंग्रेज़ी की शिक्षा को पूर्णता को पहुंचा कर भारतवासी रुकेंगे और देशी भाषाओं की ओर ध्यान देंगे। इसके लक्षण दिखाई दे रहे हैं। इधर पांच वर्ष के बीच में लोगों के विचारों ने खूब पलटा खाया है। विदेशी भावों को देशी रूप में लाने, नवीन कोश आदि बनने की चर्चा इत्यादि चारों ओर सुनाई पड़ने लगी है। देशी भाषाओं में लिखने और व्याख्यान देने की प्रवृत्ति भी बढ़ चली है। सन १८९४ में मि० जस्टिस रानडे ने यूनिवर्सिटी के सामने कहा था कि "माराठी का प्रश्न Home rule स्वराज्य के प्रश्न के समान है।"

अंग्रेज़ी भाषा के अध्ययन से देशी भाषा के प्रति अनुराग और ममत्व बढ़ा है। यद्यपि इस कथन में विरोधाभास देख पड़ता है पर यह ठीक है। अंग्रेज़ी के प्रचार के कारण देशी भाषाओं पर एक प्रकार का संकट आने के कारण उस की रक्षा के विषय में अपने लोगों का ध्यान गया है। पेशवाई के १५० वर्षों में मराठी भाषा की जो उन्नति नहीं हुई थी वह इधर पचास वर्ष के अंग्रेजी शासन में हुई है। अंग्रेज़ी भाषा और देशी भाषाएं साथ साथ चल सकती हैं। यदि एक म्यान में दो तलवारें एक साथ नहीं रह सकतीं तो भिन्न भिन्न अवसरों पर रह सकती हैं। मनुष्य के मन और भाषा का भी यही सम्बन्ध है। एक भाषा का ज्ञान सदैव दूसरी भाषा का सहायक होता है। ऐसी अवस्था में कौन एक भाषा हिन्दुस्तान में जीवित रहेगी यह प्रश्न ही नहीं उठता। समाज की कार्य्यक्षमता के विचार से अनेक भाषाओं की आवश्यकता हुआ करती है। आज कल ऐसी ही आवश्यकता उपस्थित हुई है। महाराष्ट्र ही को लीजिये। यहां आज कल एक क्या चार भाषाओं के सीखने की ज़रूरत है। मराठी तो जन्म भाषा ही ठहरी। रही संस्कृत वह मराठी का साथ नहीं छोड़ सकती। दन्तकथा, पूर्व इतिहास, धर्म, आदि सब संस्कृत से लिए हुए हैं।

वर्त्तमान स्थिति में केवल संस्कृत और मराठी से ही काम नहीं चल सकता क्योंकि समयानुकूल ज्ञान और व्यवहार आदि के लिए अंग्रेज़ी की इतनी आवश्यकता है कि उसके बिना विद्वान से विद्वान पुरुष कुछ भी नहीं कर सकता। अंग्रेज़ी न जाननेवालों की दशा नींद से उठ कर सहसा उजाले में आने वाले आदमी के समान है। राजकाज व्यापार, शिल्प आदि का निर्वाह बिना अंग्रेज़ी जाने नहीं हो सकता। जो जगत के भिन्न भिन्न देशों में उत्पन्न उत्कृष्ट ज्ञान का सम्पादन करना चाहते हैं उनके लिए अंग्रेज़ी को छोड़ और कोई गति नहीं। अगर आज पेशवाओं का समय होता तब भी राज्यप्रबंध आदि की उन्नति के लिए अंग्रेज़ी सीखनी ही पड़ती। चीन और जापान का उदाहरण प्रत्यक्ष है।

लेकिन केवल मराठी, संस्कृत और अंग्रेज़ी ही से महाराष्ट्रों का काम नहीं चल सकता। देश में एकता का विचार फैल रहा है। परस्पर के आचार विचार को समझने की आकांक्षा उत्पन्न हो रही है। इसके लिए एक देशी व्यापक भाषा की आवश्यकता होगी। यह भाषा कौन होगी इसमें विवाद है। सर गुरुदास बैनर्जी की राष्ट्रीय शिक्षण नामक पुस्तक के अनुसार प्रत्येक प्रान्त में दो दो देशी भाषाएं रहेंगी। बंगाल में बंगला और हिन्दुस्तानी, संयुक्त प्रान्त और पंजाब में हिन्दी और और उर्दू बंबई में मराठी और गुजराती। मदरास में तामिल और तैलंगी यही दो मुख्य भाषाएं रहेंगी। **वर्त्तमान समयमें हिन्दी का प्रचार सबसे अधिक है।** पर उसमें वाङ्मय (साहित्य) की कमी है। बँगला के बोलने वाले केवल चार करोड़ है। परन्तु साहित्य की दृष्टि से यह अग्रस्थानीय है, मराठी पुस्तकों से बंगला में जितने भाषान्तर होते है उनकी अपेक्षा बंगला पुस्तकों के मराठी अनुवाद कहीं अधिक होते हैं। गुजराती भाषा व्यापार धन्धे के लिए अधिक उपयोगी है। इस प्रकार किसी में कुछ और किसी में कुछ गुण होने से देशी भाषाओं में एक प्रकार की बाज़ी सी लगी हुई है। इस बाज़ी को कौन ले जायगा यह प्रश्न मनोरंजक तो है पर हम लोगों के लिए गौण है। यह निश्चय है कि उपर्युक्त चार भाषाएँ प्रत्येक सुशिक्षित मनुष्य के सामने आवेंगी। सारांश यह कि चाहे अंग्रेज़ी को कितना ही राजकीय महत्व प्राप्त हो पर वह राष्ट्र भाषा नहीं हो सकती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का साधारण मासिक अधिवेशन अंग्रेजी महीने के अन्तिम शनिवार को सन्ध्या के छ बजे सभाभवन में हुआ करता है। इसमें सब सभासदों को सम्मिलित होना चाहिए।

———:o:———

बोर्ड आफ़ ट्रष्टीज़का साधारण अधिवेशन।

भौमवार ता० ११ अक्तूबर १९१० सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

बा० श्यामसुन्दरदास बी०ए० सभापति, राव गोपाल दास, महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, मेहता कृष्णा राम बी०ए०, एल०एल० बी०, बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी०ए०, एल०एल० बी०, बाबू जुगल किशोर, राय शिव प्रसाद।

(१) बाबू श्यामसुन्दरदास जी सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० ५ सितम्बर १९१०) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) स्थायी कोश के आयव्यय के सम्बन्ध में प्रबन्धकारिणी सभा की गत वर्ष की रिपोर्ट उपस्थित की गई और स्वीकृत हुई।

बा० माधवप्रसाद का २ मई १९१० का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बोर्ड आफ़ ट्रष्टीज़ में अपने पद से इस्तीफ़ा दिया था।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(४) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २९ अप्रैल १९११ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान-सभाभवन।

(१) गत अधिवेशन (ता० २५ मार्च १९११) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए।

(१) पं० सानुकूल दुबे, मुदर्रिस, मदरसा शिवपुर कपूर दियर पो० बेरिया, बलिया १॥) (२) पं० राम रखामल ठेकेदार सहारन पुर ३) (३) बा० सन्तराम, पीपुल्स बंक लिमिटेड बनारस ५) (४) भट्ट श्रीगोवर्द्धन लाल जी शर्म्मा, श्री मथुरा नाथ जी का मन्दिर, सारपुर दरवाजा रणछोड़ जी की पोल, अहमदाबाद ३) (५) ठक्कुर हरीदास शाम जी, बड़ा मन्दिर, भूलेश्वर, बम्बई ३)(६) पं० राधा कुमार व्यास, मान मन्दिर, काशी १॥) (७) पं० रामदास तिवारी, तहसील केराकत, ज़ि० जौनपुर १॥) (८) बा० बुद्धिसागर, कक्षा ८, हाई स्कूल, बहराइच १॥) (९) पं० माधवदास, सभापति, श्री वैष्णव धर्म्मवर्द्धिनी सभा, नानपारा, बहराइच १॥) (१०) पं० संकटाप्रसाद वाजपेयी सरबराहकार, कोर्टआफ़ वार्डस, पयागपुर, बहराइच १॥) (११) बा० हरिवंश प्रसाद नारायण सिंह, मु० शंकरपुर, पो० सिंहपुर सकरा, ज़ि० सारन ५) (१२) बा० माधोराय शंकरपुर, पो० सिंहपुरसकरा, ज़ि० सारन १॥) (१३) बा० शिवशम्भु नारायण सिंह, सूरजपुर, ज़ि० आज़मगढ़ १॥) (१४) बा० सरयू प्रसाद नारायण सिंह, सूरजपुर, ज़ि० आज़मगढ़ ५) (१५) बा० रामदेवलाल, सूर्य्यपुर, ज़ि० आज़मगढ़ १॥) (१६) बा० रामकुमार सिंह सूरजपुर, ज़ि० आज़मगढ़ १॥) (१७) बा० सुखरामदास, बरहलगंज, ज़ि० गोरखपुर ५) (१८) बा० अनन्तदेव प्रसाद नारायणसिंह, सूर्यपुर, ज़ि० आज़मगढ़ १॥) (१९) पं० तपेश्वर तिवारी सूर्य्यपुर, ज़ि० आज़मगढ़ १॥) (२०) पं० रामसुन्दर उपाध्याय मुदर्रिस, मदरसा तहसीली, सूर्यपुर, ज़ि० आज़मगढ़ १॥) (२१) स्वामी प्रकाशानन्द गिरि, कटरा कर्णघंटा नं० १६, काशी १॥) (२२) बा० श्रीदासगुप्त, नं० ३६।१६ बुला- नाला, काशी १॥)।

(३) सभासद होने के लिये ७४ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(४) मंत्रीने निम्न लिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी अर्थात् (१) बा० कालिदास मित्र, काशी और (२) बा० देवी प्रसाद, गोंड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभाने इन सज्जनों की मृत्यु पर शोक प्रगट किया।

(५) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं ।

श्रीयुत पी० सी सिंह, गौहाटी, आसाम-तर्कविज्ञान (बंगला) एक प्रति । पंडित जीवानन्द शर्म्मा, मुरादाबाद संस्कृत की प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ पुस्तकें । संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट-A descriptive catalogue of Sanskrit Mss. in the Government Oriental Mss. Library Madras Vols 8 & 9 पं० राधा प्रसाद शास्त्री, शाह आलम दर्वाजा, लाहोर-विवाह धर्म्म मर्म्म समालोचना प्रथम पुस्तक । पं० बच्चन पांडे गवर्न्मेंट हाईस्कूल, इटावा-होरेशियस । पंडित गंगानाथ झा, इलाहाबाद-Indian Thought. Indian Antiquary for April 1911

(६) सभा के कुछ नियमों के सम्बन्ध में बा० शिवप्रसाद गुप्त का ८ वैशाख का पत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यह आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय ।

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

प्रबन्धकारिणी समिति ।

शनिवार ता० २९ अप्रैल १९११ सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

पण्डित राम नारायण मिश्र बी०ए० सभापति, बा० शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बा० जुगलकिशोर, बा० बालमुकुन्द वर्म्मा । सम्मति-पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०

(१) गत अधिवेशन (ता० १८ मार्च १९११) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) निम्न लिखित सज्जनों की नामावली उपस्थित की गई जिन्हें समिति के ता० २३ जनवरी के निश्चय नं० १३ के अनुसार सूचना दी गई थी, तिस पर भी उन्होंने अपना तीन वर्ष का बाकी चन्दा नहीं भेजा:- (१) स्वामी नित्यानन्दजी, काशी (२) पण्डित महेशी लाल तिवारी, काशी (३) बा० रूप नारायण वर्म्मा काशी (४) बा० संकटाप्रसाद, सिद्धेश्वरी, काशी (५) पण्डित अखौरी मिश्र वैद्य, अरवल, जि० गया (६) पण्डित केदारनाथ शर्म्मा, थर्ड इयर क्लास, केनिंग कालेज, लखनऊ (७) लाला खुशीराम एम०ए०, आफिशिएटिङ्ग असिस्टेण्ट आफ़िसर, गवर्न्मेंट कालेज, लाहौर (८) बाबू गंगा प्रसाद, सेक्रेटरी महाराज पन्ना, किला बिलारी, मंदराज (९) बा० छोटू लाल, शेरपुर, पो० करपी, जि० गया (१०) बा० जीराज मल खत्री, काशीपुर, जि० नैनीताल (११) मिस्टर ठाकुर लाल हरीलाल देसाई, ५०२१४ अब्दुल रहमान स्ट्रीट, पाईधुनी बम्बई (१२) बा० दीन दयाल बजाज, छिन्दवारा (१३) बा० देवीलाल, रिटायर्ड डिपटी कलेक्टर, दानापुर (१४) पंडित नाथपांडे, काशीपुर, बलिया (१५) बा० नेमीचन्द मोदी बी० ए०, मेयोकालेज, अजमेर (१६) बा० बनवारी लाल चौबे, नायब खजानची, सदर, हरदोई (१८) बा० विष्णु सहाय बी० ए०, प्रोफ़ेसर, कायस्थ पाठशाला, इलाहाबाद (१९) बा० भगवान प्रसाद वर्म्मा, मुंशी अधिराज लाल्स स्ट्रीट, मिर्जापुर, (२०) बा० मदन लाल चौधरी, C/o मिसर्स सेवाराम भीमराज, कलकत्ता (२१) बा० महादेव प्रसाद सेठ, गऊघाट, मिर्जापुर (२२) डाक्टर मेघनाथ बेनर्जी, ३ क्वीन्स रोड, इलाहाबाद (२३) पण्डित मैकूलाल शर्म्मा, उपप्रधान, आर्यसमाज, शाहाबाद, हरदोई (२४) बाबू मोतीलाल वकील, हरदोई (२५) बाबू मोहनी लाल वकील, हरदोई (२६) पण्डित रघुवर दयाल दुबे वकील, बिलग्राम, हरदोई (२७) बा० राम गोपाल खेमका, नं० ५।१ वैशाखसलेन, बड़ा बाजार, कलकत्ता (२८) श्रीराम बाबा, रामकुटी, चित्रकूट, बांदा (२९) मिस्टर रौशन लाल बी० ए०, बारिस्टर, लाहौर (३०) बा० लक्ष्मीपति, एडिनबरा (३१) बा० लालजी सिंह, हिंगुत्तरगढ़, पो० धानापुर, जि० गाज़ीपुर (३२) बा० शिवदयाल वर्म्मा, शुतुरमंडी, लाहौर (३३) बा० शिवसहाय अढ़तिया, बुलन्दशहर (३४) पं० शिवसागर शर्म्मा, आर्य्यसमाज, उधरनपुर, जि० हरदोई (३५) पं० श्याम मनोहर शुक्ल बजाज, हरदोई, (३६) बा० श्यामलाल, आर्य एन्डको, अलीगढ़ (३७) पण्डित साधुशरण ओझा, नई आबादी, बलिया (३८) बा० सिंघीराम पोद्दार, नं० ११ बांसतला स्ट्रीट, कलकत्ता (३९) बा० हुकुम सिंह, आंगई, पो० बलदेव, जि० मथुरा (४०) मिस्टर जे० एम० कार, लखनऊ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि स्वामी नित्यानन्द और डाक्टर मेघनाथ बेनर्जी का नाम उन सभासदों में लिखा जाय जिनका चन्दा क्षमा है, बा० लक्ष्मीपति को दानापुर के पते से चन्दे के लिये पुनः लिखा जाय और शेष सभासदों का नाम सूची "ख" में लिखा जाय।

(३) बा० शिवप्रसादगुप्त ने इस विषय पर ध्यान दिलाया कि उन्होंने सभा में हिन्दीकोश के विषय में प्रति मास के व्यय और सम्पादित शब्दों की संख्या का ब्योरा मांगा था। उनका उत्तर उन्हें अभी नहीं गया।

निश्चय हुआ कि उन्हें उत्तर शीघ्र भेज दिया जाय।

(४) बा० शिवप्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि एक कमेटी कोश के कुल कार्यों के करने के लिये बनाई जाय जो सम्पादन, प्रकाशन तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य्यों को करे और यह कमेटी केवल प्रबन्धकारिणी समिति के ही अन्तर्गत रहे।

निश्चय हुआ कि बा० शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित राम नारायण मिश्र और बा० गौरी शंकर प्रसाद की एक सब कमेटी बनाई जाय जो कोश के सम्बन्ध में सब बातों पर विचार कर पांच दिन के भीतर यह सम्मति दे कि इस कार्य को अधिक संतोषजनक रीति से चलाने के लिये क्या उपाय किए जांय। यह रिपोर्ट आगामी शनिवार को समिति के सम्मुख उपस्थित की जाय और जो कार्य आज शेष रह गए हैं वे भी उसी दिन हों।

(५) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई॥

बोर्ड आफ़ट्रस्टीज़ का साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २९ अप्रैल १९११ सन्ध्याके ६¾ बजे।

स्थान सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू जुगलकिशोर सभापति, पं० राम नारायण मिश्र बी०ए०, बाबू गोविन्द दास, बाबू गौरी शंकर प्रसाद।

(१) पं० राम नारायण मिश्र के प्रस्ताव तथा बाबू गौरीशंकरप्रसाद के अनुमोदन पर बाबू जुगल किशोर सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० ११ अक्तूबर १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) निश्चय हुआ कि सभा का आगामी वर्ष का हिसाब जांचने के लिये पं० शोभाराम और बाबू आशुतोष सिंह नियत किए जांय।

(४) निश्चय हुआ कि पिछले वर्षों का जो हिसाब अब तक नहीं जांचा गया है उनके जांचने के लिये हिन्दू कालेज के कमर्शल टीचर महाशय और बाबू शिवप्रसाद गुप्त नियत किए जांय। यह भी निश्चय हुआ कि इसके लिये उक्तटीचर महोदय को कुछ पुरस्कार भी दिया जाय और बाबू गोविन्द दास से प्रार्थना की जाय कि वे उनसे यह पुरस्कार तै करदें।

(५) निश्चय हुआ कि सभा का छ हज़ार रुपए का ऋण चुकाने के सम्बन्ध में उद्योग करने के लिये पं० गोविन्दाचार्य्य जी कलकत्ते भेजे जांय और बा० शिवप्रसाद गुप्त से प्रार्थना की जाय कि वे इस सम्बन्ध में सभा की सहायता करें।

(६) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

उत्तम पुस्तकें।

'हिन्दी-साहित्य' के सम्पादक बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त की बनाई।

रामाभिषेक नाटक (करुणा रस से भरा गद्यपद्य)	॥)
लक्ष्मीदेवी (स्त्री-शिक्षा का उपन्यास)	।)
राजस्थान का इतिहास ५ खण्ड	२॥)
भारत का इतिहास (निबन्ध)	≡)
पूना में हलचल (ऐतिहासिक उपन्यास)	।=)
देशी कारीगरी की दशा (निबन्ध)	≡)
बर्नियर की भारतयात्रा ३ खण्ड	१॥)
हमीर ≡) कुँवरसिंह सेनापति	॥)
'हिन्दी-साहित्य' (मासिक ग्रन्थमाला)	
१ वर्ष का मूल्य	२)
फुटकर प्रत्येक अंक का	।)
१९११ का १२ पृष्ठों का दीवार का कैलेंडर	)॥

मिलने का पता—

मैनेजर 'हिन्दी-साहित्य'

रेशमकटरा, बनारस सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सम्पादकों का सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तबइनकी और औषधियां को भी सेवन करना चाहिये!

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रासिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती-बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयों की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, बंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

(मूल्य १॥) डा० म०)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है। इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़ खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दर्म की दवा—तत्काल दर्म को दवाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली —सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं:

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से—आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसी हो गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताब दिवरा जिला सारनसे—आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से—छैः मशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत१॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत वख्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारिफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाईगई हैं।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से—

दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि "रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

डा: एस.के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित सं०१८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत मेष काशी में बाबू माधवप्रसाद, के प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा माँहि प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र

भाग १५	जून १९११।	भारतेन्दु संवत् २८	संख्या १२

हिन्दी-स्तुति।

[बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त-कृत।]

ध्रुपद—राग भूप।

जय जय जय, सब-जन-हित, सकल देस माहिं अजित,
हिन्दी भाषा सुललित, अतुलित गुनवारी॥ जय०॥
संस्कृतकी सुघर सुता, भारत-उपकार-रता,
मुग्ध करै जग-जनता, सोभायुत प्यारी॥ जय०॥
ज़ेतो वय पुष्ट होत, चन्दासम चमकि जोत,
प्रस्रवत जनु रजतस्रोत हिय-उज्ज्वलकारी॥ जय०॥
सोहै ज्यों महारानि, भाषा सब, उच्च मानि,
जाको कर देहिं आनि, धन्य सो दुलारी॥ जय०॥
आवहु भारतनिवासि, सब मिलि याको उपासि,
लहैं मधुर मोद-रासि, तन मन धन वारी॥ जय०॥

प्राचीन आर्य्य।

(२)

यह हम दिखा चुके हैं कि मन्त्र ऋषियों के असाधारण विचार और परीक्षा के परिणाम हैं और इसीलिये प्राचीन ऋषि मुनियों ने उनको ईश्वरीय माना है। निरुक्त में यास्काचार्य्य मन्त्र शब्द पर लिखते हैं "मन्त्राः मननात्" अर्थात् मनन वा विचार करने से मन्त्र उत्पन्न हुए और इसीलिये मन्त्र कहलाते हैं। यह मन्त्र ऋषियों ने एकबारगी संहिता के संहिता नहीं रचे किन्तु अपने जीवन में नाना लौकिक तथा अलौकिक पदार्थों और घटनाओं पर बहुत काल तक विचार करने और अनुभव द्वारा साक्षात् करने पर भिन्न भिन्न अवस्थाओं पर उनकी रचना करते गये। निरुक्तादि ग्रन्थों में कितने मन्त्रों के बनने की घटना का पूर्ण इतिहास दिखाया है। हम कुछ थोड़े से उदाहरण यहां दिखाते हैं।

* इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानुगिरीणान्ताविषेभिरूर्मिभिः। पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमाविवासेम धीतिभिः। ऋग्वेद ४।८।३०।२।

इस पर यास्काचार्य्य जी एक प्राचीन आख्यायिका लिखते हैं—

तत्रेतिहासमाचक्षते विश्वामित्र ऋषिः सुदासःपैजवनस्य पुरोहितो बभूव। सवित्तं

* मैं इस करारों को तोड़नेवाली नदी की अपनी रक्षा के लिये स्तुति कर्म से परिचर्य्या करता हूं जो पर्वतों के शिखर को बिसखानक के समान अपनी तीव्र ऊर्मियों से खोदा करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहीत्वा विपाट् छुतुद्र्योः सम्भेद माययावनुययुरितरे। स विश्वामित्रोनदींस्तुष्टावगाधा भवेति।

इस पर लोग यह इतिहास कहते हैं कि विश्वामित्र नाम के कोई ऋषि पिजवन राजा के पुत्र सुदास राजा के यज्ञ में पुरोहित हुए थे। वह उस धन को जो दक्षिणा में मिला था ले कर वियास और सतलज के संगम पर पहुंचे और उनके पीछे चोर लगे। तब विश्वामित्र ने नदी की स्तुति कर प्रार्थना की कि गाधा वा उतार हो जा। निरुक्तकार को यहां यह आख्यायिका दिखाने की आवश्यकता पड़ने का यह भी एक कारण है कि मन्त्र में "सरस्वती" शब्द है जिसका इस मन्त्र में केवल "नदी" मात्र अर्थ है, सरस्वती नाम की नदी वा वाणी आदि नहीं। संभव था कि लोग यहां सरस्वती शब्द का वाणी वा सरस्वती नामक नदी विशेष अर्थ करके धोखे में पड़ते।

*** नदस्यमारुधतःकाम आगन्नित आजातोअमुतः कुतश्चित्। लोपामुद्रा वृषणं नीरिणाति धीरमधीरा धयति श्वसन्तम्। ऋ० २।४।२२।४।**

इस मन्त्र पर यास्काचार्य्य लिखते हैं।

संरुद्धप्रजननस्य ब्रह्मचारिण इत्यृषिपुत्र्याविलपितं वेदयन्ति।

किसी ब्रह्मचारी के संरुद्ध प्रजनन से दुःखित हो किसी ऋषि की पुत्री और उसकी पत्नी के विलाप की दशा दिखाई है। यहां पर भी इस आख्यायिका के लिखने का प्रयोजन यही है कि यहां "नद" शब्द से कोई जलस्थल वा नदी अर्थ न समझे किन्तु ऋषि समझा जाय। लिखा है—

ऋषिर्नदो भवति नदतेस्तुतिकर्मणः।

ऋषि को नद कहते हैं। नद शब्द नद धातु से बनता है जिसका अर्थ स्तुति करना है। इसी प्रकार कितने मन्त्रों की रचनाओं की घटनाएँ निरुक्त तथा ब्राह्मणादि ग्रन्थों में दी गई हैं जिनसे यह निश्चित रूप से पता चलता है कि सब मन्त्र एकही काल में और एकही ऋषि के बनाये नहीं हैं। कितने मन्त्र तो ऐसे हैं जो कितने ऋषियों के सैकड़ों वर्षों के अनुभव और लगातार परीक्षा के परिणाम हैं।

इन मन्त्रों के प्रधान तीन भेद हैं (१) ऋक् (२) यजुः और (३) साम।

(१) ऋक् वह मन्त्र है जो पादवद्ध पद्य हो और जो पद पद करके उच्चारण हो। मीमांसामें ऋक् का लक्षण "**तेषामृग्यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था**"। २।१।३५ किया है। इस पर शवर स्वामी लिखते हैं '**यत्रपादकृता व्यवस्थासमन्त्रऋग्नामा**"। जिसमें पाद की व्यवस्था हो वह मन्त्र ऋक् कहलाता है।

(२) यजुः वह मन्त्र है जिसमें पादव्यवस्था न हो किन्तु गद्यवत् पढ़ा जाय। मीमासांमें "**शेषे यजुःशब्दः**" २।१।३७ सूत्रसे यजुः की लक्षणा की है इस सूत्र पर शवर स्वामी लिखते हैं **या न गीतिर्नचपादबद्धंतत्प्रश्लिष्टपठितं यजुरिति**। जो न गाया जा सके और न पादवद्ध हो किन्तु मिला कर पढ़ा जाय वह यजुः है।

(३) साम वह मन्त्र है जो गाया जावे। मीमांसामें "**गीतिषु सामाख्या**। २।१।३६" लिखा है। इस पर शवर स्वामी लिखते हैं "**विशिष्टाकाचिद्गीतिःसामेत्युच्यते**"। जो वाक्य गाया जाय वह साम कहलाता है।

इस प्रकार वाक्य के तीन प्राकृतिक भेदों कोही ऋक् यजुः और साम कहते हैं और इन तीन प्रकार के वाक्यों से वर्णित ज्ञान और वेद को त्रयी कहते हैं। जहां जहां वेदों का विभाग 'वाक्यक्रम" से किया गया वहां वहां केवल तीन ही वेद माने गये हैं, पर इससे यह कभी न समझना चाहिये कि तीन ही वेद हैं और वहां इन शब्दों से संहिताओं का ग्रहण है। ऐसे वाक्यों को देख करही पाश्चात्यों को यह भ्रम हुआ है और वह अथर्व वेद की संहिता को पीछे का मानने लगे हैं। उन को ऐसा विचार करने के पूर्व ही यह सोचना चाहिये था कि यदि ऐसे स्थल पर ऋक् यजुः और साम से संहिता ही अभिप्रेत होती तो मीमांसाकार जैमिनि मुनि को इनके लक्षण (Definition) लिखने की कोई आवश्यकता न थी और केवल इतनाही लिखना पर्य्याप्त था कि ऋगादि संहिताओं में आये हुए मन्त्र ऋक् यजुः और

* अधीरा लोपामुद्रा सिसकती हुई रोती है और धीर पति से अपना दुःख प्रकट करती है (शिकायत करती है) कि ऋषि के इन्द्रियनिग्रह (संरुद्ध प्रजनन) से मुझमें काम का प्रवेश हुआ है मैं नहीं जानती कि यह मेरे शरीर से उपजा है या आपके शरीर से आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम हैं। वेदों के लिये त्रयी शब्द के व्यवहार तथा मीमांसा दर्शन में ऋगादि के लक्षण देखे जाने से यह स्पष्ट निश्चित होता है कि वैदिक भाषा में ऋक् यजुः और साम शब्द के अर्थ पद्य (Poetry) गद्य (Prose) और गीत (Psalm) हैं। संहिताओं को भी ऋगादिनामों से इसीलिये पुकारते हैं कि उनमें प्रधान भाग ऋक् आदि के ही हैं।

इस प्रकार ऋषि लोग गद्य पद्य और गीत में नाना घटनाओं पर मन्त्रों को रचते गये और यह रचना कई हजार वर्षों तक जारी रही। यह कब से प्रारंभ हुई इसका बतलाना तो हमारे लिये अत्यन्त कठिन है पर हम यह कह सकते हैं कि सब से पीछे काल का जो मन्त्र वेदों में मिलता है वह शन्तनु के समय का है जो महाभारत के अनुसार भीष्म पितामह के पिता थे।

यह मन्त्र ऋग्वेद संहिता के ८।५।१३।१ में है जिसमें ऋष्टिषेण के पुत्र देवापि और शन्तनु का नाम आया है। यह सूक्त वर्षकामसूक्त के नाम से प्रख्यात है। इस पर निरुक्त में यास्काचार्य्य जी लिखते हैं—

तत्रेतिहासमाचक्षते। देवापिश्चार्ष्टिषेणः शन्तनुश्च कौरव्योभ्रातरौबभूवतुः। सशन्तनुः कनीयानभिषेचयाञ्चक्रे। देवापिस्तपः प्रतिपेदे। ततः शन्तनोराज्ये द्वादशवर्षाणि देवोनववर्ष। तमूचुर्ब्राह्मणा अधर्मस्त्वया-चरितो। ज्येष्ठं भ्रातरमन्तरित्वाभिषेचितम्। तस्मात्ते देवो न वर्षतीति। सशन्तनुर्देवापिंशि-शिक्षराज्येन। तमुवाचदेवापिःपुरोहितस्तेऽसानियाजयानिचत्वेति। तस्यैतद्वर्षकाम-सूक्तम्।

यह इतिहास है कि ऋष्टिषेण कुरुवंशी राजा के देवापि और शन्तनु दो लड़के थे। यह दोनों भाई थे। इनमें छोटा भाई शन्तनु आप राजा बन बैठा। देवापि तप करने लगा। तब शन्तनु के राज्य में बारह वर्ष तक पानी नहीं बरसा। ब्राह्मण लोगों ने तब शन्तनु से कहा कि आप ने यह अधर्म किया कि बड़े भाई के होते आप राजा बन बैठे इसी लिये पानी नहीं बरसता है। तब राजा शन्तनु बार बार देवापि के पास गया और प्रार्थना की कि आप राज्य को लीजिये। इस पर देवापिने शन्तनु से कहा कि मैं तुम्हारा पुरोहित बनूंगा और तुमसे यज्ञ कराऊंगा। उसी देवापिका यह वर्षकाम सूक्त है।*

इस से यह स्पष्ट है कि ऋग्वेद की संहिता (जो अब मिलती है) का संग्रह शन्तनु के पीछे हुआ। यह अब तक प्रसिद्ध है कि वेदव्यासजी ने शाखाओं का विभाग किया वा चार संहिताओं का संकलन किया। महाभारत आदि पर्व अध्याय १५० में लिखा है।

योव्यस्यवेदाश्चतुरः स्तपसा भगवानृषिः। लोके व्यासत्वमापेदे कार्ष्ण्यात्कृष्णत्वमेवच।

महर्षि व्यास ने वेदों की भली प्रकार जांच पड़ताल कर उन्हें चार संहिताओं में विभक्त किया इससे सुनिश्चित है कि महाभारत युद्ध के कुछ ही पूर्व यह संहिताएँ बनीं और व्यास जी की ही संग्रह की हुई यह ऋक् यजुः साम और अथर्व संहिताएँ हैं जो अब मिलती हैं। यजुर्वेद की आज कल दो भेद से संहिता मिलती है, एक कृष्ण दूसरी शुक्ल। इनमें कृष्ण संहिता ही व्याससंगृहीत है। शुक्ल का बहुत पीछे याज्ञवल्क्य ने संग्रह किया। शतपथ ब्राह्मण काण्ड १४। प्र० ७ ब्राह्मण ५ कण्डिका ३३ में लिखा है—

इमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते।

यह शुक्ल यजुर्वेद वाजसनेय याज्ञवल्क्य के नाम से प्रख्यात है। वाजसनेय वा शुक्ल यजुर्वेद की संहिता के फिर कई संकलन हुए जिनमें माध्यन्दिनीय और कण्व संहिताएँ अबतक मिलती हैं। इन शुक्ल यजुर्वेद की संहिताओं का संकलन महाभारत युद्ध से बहुत पीछे हुआ और यह अन्तिम संकलन है। इस संकलन के पीछे जो मन्त्र बने वा जो छूट गये थे उनको कात्यायनजीने जो पाणिनिजी से बहुत पीछे हुए संग्रह कर के परिशिष्ट में रखदिया। फलतः, यह संहिताएँ जो अब मिलती हैं इन का संकलन अधिक से अधिक महात्मा बुद्ध देव से दो सहस्र वर्ष पहिले हुआ।

---

* यह शन्तनु वही महाभारत के शान्तनु हैं इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि महाभारत आदिपर्व अध्याय ९५ में इन्हें देवापि का भाई लिखा है।

प्रतिश्रवसःप्रतीपः। प्रतीपःखलुशैव्यामुपयेमे सुनन्दां नाम। तस्यां पुत्रानुत्पादया मास देवापिं शान्तनुं वाह्लीकञ्चेति। देवापिः खलु बाल एवारण्य विवेष शान्तनुस्तु महीपालोबभूव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे लिखने का यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि इन संहिताओं के मन्त्र भी उसी समय बने किन्तु मन्त्र विशेष कर अत्यन्त प्राचीन हैं, हां उनमें कुछ ऐसे मन्त्र भी हैं जो उस समय से कुछ ही पूर्व बने।

वेदों का सब से पहिले संहितारूप में विभाग अथर्वा ऋषि ने किया यह बहुत से वेद मन्त्रों से स्पष्ट प्रतीत होता है। अथर्वा ऋषि के पूर्व वेदमन्त्र लोग कण्ठ रखते थे और सुन कर ही उनको पढ़ते थे इसी कारण इन का नाम "श्रुति" है। उस समय लिखने की भी सामग्री न थी इसी लिये लोग जितना जानते थे उसे नित्य अभ्यास करते थे। अत्यन्त अभ्यास करने ही के कारण वेद मंत्रों का नाम "आम्नाय" है। ऋग्वेद में कुछ ऐसे मंत्र हैं जिनसे यह पता चलता है कि अथर्वा *ऋषि ने पाहिले पहिल अग्नि को निर्मथन कर यज्ञों का करना लोगों को सिखलाया और यज्ञों के प्रारंभ होते ही चातुर्होतृ कर्म की नीव पड़ी जिसके लिये उसने पहिले पहिल संहिताओं का विभाग किया। ऋक् यजु साम मंत्रों से होता अध्वर्य्यु उद्गाता और ब्रह्मा के लिये चार संहिताएँ बनाई। यही संहिताएँ इन संहिताओं के बीजरूप हुईं जिनमें समय समय पर पीछे के बने हुए उपयोगी मन्त्रों को मिला मिला कर समयानुसार संकलन होता रहा। यह अथर्वा कब हुआ इसका पता चलाना नितान्त दुस्तर है पर यह सुनिश्चित है कि वह प्रयाग के समीप का रहनेवाला था। प्रयाग जिले में अब तक एक परगना अथर्वण के नाम से प्रख्यात है तथा प्रयाग शब्द भी इसका साक्षी है जिसका अर्थ वह स्थान है जहां लगातार यज्ञ किया जाय। याज्ञक मन्त्र प्रायः अथर्वा के समय से पीछे के बने हुए हैं।

इस प्रकार गवेषणापूर्वक छान बीन करने से यह निश्चित है कि संहिताओं वा उनके अन्तर्गत मण्डल अध्यायादि में काल का भेद नहीं है किन्तु मन्त्रों की रचना में अवश्य कालभेद है। पाश्चात्य विद्वानों की यह सम्मति कि ऋग्वेद का दशम मण्डल वा अथर्ववेद पीछे का है कहां तक चिन्त्य और निर्मूल तथा भ्रान्तिपूर्ण है पाठक स्वयं विचार सकते हैं। वेदमन्त्रों में सब से प्राचीन सावित्री मन्त्र है जिसे अब तक भारतवासी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उपनयन के समय में गुरुमुख से ग्रहण करते हैं और आजन्म संध्या वन्दन में जपते हैं। इस मंत्र की हिन्दुशास्त्रों में बड़ी प्रसंशा * की गई है और इस वेदमाता "ब्रह्मसुख" आदि उपाधियां दीगई हैं। बौद्धग्रन्थों में इसकी प्रशंसा स्वयं भगवान् बुद्धदेव ने "अग्गिहुत्त मुखायञ्ञा सावित्ती छन्दसानं मुखं" कह कर की है। तात्पर्य्य यह कि समस्त आर्य्य जाति इस मन्त्र की स्तुति करती है। इसका प्रधान कारण यही है कि संसार में मनुष्यों को सब से अधिक दुःखदायी यदि किसी आपत्ति का सामना करना पड़ा तो वह शीत था। उस समय यह नग्न और सहायहीन थे। रात को शीत की कठिनाई से इन की इन्द्रियां बेकाम हो जाती थीं। उस समय संसार में यह निराश्रय थे, अग्नि इनके पास न थी कि उससे अपना शीत निवारण करते। ऐसे समय भगवान् भुवनभास्कर के अतिरिक्त और कौन था जो इन दीनों का अवलम्ब होता। सूर्य्य की गरमी से सचेष्ट हो करही यह दिन को अपनी जीवनयात्रा में लगते थे। इसी लिये पहिले पहिल ऋषियों को जब अपने आंतरिक अभिप्रायों को प्रकाश करने की शक्ति हुई तब सब लोगों के समक्ष यह मंत्र बोले—

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

आओ हम लोग संसार में प्रकाश फैलानेवाले और चराचर के उत्पादक सूर्य्य देव के अत्यन्त ग्रहण करने योग्य परमेष्ट तेज अर्थात् धूप को धारण करें जिससे हमारी बुद्धि फैले।

वह ऋषि जिसके मुख से यह अत्यन्त उपयोगी शिक्षाप्रद मन्त्र निकला था विश्वामित्र की उपाधि से विभूषित किया गया क्योंकि उसने सूर्य्य के इस विज्ञान को साक्षात् करके संसार को शीतरूप राक्षस के आक्रमण से बचाया और सब को कल्याण का मार्ग दिखाया।

इसके पीछेही अन्य मंत्रों की रचना होने लगी। ज्यों ज्यों आर्य्य महर्षिगण संसार के पदार्थों के धर्मों को साक्षात् करते गये, इतर साधारण पुरुषों को अपने अनुभव का पता मंत्रों

---

* त्वामग्ने पुष्करा दध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः। ऋ० ४।५।२३।३।

यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्य्यो व्रतपा वेन आजनि। आ गा आजदुशना काव्यः स वा यमस्य जातममृतं यजामहे। ऋ १। ६। ४। ५।

* अकारश्चाप्युकारश्चमकारश्चप्रजापतिः। वेदत्रया न्निरदुहद्भूर्भुवः स्वरितीतिच। त्रिभ्य एव तुवेदेभ्यः पादम्पाद मदूदुहत्। तादित्तृचोभ्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः। एतदक्षर मेताञ्च जपन् व्याहृति पूर्विकाम्। संध्ययोर्वेदविद्वि प्रोवेदपुण्येनयुज्यते। सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत्त्रिकं द्विजः। महतोप्येनसो मासात्वचेवाहिर्विमुच्यते। एतचैया विसंयुक्तः कालेन क्रिययास्वया। ब्रह्मक्षत्रियविड्योनिर्गर्हणां याति साधुषु। ओंकार पूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोऽव्यया। त्रिपदाचैव सावित्री विज्ञेयम्ब्रह्मणोमुखम्। मनु० अ० २१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा देते गये। सावित्री मंत्र के आदिमित्र होने के अनुमान की पुष्टि इसके गायत्री छंद में होने से तथा प्रथम पाद में सात अक्षरों के देखे जाने से भी होती है। आदि में इनको छन्दोज्ञान कुछ भी नहीं था इसी लिये तो तीन पाद का छंद तथा पहिला पाद सात अक्षर का रचा। ज्यों ज्यों अधिक अनुभव होता गया ये अच्छे और सुडौल छंदों में रचना करते गये। उन छंदों में जिनमें वेदों की रचना है अनुष्टुप ही अत्यन्त परिमार्जित छंद हैं जिसमें रचना करने का अभ्यास ऋषियों को बहुत पीछे हुआ। यह अनुष्टुप छन्द तब तक परिष्कृत न हुआ था जब तक कि बाल्मीकि ऋषि के मुख से अकस्मात्—

मानिषाद प्रतिष्ठात्वमगमच्छास्वतीसमाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेक मवधीः काममोहितम्॥

न निकलाथा। क्रमशः

जगन्मोहन वर्म्मा।

प्रबन्धकारिणी समिति।

शनिवार ता० २० मई १९११ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति, राव गोपाल दास, पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एल० एल० बी०, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा।

(१) गत अधिवेशन (ता० १३ मई १९११) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) बाबू कन्हैया लाल का १८ मार्च १९११ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा के पुस्तकालय का जो नया सूचीपत्र बन रहा है उसे अक्षर क्रम से ठीक करने का भार उन्हें दिया जाय, सूची में वर्णमाला की छोटी छोटी पुस्तकों का नाम न दिया जाय, नागरी प्रचारिणी पत्रिका डिमाई अठ पेजी आकार के ४० पृष्ठों में निकाली जाय और उसके अक्षर छोटे किए जांय।

निश्चय हुआ कि यदि बाबू कन्हैया लाल कृपा पूर्वक जून मास के अन्त तक सूचीपत्र को अक्षर क्रम से ठीक कर दें तो उन्हें यह कार्य धन्यवादपूर्वक सौंपा जाय। शेष प्रस्ताव इस समय स्वीकार नहीं किए जा सकते।

(३) बाबू वंशीधर वैश्य का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका की विषयसूची वर्ष के अन्त में टाइटिल पेज के सहित छपनी चाहिए।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव इस समय स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(४) उपमंत्री के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि बाबू गोपाल दास का वेतन पहिली मई १९११ से ३५) रु० कर दिया जाय।

(५) पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी और पण्डित चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी का २८ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा ने नागरी प्रचारिणी ग्रन्थमाला में जो दादूदयाल की बानी और दादूदयाल के सबद छपवाए हैं वे बहुत अशुद्ध छपे हैं, उनमें दादूदयाल के उद्देश्य की रक्षा नहीं की गई है और उनकी भूमिका में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनसे दादूपन्थियों का जी दुखी हुआ है और जो ठीक भी नहीं है। अतः सभा इन पुस्तकों की बिक्री बन्द कर दे।

निश्चय हुआ कि पण्डित चंद्रधर शर्म्मा गुलेरी और पं० चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी से प्रार्थना की जाय कि उनकी सम्मति में इन पुस्तकों में जो अशुद्धियां रह गई हों उनका एक शुद्धाशुद्ध पत्र वे कृपापूर्वक तयार करदें जिसमें सभा उस पर विचार कर उसे इन पुस्तकों के साथ लगवा दे।

(६) बा० वंशीधर वैश्य मारवाड़ी का २८ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा नेशनल कांग्रेस, इण्डस्ट्रियल कान्फरेंस, सोशल कान्फरेन्स, टेम्परेन्स सोसायटी और बड़ी बड़ी लिमिटेड कम्पनियों के संचालकों को लिखे कि वे अपने उद्देश्यों के प्रचारार्थ अपनी रिपोर्ट तथा अन्य आवश्यक पत्र हिन्दी में भी प्रकाशित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय।

(७) बा० बालमुकुन्द वर्म्मा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि (१) दो वर्षों से सभा का वार्षिकोत्सव क्यों नहीं हुआ (२) फौजदारी में जो सभा का मुहर्रिर है उसके पास साइनबोर्ड क्यों नहीं है (३) नागरी प्रचारिणी पत्रिका में सभा के पिछले कार्य विवरण सब छाप दिए जांय (४) सम्मेलन में जिस सज्जन ने सभा का ६०००) रु० का ऋण चुका देने का बचन दिया था उसका क्या हुआ (५) सभा ने गत वर्ष तथा इस वर्ष हिन्दी कोश के लिये कितना चन्दा लिखवाया और उसमें से कितना कितना द्रव्य किन किन सज्जनों के उद्योग से प्राप्त हुआ (६) इण्डियन प्रेस में हिन्दी कोश अभी छपने के लिए क्यों नहीं भेजा गया (७) सभा के कितने सभासद लेखमाला लेते हैं (८) पण्डित गोविन्दाचार्य के द्वारा क्या इतनी आय हो जाती है कि उनका व्यय निकल आवे (९) सभा के मासिक अधिवेशनों की सूचना नगरस्थ सभासदों को अवश्य भेजी जाय और उस दिन सुबोध व्याख्यान का भी प्रबन्ध किया जाय (१०) पुस्तकालय के निरीक्षक से प्रार्थना की जाय कि वे सप्ताह में कम से कम एक बार पुस्तकालय में अवश्य आया करें।

निश्चय हुआ कि (१) इस वर्ष सभा का वार्षिकोत्सव अगस्त अथवा सितम्बर मास में किया जाय और भविष्यत में भी वह प्रति वर्ष हुआ करे (२) सभा से उसको साइनबोर्ड दिया गया है (३) अप्रैल १९११ की पत्रिका में यह छप गया है (४) जिस सज्जनने ऋण चुका देने का बचन दिया था उनका कथन है कि इस ऋण को चुकाने के सम्बन्ध में केवल उन्हीं का नाम समाचारपत्रों में प्रकाशित हो गया है अतः जो सज्जन मिल कर यह द्रव्य देने वाले थे वे अब इसे देना स्वीकार नहीं करते (५) गत दो वर्षों में ३०००) रु० के ऊपर चन्दा प्राप्त हुआ है। मई १९१० तक इस कार्य का पूर्णभार बाबू श्याम सुन्दर दास पर था और १७ नवम्बर १९१० से यह समिति के हाथ में है और इस के लिये एक जुदी कमेटी बना दी गई है (६) कोश की सम्पादित प्रति अभी तक तयार नहीं हुई (७) लगभग १२५ सभा सदों के पास लेखमाला जाती है (८) इनके द्वारा अब तक व्यय से अधिक आय हुई है (९) इस विषय पर निरीक्षक सुबोध व्याख्यान का ध्यान दिलाया जाय (१०) इसके लिये पुस्तकालय के निरीक्षक से प्रार्थना की जाय।

(८) बाबू कन्हैया लाल का २७ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सम्मेलन के उपमंत्री से प्रार्थना की जाय कि वे सप्ताह में कम से कम एक बार सभा में आकर सम्मेलन का जो चन्दा बाकी पड़ा है उसे उतार दें और सम्मेलन की रिपोर्ट के प्रथम भाग को शीघ्र प्रकाशित करने का प्रबन्ध करें।

निश्चय हुआ कि उपमंत्री जी ने बहुत सा चन्दा वसूल कर दिया है और सम्मेलन की रिपोर्ट बाबू श्याम सुन्दर दास के पास सम्पादन के लिये भेज दी गई है।

(९) बाबू दामोदर दास खत्री का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि (१) कोश के प्रबन्ध के विषय में बार बार प्रश्न उठा कर सभा सम्पादक के चित्त को क्यों दुखी करती है (२) सभा उन लोगों का नाम बतावे जिन्होंने इस वर्ष में कम से कम तीन बार कोश के प्रबन्ध के विषय में प्रस्ताव उठाया हो (३) क्या ये सज्जन सम्पादक से द्वेष तो नहीं रखते (४) इस बार काशी जा कर भी बाबू श्यामसुन्दर दास जी सभा भवन में क्यों नहीं गए।

निश्चय हुआ कि (१) जो प्रस्ताव कोई सभा सद सभा में भेजता है उसे सभा में उपस्थित करना नियमों के अनुसार आवश्यक है (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका में सभा का जो कार्यविवरण छपता है उसके देखने से उन्हें यह विदित हो जायगा (३-४) इस सम्बन्ध में सभा को कुछ विदित नहीं है।

(१०) बाबू गंगा प्रसाद गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि ऐसे प्रश्न जिन्हें किसी महाशय ने केवल हानि पहुंचाने और किसी सज्जन के हृदय को व्यर्थ आघात पहुंचाने के अभिप्राय से भेजा हो प्रबन्धकारिणी समिति में न उपस्थित किए जांय वरन् इनका उत्तर मंत्री स्वयम दे दिया करें।

निश्चय हुआ कि किस पत्र को समिति में उपस्थित करना चाहिए और किसका उत्तर मंत्री को स्वयम देना चाहिए इसका निर्णय मंत्री जी के ही अधीन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(११) पण्डित केदार नाथ पाठक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि (१) विहार बन्धु में बाबू श्यामसुन्दर दास जी के सभाभवन में न जाने का जो कारण छपा है वह क्या ठीक है (२) अगस्त १९०८ से अब तक ग्रन्थमाला की कितनी संख्याएं निकलीं और इसके निकलने में जो शिथिलता हुई उसका उत्तरदाता कौन है (३) क्या गवर्न्मेंट ने ग्रन्थमाला के लिये ३००) की वार्षिक सहायता बन्द कर दी (४) उनके बोप देव शीर्षक लेख की पचास प्रतियां उन्हें क्यों नहीं दी गईं ?

निश्चय हुआ कि (१) सभा को इस विषय में कोई ज्ञान नहीं है (२) चार संख्याएं निकली हैं। इसमें जो विलम्ब हुआ है उसके उत्तरदाता सम्पादक हैं (३) गवर्न्मेंट ने ३००) रु० की सहायता जितने समय तक देना स्वीकार किया था वह समय अब समाप्त हो गया (४) बोप देव अभी पूरा नहीं छपा।

(१२) बाबू भगवान दास हालना, पण्डित बदरी नाथ शर्म्मा वैद्य और बाबू ओंकार मल का ४ मई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि हिन्दी कोश के लिये बाबू श्यामसुन्दर दास के उद्योग से जितना चन्दा एकत्रित हुआ उसके अतिरिक्त सभा ने इसके लिये कितना चन्दा एकत्रित किया।

निश्चय हुआ कि कई कारणों से इसके लिये और कुछ चन्दा एकत्रित नहीं हो सका।

(१३) बाबू भगवान दास हालना का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि (१) ब और व के विषय में जब तक सभा का कुछ निश्चय न हो जाय तब तक कोश का छापना प्रारम्भ न किया जाय। (२) पं० बालकृष्ण भट्ट को क्या सभा ने पदच्युत कर दिया अथवा उन्हों ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

निश्चय हुआ कि यह पत्र कोश के सम्पादक के पास उत्तर के लिये भेज दिया जाय।

(१४) मुंशी भगवान दीन का २ मई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने पूछा था कि (१) सभा पुस्तकों तथा पत्रिकाओं आदि के सम्पादन का भार किन किन बातों पर विचार कर किसी व्यक्ति को देती है (२) बाबू शिवप्रसाद गुप्त जो लेखमाला के सम्पादक चुने गये हैं उन्होंने हिन्दी में कौन कौन ग्रन्थ वा लेख लिखे हैं अथवा इसके पहिले किस ग्रन्थ वा पत्र का सम्पादन कर चुके हैं (३) बाबू गंगा प्रसाद गुप्त किस विशेष योग्यता के कारण कोश के सहायक सम्पादक नियत हुए हैं और क्या वे किसी समय सभा की मेम्बरी से निकाले नहीं गए थे।

निश्चय हुआ कि (१) इसके लिये कोई विशेष नियम नहीं है (२) जहां तक सभा को ज्ञात है उन्होंने हिन्दी में कोई पुस्तक नहीं लिखी। इसके पूर्व वे भारतेन्दु मासिक पत्र की सम्पादक समिति के सभ्य रहे हैं (३) बाबू गंगा प्रसद गुप्त की सुयोग्यता पर विचार कर इस पद पर सम्पादक ने उन्हे नियत किया है। वे मेम्बरी से निकाले नहीं गए थे।

(१५) पण्डित केदारनाथ पाठक का १२ मई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पण्डित सुदर्शनाचार्य जो सभा के सभासद चुने गए हैं उनका चुनाव सभा के १४ वे नियम के फुटनोट के विरुद्ध हुआ है।

निश्चय हुआ कि पंडित सुदर्शनाचार्य नाम के कोई सज्जन इस सभा के सभासद नहीं हैं।

(१६) राय शिवप्रसाद का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि जब कभी किसी विषय पर रिपोर्ट देने के लिये कोई कमेटी प्रबन्धकारिणी समित की ओर से नियत की जाय तो उसमें उस समिति का कोई सभासद न रक्खा जाय अथवा यदि यह सम्भव न हो तो समिति के जो सभासद उस कमेटी में नियत किए जांय उन्हें प्रबन्धकारिणी समिति में अपनी रिपोर्ट के विषय में सम्मति देने का अधिकार न रहे।

निश्चय हुआ कि यह विषय नियमों के परिवर्तन से सम्बन्ध रखता है।

(१७) नागरी प्रचारिणी ग्रन्थमाला में छपने के लिये बीर सिंह देवचरित्र नाम का ग्रन्थ स्वीकृत हुआ।

(१८) बा० लक्ष्मीनारायण लाल वकील का १७ मई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि सभा के कार्य विवरणों में कोषके सम्बन्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित केशवदेव शास्त्री और बा० शिवप्रसाद गुप्त के प्रस्ताव बहुत दिनों से होते आ रहे हैं अतः सभा इन लोगों के प्रश्नों और प्रस्तावों पर क्यों विचार करती है ।

निश्चय हुआ कि ये सज्जन प्रबन्धकारिणी समिति के सभासद हैं अतः इनके प्रस्तावों पर विचार करना सभा के नियमों के अनुसार आवश्यक है ।

(१९) लेखमाला के सम्पादक की सम्मति के सहित पंडित रामेश्वर दत्त शर्म्मा के हृदयकण्टक उपन्यास और नागानन्द नाटक नाम के ग्रन्थ उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि सभा इन्हें प्रकाशित करने में असमर्थ है ।

(२०) सेठ निहाल सिंह का १८ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि श्रीमान महाराज गायकवाड़ का जो जीवनचरित्र वे अंग्रेजी में लिख रहे हैं उसके हिन्दी अनुवाद का स्वत्व सभा किन किन नियमों पर ले सकती है ।

निश्चय हुआ कि अंग्रेजी की पुस्तक देखने पर सभा इस विषय को निश्चित कर सकती है ।

(२१) प्रयाग की नागरीवर्द्धिनी सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने निम्न लिखित विषयों पर सम्मति पूछी थी अर्थात् (१) द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के लिये कौन समय नियत किया जाय (२) सम्मेलन का सभापति कौन चुना जाय (३) उस अवसर पर किन किन विषयों पर विचार किया जाय (४) सम्मेलन में जो सज्जन कोई लेख पढ़ना चाहें उस की सूचना उन्हें दी जाय ।

निश्चय हुआ कि (१) सभा की सम्मति में आश्विन कृ० १५ से आश्विन शुक्ल ४ तक का समय सबसे ठीक होगा (२) पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र, पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए०, पण्डित बदरीनारायण चौधरी अथवा पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा (३) इस विषय को निश्चित करने के लिये पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल और बा० गंगाप्रसाद गुप्त की एक सब-कमेटी बना दी जाय और इन सज्जनों से प्रार्थना की जाय कि वे एक सप्ताह के भीतर इस विषय में अपनी सम्मति प्रयाग की सभा के पास भेज दें (४) नागरी प्रचारिणी पत्रिका में एक नोट दे दिया जाय कि जो सज्जन इस अवसर पर कोई लेख भेजना चाहें उसकी सूचना वे प्रयाग की सभा को भेज दें ।

(२२) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २७ मई १९११ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) बा० शिवप्रसाद गुप्त सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २८ अप्रैल १९११) का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति के १८ मार्च, २८ अप्रैल और १३ मई के कार्यविवरण सूचनार्थ पढ़े गए ।

(४) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए:-

१ लाला खैरातीलाल-मालीवाड़ा- गली भैरोवाला-दिल्ली ३) २ रायविश्वम्भर नाथ-एक्जिक्युटिव इञ्जीनियर दिल्ली ५) ३ बा० सांवल दास रस्तोगी-भोजपुरलेन-मालीवाड़ा-दिल्ली५) ४ बा० गिरिवरधर बी० ए०, एल० एल० बी०, वकील-समस्तीपुर ज़िला दरभंगा ३) ५ पण्डित नारायण शास्त्रीखिस्ते-नं० १० रामघाट-काशी १॥) ६ पण्डित श्यामसुन्दर-चौखम्भा-काशी ३) ७ पंडित लक्ष्मीपति उपाध्याय-टाउनस्कूल-हल्लौर-ज़ि० बस्ती १॥) ८ पण्डित भाग्यमानशुक्ल-मेहनपार-पो० दलदलहा-ज़ि० बस्ती ३) ९ पंडित बिन्देश्वरी प्रसाद तिवारी-क्लार्क-कोचिंग सेक्शन, आडिट आफिस-गोरखपुर ५) १० बाबा महंथ-संगतजी-रेशम कटरा-काशी ३) ११ बा० सुरेश्वर प्रसाद-थियासाफ़िकल सोसायटी-काशी १॥) १२ पं० जगन्नाथ पुष्करत-मंत्री-नागरी प्रचारिणी सभा-अमृतसर १॥) १३ पण्डित देवी सहाय शर्म्मा आर्य रईस-कुर्सी-पो० ककवन-जिला कानपुर ६) १४ बा० गंगाराम खन्ना-कालका गली-काशी १॥) १५ बा० जयरामदास राजघाट-काशी २) १६ बा० रामसिंह मेहरा-मीरघाट-काशी १॥) १७ बा० घासीराम एम० ए० वकील-मेरट ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ बा० राधेलाल-वकील-मेरट ३॥) १९ बा० कुंवर विहारी लाल-वकील-मेरट ३) २० बा० फकीरचन्द-कागजी बाजार-मेरट ३) २१ बा० शिवलाल शर्म्मा-डाक्टर-मेरट शहर ३) २२ बा० रघुवरदयाल-बारिस्टर-मेरट ३) २३ बा० रघुनाथ प्रसाद-ग्रानरेरी मजिस्ट्रेट-मेरट ३) २४ बा० मुखत्यार सिंह-वकील-मेरट १॥) २५ बा० ज्योति प्रसादगुप्त-वकील-हाईकोर्ट-मेरट ३) २६ श्रीयुत सोती रघुवंश लालजी-सब जज-मेरट ३) २७ बा० लक्ष्मण दास कश्यप-मह्ल्ला करम अली-मेरट ५) २८ बा० गिरिवरसिंह बामनौली-पो० बिनौली-मेरट ३) २९ पं० काशीनाथ-डिपटी कलेक्टर-मेरट ३) ३० बा० मल्लूमल वकील-मेरट ३) ३१ बा० अनन्तराम-बुढ़ाना दर्वाजा-मेरट १॥) ३२ बा० शिवला विश्वेप्रसाद-मेरट ३) ३३ ठाकुर कल्यान सिंह-जतीवाड़ा स्ट्रीट-मेरट १॥) ३४ बा० लखमीचन्द बैजल-डाक्टर-मेरट १॥) ३५ बा० कृष्णसहाय-महल्ला अन्दर कोट-मेरट १॥) ३६ स्वामी तुलसीराम-स्वामी मेशीनप्रेस मेरट १॥) ३७ बा० शीश्चन्द्रगुप्त-मास्टर-हरदोई १॥) ३८ बा० वैद्यनाथदास-ग्राफिशियेटिंग सबजज-बरेली ३) ३९ बा० प्रेम नारायण सकसेना-बालजती का कुआं-बरेली ३) ४० बा० कालका प्रसाद वकील-तिलहर-जि० शाहजहांपुर ३) ४१ बा० प्रियनाथ बेनर्जी वकील-सिविल लाइन-बरेली ६) ४२ पं० गोकरणनाथ मिश्र-शेरदरवाज़ा-लखनऊ ५) ४३ बा० सतीश्चन्द्र बन्दोपाध्याय-१३ एडमान्स्टनरोड इलाहाबाद १२) ४४ बा० माताप्रसाद जोहरी-वकील-बरेली १॥) ४५ पं० शालिग्राम वकील-बरेली १॥) ४६ बा० हृदयनाथ कुंजरू-दिल्ली दरवाजा-आगरा २) ४७ बा० परमेश्वर नाथ सप्रू-वकील-फैज़ाबाद १॥) ४८ बा० शंकर सिंह वकील-फैज़ाबाद ५) ४९ बा० नारायण प्रसाद निगम वकील-कानपुर ३) ५० ठाकुर लाल बिहारीसिंह वकील फैज़ाबाद १॥) ५१ बा० मन्नीलाल-वकील-हरदोई १॥) ५२ श्रीयुत बा० रामजी-सम्पादक-आर्यपत्र-बरेली १॥) ५३ बा० ईश्वर शरण-वकील हाईकोर्ट-इलाहाबाद ५) ५४ बा० जगन्नाथ प्रसाद माथुर-चौक-काशी १॥) ५५ बा० श्री कृष्ण-मेनेजर-यूनियन-बंक-बरेली ५) ५६ बा० ज्वाला सहाय वर्म्मा-विहारीपुर बरेली १॥) ५७ मिस्टर आर० के० कक्कड़ हेल्थ आफिसर, बरेली ३) ५८ बा० श्याम सुन्दर सहाय-२१ सिविल लाइन्स-बरेली १॥) ५९ बा० रामनारायण चौधरी-बिहारीपुर-बरेली ३) ६० बा० शारदापदो मुकर्जी वकील, बरेली ३) ६१ प्रोफेसर एच० देवटिया-बरेली कालेज-बरेली १॥) ६२ बा० इकबाल शंकर-ठि० बा० गौरीशंकर वकील, बाराबंकी १॥) ६३ पं० हरशंकर प्रसाद उपाध्याय, मिश्र पोखरा, काशी १॥) ६४ पण्डित गोवर्द्धन उपाध्याय, रामजी का मन्दिर, चौखम्भा, काशी ३) ६५ बा० रिसालसिंह जैनी, वकील, मेरट १॥) ६६ पं० सीताराम शर्म्मा, ठठेरवाड़ा, मेरट १॥) ६७ पण्डित चन्द्रभानु-कम्बो दरवाजा, मेरट १॥) ६८ पण्डित विजय शंकर शर्म्मा, मेनेजर, वैद्यराज कम्पनी, मेरट १॥) ६९ डाक्टर नलिनी मोहनराय, कम्बोदरवाजा, मेरट १॥) ७० पण्डित श्यामलाल शर्म्मा, क्लार्क, स्टेशन अस्पताल मेरट १॥) ७१ पण्डित रामचन्द्र शर्म्मा मुख़तार, बुढ़ाना दर्वाजा, मेरट १॥) ७२ बा० श्यामारामचन्द्र, मास्टर चर्च मिशन हाईस्कूल, मेरट १॥) ७३ बा० बिन्दुप्रसाद C/o लाला मुंशीलाल मुख़तार, बुढ़ाना दर्वाजा, मेरट १॥) ७४ पण्डित रामप्रसाद एम० ए०, सरकारी वकील मेरट ५)।

(५) सभासद होने के लिये ८३ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(६) मथुरा के बा० कुंजलाल (सभासद) का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(७) मंत्री ने निम्न लिखित सभासदों की मृत्यु की सूचनाएं उपस्थित कीं अर्थात् प्रयाग के पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा वैद्य, मिर्जापुर के पण्डित रामाधार तिवारी और काशी के बा० गणेशदास।

सभा ने इन सज्जनों की मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

(८) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं:-(१) स्वामीसेवानन्दजी, योगाश्रम, काशी-Bengali made easy. पुरोहित रामदयाल सत्याल, काशी-प्रेम लता दूसरा भाग। पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्लवैद्य, इलाहाबाद-भारत में प्लेग, आयुर्वेद का महत्व, शंकर चरित्र, पुरुषोत्तम चरित्र। श्रीयुत श्यामजी उमरसी मुनीम सेठ जेठा भाई धनजी, दर्यास्थान, गली बडगादी बम्बई-श्रीमद्भगवद्गीता ब्रजभाषा टीका दोहा सहित, अध्यात्म रामायण भाषा। बा० राम किशोर गुप्त, चिरगांव, झांसी-जयद्रथवध। पण्डित ब्रजमोहनझा, प्रचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म विचार, कानपुर-चन्द्रवती। श्रीयुत मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार-भारतवर्ष का इतिहास वैदिक तथा आर्य पर्व, विज्ञान प्रवेशिका भौतिकी। जैन धर्म्म प्रचारक सभा, बम्बई-बालबोध जैन धर्म्म भाग १ और २। पण्डित जगदेव महाब्राह्मण, गायघाट, काशी-नूतन मत खण्डन। पण्डित माधवप्रसाद पाठक, कर्णघंटा, काशी वाल्मीकि विजय। संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेण्ट-Fauna of British India Vol V. मंदराज की गवर्नमेंट-A descriptive catalogue of the Sanskrit Mss in the Government Oriental Mss Library Madras Vols VIII, IX and X श्रीयुत व्यास पूनमचन्द तनसुख वैद्य, ब्यावर-वैद्यक की उन्नति किस प्रकार होगी। Indian Antiquary for May 1911. परिवर्तन में प्राप्त-विवाहाशौच निर्णय भाषा टीका संयुक्त, गोपीचन्द भरथरी, मध्यप्रदेश व बरार का भूगोल, रामायण आरण्य काण्ड, प्रश्नार्णव खगोलविद्या (गुजराती), शिशुपालवध, लण्डार ना काल्पनिक सम्वादो, जापान नी केलवणी पद्धति, पदार्थ विज्ञान। पण्डित शिवशंकर शर्म्मा काव्यतीर्थ, गुरुकुल, कांगड़ी, हरद्वार-अलौकिकमाला, श्रीकृष्ण मीमांसा, चतुर्दश भुवन।

(८) बा० शिवप्रसाद गुप्त के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए अर्थात् (क) यदि कोई प्रश्न या प्रस्ताव प्रबन्धकारिणी समिति साधारण सभा अथवा प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा निर्मित अन्य किसी सभा में उपस्थित किया जाय और उस पर सम्मति भी ली जाय पर सम्मति उस प्रश्न या प्रस्ताव के विरुद्ध आवे तो ऐसी अवस्था में उस प्रश्न या प्रस्ताव का उल्लेख उस दिन के कार्य विवरण में आना आवश्यक रहे। (ख) सब सभासदों को चाहे वे प्रबन्धकारिणी समिति के सभासद हों या नहीं, सभा के कुल लिखित पत्रों के देखने तथा लिपि लेने और सभा के कुल छपे हुए पत्रों को देखने तथा खरीदने का अधिकार रहे (ग) पत्रों को देखने के लिये कार्यालय को सूचना देनी पड़ेगी और कार्यालय के निरीक्षक उस पत्र को दिखलाने के लिये दो दिन की मोहलत मांग सकते हैं। पर यह मोहलत का नियम वर्ष के भीतर के पत्रों के लिये न होगा (घ) हस्तलिखित पत्रों की लिपि सब सभासदों को मिल सकती है पर मंत्री विशेष कार्य के भार से यह कह सकते हैं कि कार्यालय में विशेष कार्य होने से लिपि नहीं दे सकते। ऐसी अवस्था में लिपि लेने वाले को स्वयम् वा अपने आदमी अथवा मंत्री के द्वारा (मंत्री के मांगे व्यय पर) लिपि लेने का पूर्ण अधिकार होगा। ऐसी लिपि अथवा सभा के पत्रों के देखने के लिये किसी व्यक्ति विशेष अथवा प्रबन्धकारिणी समिति की आज्ञा की आवश्यकता नहीं है (ङ) "सभा के वैतनिक कार्यकर्ता चाहे वे सभासद हों अथवा न हों प्रबन्धकारिणी समिति अथवा साधारण सभा के निश्चयों पर आक्षेप नहीं कर सकते और इस सभा का कोई सभासद कार्यकर्त्ता वा प्रबन्धकर्त्ता (वैतनिक और अवैतनिक) सभा के किसी कार्य या निश्चय के विरुद्ध सभा के बाहर उस समय तक आन्दोलन नहीं कर सकता जब तक कि वह सभा से सम्बन्ध रक्खे, यह नियम निकाल दिया जाय (च) साधारण सभा की सूचना कार्यविवरण के सहित सभा होने के कम से कम ७ दिन पूर्व नगरस्थ और बाहरी सब सभासदों को दी जाय। यदि सम्भव हो तो यह सूचना पत्रिका द्वारा दी जाय पर विशेष अवस्था में जब पत्रिका न निकल सकती हो तो वह अलग पत्र द्वारा भेजी जाय।

अनेक वाद विवाद के उपरान्त अन्त में यह निश्चित हुआ कि (क) इस सम्बन्ध में प्रबन्धकारिणी समिति जो निश्चित कर चुकी है उससे यह सभा सहमत है (ख) यह स्वीकार किया जाय और इसके अन्त में ये शब्द और जोड़ दिए जांय अर्थात् "परन्तु उन्हें इनके छापने छपवाने वा सभासदों के अतिरिक्त अन्य किसी को दिखलाने का अधिकार उस समय तक न होगा जब तक कि वे इस सभा से सम्बंध रक्खें" (ग) निश्चय हुआ कि मंत्री को इसकी सूचना देने पर वे उन्हें पन्द्रह दिन के भीतर दिखला दिए जायंगे पर जो पत्र आगामी सभा के कार्यविवरण से सम्बन्ध रखता हो वह अधिक से अधिक दो दिन में दिखला दिया जायगा (घ) यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ (ङ) यह नियम निकाल दिया जाय (च) इसकी सूचना स्थानीय सभासदों को कार्यविवरण के सहित दीजाया करे, बाहरी सभासदों की सूचना के लिये पत्रिका में केवल यह छपा करे कि साधारण अधिवे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शन अमुक दिन हुआ करता है और यदि किसी अधिवेशन में कोई असाधारण कार्य उपस्थित होने वाला हो तो उसकी सूचना भी पत्रिका में छाप दी जाय।

(१०) बा० गौरीशंकर प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि इधर उन्हें निज के कार्य से इतना अवकाश नहीं मिलता कि वे प्रति दिन सभा में आ सकें अतः उन्हें दो मास की छुट्टी दीजाय और उनके स्थान पर इतने दिनों तक मंत्री का कार्य करने के लिये पण्डित मानिकलाल जोशी नियत किए जांय।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(११) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी समिति।

बृहस्पतिवार ता० १५ जून १९११ सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित राम नारायण मिश्र बी० ए० सभापति, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बा० जुगल किशोर, बा० शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा और बा० बेणीप्रसाद।

(१) गत अधिवेशन (ता० २० मई १९११) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) बलिया के सरस्वतीभवन का ३१ मई १९११ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति अपने पुस्तकालय के लिये अर्द्धमूल्य पर मांगी थी।

निश्चय हुआ कि ये उन्हें अर्द्धमूल्य पर दी जांय।

(३) बा० राजेन्द्र लाल का १५ मई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा इस बात का उद्योग करे कि काशी से प्रकाशित होने वाले सब समाचारपत्रों पर भारतेन्दु सम्वत् छपा करे।

निश्चय हुआ कि इसके लिये उद्योग किया जाय।

(४) बा० गोपालदास का यह प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया कि समिति ने गत अधिवेशन में जो उनके वेतन में ५) रु० की वृद्धि की थी वह थोड़ी थी अतः इस पर पुनः विचार किया जाय।

निश्चय हुआ कि उनके मासिक वेतन में १ मई १९११ से ५) रु० के स्थान पर १०) दस रुपये की वृद्धि की जाय।

(५) पण्डित गोविन्दाचार्य का जेष्ठ कृष्ण ७ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि (क) नवीन सभासदों के चुनाव में जितना समय लगता है वह बहुत अधिक है अतः उसकी अवधि घटाई जाय (ख) नृपतिगण के अतिरिक्त अन्य सज्जन भी सभा के संरक्षक चुने जांय (ग) नियमावली में उपदेशकों के नियम और अधिकार बना दिए जांय (घ) प्रत्येक स्थान में सभा के प्रतिनिधि नियत किए जांय (च) सभासदों की संख्या बढ़ाने और सभा के लिये आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिये अन्य उपदेशक भी नियत किए जांय।

निश्चय हुआ कि (क-ग) नियमों के संशोधन के समय इन प्रस्तावों पर ध्यान रक्खा जाय (घ) मंत्री से प्रार्थना की जाय कि वे आगामी अधिवेशन में यह प्रस्ताव उपस्थित करें कि किन किन सज्जनों को प्रतिनिधि नियत करना चाहिए और प्रतिनिधियों के अधिकार और कर्त्तव्य क्या होने चाहिएं। (च) सभा की आर्थिक अवस्था सुधरने के उपरान्त इस विषय पर विचार किया जा सकता है।

(६) ब्यावर के पण्डित पूनमचन्द तनसुख वैद्य का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे सभा द्वारा "वर्तमान शिक्षाप्रणाली" पर चार पांच फ़र्मों का सर्वोत्तम निबन्ध लिखने वाले को ५०) रु० का पुरस्कार दिया चाहते हैं और इस निबन्ध को वे ही छपवावेंगे।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय, इस लेख के भेजने की अवधि १ जनवरी १९१२ तक नियत की जाय और पारितोषिक का रुपया आने पर सभा की ओर से इस सम्बन्ध में विज्ञापन दे दिया जाय।

(७) स्त्रियों के रोगों के सम्बन्ध में सब कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि सब कमेटी की सम्मति के अनुसार इसके लिये पण्डित श्रीलाल उपाध्याय को पदक दिया जाय।

(८) बा० गौरी शंकर प्रसाद का यह प्रस्ताव उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थित किया गया कि सभा का एक डेप्युटेशन काशी नरेश की सेवा में भेजा जाय और वह महाराज से प्रार्थना करे कि वे अपने राज्य में नागरी अक्षरों के प्रचार की आज्ञा प्रदान करें और राज्य का गजट भी नागरी में ही प्रकाशित किये जाने की आज्ञा दें।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और निम्न लिखित सज्जनों का एक डेप्युटेशन महाराज की सेवा में भेजा जाय अर्थात् बा० गोविन्द दास, बा० भगवानदास एम० ए०, बा० मोतीचन्द, पण्डित रमा शंकर मिश्र एम० ए०, बा० जुगलकिशोर, पण्डित राम नारायण मिश्र बी० ए०, महामहोपाध्याय पण्डित शिव कुमार शास्त्री, पण्डित रामचन्द्र नायक कालिया, गोस्वामी रामपुरी और सभा के मंत्री।

(९) हिन्दी कोश कार्यालय के सम्बन्ध में निरीक्षक की मई १९११ की रिपोर्ट उपस्थित की गई और स्वीकृत हुई।

(१०) हिन्दी कोश का कार्य अधिक सन्तोषजनक रीति पर चलाने के लिये एक कोश प्रबन्धकर्तृ समिति नियत किए जाने के सम्बन्ध में सब कमेटी की रिपोर्ट बा० श्यामसुन्दर दास के ३० मई १९११ के पत्र और १२ जून १९११ के तारके सहित उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि एक कोश प्रबन्धकर्तृ समिति बनाई जाय जिसके १५ सभासद हों और जिसको प्रबन्ध में और चन्दा एकत्रित करने के विषय में पूरा अधिकार हो परन्तु सम्पादन कार्य में यह कमेटी सम्पादक को स्वतंत्र रक्खेगी और सम्पादक से इस कमेटी का जो सम्बन्ध रहेगा उसको वह स्वयं निश्चित करेगी। विवादग्रस्त विषयों पर सम्पादन के सम्बन्ध में भी इस कमेटी की सम्मति अन्तिम होगी। निम्नलिखित सज्जन इस कमेटी के सभासद चुने जांय अर्थात पण्डित रमाशंकर मिश्र एम० ए०, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स०, मिस्टर नार्मन, लाला छोटेलाल, बा० भगवान दास एम० ए० पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बा० गौरीशंकर प्रसाद बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित सर्यूनारायण त्रिपाठी, और सभा के मंत्री। कमेटी के सभासदों की संख्या में जो न्यूनता है उसको वह कमेटी स्वयम् पूरा कर लेगी और वह अपना सभापति और मंत्री भी स्वयम् चुन लेगी। सम्पादन कार्य से बा० श्यामसुन्दर दास जी का इस्तीफ़ा इस कमेटी के पास भेज दिया जाय।

(११) हिन्दी कोश में ब और व वाले शब्दों को ब के अन्तर्गत रखने तथा अनुस्वार और पञ्चम वर्ण के प्रयोग के विषय में कोश की बड़ी कमेटी के सभ्यों की सम्मतियां उपस्थित की गईं।

निश्चय हुआ कि ये कोशप्रबंधकर्तृ कमेटी के पास भेज दी जांय।

(१२) इण्डियन प्रेस का ११ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि भारतमित्र के ज्येष्ठ शुक्ल १४ के अंक में "नागरी प्रचारिणी सभा और बाबू श्याम सुन्दर दास" शीर्षक जो लेख छपा है उससे उनको बड़ा दुःख हुआ है उन्होंने कोश की छपाई का कार्य बा० श्यामसुन्दर दास के बहुत आग्रह करने पर लिया था और यदि सभा चाहे तो वे इस सम्बन्ध में सभा का प्रतिज्ञापत्र २०००) रु० के साथ सहर्ष लौटा देंगे

निश्चय हुआ कि यह पत्र भी कोशप्रबन्धकर्तृ कमेटी के पास भेज दिया जाय।

(१३) बा० बंशीधर वैश्य का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि (क) नागरी प्रचारिणी पत्रिका में हिन्दी की उत्तम पुस्तकों की समालोचना छपा करे (ख) सभा के वार्षिक विवरण में उत्तम पुस्तकों की नामावली के साथ ही साथ उनके मूल्य और मिलने के पते भी छपा करें (ग) सभा रेलवे बोर्ड से इस बात के लिये उद्योग करे कि माल के नियम और किराये के नकशे सब स्टेशनों पर हिन्दी में भी लगवाए जांय।

निश्चय हुआ कि (क) पत्रिका के सम्पादक का ध्यान इस ओर दिलाया जाय (ख और ग) ये प्रस्ताव स्वीकार किए जांय।

(१४) पण्डित काशीप्रसाद तिवारी का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया कि उन्हें आठ दिन की बीमारी का वेतन दिया जाय। निश्चय हुआ कि उन्हें इसका अर्द्ध वेतन दिया जाय।

(१५) बाबू कन्हैया लाल का २४ मई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पुस्तकालय की सूची को अक्षरक्रम से ठीक करने के लिये सभा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो एक मास का समय नियत किया है वह बहुत थोड़ा है। इसके लिये उन्हें तीन मास का समय दिया जाय अथवा इस कार्य में उनको सहायता के लिये उन्हें एक मनुष्य दिया जाय।

निश्चय हुआ कि इसके लिये उन्हें तीन मास का समय दिया जाय।

(१६) मु० देवी प्रसाद मुन्सिफ़ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने "युवती योग्यता" की ५० प्रतियां अर्धमूल्य पर मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि उन्हें इसकी पचास प्रतियां अर्ध्द मूल्य पर दी जांय।

(१७) पंडित हृदय नारायण का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्हों ने "नागरी और उर्दू" का एक लेख भेजा था और लिखा था कि सभा इसे सब समाचार पत्रों में छपवा दे।

निश्चय हुआ कि इसे वे स्वयम् समाचारपत्रों में छपवाने का उद्योग करें।

(१८) बाबू गंगा प्रसाद गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया कि वे सभा के कार्य के लिये सन्ध्या के दो घंटे का समय प्रति दिन विना कुछ पुरस्कार लिये हुए दे सकते हैं।

निश्चय हुआ कि इसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे कृपापूर्वक प्रेस के प्रूफ देखने का कार्य्य अपने ऊपर लेलें।

(१९) पंडित निक्का मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि हिन्दो शार्ट हैंड की पुस्तक तयार करने के लिये उन्हें सभा से अब तक कोई पुरस्कार नहीं मिला है।

पंडित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पंडित निक्का मिश्र को इस पुस्तक के लिये गत वर्ष का रेडिचे पदक दिया जाय।

(२०) पंडित देवीदत्त मिश्र का यह प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया कि उन्हें चार मास के लिये बिना वेतन की छुट्टी दी जाय।

निश्चय हुआ कि उन्हें एक मास की छुट्टी बिना वेतन के उस अवस्था में दी जा सकती है कि वे अपने स्थान पर कार्य करने के लिये किसी योग्य पुरुष को दें।

(२१) पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने पूछा था कि (क) सभा ने हिन्दी कोश के कार्य में सहायता और सम्मति देने के लिये जो बड़ी कमेटी बनाई थी उससे किन २ विषयों में परामर्श लिया गया और भविष्यत में लिया जायगा (ख) यदि इस कमेटी से प्रबन्धकारिणी समिति कोश सम्बन्धी कार्यों में परामर्श नहीं लेती तो यह कमेटी समिति के कार्यों को अपने स्वीकृत कार्य कैसे समझ सकती है।

निश्चय हुआ कि (क) बड़ी कमेटी सम्पादन कार्य में सहायता और सम्मति देने के लिये बनाई गई थी अतः उससे किन किन विषयों पर सम्मति ली गई इस का उत्तर सम्पादक दे सकते हैं (ख) प्रबन्धकारिणी समिति का इस कमेटी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(२२) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशंकर प्रसाद

मंत्री।

सूचना।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का साधारण मासिक अधिवेशन हर अंग्रेजी महीने के अन्तिम शनिवार को सन्ध्या के छ बजे सभा भवन में हुआ करता है! इसमें सब सभासदों को सम्मिलित होना चाहिए। जूलाई के अंत में जो अधिवेशन होगा उसमें अन्य कार्यों के अतिरिक्त यही प्रस्ताव भी उपस्थित किया जायगा कि भविष्यत में एक उपमंत्री के स्थान पर सभा के दो उपमंत्री चुने जाया करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की बनाई दवाएं २६ वर्ष से सारे हिन्दुस्थान में प्रचलित है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेङ्कटेश्वर समाचार—अब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये !

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २। १ दवाइयां की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेंट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे ।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

छै प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

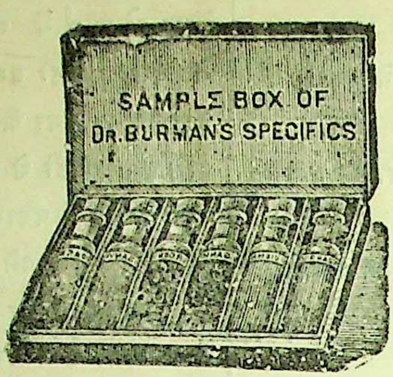

मूल्य १॥) डा० म० ।)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर बैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेन्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़ खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमे की दवा—तत्काल दमे को दवाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्णपटेदर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते है:-

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से—आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाही गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं है।

लाला सुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताब दिवरा जिला सारनसे—आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से—छैःमशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत१॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बखस पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाईगईहै।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से-दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि "रविमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

डा: एस. के. बर्मन ५।६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित सं०१८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचौलित है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414.

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १६ | जुलाई १९११ । | भारतेन्दु संवत् २८ | संख्या १

हिन्दी गीत ।

[बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त-रचित ।]

रागिनी काफी-ताल दीपचन्दी ।

करु, मन ! हिन्दीको गुन गान ।
जाकी धुनि सुनि, औ महिमा गुनि, मोहत, छोहत प्रान ॥
सूर, तुलसि, केसव, बिहारि तस हरीचन्द सज्ञान ।
भक्तियुक्त काव्याञ्जलि दै जेहिं, लहे परमपद, मान ॥ करु०
भारतभुविवासी जनरासी, राजा, रंक, किसान ।
जेहिं अपनावतु हैं, क्रम क्रमते, जेते छुद्र, महान ॥ करु०
मन ! तू होहि निछावर वापै, धरु वाहीको ध्यान ।
सेवा ताहीकी बहु भांतिन करु अविरत अम्लान ॥ करु०
आलस तजि उठु ह्वै सजीव अरु चिन्तासील सयान ।
बहुत काल बीतो निद्रामहँ, अब निजता पहिचान ॥ करु०
इत उत भटकत फिरत देसमहँ केते मूढ़ अजान ।
अस प्रबन्ध रचु जाते पावैं वे हिन्दीको ज्ञान ॥ करु०
अंगरेजी, फारसी, संस्कृतको बहु रस करु पान ।
तिनसों सार विचार-रूप गहु, अलि औ सुमन प्रमान ॥ करु०
तत्पर ह्वै सँवारु बहु विधिसों हिन्दी सब गुन-खान ।
राजकाज, दरबार, देसमहँ जाते पावै मान ॥ करु०
एती सरल, सुबोध, भावमयि औ पूरित कल्यान ।
आर्यजातिकी सिच्छादायिनि भाषा नाहीं आन ॥ करु०
याही भारतको सुख दैहै औ करिहै उत्थान ।
निहचय राखु, राष्ट्रभाषावत, गहिहैं सबै समान ॥ करु०

उर्दू के लिये विलाप ।

पैसा अखबार में मुन्शी हसन अफ़ज़ल साहब ज्वायंट सेक्रेटरी आल इंडिया उर्दू कानफ़रेंस बदाऊं ने 'उर्दू के मिटा देने और हिन्दी के रवाज देने के मुतअल्लिक़ कोशिशें' देख कर बड़ा विलाप किया है। समझ में नहीं आता कि ये कोशिशें मौलवी साहब को किस दिव्य दृष्टि से दिखाई पड़ीं। वैसे तो फिर हिंदी लोगों की स्वाभाविक भाषा है ही, वे उसको लिखेंगे, पढ़ेंगे और बोलेंगे। उसका साहित्य नए सांचे में ढल रहा है इससे पढ़े लिखे आदमियों के हाथ में हिन्दी पत्र और पुस्तकें दिखाई ही पड़ेंगी। यदि इतनी ही बात से आप इतने व्याकुल हुए हैं तब तो लाचारी है।

लिंग्विस्टिक सर्वे का जिक्र करते हुए मौलवी साहब फरमाते हैं कि "मेम्बरान कमीशन ने निहायत साफ़ और सरीह तौर पर यह बता दिया है कि मुल्क में मुख्तलिफ़ लब व लहजा व मुख्तलिफ़ ज़बानें बोली व समझी जाती हैं लेकिन वह सब मुक़ामी हैसियत रखती हैं। और बरखिलाफ़ इसके एक जबान है जो तमाम ज़बानों का मजमूआ है जिसका नाम उर्दू है और जो हर हिस्सा मुल्क में बोली और समझी जाती है और उसी वक्त से गोया गवर्न्मेंट ने उर्दू को मुल्क की लिंगुआ फ्रांका तसलीम करके सिर्फ़ उसका नाम बदल दिया। यानी बजाये उर्दू के वह लफ्ज़ हिन्दुस्तानी से मौसूम हुई जो बहरतौर मुनासिब है"। मौलवी साहब को चाहिए था कि लिंग्विस्टिक रिपोर्ट को ज़रा गौर से पढ़ते। उसमें हिन्दुस्तानी और उर्दू एक नहीं मानी गई है। सुनिए, हिन्दु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तानी खड़ी बोली का नाम है जो दिल्ली मेरठ और रुहेलखंड आदि स्थानों में बोली जाती है। आप की उर्दू ए मुअल्ला का नाम नहीं है। डाक्टर ग्रियर्सन ने साफ लिखा है:— I use "Western Hindi" to connote the group of dialects of which Braj Bhasha and Hindostani are the best known अर्थात् व्रजभाषा और हिन्दुस्तानी पश्चिमी हिन्दी की प्रधान बोलियां हैं। अब इस हिंदुस्तानी वा खड़ी बोली के डाक्टर साहब दो रूप मानते हैं एक हिंदी दूसरा उर्दू। देखिए वे क्या कहते हैं:—Hindostani is primarily the language of the Northern Doab and is also the lingua franca of India capable of being written in both Persian and Devanagari characters, and without purism, avoiding alike the excessive use of either Persian or Sanskrit words. The name Urdu can be confined to that special variety of Hindostani in which Persian words are of frequent occurence; and similarly Hindi can be confined to the form of Hindostani in which Sanskrit words abound. अब इन दो रूपों में से किसी के साहित्य को रिपोर्ट में प्रधानता नहीं दी गई है दोनों समकक्ष माने गए हैं। क्योंकि आगे चल कर लिखा है—Like Hindi prose it (Urdu prose) was due to English influence............Sience then both have had a prosperous course," अर्थात् उर्दू गद्य भी हिंदी की भांति अंग्रेजों की उत्तेजना से उत्पन्न हुआ। तब से दोनों बराबर वृद्धि को प्राप्त होते आए"। ऊपर के कथन से स्पष्ट है कि गवर्न्मेंट ने हिंदुस्तानी वा खड़ी हिन्दी को lingua franca (व्यापक भाषा) कहा है उर्दू को नहीं जिस में अरबी के अल्फ़ाज ठूसे रहते हैं और जो केवल फारसी अक्षरों में लिखी जाती है। यहां पर यह बतला देना आवश्यक है कि उर्दू और हिंदी का पृथक विचार इस रिपोर्ट में केवल साहित्य की दृष्टि से हुआ है। क्योंकि वास्तव में तो उर्दू कोई पृथक भाषा ही नहीं है। अब ध्यान देने की बात है कि इस अरबी मिली हुई फ़ारसी अक्षरों में लिखी जानेवाली उर्दू को न कहीं lingua franca (व्यापक भाषा) कहा है और न उसके साहित्य को देशप्रचलित बताया है। पर संस्कृत मिली हुई लिखने पढ़ने की हिन्दी के विषय में साफ़ लिखा है कि:—"It (Hindi) gave a lingua franca to the Hindus. It enabled men of widely different provinces to converse with each other. It was easily intelligible everywhere, for its grammar was that of the language which every Hindu had to use in his business relations, and its vocabulary was the common property of all the Sanskritic languages of India." (अर्थात्) यह हिंदुओं की एक सर्वमान्य भाषा lingua franca हुई। इसके द्वारा दूरस्थ भिन्न भिन्न प्रान्तों के लोग आपस में बातचीत करने में समर्थ हुए। यह हरजगह सुगमता से समझी जाने लगी क्योंकि इसका व्याकरण उस भाषा का है जिसे प्रत्येक हिंदू नित्य के काम काज में व्यवहार करता है और इसकी शब्दावली वही है जो संस्कृत से निकली हुई सब भारतीय भाषाओं की समान सम्पत्ति है"। इस बात को दुनिया जानती है कि भारतवर्ष की सब भाषाएँ संस्कृत के सहारे पर चलती हैं, एक उर्दू ही ऐसी है जो किसी के मेल में नहीं है और अरबी फारसी पर फ़ख्र करती है। ऐसी भाषा कहीं देशव्यापिनी हो सकती है ?

सरकार की दुहाई दे कर फिर मौलवी साहब इस प्रकार आगे बढ़ते हैं:—"हिन्दोस्तान, हिन्द और हिन्दी की तरकीब की जानिब अगर थोड़ी सी तवज्जह की जाय तो हमारे बाज बिरादरान वतन जो पुराने शगून पर अपनी नाक कटवाने पर मुस्तैद नज़र आते हैं और लफ़ज़ उर्दू को सिर्फ इसलिए मिटाकर हिन्दी रायज करनी चाहते हैं कि इसने उमूमियत के साथ मुसलमानों से खुसूसियत पैदा करली है तो घबड़ा कर सर ब गरेबां होंगे। क्योंकि यह कोई भी साबित न कर सकेगा कि इस बर्रे आज़म का जो एशिया का जनूबतराँ हिस्सा है मौजूदा नाम यानी हिन्द या हिन्दोस्तान यूनानियों, ईरानियों, और अरबों का दिया हुआ नहीं है और हिन्दी की 'ये' (ی) निस्बती नहीं है। पस जो लोग अपनी कोताहचश्मी से अजनबियों और उनकी तमाम चीज़ों से नफ़रत करनी जरूरी जानते हैं उनके लिए यह बात थोड़ी शर्मनाक नहीं है कि जिस नाम को धींगाधींगी के साथ रवाज दिया जा रहा है उसके ज़र्रा जर्रा से गैरों की बू आ रही है"। जिस नाम को आप यूनानियों और अरबों का दिया हुआ बतलाते हैं उसके उद्गम तक आप ऐसों की पहुंच नहीं हो सकती। वह शब्द सिन्ध शब्द का अपभ्रंश है जो पंजाब की सब से पश्चिमी नदी और उसके तटस्थ देश के लिए उस समय व्यवहृत होता था, जब भारतवर्ष, अफ़गानिस्तान, फारस, तुर्किस्तान आदि देशों में सर्वत्र आर्य्यों की आबादी थी। फ़ारस के कुरुश (कैखुसरो) और दारयुश (दारा पहिला) नामक क्षत्रियों ने इस सिन्धु प्रदेश को जिसका उच्चारण पुरानी पारसी में हिंद था अपने साम्राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिलाया। इसी नाम को यूनानियों और अरबों ने ग्रहण किया। अतएव अरबों का दिया हुआ यह नाम नहीं है। हिन्दी की 'ई' को आप 'ये' निस्वती बतलाते हैं। क्या करें अपनी भाषा के शब्दों की क्रमागत बनावट आदि का ज्ञान तो उर्दूवालों को कभी हो नहीं सकता, क्योंकि संस्कृत और प्राकृत की छाया तक उन पर नहीं पड़ती। अतः अज्ञानता के घोर अंधकार में पड़े हुए इन लोगों को यह खबर कहां से हो सकती है कि हिन्दी की 'ई' ईय प्रत्यय है। इन विचारों को तो स्वदेशी, विदेशी मराठी, गुजराती, भारतवासी, आदि सारे शब्दों में 'ये' निस्वती दिखाई देती होगी। भाषातत्व और इतिहास के सम्बन्ध में केवल उर्दू जानने वालों को मुँह खोलने का अधिकार नहीं है। इसी से मैं पहिले लिख चुका हूं कि देश में उर्दू फैलाना मानों मूर्खता फैलाना है। जो लोग उर्दू उर्दू चिल्लाते हैं उन्हें दिन में ताकने की कोशिश करनी चाहिए।

इसके उपरान्त मौलवी साहब कहते हैं कि "हम इस अरसे में मुल्क के अकसर इक़ताअ में पहुंचे हैं और हमने बच्चों और जवानों और बूढ़ों में उर्दू के मिटा देने के मुतअल्लिक़ एकसाँ जोश पाया है और बरखिलाफ इसके मुसलमानों को गाफ़िल देखा है"। न जाने हज़रत किस जोश में घूमने निकले थे कि इस जोश का सामना करना पड़ा। यहाँ पर तो आप अपनी बात ही से पकड़े गए। आपने यह साफ़ तसलीम किया कि उर्दू एक वर्ग विशेष की अर्थात् पढ़े लिखे मुसलमानों की भाषा है नहीं तो आपको सिर्फ़ मुसलमानों ही की ग़फ़लत पर तर्स न आता। इतना जातीय दुःख प्रकाश करके मौलवी साहब "अपने क़ौल की ताईद में तमाम कोशिशों को नज़र अंदाज़ करके सिर्फ़ मर्दुम शुमारी के हालात का ज़िक्र करते हैं कि हिन्दू मुहतमिमान व हिन्दू सुपरिंटेंडेंटान और हिन्दू गिरदावरान ने जो मुसलमानों से बहुत ज्यादा थे शुमारकुनिंदे भी हिन्दू मुकर्रर किए थे। नक़्शा आम में दीदा व दानिस्ता ग़लतियां कराई गईं, जहां तक ज़ाती असरों से काम लिया जा सकता था लिया गया और जो खुफिया व ऐलानिया कोशिशें की जा सकती थीं की गईं और इस तरह से मुसलमानों की ज़बान हिन्दी लिखवाई गई। यूरोपियन अफ़सरान मर्दुमशुमारी को गलत बावर करा कर मुक़ामी इन्दराजात के मुतअल्लिक़ खास सर्कुलर जारी कराए"। सच पूछिए तो ऊपर मौलवी साहब ने उन सब कार्रवाइयों का खाका खींचा है जो मुसलमानों की ओर से हिन्दी को दबाने के लिए की गईं। मर्दुम शुमारी के समय उर्दू को प्रधानता देने के लिए जो जो अनुचित और घृणित कार्रवाइयां की गईं वे किसी से छिपी नहीं हैं। गवर्न्मेंट तक को इसकी खबर है। इसीसे समय समय पर भिन्न भिन्न सर्कुलर निकालने पड़े।

उस सर्क्युलर का उल्लेख करते हुए जो भाषासम्बन्धी कुछ भ्रम दूर करने के अभिप्राय से निकाला गया था आप कहते हैं "सरकारी हुक्म से तो हमको यह मालूम हुआ मगर मुशाहिदात इसके बिलकुल बरअक्स हैं और यह शिकायत आलमगीर है कि आम कार व बारी व अदालती व मादरी ज़बान उर्दू है लेकिन मर्दुमशुमारी के वक्त ग़लत इन्दराजात किए गए और हिन्दी लिखी गई जो यहां के लिए न कोई ज़बान है और न जिसका कोई कैरेक्टर है"।

यह बात प्रसिद्ध है कि पिछली भी जितनी मनुष्य गणनाएँ हुई हैं उन सब में बहुतेरे स्थानों में हिंदी के स्थान पर उर्दू भाषा लिखी गई है। पर वह भ्रम के कारण था, किंतु इस बार इसमें षड्यंत्र का योग भी हुआ है। इससे हिंदी की संख्या दबाने में इस बार दो शक्तियां काम कर गईं। सब से पहिले मैं उस भ्रम का उल्लेख करता हूं जो बहुत दिनों से होता आया है और इस बार भी हुआ है। भाषा तत्व को न समझने वाले बहुतेरे लोग खड़ी हिंदी बोली को जो दिल्ली, आगरा, मेरठ, आदि स्थानों में बोली जाती है और जिसमें हिंदी का वर्तमान गद्य लिखा जाता है, उर्दू के नाम से पुकारते हैं। ये लोग जिस को 'हम आते हैं' और 'तुम जाते हो' बोलते सुनते हैं उसे उर्दूभाषी समझ लेते हैं। इसका एक इसी बार का ताज़ा उदाहरण लीजिए। यहाँ काशी में उन्नाव के ज़िले के एक पंडित जी रहते हैं जिनकी बोल चाल की भाषा खड़ी हिंदी है। शुमारकुनिंदा साहब जो कि कायस्थ हैं इनके पास आए और इनकी भाषा उर्दू लिख ले गए। संयोग वश उनके सुपरवाइज़र थे बा० गौरीशंकर प्रसाद जी सभा के मंत्री। उन्होंने पूछा कि आपने उनकी भाषा उर्दू क्यों लिखी है वे तो उर्दू एक अक्षर नहीं जानते संस्कृत के पंडित हैं। शुमार कुनिन्दे ने कहा कि "साहब ज़बान तो उनकी शाइस्ता है, वे 'ऐली गैली' नहीं बोलते"। इससे विदित होता है कि तमाम पश्चिमी ज़िलों के लोगों की भाषा जो शुद्ध खड़ी हिन्दी बोलते हैं और अरबी फ़ारसी के अप्रचलित शब्दों से कोसों दूर हैं, उर्दू लिखी गई है। इसी प्रकार कचहरी के अमलों तथा और पढ़े लिखे लोगों की भाषा भी उर्दू लिखी गई है जो कचहरी और दफ्तर में छोड़ कभी घर पर उन अप्रचलित अरबी और फारसी शब्दों का प्रयोग नहीं करते जिनसे उर्दू बनी है। यदि गवर्न्मेंट इसकी जांच करे तो तुरन्त पता लग जायगा।

अब रही षड्चक्र की बात। उर्दूवालों की ओर से जो गुप्त और प्रगट प्रयत्न हिन्दी को दबाने के लिए हुए हैं उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लेख हम इस पत्रिका में करते आए हैं । बदाऊं के मुसलमान लोगों ने जो प्रार्थनापत्र भेजा था कि सर्वसाधारण की भाषा हिन्दी न लिखी जा कर उर्दू लिखी जाय उसे पाठक अभी भूले न होंगे । इसके अतिरिक्त जो जो प्रच्छन्न प्रयत्न जो जो भीतरी कार्रवाइयां हुई हैं उन्हें कोई कहां तक गिना सकता है । कई स्थानों पर घृणित और अनुचित कार्रवाइयों की खबर पा कर अफसरों को कड़े कड़े सर्कुलर और आज्ञा पत्र जारी करने पड़े हैं । उदाहरण के लिए हम झांसी के मुहतमिम साहब का वह सर्कुलर नीचे उद्धृत करते हैं जिस पर मौलवी साहब इतने लाल पीले हुए हैं और अनाप शनाप बक गए हैं :—

इजलास साहब बहादुर मुहतमिम ।
मर्दुम शुमारी । झांसी ।

कई दिन हुए हमने खास हुक्म उर्दू और हिन्दी के इन्दराज की बाबत दिया है । आज हमने सुना है कि शुमार कुनिन्दे अपने आप हुक्म बाबत इंदराज हिंदी व उर्दू नहीं मानते हैं बल्कि जो उनकी पसन्द है उसे दर्ज करते हैं । कोड मर्दुमशुमारी के ममूजिब ऐसे शुमार कुनिन्दा क़ाबिल सज़ा हैं । हुक्म हुआ कि—

अगर शुमारकुनिंदगान ने अपनी किताब में ज़बान उर्दू लिख रक्खी है तो उसको काट कर फ़ौरन हिन्दी दर्ज करें हम इस अम्र की जांच करेंगे कि हमारे हुक्म की तामील ठीक तौर से फ़ौरन की गई है या नहीं । हमको यह मालूम हुआ है कि चन्द गिरदावरान ने अपने शुमारकुनिन्दगान को इस क़िस्म के खत भेजे हैं जिसमें यह हिदायत की है कि बजाए हिन्दी के ज़बान उर्दू हर आदमी के लिए दर्ज करो, क्योंकि यहां ज़बान उर्दू बोली जाती है । अगर हमको यह मालूम होगा कि किसी शख्स ने हमारे हुक्म की तामील नहीं की है तो हम उस पर हुक्म उदूली का मुक़दमा क़ायम करेंगे । इसकी एक नक़ल हर गिरदावर को दी जाय और वह अपने शुमारकुनिन्दगान से दस्तखत उस पर फ़ौरन बनवाले । एक एक नकल इसकी सुपरिंटेंडेंटान को भी दी जाय । फ़क़त ९ मार्च १९११ ।

कवि चन्दन राय ।

चन्दन राय का जन्म विक्रमीय सम्वत् की अठारहवीं शताब्दी में पवायां के पास एक गाँव में हुआ था । पवायां शाहजहांपुर से उत्तर १७ मील पर है और एक छोटी सी रियासत की राजधानी है जो इसी नाम से विख्यात है । सन १८५७ तक यह रियासत जिला बरेली के अन्तर्गत थी पश्चात् को शाहजहांपुर के जिले में मिलाई गई और अब तक शाहजहांपुर के अन्तर्गत है । चन्दन के समय में यहाँ राजा पवायां के पूर्वज ही राज करते थे और यह कवि राजकुमार केशरीसिंह का आश्रित था जिनके नाम से उसने केशरीप्रकाश नामक ग्रन्थ लिखा है ।

कवि ने प्रायः अपने ग्रन्थों में अपने वंश का वर्णन किया है जिससे पता चलता है कि कवि के बाप का नाम धर्मदास पितामह का नाम फ़क़ीरीराय तथा प्रपितामह का नाम भीष्मदास था । "प्राज्ञविलास" नामक ग्रन्थ में कवि ने लिखा है:—

बिधि सों बिधि छित तल रची बेहद्र पुरी पुनीत ।
तहां वंशभूषण भये भीषम उत्तम गीत ॥
तासु तनय गुणगणसदन भयो फकीरी राय ।
सदा भजन भगवन्त को कियो मनो वच काय ॥
धर्मदास तिन के भयो धर्म दास बिनु आस ।
विश्वंभर को भजन नित करत धरे विश्वास ॥
तिन के चन्दन सुत प्रगट भयो देव द्विज दास ।
करि बन्दन गुरु को कियो प्राज्ञविलास प्रकास ॥

इस कवि का सब से पहिला ग्रन्थ जो इसने लिखा है जहां तक हम को पता चलता है "कृष्णकाव्य" है । इसे कवि ने सम्वत् १८१० विक्रम में रचा है । इसके रचे हमारे पास अब तक ६ ग्रन्थ पहुँचे हैं जिनमें "प्राज्ञ विलास" एक दार्शनिक ग्रन्थ है । हिन्दी भाषा में और विशेष कर उस समय जब कवि का प्रादुर्भाव हुआ दर्शन-ग्रन्थों का एक प्रकार से अभाव था । यद्यपि महात्मा दादू कबीर आदि आचार्यों तथा सुन्दरदास आदि कवियों के ग्रन्थ दर्शन विषयक और पद्यमय हैं तो भी उनमें केवल वेदान्त दर्शन मात्र ही की विशेष चर्चा होने से अन्य दर्शनों का बहुत कम परिचय मिलता है । कवि ने "प्राज्ञविलास" में बहुत उत्तम रीति से संस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय नाटक की शैली का अवलम्बन करके समस्त आस्तिक और नास्तिक दर्शनों के विचारों को सर्वदर्शनसंग्रह की तरह दर्शाया है ।

इसका दूसरा ग्रंथ "सीत वसंत" वा चन्द्रावती है । इसमें उसने सीत वसंत की प्रख्यात कहानी को सरल और भावपूर्ण पद्यों में लिखा है । महात्मा तुलसीदास के पीछे केशव के समय से हिन्दी काव्य में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था और कविजन धार्मिक और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन न कर केवल रस और नायिका भेद पर ही कविता करने में इतिकर्तव्यता समझते थे । केशव के पीछे की लिखी बहुत कम पुस्तकें ऐसी मिलती हैं जिनमें किसी कथा को लेकर काव्य किया गया हो । कवि का यह ग्रंथ यह प्रमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

णित करता है कि उस समय लोगों की रुचि ऐसे ग्रंथों की ओर हो चली थी और क्रमबद्ध धार्मिक कथाओं के अतिरिक्त (जैसे कवि का कृष्णकाव्य है) रोचक कथाओं के लिखने की प्रथा उस समय थी।

निम्न लिखित कवि चन्दन के ६ ग्रन्थ हैं जो हम को अब तक प्राप्त हुए हैं।

सं० नाम ग्रंथ	निर्माण काल वि० सम्बत्	विषय
१ सीत बसन्त (चंद्रावती)	—	कथा
२ कृष्ण काव्य	१८१०	श्रीकृष्ण चंद्र का इतिहास जन्म से कंस के मारने तक।
३ केशरीप्रकाश	१८१७	अलंकार
४ प्राज्ञविलास	१८२५	दर्शन
५ काव्याभरण	१८४५	छन्द
६ रसकल्लोलिनी	१८४६	रस वर्णन

यद्यपि हमको केवल यही ग्रन्थ मिले तो भी कविने अनुमानतः भाषा के बीस*पचीस ग्रन्थों को रचा है। इसके कवित्तादि पवायां निवासियों को प्रायः कण्ठ हैं। कवि के वे ग्रंथ जो उसने सम्बत् १८२५ से ४५ तक रचे हम को एक भी नहीं मिले जिससे हमको विश्वास है कि इस के रचे अवश्य बहुत से ग्रंथ होंगे क्योंकि बीस वर्ष का काल कवि ने व्यर्थ न खोया होगा।

यह कवि यद्यपि जाति का भाँट था तो भी बहुत स्वल्प शिक्षा लाभ करने पर भी संस्कृत फारसी का विद्वान था। इसका मत सम्बन्धी क्या विचार था इसका तो ठीक पता बहुत कम चलता है पर यह बहुत बचपन ही से महादेव जी की पूजा बड़ी श्रद्धा और भक्ति से किया करता था। पवायां में एक मन्दिर है जिसमें यह नित्य जल चढ़ाने जाया करता था यहां तक कि घोर वृष्टि तथा अन्य आपत्तियों में भी यह अपने इस कृत्य के किये बिना भोजन नहीं करता था। जिस से यह प्रतीत होता है कि यह शैव था।

यह न केवल भाषा का कवि था किन्तु फारसी का भी अच्छा कवि था। इसने फारसी भाषा की कविता में अपना उपनाम सन्दल रक्खा था जो चन्दन का समानार्थ है। इसने फारसी भाषा में दीवान सन्दल नामक एक ग्रंथ रचा है। इनकी कविता की ख्याति जब लखनऊ के दरबार में पहुंची तब दरबार से कुछ कूटकाव्य चन्दन राय के पास भेजा गया जिसकी व्याख्या चन्दन राय ने बहुत अच्छे प्रकार से की और नवाब इनकी व्याख्या से ऐसे प्रसन्न हुए कि इनको लखनऊ में बुला भेजा। चन्दन राय ने घर छोड़ लखनऊ जाना अस्वीकार किया और पत्र के उत्तर में लखनऊ दरबार को यह दोहा लिख भेजा।

आधी रोटी खरथुआ खारी नोन सँजोग।
चन्दन घर बैठे मिले मानो छप्पन भोग॥

इस पर नवाब लखनऊ ने बलात् लखनऊ में हाज़िर किये जाने की आज्ञा दी। चन्दन तब पवायां छोड़ काशी चले गये और अपनी शेष आयु काशी में व्यतीत की पर लखनऊ जाना स्वीकार नहीं किया।

चंदन को राजा साहेब पवायां के यहा से ३०) मासिक-वृत्ति मिलती थी और इसी से वह अपना भरण पोषण करते थे। यह स्वभाव के बड़े संतोषी और सहिष्णु थे।

शाहजहांपुर के पारसी भाषा के कवि मुंशी एवज़राय मुसर्रत इनके समकालीन और बड़े मित्र थे। कहते हैं कि एक बार मुंशी जी ने कविचंदन के सन्मुख यह पद कहा।
"ब वक्ते लुक्म; .खुर्दन अय मुसर्रत गुफ्त ल्वहायम।
कि रोज़ी मीकुनद अज़हम जुदायारान हमदमरा॥†"
चंदन राय ने तत्क्षण इस पद का उत्तर इस प्रकार दिया।
"कुनद यारान दूरोफ्तादराः यकजा बहम रोज़ी।
लबो दस्तो दहां यकजा शवन्दऽज़लुक्मा खुर्दनहा॥"

इस कवि के वंशधर अब तक पवायां में हैं पर अब इन में विद्या और योग्यता नहीं है और इनकी दशा हीन दीन है। मुझे इस कवि के ग्रंथों की हस्तलिखित लिपियां (जो विशेष कर उर्दू में हैं) मुंशी हरिनारायण जी सदर-कानूनगो शाहजहांपुर से प्राप्त हुई हैं तथा कवि की जीवनी विषय के नोट भी उन्हीं महाशय से प्राप्त हुए हैं। कानूनगो साहेब ने इस कवि के विषय में छान बीन करने के लिये पवायां जाने और विशेष बातों का पता लगाने का कष्ट उठाया जिसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूं।

जगन्मोहन वर्म्मा।

* मुन्शी हरिनारायण जी भूत पूर्व सदर कानूनगो शाहजहांपुर मुझे आपने पत्र २९ जून सन् १९११ में कवि के ग्रन्थों के विषय में लिखते हैं।

"इनकी तसानीफ़ की तादाद सहीह सहीह मालूम नहीं हुई क्योंकि अक्सर किताबें इनकी नहीं मिलीं और कई किताबें मेरे पास और भी थीं मगर खो गईं। मेरे तख़मीना में बीस पचीस किताबें इनकी तसानीफ से होंगी। साकिनान पवायां में से बकसरत लोग ऐसे हैं जिनको चंदन राय के कवित्त वगैरह याद हैं मगर वह सब ज़बानी और मुत्फर्रिक हैं असल किताब नहीं देखी गई।

† मुंशी हरिनारायण लिखते हैं।
"इन अशआर का पता नहीं मिला हरचंद तलाश किये गये"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २४ जून १९११ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) बा० गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव तथा बाबू ठाकुरदास के अनुमोदन पर बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २७ मई १९११) का कार्य विवरण पढ़ागया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्ध कारिणी समिति का तारीख २० मई का कार्य विवरण सूचनार्थ पढ़ागया ।

(४) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुनेगए ।

१ मु० मनोहरलाल, तहसीलदार, मुजफ्फरनगर १॥) २ बाबू दयाराम, मुहरिर्र रजिस्टरी, मुजफ्फरनगर १॥) ३ बा० बटाराम आर्यसमाज मुजफ्फरनगर १॥) ४ चौधरी हरिश्चन्द्र, अहलमद, कलक्टरी, मुजफ्फरनगर १॥) ५ बाबू घसीटूमल, अबूपुरा, मुजफ्फरनगर १॥) ६ बाबू मुरलीधर रईस, जानसठ, जि० मुजफ्फरनगर १॥) ७ बा० चेतराम मुखतार, मुजफ्फरनगर १॥) ८ बा० रामजीदास रईस, जानसठ, जि० मुजफ्फरनगर ३) ९ बा० जयलाल *खजानची, कुवर जगदास प्रसाद, मुजफ्फरनगर* १॥) १० बा० दलीप सिंह मुख़ार, मुजफ्फरनगर १॥) ११ बा० चतुरसिंह, वकील, मुजफ्फरनगर १॥) १२ बा० अनन्तराम मुख़तार, मुजफ्फरनगर १॥) १३ पण्डित कुंजविहारी अवस्थी, पोस्टमास्टर, मुजफ्फरनगर १॥) १४ पण्डित बाबूरामपाठक अध्यापक, हाईस्कूल, मुजफ्फरनगर १॥) १५ पण्डित राम शरण मिश्र, हेडमास्टर, गवर्नमेंट स्कूल, मुजफ्फरनगर १॥) १६ बा० नन्दलाल माथुर, सेकेन्डमास्टर गवर्नमेंट हाईस्कूल, मुजफ्फरनगर, १॥) १७ पण्डित चिरंजीव शर्म्मा, हेड पण्डित, गवर्नमेंट हाई स्कूल, मुजफ्फर नगर १॥) १८ लाला मनोहर लाल रईस, मुजफ्फर नगर १॥) १९ बा० रामचन्द्र गुप्त, बिसौली, मुजफ्फनगर १॥) २० पण्डित श्रीराम शर्मा, कलक्टरी मुजफ्फरनगर १॥) २१ बा० शंभूदयाल, कलक्टरी, मुजफ्फरनगर १॥) २२ बा० मुन्नालाल, अबूपुरा, मुजफ्फरनगर १॥) २३ पण्डित किशनलाल शर्मा मैनेजर, सुपीरियरबंक लिमिटेड मुजफ्फरनगर १॥) २४ लाला खैरातीलाल, अहलमद, कलक्टरी, मुजफ्फरनगर १॥) २५ बा० श्यामलालजी आनरेरी मजिस्ट्रेट मुजफ्फरनगर ३) २६ बा० लुब्बीसिंह उपनाम नवलसिंह रामकटहरा, मुजफ्फरनगर १॥) २७ कुंअर देवीप्रसाद जी रईस मुजफ्फरनगर ५) २८ कुंअर जगदीश प्रसाद जो रईस मुजफ्फर नगर १००) (स्थायी) २९ बा० रामगोपाल सिंह रईस मुजफ्फरनगर १॥) ३० बा० हरनन्दलाल, मुख़ार मुजफ्फरनगर १॥) ३१ लाला खैराती राम मुख़ार. मुजफ्फरनगर १॥) ३२ बा० सन्तलालवकील मुजफ्फरनगर १॥) ३३ बा० हातमसिंह मुख़ार मुजफ्फर नगर १॥) ३४ लाला रामउग्रहलाल श्रीवास्तव्य बी० ए० बी० एस० सी० एल० एल० बी० मुंसिफ मुजफ्फरनगर १॥) ३५ लाला भैरवदयाल वकील-मुजफ्फरनगर ३) ३६ पण्डित राजेन्द्रनाथ हेडमास्टर देवनागरी स्कूल मेरट ३) ३७ बा० चैतन्य लाल भूगोल अध्यापक नानकचन्द स्कूल मेरठ १॥) ३८ बा० ब्रजलाल सिंह ड्राइंग मास्टर नानकचन्द स्कूल मेरट ३) ३९ बा० हरिकेश-अध्यापक नानकचन्द स्कूल मेरट १॥) ४० पण्डित शिवराम दर्वाजा लिवाड़ी महल्ला जाटों का, मेरट १॥) ४१ पण्डित गोविन्द प्रसाद, म्युनीसिपल कमिश्नर,ठठेर वाड़ा, मेरट ५) ४२ पण्डित विहारीलाल मुख़ारआम लाला बुलाकी दास रईस, ठठेर वाड़ा, मेरट १॥) ४३ लाला विश्वम्भर सहाय ठठेर वाड़ा, मेरट ५) ४४ बाबू नन्दराम वैश्य, अध्यापक नानकचन्द हाई स्कूल. मेरट १॥) ४५ पण्डित विश्वम्भर नाथ, ठठेर वाड़ा, मेरट ५) ४६ पण्डित किशोरी लाल, ठठेर वाड़ा, मेरट १॥) ४७ पण्डित राधावल्लभ, ठठेर बाढा मेरट ३) ४८ बाबू बालगोविन्द, हेडक्लार्क नहरगंज, मेरट ३) ४९ बाबू अवधविहारी लाल बी० ए०, एल एल० बी० वकील, मेरट ३) ५० बा० रघुनन्दन प्रसाद मुहाफ़िज दफ़्तर कलक्टरी, मेरट १॥) ५१ ठाकुर वलभद्र सिंह डिपटी कलेक्टर मेरट ५२ मिसेज़ राजनारायण, ठि० मिस्टर राजनारायण साहब एकजिक्यूटिव इञ्जीनियर गेंजेज़ कनाल, मेरट ५) ५३ रायबहादुर पण्डित कन्हैयालाल एसिस्टेण्ट सेशन्स जज मेरट ५) ५४ बा० गुलजारी लाल महल्ला शाहपीर, मेरट १॥) ५५ बा० प्रभूलाल, अमीन तकसीम महल्ला ठठेर बाड़ा, मेरट १॥) ५६ पण्डित रामचन्द्रशर्मा, बुढ़ानादर्वाजा मेरट १॥) ५७ पण्डित शादी राम वर्म्मा-मारल ट्रेनिङ्ग स्कूल-मेरट १॥) ५८ लाला चिरंजी लाल बी० ए० भूपेन्द्र नगर-पटियाला ५) ५९ बाबू माधव लाल-ब्रह्मपुरी फुलवाई-काशी ३) ६० पुरोहित रामसुख वकील-रियासत जुनगा-जि० शिमला १॥) ६१ डाक्टर भुवन चन्द्र पन्थ एल० एम० एस०-हरि निवास-लखनऊ- १॥) ६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित रामप्रसाद मिश्र-यज्ञमन्दिर-तीसराभोईवाड़ा बम्बई १।।) ६३ भवानी शङ्कर शास्त्री सुकठणकर-दिवडक रांचीलाल, चर्नीरोड, गिरगांव बम्बई १।।) ६४ पण्डित किशोरीवल्लभ शर्म्मा आयुर्वेदाचार्य न्यायशास्त्री, दाजी सेठ अग्यारीलाइन, कालबादेवीरोड, बम्बई ३) ६५ श्री रमानाथ शास्त्री साहित्याचार्य्य. अनन्त वाडी, कालबादेवी, चतुर्भुज मुरारजी माला, बंबई ३) ६६ बाबू ललताप्रसाद खन्ना, ठि० लाला मुरलीधर, कारखाना कोल्हू, मुरादाबाद १।।) ६७ पण्डित शिवनाथ मेहता टाइप फौंडर, १६ जगत गंज, काशी १।।) ६८ बाबू निहाल चन्द्र वर्मा, नं० १ नारायणलेन, अफ़ीम चौरास्ता, कलकता १।।) ६९ लाला सालिगराम रईस, मु० खातौली, पो० खातौली, मुजफ्फर नगर १।।) ७० बाबू गोवर्द्धनदास, मुख़ार, मुजफ्फर,नगर १।।) ७१ बाबू बलदेव सहाय रईस, मौ० हैबतपुर, पो० चरथावल, मुजफ्फरपुर १।। ७२ बाबू निहाल सिंह, मुख़ार, मुजफ्फर नगर १।।) ७३ बाबू गंगाप्रसाद रईस-थाना पो० भवन, जि० मुजफ्फरनगर १।।) ७४ बाबू रामसरनदास, पटवारी, सिसौना, जि० मुजफ्फर नगर १।।) ठाकुर रामचन्द्र विद्यार्थी, ठि० ठाकुर जयमल सिंह थानेदार, गुलावठी, जि० बुलन्दशहर १।।) ७६ पण्डित केवलकृष्ण शिकारपुरी, अबूपुरा मुजफ्फर नगर १।।) ७७ सन्त ठाकुरसिंह जी, मीरघाट, ब्रह्मकुटी काशी १।।) ७८ बाबू श्रीराम खत्री, नेपाली खपड़ा, काशी १।।) ७९ पंडा काशीनाथ शर्मा, मौ० लुवाणी, पो० गुप्त काशी, जि० गढ़वाल १।।) ८० बाबू मकसूदन लाल, रानी कुआं, चौक, काशी १।।) ८१ पं० यदुनाथ अवस्थी, पुरवा जि० उन्नाव ३) ८२ पण्डित लक्ष्मापति वाजपेयी वैद्य, रानी कटरा, लखनऊ १।।) ८३ बाबू बालमुकुन्द लाल, टीचर्स ट्रेनिङ्ग कालेज, लखनऊ १।।) ८४ पण्डित कृष्णशास्त्री, संस्कृत अध्यापक, खत्री पाठशाला, लखनऊ १।।) ८५ पण्डित हंसगोपाल वैद्य, पानवाली गली, चौक लखनऊ १।।) ८६ बाबू हंसराज, मोहनलालगंज, जि० लखनऊ २) ८७ बाबू बद्रीनाथ कपूर, इलाहाबाद बंक लि० लखनऊ १।।) ८८ बाबू रतनलाल श्रीवास्तव, ठि० बाबू काशीप्रसाद ओवरसीयर फैजाबाद १।।) ८९ बाबू रामभरोसे, मंत्री, सिटी आर्यसमाज लखनऊ ३) ९० बाबू ज्वालासहाय ऐशबाग का फाटक, लखनऊ १।।) ९१ बाबू बटुक दयाल, मिरजा मण्डी, चौक, लखनऊ १।।) ९२ पण्डित नन्दकुमार चौबे टीचर, हरिश्चन्द्र हाई स्कूल, काशी १।।) ९३ बाबू फेंकूराम, हेडमास्टर, मिडिल स्कूल-केराकत, जि० जौनपुर १।।)

(५) सभासद होने के लिये ३१ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए:-

(६) कलकत्ते के बाबू सिंघीराम पोद्दार (सभासद) का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(७) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं:—संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट-District Gazetteers of Mainpuri, Etawah and Garhwal Vols XXI and XXXIV, Memorandum on some of the results of Indian administrations. बाबू बैजनाथ प्रसाद, बुकसेलर काशी—अकबर बीरबल विनोद । राय बहादुर पंडा बैजनाथ साहब, भंडाराथियासोफ़ी मार्गदर्शक, मुमुक्षु का मार्ग । म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस, Administration Report for 1910 बाबू मांगीलाल गुप्त, छावनी नीमच । आर्य समाज के दशनियमों पर व्याख्यान, आर्यसमाज क्या मानता है और क्या नहीं मानता, भाषापिंगल प्रथम भाग । एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, कलकत्ता Journal and Proceedings Vol VI nos. 10 and 11 memoirs Vol III No. 4 p 249–277 Indian Antiquary for June 1911 andIndex to Vol XXXIX of 1910.

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

प्रबन्ध कारिणी समिति ।

रविवार ता० ९ जूलाई १९११-सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, सभापति, बाबू बलभद्रदास बी०-ए० एल एल० बी०, बाबू जुगल किशोर बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल एल० बी, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू बालमुकुन्द वर्मा बाबू शिवप्रसाद गुप्त, सम्मति भेजने वाले पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०

(१) गत अधिवेशन (ता० १५ जून १९११) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) संयुक्त प्रदेश और ग्वालियर की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा के विषय में सब कमेटी की सम्मति उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि निम्न लिखित बालकों को पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिए जांय अर्थात् संयुक्त प्रदेश की हस्तलिपि परीक्षा मिडिल विभाग ।

१-प्यारेलाल, कक्षा ६, तहसीली स्कूल कोल, ज़िला अलीगढ़ २, भीम सिंह, कक्षा ६. टाउन स्कूल, अल्मोड़ा ३ इकराम अली, कक्षा ५, कर्वी स्कूल, जि० बांदा ४ गौरी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल, कक्षा ६, टाउन स्कूल, एतमादपुर, जि० आगरा ५ राजारामसिंह कक्षा ६, टाउन स्कूल, निजामाबाद, जि० आजमगढ़ ६ नारायण सिंह, कक्षा ६, टाउन स्कूल अल्मोड़ा ७ चेतन सिंह, कक्षा ६, तहसील सैदपुर, गाजीपुर ८ देवराज सिंह, कक्षा ६, टाउन स्कूल, निजामाबाद, जि० आजमगढ़ ९ बद्रीमिश्र, कक्षा ५, टाउन स्कूल निजामाबाद, जि० आजमगढ़ ।

अपर प्राइमरी विभाग ।

१ श्रीमती, कक्षा ३, निसवां स्कूल, तहसील विधूना जि० आगरा २ मूलचन्द्र, कक्षा ४, गढ़र स्कूल, जि० जालौन ३ बलदेवप्रसाद, कक्षा ४, स्कूल तरौंहां, करवी, जि० बांदा ४ इलाहीबख्श, कक्षा ३, तहसीली स्कूल, कानपुर ५ रामदास, कक्षा ४ स्कूल तरौंहा, करवी, जि० बांदा ६ मुरलीधर, कक्षा ३, मडकावेली स्कूल, गुन्नौर, जि० बदायूं ७ रामहित, कक्षा ३, मऊ स्कूल, जि० बांदा ८ रामचन्द्र, कक्षा ४, पाठशाला मदनपुर, त० शिकोहाबाद, जि० मैनपुरी ।

लोअर प्राइमरी विभाग ।

(१) देवदत्त, कक्षा २, अपर प्राइमरी स्कूल, बकेवर, जि० इटावा (२) रामभरोस विद्यार्थी, कक्षा २, टौन स्कूल, कुलपहाड़, जि० हमीरपुर, (३) रामकृष्ण, कक्षा २ स्कूल तरौंहा, कर्वी, जि० बांदा (४) कोदूराम, कक्षा २ स्कूल तरौंहां, कर्वी, जि० बांदा (५) लक्ष्मण सिंह, कक्षा २, जैंती पाठशाला, जि० अल्मोड़ा (६) देवीदयाल, कक्षा २ स्कूल राजपुर, जि० बांदा (७) बद्रीप्रसाद, कक्षा १, ब्रेंच स्कूल, मऊ, जि० बांदा ।

ग्वालियर राज्य ।

मिडिल विभाग ।

(१) प्रेम नारायण, कक्षा १, हिन्दी बर्नाक्युलर स्कूल, उज्जैन (२) गणपति, कक्षा १, हिन्दी बर्नाक्युलर स्कूल, उज्जैन (३) पन्नालाल, कक्षा १, हिन्दी बर्नाक्युलर स्कूल, उज्जैन ।

अपरप्राइमरी विभाग ।

(१) गजराज सिंह, कक्षा ३, सर्विस स्कूल, ग्वालियर (२) मुहम्मद यासीन खां, कक्षा ४, सबलगढ़ स्कूल, जि० नवरघार (३) श्रीनारायण, कक्षा ३, मेहगांव स्कूल, भिण्ड ।

लोअर प्राइमरी विभाग ।

(१) द्वारकाप्रसाद, कक्षा ६, (२) शिवाजी, कक्षा ५, भितरवार पाठशाला, जि० गिर्द (३) गोपीकृष्ण, कक्षा ६, हिन्दी बर्नाक्युलर स्कूल, उज्जैन ।

(३) मंत्री ने सूचना दी कि वर्ष की समाप्ति के कारण इस वर्ष जिन पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी समिति के सभासदों के स्थान खाली हुए हैं उनके अतिरिक्त समिति के अधिवेशनों में उपस्थित न होने और उन में अपनी सम्मति न भेजने के कारण निम्न लिखित सज्जनों के भी स्थान खाली हुए हैं अर्थात् आनरेबलराजा रामपाल सिंह, पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर, बाबू युगलकिशोर अखौरी, बाबू हीरालाल बी० ए०, प्रोफेसर टी० के० गज्जर, महामहोपाध्याय पण्डित शिवकुमार शास्त्री, राय शिवप्रसाद और राव गोपाल दास ।

निश्चय हुआ कि जो जो स्थान इस वर्ष खाली होते हैं उन पर आगामी वर्ष के चुनाव के लिये निम्न लिखित सूची बनाई जाय:—

एक सभापति और दो उपसभापति—पण्डित रमाशङ्कर मिश्र एम० ए०, बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०, बाबू गोविन्ददास, बाबू भगवान दास एम० ए०, पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी, आनरेबल पण्डित मदनमोहन मालवीय पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, पण्डित बदरीनारायण चौधरी ।

एक मंत्री और एक उपमंत्री-पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बा० गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए०, एल० एल० बी०, पंडित कृष्ण राम मेहता बी० एल० एल एल० बी०, बा० बेणीप्रसाद, बा० बालमुकुन्द वर्मा ।

प्रबन्धकारिणी समिति के ८ काशीस्थ सभसाद:-पण्डित रमाशंकर मिश्र एम० ए०, बा० गोविन्ददास, बा० भगवानदास एम० ए०, बा० गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०, बा० बेणीप्रसाद, बा० बालमुकुन्द वर्म्मा, रेव रेण्ड ई० ग्रीव्स, पण्डित माधवप्रसाद पाठक, गोस्वामी रामपुरी, रावगोपाल दास, पण्डित देवीप्रसाद उपाध्याय, पण्डित केशवदेवशास्त्री, बा० बलभद्र दास बी०ए० एल० एल० बी, राय शिवप्रसाद, पण्डित सूर्यनारायण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिपाठी एम० ए०, बा० जयशङ्कर प्रसाद, बा० ब्रजचन्द्र, बा० कन्हैयालाल, बा० बांकेबिहारी लाल, डाक्टर गणेशप्रसाद भार्गव, रायकृष्णजी, पण्डित विजयानन्द तिवारी, बा० भोलानाथ, श्रीरामचन्द्र नायक कालिया, राववैजनाथ दास शाहपुरी, बा० जगन्नाथ दास बी० ए० ।

संयुक्त प्रदेश से २ सभासद्–ठाकुर महादेव सिंह, बा० शिवकुमार सिंह, पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी, पण्डित राधाचरण गोस्वामी, बा० पुरुषोत्तम दास टण्डन, उपाध्याय पण्डित बदरी नारायण चौधरी, पण्डित श्रीधर पाठक, पण्डित वैजनाथ मिश्र, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय ।

बंगाल से एक सभासद्–बा० काशीप्रसाद जायसवाल, पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर, बा० दामोदरदास खण्डेलवाल, बा० यशोदानन्दन अखौरी, बा० हरिकृष्ण जौहर ।

बिहार से एक सभासद्–बा० युगल किशोर अखौरी, पण्डित रामावतार पाण्डेय एम० ए०, राय पूरनचन्द्र, बा० रघुनन्दन प्रसाद बा० देवीप्रसाद खजानची, पण्डित महादेव शरण पांडेय।

मध्यप्रदेश और बरार से १ सभासद्–राय बहादुर बा० हीरालाल बी० ए०, मिस्टर विनायक राव, पं० मुन्नालाल ।

मध्य भारत से एक सभासद्–पं० श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०, पं० गणपत जानकी राम दुबे बी० ए०, ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा, बा० जगन्नाथ प्रसाद, पं० भवानी दत्त जोशी ।

राजपूताने से एक सभासद्–कुं० फ़तहलाल मेहता, मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ़, पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, पं० चन्द्रधर शर्मा बी० ए०, बा० दामोदर दास राठी, राय साहब पं० चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी ।

बम्बई से एक सभासद्–प्रोफ़ेसर टी० के० गज्जर एम० ए०, सेठ खेमराज श्रीकृष्ण दास, पं० तनसुख राम मनसुखराम त्रिपाठी, बा० पन्ना लाल जैन ।

(४) मंत्री ने गतवर्ष के आयव्यय का हिसाब उपस्थित किया ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और सन् १९१०-११ के व्यय के लिये जो बजेट स्वीकृत हुआ है उसमें निम्न लिखित संशोधन किया जायः–

	बजेट	संशोधन
कार्यकर्ताओं का वेतन	८२५)	८७३)
हिन्दी पुस्तकों की खोज	५००)	५०२)
डाक व्यय	३००)	३६४)
फुटकर व्यय	३००)	२१०)

(५) आगामी वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित किए जाने के लिये सन् १९११-१२ का निम्न लिखित बजेट स्वीकृत हुआ ।

आय	व्यय
६३९०)५ गत वर्ष की बचत	११६०) आफ़िस के कार्यकर्त्ताओं का वेतन
२३००)। सभासदों का चन्दा	२९९०) छपाई
१५००) पुस्तकों की बिक्री	१९०) पारितोषिक
५००) गवर्न्मेंएट की सहायता	३६०) पुस्तकालय
१०००) पृथ्वीराजरासो की बिक्री	१२००) पृथ्वीराजरासो
५०) स्थायी कोश	५४०) स्थायी कोश
२०) नागरी प्रचार	५००) हिन्दी पुस्तकों की खोज
१५०) फुटकर	२७७) नागरी प्रचार
७००) राजा साहब भिनगा की सहायता	३००) डाक व्यय
७५) पारितोषिक	३५०) पुस्तकों के लिये पुरस्कार
६००) पुस्तकालय	१५०) फुटकर व्यय
२०) राधाकृष्ण दास स्मारक	११०२५≡)२$\frac{१}{२}$ हिन्दी भाषा का कोश
५०००) हिन्दी भाषा का कोश	१९६।) राधाकृष्ण दास स्मारक
	६०००) बनारस बंक का देना
१९३०५)५	२५२१९।≡)२$\frac{१}{२}$

(६) पण्डित रामनारायण मिश्र ने प्रस्ताव किया कि सभा संयुक्त प्रदेश में हिन्दी हस्तलिपि की परीक्षा लेकर जिस प्रकार प्रति वर्ष बालकों को पारितोषिक देती है उसी प्रकार बालिकाओं की परीक्षा लेकर उन्हें भी पारितोषिक दिया करे। इस पारितोषिक के लिये द्रव्य का प्रबन्ध वे कर देंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि यह धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया जाय।

(७) निश्चय हुआ कि सभा के अठारहवें वर्ष के कार्य विवरण के साथ सन् १९१०-११ के आयव्यय का जो हिसाब छापा जाया वह हिसाब जांचने वालों के हस्ताक्षर सहित छापा जाय।

(८) निश्चय हुआ कि लेखमाला में इस समय जो लेख छप रहा है उसके समाप्त होने पर जब नए लेख का छपना प्रारम्भ हो तो उसके एक फ़ार्म की ५०० प्रतियां अधिक छपवा ली जांय और ग्रन्थमाला के जो नवीन ग्राहक हुए हैं उनके पास वह नमूने के लिये भेजी जाय और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे इसके भी ग्राहक होकर सभा की सहायता करें।

(९) बा० शम्भूनाथ वर्म्मा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि क्या सभा उन कन्याओं की परीक्षा लेकर उनके लेखके लिये कुछ पारितोषिक दे सकती है कि जो अपने घर पर पढ़ती हैं।

निश्चय हुआ कि सभा इस परीक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सकती। वे इस विषय में अपने यहां के डिपटी इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स को लिख सकते हैं।

(१०) लेखमाला के सम्पादन कार्य से बा० शिवप्रसाद गुप्त का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया परन्तु उक्त बाबू साहब ने उसे लौटा लिया।

(११) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई और निश्चय हुआ कि शेष कार्यों के लिये मंगलवार ता० ११ जुलाई को पुनः अधिवेशन हो।

प्रबन्धकारिणी समिति।

मंगलवार ता० ११ जूलाई १९११- सन्ध्या के ५½ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित—पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बा० जुगलकिशोर, बा० गौरीशंकर प्रसाद, पं० माधवप्रसाद पाठक, बा० बालमुकुन्द वर्म्मा, बा० बलभद्र दास, राय गोपाल दास।

(१) पं० सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा का २४ जून को पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने विदेश में रहने के कारण उपमंत्री के पद से इस्तीफ़ा दिया था।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बा० बालमुकुन्द वर्म्मा इस पद पर नियत किए जांय।

(२) बा० बालमुकुन्द वर्म्मा का प्रबन्ध कारिणी समिति से इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और निश्चय हुआ कि उक्त बाबू साहब को उस पर पुनः विचार करने के लिये लिखा जाय।

(३) बा० बाल मुकुन्द वर्म्मा का २१ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि (क) सभा के जो सभ्य चुने जांय उनके नाम एक मास तक लटकाए न जांय (ख) तारीख १० जून के भारत मित्र में बा० शिव प्रसाद गुप्त ने जो लेख लिखा है वह क्या सत्य है (ग) स्वर्गीय पं० दुर्गा प्रसाद मिश्र का चित्र सभाभवन में अभी क्यों नहीं लगा (घ) पत्रिका की एक हेडिंग बनवा ली जाय।

निश्चय हुआ कि (क) नियमों के संशोधन के विषय में अब तक जो प्रस्ताव आए हैं उनके सहित यह विषय आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय (ख) बाबू शिवप्रसाद गुप्त के लेख के लिये सभा उत्तरदात्री नहीं है। इस विषय में कई समाचारपत्रों में सभा की ओर से सूचना भी छपवा दी गई है (ग) इनका चित्र शीघ्र लगवाने का प्रबन्ध किया जाय (घ) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा से प्रार्थना की जाय कि वे इसका नमूना व्यय के अनुमान के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित करें।

(४) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने १७ जून के विहारबन्धु में प्रकाशित बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के लेख के विषय में सभा से अनेक प्रश्न पूछे थे और कई पत्रों की नकल सभा से मांगी थी।

निश्चय हुआ कि बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के लेख से इस सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। जिन पत्रों की नकल वे चाहते हैं उन्हें वे नियमानुसार ले सकते हैं।

(५) मंत्री ने सूचना दी कि इस समय समाचार पत्रों में हिन्दी कोश के विषय में बाबू शिवप्रसाद और बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के जो लेख छपे हैं उनके सम्बन्ध में उन्होंने समाचारपत्रों में इस विषय का निम्नलिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार भेज दिया है कि सभा से इन लेखों से कोई सम्बन्ध नहीं है और इस प्रकार के सब लेखों पर सभा का ध्यान दिलाया जायगा :—

Please publish Kashi Nagari Pracharini Sabha not responsible for Babus Shiva prasad Gupta and Balmakund's letters regarding Dictionary affairs. Also note Bharat Press has no shareholder among members' managing committee. Sabha deplores the insinuations and misstatements contained in editorials and contributions against Sabha. The attention of the Sabha will be drawn to the articles and any steps taken thereon will be communicated.

निश्चय हुआ कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट में इस सम्बन्ध के लेखों का संक्षेप में उत्तर दे दिया जाय ।

(६) कोश कार्यालय के निरीक्षक की जून १८११ की रिपोर्ट सूचनार्थ उपस्थित की गई ।

(७) कोश समिति के १ जुलाई के अधिवेशन का निश्चय नं० १ उपस्थित किया गया जिसमें उस कमेटी ने इन शर्तों पर कार्य करना स्वीकार किया था कि वह कोश के प्रधान सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास जी के अधिकार अथवा कार्य को अपने ऊपर नहीं लेगी बरन् केवल उनकी सहायता करेगी, कोश के सम्पादन का पूर्ण गौरव बाबू श्यामसुन्दर दास जी को ही प्राप्त होगा और इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने का अधिकार भी उन्हीं को होगा । कोश के लिये धन एकत्रित करने का कार्य्य प्रबन्धकारिणी समिति करे और इस कमेटी का नाम कोश समिति रक्खा जाय ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय

(८) कोश के सम्पादन कार्य से बाबू श्यामसुन्दर दास जी का इस्तीफ़ा कोश समिति की इस सम्मति के सहित उपस्थित किया गया कि इस पर प्रबन्धकारिणी समिति को ही निश्चय करना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि बाबू श्यमसुन्दरदास जी से प्रार्थना की जाय कि वे इस पर पुनः विचार कर कृपापूर्वक इसे लौटा लें ।

(९) कोश की छपाई के लिये दो हजार रुपया लौटाने के विषय में इण्डियन प्रेस का १३ जून का पत्र कोश समिति की इस सम्मति के साथ उपस्थित किया गया कि इस पर भी प्रबन्धकारिणी समिति को ही विचार करना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि इस विषय में बा० श्यामसुन्दर दास जी की सम्मति के अनुसार कार्य किया जाय ।

(१०) बा० अमीरसिंह के नवम्बर और दिसम्बर १८१० की बीमारी के वेतन के संबन्ध में बा० श्यामसुन्दर दास की सम्मति उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि बा० श्यामसुन्दरदास जी की सम्मति के अनुसार बा० अमीरसिंह को इन दोनों मास का अर्द्धवेतन दिया जाय ।

(११) वेतन वृद्धि के लिये पण्डित काशीनाथ नायक पालना, सुखनन्दन मिश्र और पण्डित काशी प्रसाद के प्रार्थनापत्र उपस्थित किये गये ।

निश्चय हुआ कि इस समय इन के वेतन में वृद्धि नहीं की जा सकती ।

(१२) महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी का तैलचित्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि इस में क्या क्या त्रुटियां रह गई हैं इस विषय में बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए० से सम्मिति लोजाय और इसका मूल्य भी उन से पूछा जाय ।

(१३) मन्त्री ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि सभा के कार्यालय में कार्य की बड़ी अधिकता होगई है । इस कारण भविष्यत में एक उपमंत्री के स्थान पर सभा के दो उपमंत्री चुने जाया करें ।

निश्चय हुआ कि इस समिति की सम्मति में यह प्रस्ताव स्वीकृत होना चाहिये अतः यह साधारण सभा में स्वीकारार्थ उपस्थित किया जाय ।

(१४) पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि बालिकाओं की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा के लिये वेही नियम रक्खे जांय जो संयुक्त प्रदेश में बालकों की परीक्षा के लिये रक्खे गए हैं पर लड़के इस परीक्षा में सम्मिलित न किए जांय और लड़कों के स्थान पर लड़कियां और इन्स्पेक्टर के स्थान पर इन्स्पेक्ट्रैस परिवर्तन कर दिया जाय ।

(१५) सभा पति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गौरीशंकर प्रसाद
मंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाकृर बर्म्मन की बनाई दवाएं २६ वर्ष से सारे हिन्दुस्थान में प्रचलित हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये !

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ *दवाइयों की परीक्षा करने से* मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेंट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

छै प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

मूल्य १॥) डा० म०।

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर बैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक *बक्स नमूने का बनाया है* इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेन्ट शीशियों में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़ खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

- अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।
- दमे की दवा—तत्काल दमे को दवाती है।
- कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।
- धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण
- जुलाब की गोली —सहज में पेट साफ करती है।
- अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्णपटेदर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं:-

बाब बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से—आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाही गुण भी है बणन करने लायक़ नहीं है।

लाला मुलचन्द, जंवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताव दिवरा जिला सारनसे-आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से—छैः मशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत१॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत वख्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताव में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाईगईहै।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से-

दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक़्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि" रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

स्थापित सं०१८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचैलितहै।

डा: एस. के. बर्म्मन ५. ६. ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत प्रेस काशी में ...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No. A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका ।]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १६ | अगस्त १९११ । | भारतेन्दु संवत् २९ | संख्या २

श्रीहरिश्चन्द्र-जयन्ती ।

गत भाद्रपद शुक्ल सप्तमी तारीख ३१ अगस्त को सायङ्काल के ५½ बजे काशीनागरीप्रचारिणी सभाभवन में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी की जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई। गत साहित्यसम्मेलन की भांति सभा के आगे का भाग सैकड़ों झंडियों से सुशोभित किया गया था। सभा का हाल अशोकपत्रों के बन्दनवार, फूलों के बड़े बड़े गुच्छों, पुष्पमालाओं इत्यादि से अभूतपूर्व रूप से सजाया गया था। सभापति के बैठने के स्थान के ऊपर दीवार से भारतेन्दु जी का एक बहुत बड़ा तैलचित्र लगाया गया था जिसमें रंगबिरंगे फूलों और पत्तियों का आधा फुट चौड़ा चौखटा जड़ा था और ऊपर श्वेत पुष्पों का चन्द्र था जिसके भीतर रक्ताक्षरोंमें 'श्रीहरिः' बना था।

समय से पहिले ही सभा का वृहत् हाल दर्शकों से भर गया। अगणित लोग स्थान के सङ्कोच से दोनों ओर के बरामदों में तथा बाहर खड़े रहे। सभापति का आसन काशी के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्वित् पण्डित अयोध्यानाथजी शर्म्मा (अवधेश) ने सुशोभित किया। दर्शकों में अनेक विद्वान्, सभी काशीस्थ हिन्दीप्रेमी, अनेक रईस, वकील, अध्यापक, छात्रादि थे।

स्थानीय भारतेन्दु नाटक मण्डली के द्वारा मङ्गलाचरण का मनोहर सङ्गीत होने के उपरान्त राय कृष्णदास जी गुप्त ने बाबू मैथिलीशरण जी गुप्त की रची 'श्रीहरिश्चन्द्रपञ्चक' नामक कविता पढ़ी, जो पत्रिका के इसी अङ्क में अन्यत्र प्रकाशित की गई है। तत्पश्चात् 'ट्रिब्यून' के भूतपूर्व सम्पादक श्रीयुत कालीप्रसन्न चटर्जी का व्याख्यान हिन्दी में हुआ। आपने अपने व्याख्यान में बाबू हरिश्चन्द्र के उच्चकुल, विद्याप्रेम, सद्गुण, साहित्यसेवादि का वर्णन करते हुए वर्त्तमान समय के लोगों को उनका अनुकरण करने की सलाह दी। पश्चात् जैनमुनि विद्याविजय जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने बाबू हरिश्चन्द्र के साहित्यिक जीवन की आलोचना करते हुए कहा कि वे पूरे अहिंसक और दयालु थे। आप के बाद 'हरिश्चन्द्र स्कूल' के छात्रों ने कुछ कविताएँ पढ़ीं। फिर हिन्दूकालेज के प्रोफेसर विद्वद्वर जे० एन० उनवाला महाशय ने गुजराती में व्याख्यान दिया और बाबू हरिश्चन्द्र की सर्वजनप्रियता, साहित्यसेवा इत्यादि पर विचार करते हुए कहा कि भारतवर्ष में एकभाषा और एकलिपि के प्रचार का उद्योग प्रशंसनीय है और हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि सार्वजनिक बनाने के योग्य हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मैं पारसी हूं, मेरी भाषा गुजराती है, परन्तु हिन्दी से मुझको प्रेम है। इसके अनन्तर बाबू भूतनाथ चटर्जी ने बंगला में व्याख्यान दिया और श्रीमती बंगमहिला की 'हरिश्चन्द्र' नामक बंगला कविता पढ़ी। पश्चात् बाबू जयशङ्कर प्रसाद ने अपनी रची कविता पढ़ी जो प्रकाशित की गई है। फिर साहित्याचार्य पण्डित रघुनाथशर्मा ने संस्कृत की कविता पढ़ी। आप के बाद बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त ने अपनी रचित "हरिश्चन्द्र-स्मृति-कला" नामक कविता पढ़ी, जो इसी अङ्क में अन्यत्र प्रकाशित की गई है। फिर बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीनारायण सिंह ने एक कविता पढ़ी। उनके बाद पं० किशोरीलाल जी गोस्वामी ने गद्य में लिखा हुआ बाबू हरिश्चन्द्र-सम्बन्धी एक लेख पढ़ा और एक कविता भी पढ़ी जिसमें भारतेन्दु जी के सब ग्रन्थों की नामावली आ गई थी (यह लेख तथा कविता मुझे नहीं मिली, गोस्वामी जी अपने साथ लेते चले गये, नहीं तो मैं इन्हें भी सहर्ष प्रकाशित करता।) पश्चात् चम्पारन के पं० चन्द्रशेखरधर जी मिश्र की ओर से एक महाशय ने कुछ कहा। अनन्तर पं० चन्द्रकान्त जी शर्म्मा का संस्कृत में और भारतजीवन-सम्पादक पं० लक्ष्मीनारायण जी त्रिपाठी, आवाजएखल्क के एडीटर मुंशी गुलाब चन्द और बाबू लक्ष्मीचन्द एम० ए० के हिन्दी में व्याख्यान हुए। बड़े हर्ष की बात है, मुंशी गुलाब चन्द ने यह भी कहा कि अब से मैं अपने पत्र में हिन्दी के लेख भी एक दो कालम निकाला करूंगा। इसके उपरान्त पं० केदारनाथ पाठक ने पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए० का लेख पढ़ा और लाला भगवानदीन की कविता का जिक्र किया। यह लेख तथा कविता भी अन्यत्र प्रकाशित हैं। फिर सभापति का अन्तिम भाषण हुआ जो अन्यत्र मुद्रित है। बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए०, पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, पं० श्रीधर पाठक, पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पं० लक्ष्मीशङ्कर द्विवेदी और बा० पुरुषोत्तम दास टंडन एम० ए० एल० एल० बी के० सहानुभूति सूचक पत्र और तार पढ़े गये। अन्त में भारतेन्दु नाटक मण्डली द्वारा सङ्गीत हुआ और सभापति को धन्यवाद देकर १० बजे सभा विसर्जित हुई।

इसी दिन प्रयाग, कलकत्ता, छत्रपुर और आरे में भी हरिश्चन्द्र-जयन्ती मनाई गई थी।

श्रीहरिश्चन्द्र-पञ्चक।

(बाबू मैथिलीशरण गुप्त रचित।)

(१)

श्री-सम्पन्न प्रसन्न हुआ साहित्य-गगनवर,
हिन्दी का दुर्भाग्य-तिमिर हट गया हार कर।
सहयोगी नक्षत्र हुए सब ओर सुशोभित,
रसिक चकोर प्रमत्त किन्तु फिर भी हैं लोभित॥
है काव्य-कौमुदी खिल रही, रम्य रसामृत बह रहा,
श्रीभारतेन्दु के उदय का आज धन्य दिन है अहा॥

(२)

हिन्दी की जो आज हुई है उन्नति इतनी,
थोड़ी है या बहुत किन्तु चाहे है जितनी।
यह उन्नति की बेल कहो रोपी है किसकी,
मना रहे हैं हम सब आज जयन्ती जिसकी॥
जिस अति-उदार-नरवीर का हरिश्चन्द्र शुभनाम है,
उसके आत्मा को प्रेम से किसका नहीं प्रणाम है॥

(३)

धन्य भाग कर्त्तव्य हमें कुछ कुछ सूझा है,
कुछ तो भाने लगी पूर्वजों की पूजा है।
इतने से ही किन्तु हमारा काम न होगा,
बिना हुए कुछ काम लोक में नाम न होगा॥
बस पूर्वस्मृति पर गर्व ही हमें न लाना चाहिये,
उत्साह सहित कुछ काम भी कर दिखलाना चाहिये॥

(४)

हरिश्चन्द्र के काम चित्त में तनिक विचारो,
और समय की अवधि ध्यान में अपने धारो।
कह सकता है कौन कि थोड़ा काम किया है,
हिन्दी पर सर्वस्व उन्होंने वार दिया है॥
है हमें उन्होंने नींद से सहसा जगा दिया यहां।
त्यों भावी उन्नति-मूल का तरुवर लगा दिया यहां॥

(५)

है अनूप आदर्श हमारे सन्मुख जैसा,
क्या अब तक कुछ काम कर सके हैं हम वैसा!
बातें तो हो चुकीं उचित है अब कुछ करना,
आकृति बनी, परन्तु रहा रङ्गों का भरना॥
तो आओ अब तैयार हों फिर नवीन उत्साह से,
हम प्लावित कर दें देश को शुभ साहित्य-प्रवाह से॥

भारतेन्दु-प्रकाश।

(बाबू जयशङ्करप्रसाद रचित।)

(१)

सज्जन चकोर भये प्रफुल्लित मानि मन में मोद को।
सहृदय हृदय सुचि कुमुद बिकसे बिसद बन्धु बिनोद को॥
छिटकी सुहिन्दी चन्द्रिका आनन्द अतिहि विधायिनी।
यह भारतेन्दु भयो उदय धरि कान्ति जो सुखदायिनी॥

(२)

जो सूर के सुचि किरन में भारत पयोनिधि नीर में।
सुभ नाव हिन्दी की चली यह सहज ही कछु तीर में॥
सो अन्धकार निहारि ठिठकी भ्रमि भवँर के भीर ते।
यह भारतेन्दु प्रकासि के पथ दियो ताहि समीर ते॥

(३)

प्रच्छन्न मारग कंटको ते रैन अँधियारी घनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहुँ कबहुँ चपला जोति होति न चांदनी ऐसी तनी॥
बटपार हू मग माहिं हिन्दी को पथिक जावै कहां।
हरिचन्द ने दिन रात में इकलो प्रकास कियो तहां॥

(४)

अभिमान के जब गरल में सब कंठ लों पूरित रहे।
कबिबचन विमला सुधा के तब धार में सबही बहे॥
नच्छत्र जुगनू की चमक ते चाह ते सोभा भली।
यह भारतेन्दु कियो प्रकास भई उदित चन्द्रावली॥

(५)

उरदू सुतीछन किरन में कुम्हिलाइ चाहि कराहती।
नच्छत्र दरसन ते सुकछु आराम पायो है रती॥
हिन्दी रजनिगन्धा सुलखि कै भारतेन्दु अमन्द सों।
भइ ओषधीस प्रसन्न कर में लालिता आनन्द सों॥

(६)

भादों यही पै पच्छ कृष्ण सुचन्द्र प्रकटे आदि में।
यह सुक्क यस ही में भये पै रङ्ग एक अनादि में॥
वह अष्टमी को इन्दु औ यह सप्तमी के मोद में।
यह भक्त थे भगवान के सामीप्य सुद्ध बिनोद में॥

(७)

यह धन्य है दिन आजु को हिन्दी बदन को बिन्दु है।
जेहि में प्रगट सुन्दर भयो यह धन्य भारत-इन्दु है॥
हरिचन्द की मञ्जुल कला प्रकटी लखो सुखमामई।
हिन्दी-बिजयिनी के बिजय की बैजयन्ति उड़ा दई॥

हरिश्चन्द्र-स्मृति-कला।

(बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त रचित।)

(१)

आजु भाद्रपद सुक्ल सप्तमी तिथि अति पावन।
बिद्वज्जन-मंडली-मुकुट गुनधर-उपजावन॥
आजुहिं, संबत सात अधिक उनइस सौ माहीं,
प्रगटे श्रीहरिचन्द मन्द करि चन्दकला हीं॥
धन्य धन्य यह सुभ घरी, धन्य धन्य यह सुभ दिवस।
जा में जन्म लियो गुनी, हरिश्चन्द्र निज-कुल-कलस॥

(२)

हरिश्चन्द्र अविराम किये उद्योग भोगयुत।
प्रनपारन सों हटे नहीं पग पीछे अच्युत॥
विद्या की सुस्थली भली यह कासी नगरी।
हिन्दी-उन्नति-केन्द्र बनाई स्वर्ग-सहचरी॥
'हरिश्चन्द्र' यह सुनत ही, मूर्त्ति तेजयुत प्रेम की।
आय जात आगे, अहो! छाया सी छितिछेम की॥

(३)

हरिसम प्रतिमा-प्रभा-युक्त निर्मल तेजोमय,
सीतल-सील समान चन्द के, सदय, सदासय॥
हरिश्चन्द्र-सम रहे सुदृढ़ प्रनपारन माहीं।
स्वयं रहे सन्नद्ध देसहित-हेत सदाहीं॥
तिनके कार्य-कलाप सुभ, अनुकरनीय ललाम हैं।
ऐसे श्रीहरिचन्द को, सादर कोटि प्रनाम हैं॥

(४)

जो हिन्दी बाईस कोटि नरनारिन केरी।
भाषा जो अति सरल, जासु भाषा सब चेरी॥
हैं अपनावन लगे जाहि अब हम सब देसी।
जाको आदर करत हृदय सों अन्य बिदेसी॥
भाषा सारे राष्ट्र की, होन चहत जो एक दिन।
हम सब के है सीसपै जेहि जननी को जन्म-ऋन॥

(५)

जो विभिन्न प्रान्ताधिवासिगन के सुविचारन।
प्रगट परस्पर करत, करैगी, ऐक्यस्थापन॥
सोइ प्रिय भाषा, अहो हमारी श्रवन-मनोहर।
जो तत्पर ह्वै कियो पुष्ट उद्योगी नरवर॥
अध्यवसाय-स्वरूप सो, हरिश्चन्द्र स्मरनीय हैं।
उनके गुनगन सत्य ही, सादर आचरनीय हैं॥

(६)

रह्यो विषम पथ प्रथम प्रगति को अन्धकारमय।
पथिकन सूझत रही नहीं पद्धति कोउ निर्भय॥
तेहि अवसर लहि जन्म सुगम मारग दरसाये।
तथा अग्रसर होन-हेत उत्साह बढ़ाये॥
जो वाही पथ चलैं तौ, आत्मोन्नति नहिं दूर है।
देस-धर्म-श्रीवृद्धि की, आस हमैं भरपूर है॥

(७)

जन्म न जो जगमाहिं होत हरिचन्द सुजन को।
तौ हिन्दीहित-हेत प्रानपन करत जतन को?॥
को हिन्दी के अङ्ग करत संस्कृत, परिमार्जित?
को पहिरावत अलंकार बहु सु-बरन-निर्मित?॥
अन्य अन्य भाषान के निकट बिठावत याहि को?
सर्बस अर्पन करि, अहो! कहो सुधारत याहि को?॥

(८)

इंगलश भाषा माहिं लह्यो पद शेक्सपियर जो,
संस्कृत महँ हैं कालिदास कबि कर आदर जो,
बँगला महँ है यथा सुकबि बंकिम कर गौरव,
गुजराती महँ स्थान गोबर्धन कर जो सम्भव,
तथा मराठी माहिं हैं जैसे श्रीचिपलूनकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यौं हिन्दी-साहित्य महँ हरिश्चन्द्र हैं उच्चतर ॥

(९)

हरिश्चन्द्र-जीवनी पाठ करि सबै बिचारो ।
हरिश्चन्द्र महँ रहे जौन गुन तिन्हैं निहारो ॥
साहित के मर्मज्ञ, दूरदर्शी, उपकारी,
सुकबि, सुलेखक, मिलनसार, उत्साही भारी ॥
बहुभाषा-प्रेमी, श्रमी, रसिक, उदार, प्रसन्न-मन ।
ऐसे श्रीहरिचन्द जू रहे एक आदर्स जन ॥

(१०)

तिनहीं को आदर्स मानि अब कदम बढ़ावैं ।
हिन्दी को साहित्य नित्य परिपूर्न बनावैं ॥
काव्य-कला-बिज्ञान-ज्ञान करि प्राप्त यथामति ।
हिन्दी को दारिद्र्य मिटावैं सब मिलि सम्प्रति ॥
"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" यह ।
स्मरन रहै हरिचन्द की उक्ति युक्तियुत सुखावह ।

(११)

केवल कबि ही नाहिं, आसु कबि रहे सुमति वह ।
ग्रन्थरत्न बहु रचे रुचिर करि नव-रस-संग्रह ॥
जो नहिं देखत सुनत रहे हिन्दी-साहित्यहिं ।
हिन्दीप्रेमी तिन्हैं बनायो विघ्न कष्ट सहि ॥
हिन्दी लेखक कबिन कहँ, देनहार निज देहतक ।
गद्य-लेख की आधुनिक सैली के जीवन-जनक ॥

(१२)

तिनके पद पढ़ि देखि भावमयि उच्च कल्पना ।
जानि परत जस सूरदास तुलसी की रचना ॥
कवित सवैया देव घनानँद सों नहिं कछु कम ।
दोहा लखि ह्वै जात बिहारी-रचना को भ्रम ॥
सकल कला-संयुत, सरस, भारतेन्दु सांचे भये ।
कीर्त्ति-कौमुदी राखि, हा ! कालमेघमहँ दुरि गये ॥

(१३)

नाटक, चम्पू, नीति, सास्त्र, दर्सन की बातैं ।
सज्जनगन की सुद्ध बुद्धि दुष्टन की घातैं ॥
उपन्यास, सङ्गीत, तथा सामाजिक प्रहसन ।
पुरातत्व, बिज्ञान, कलाकौसल को बर्नन ॥
धर्मकथा, उपदेस त्यौं, स्वाभिमान-सिच्छा भली ।
जो चाहै सो लेहु, लखि, हरिश्चन्द्र-ग्रन्थावली ॥

(१४)

आवहु सब जन आजु हृदय-मन्दिरमहँ, परिचित ।
हरिश्चन्द्र की मूर्त्ति मनोहर करैं प्रतिष्ठित ॥
भक्तिभाव सों पूजि सदा कर्त्तव्य निबाहैं ।
उन्नति अपने देस तथा भाषा की चाहैं ॥
स्मारक महँ उनके सबै 'भारतेन्दु संवत' लिखैं ।
अपने कहँ अपनाय, इमि, कृतज्ञतास्वीकृति सिखैं ॥

(१५)

हरिश्चन्द्र के नाम पै, कीजै पर-उपकार ।
गांव गांव महँ खोलिये, विपुल वाचनागार ॥
पढ़ि पढ़ाइ लिखि कीजिये, हिन्दी को बिस्तार ।
हरिश्चन्द्र को होइहै, इमि आदर सत्कार ॥

(१६)

भाषा को उद्धार अरु
माननीय को नाम ।
यहि विधि ह्वैहै सहज ही,
एक पन्थ द्वै काम ॥

हरिश्चन्द्र-सप्तक ।

(लाला भगवानदीन रचित ।)

(१)

जय जय रसिक रसालय, बागीश बृत्तिधारी ।
जय काब्यमय सुधाधर, कविगण सुपुष्टिकारी ।
जय ज्ञानज्योति द्वारा, अज्ञान तिमिरहारी ।
जय भारतेन्दु बाबू, हरिचंद जय तुम्हारी ॥

(२)

जय गद्य के विधाता, नाटक के सूत्रधारी ।
जय नागरी के पोषक, हिन्दी के पुष्टकारी ।
हिन्दी के हित में सारे, अनाहित के नष्टकारी ।
जय भारतेन्दु बाबू, हरिचंद जय तुम्हारी ।२

(३)

हिन्दी गगन में ऐसी, सुन्दर प्रभा पसारी ।
उर्दू की सब अँधेरी, कर छिन्न भिन्न डारी ।
कविता कुमोदिनी के, निश्चित प्रफुल्लकारी ।
जय भारतेन्दु बाबू, हरिचंद जय तुम्हारी ॥

(४)

जय प्रेम के सरोवर, जय ज्ञान के तमारी ।
गुणियों के मानकर्ता, जय कृष्णभक्त भारी ।
ध्यानी अजब अनोखे, दानी बिपति-निवारी ।
जय भारतेन्दु बाबू, हरिचंद जय तुम्हारी ॥

(५)

हो ईशरूप केवल, तुम भाव के भिखारी ।
दे सकते क्या हैं तुमको हम कोई वस्तु भारी ।
यह प्रेम-पुष्प-माला, पहुँचै तुम्हैं हमारी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय भारतेन्दु बाबू हरिचंद जय तुम्हारी ॥

(६)

तुम अब तो बन रहे हो, ईश्वर-कृपा-भँडारी ।
आशा है कर सकोगे, शुभ दृष्टि दिशि हमारी ।
हम माँगते नहीं हैं, कुछ तुमसे वस्तु भारी ।
जय भारतेन्दु बाबू, हरिचंद जय तुम्हारी ॥

(७)

यदि हो सकै तो देना, कविशक्ति मोदकारी ।
जिससे कि गा सकैं हम, गुणियों की कीर्ति प्यारी ।
गुणियों के मान में रत, रखना सुमति हमारी ।
जय भारतेन्दु बाबू, हरिचंद जय तुम्हारी ॥

—:o:o:—

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ।

(पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० और पण्डित शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए० लिखित ।)

"जब लौं आरज भूमि माहिं आरज कुल बासा ।
जब लौं आरज धर्म माहिं आरज विस्वासा ।
जब लौं गुन आगरी नागरी आरज बानी ॥
जब लौं आरज बानी के आरज अभिमानी ॥
तब लौं यह तुमरो नाम थिर चिरजीवी रहिहै अचल ।
नित चन्द सूर सँग सुमिरिहैं हरिचन्दहु सज्जन सकल॥"

हिन्दी, हिन्दू, हिन्द से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा कौन अभागा होगा जिसने भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का नाम न सुना हो ? इतनाही नहीं वरन् हिन्दीप्रेमियों में शायदही ऐसे लोग मिल सकँ जिन्होंने भारतेन्दु जी के कोई ग्रन्थ, लख, इत्यादि न देखें हों। वास्तव में भारतेन्दु जी की टक्कर का कोई हिन्दी ग्रन्थकार हाल के ज़माने में नहीं हुआ। हम लोगों ने "हिन्दी नवरत्न" नामक एक ग्रन्थ लिखा है जिस में भाषा के नौ कवियों को सर्व्वोच्च मान कर हमने स्थान दिया है। उस में भारतेन्दु जी भी सम्मिलित हैं। यह कोई साधारण बात नहीं है। इस नवरत्न में ऐसे धुरंधर कवि जैसे सेनापति, रहीम, दास, पद्माकर इत्यादि ने भी स्थान नहीं पाया है। इस में जो नौ कविरत्न हैं उनके नाम ये हैं (१) तुलसीदास (२) सूरदास (३) देवदत्त उपनाम देव (४) बिहारी (५) भूषण (६) केशवदास (७) मतिराम (८) चन्द बरदाई (९) हरिश्चन्द्र। इतने ही से विज्ञ जन समझ सकते हैं कि हरिश्चन्द्र जी का हिन्दी ग्रन्थकारों में कितना उच्च स्थान है। इन कवियों के समय पर विचार करने से विदित होगा कि चन्द बरदाई के बाद सूरदास जी ३५७ वर्ष पीछे उत्पन्न हुए पर उस काल से उत्तम कवियों का ताँता लग्न रहा यहां तक कि सम्वत १५४० से ले कर सम्बत १८०२ तक अर्थात् २६२ वर्ष पर्य्यंत, कोई भी ऐसा समय न था कि जब हिन्दी के दो एक उत्तमोत्तम रत्न वर्तमान न रहे हों। पर सम्वत १८०२ के पीछे ऐसा सन्नाटा हुआ कि पूरे १०५ वर्ष तक कोई भी प्रथम कक्षा का हिन्दी ग्रन्थकार देखने में न आया कि भाद्र शुक्ल ७ सम्वत १९०७ को हिन्दी का शिर फिर ऊंचा हुआ, श्री काशी पुरी (अर्थात पूरब) में हिन्दी का सूर्य्य ही नहीं बरन उसके सूर्य्य (हरिः) और चन्द्र (चन्द्र) अर्थात हरिश्चन्द्र एक साथ ही उदय हो गए ! सूर्य्य का उदय सदाही पूरब में होता है और जब सूर्य और चन्द्र दोनों एक साथ ही उदित हो जावें तब सिवा पूरब (East) के अन्यत्र ऐसा कहाँ हो सकता है ? इससे काशी और पूर्व्व दोनों ही धन्य हैं।

निदान हिन्दी का भाग्य बहुत दिनों से अंधकार ग्रस्त रहने के पीछे चमक उठा। केवल ५ साल की ही अवस्था में इस महापुरुष ने एक दोहा निर्माण किया।

लै ब्योंड़ा ठाढ़े भए श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर को सैन को हनन लगे भगवान॥

अवश्य ही इस दोहे में कोई विशेष चमत्कार नहीं है पर विचार करने की बात है कि पांच वर्ष की अवस्था में लड़के अच्छी तरह बोल तक नहीं सकते तब कविता की बात ही कहां! ऐसी दशा में एक शुद्ध त्रुटि रहित दोहा, जिस में साधारण रीति से कोई भी दूषण नहीं है, ऐसी छोटी अवस्था में बना देना बड़े ही असाधारण चमत्कार की बात है और इस में सन्देह नहीं कि भारतेन्दु जी का चमत्कार अत्यंत असाधारण था।

इन का जन्म काशी के प्रसिद्ध महाजन बाबू हर्षचन्द जी के पुत्र बाबू गोपालचन्द्र उपनाम गिरधर दास कवि के यहां हुआ था। प्रसिद्ध सेठ अमीचन्द इन के पूर्वजों में से थे। हरिश्चन्द्र जी का जीवन चरित्र इतना प्रसिद्ध है कि उसके विषय में विस्तार करने की कोई भी आवश्यकता नहीं। बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवनन्दन सहाय और बाबू राधाकृष्ण दास जी ने भारतेन्दु जी की उत्तम जीवनियां लिखी हैं तथा और भी कई फुटकर लेख और जीवन वृत्तांत उनके विषय में "सरस्वती" और अन्य पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। अपने 'हिन्दी नवरत्न" में हमनें भी भारतेन्दु जी की संक्षिप्त जीवनी और उनकी कविता (गद्य एवं पद्य) पर समालोचना लिखी ह। अतः यहां अति सूक्ष्म रीति पर हम इस महानुभाव के विषय में दो चार बातें लिखते हैं।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है इन का जन्म भाद्र शु० ७ सम्बत १९०७ में हुआ और १९४१ में ही केवल ३४ वर्ष की अवस्था में इन का शरीर पात हो गया पर इतने ही अल्प समय में इन्हों ने हिंदी की जो कुछ सेवा की ह उतनी किसी भी एक पुरुष से सौ दो सौ वर्ष के भीतर नहीं बन पड़ी। इन की माता का देवलोक सम्बत् १९१२ और पिता की सम्बत १९१७ में हो गया और दश वर्ष की हो बाल्यावस्था में यह स्वच्छन्द हो गए। ऐसी स्वच्छंदता का जो कुछ परिणाम हुआ करता है उस से यह भी न बच सके और इसी कारण इनका विद्याध्ययन जल्दी ही छूट गया, कुछ चाल चलन भी बिगड़ गया, एवं उड़ाऊपने की बान पड़गई। थोड़े ही दिनों में इन्हों नें अपनी लाखों रुपए की पैतृक सम्पत्ति उड़ा डाली और अंत को बिलकुल दरिद्र दशा को प्राप्त हो गए पर इन की दिल की अमीरी कभी न गई और रुपए को इन्हों ने सदाही तुच्छ गिना। इन के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे पर वे बाल्यवस्था ही में मृत हो गए परन्तु इन की पुत्री श्रीमती विद्यावती कुछ ही समय हुआ पाँच पुत्र छोड़ कर मरीं।

इन की नैसर्गिक प्रभा बड़ी ही चमत्कारिणी थी। ११ वर्ष की अवस्था में ही पढ़ना छोड़ देने पर भी अंत में इन्हों ने कई विद्याओं में अच्छा अभ्यास कर लिया था तथा हिन्दी के अलावा यह संस्कृत, बँगला, मराठी, गुजराती, मारवाड़ी उर्दू, और अँगरेजी में अच्छा बोध रखते थे। इन्हों ने देशाटन खूब किया और अनेक स्थानों पर इनका अच्छा मान हुआ। इनमें स्वदेश और मातृ भाषा का अटल प्रेम था। इनका स्थापित किया हुआ हरिश्चन्द्र हाई स्कूल अब तक वर्तमान है तथा अब उसकी विशेष उन्नति की सम्भावना है। इन्हों ने अनेक सामयिक पत्र निकाले जिनमें 'कविबचन सुधा' हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' और 'बाला बोधिनी' प्रधान थीं। बाबू साहब ने 'कवितावर्धिनीसभा', तदीय समाज, पेनी रीडिंग क्लब, वैश्य हितैषिणी सभा आदि अनेक सभाएँ भी स्थापित कीं। सम्बत् १९३७ में हिन्दी प्रेमियों ने लिखा पढ़ी कर के इन्हें "भारतेन्दु" की उपाधि दी जिसे सभी ने स्वीकार कर लिया।

यों तो ५-६ वर्ष की ही अवस्था से यह स्फुट दोहे इत्यादि बनाने लगे थे पर १८ वर्ष की उमर से इन्हों ने वास्तव में हिन्दी गद्य और पद्य काव्य करना प्रारम्भ किया और केवल सोलह सत्रह वर्ष के बीच में कोई १७५ ग्रन्थ बना डाले, अर्थात् प्रति वर्ष प्रायः १०½ ग्रन्थ इन्होंने बनाए। इस शीघ्रता से शायद किसी भी ग्रंथकार ने पुस्तकों की रचना न की होगी। इसके अलावा सैकड़ों लेख इनके अपने एवं दूसरों द्वारा सम्पादित पत्र पत्रिकाओं में निकले। इनके मुख्य ग्रन्थों को खड्गविलास प्रेस के स्वामी ने "हरिश्चन्द्र कला" नाम से छः भागों में प्रकाशित किया है पर उसका मूल्य बेहद बढ़ा कर रक्खा गया है। इन भागों में क्रम से भारतेन्दु जी के नाटक इतिहास, राजभक्ति काव्य भक्तसर्वस्व साधारण काव्य एवं संग्रह छपे हैं। नाटकों में सत्य हरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस, चन्द्रावली, भारतदुर्दशा, नीलदेवी और प्रेमयोगिनी अति उत्तम हैं। इन्होंने दो उपन्यास भी लिखे पर वे अपूर्ण रह गए। इन के लेखों में गद्य और पद्य के भाग प्रायः बराबर हैं। पद्य में चाहे इनकी गणना बहुत ऊँची न हो पर गद्य के सब से प्रथम सर्वांग सुन्दर लेखक यही हैं और उस विभाग में इनके जोड़ का दूसरा लेखक अब तक एक भी नहीं हुआ है। हिन्दी नाटक के तो इन्हें प्रायः जन्मदाता ही कहना चाहिए और पद्य में भी यह आशु कवि थे और धारा बाँध कर बिना रुके छन्द बनाते चले जाने की शक्ति इन में थी। स्वदेश प्रेम, जिन्दा दिली, उदारता, हास्य पटुता, जातीयता, प्रेम, सौन्दर्य्योपासना इत्यादि इनके प्रधान गुण हैं। इनमें से प्रत्येक गुण पर बहुत कुछ लिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कहा जा सकता है पर यहाँ दिग्दर्शन मात्र करा दिया गया है। भारतेन्दु जी अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे और उनकी कविता से उस समय के हालात भली भांति प्रतिबिम्बित होते हैं। इनका हिन्दी-पठित समाज में बड़ा मान है और "हरिश्चन्द्राब्द, नाम से इनका सम्बत तक चलने लगा है। इनके जन्मोत्सव में "भारतेन्दु जयन्ती" का प्रस्ताव बड़ा ही उपयुक्त हुवा है इस का अवश्य रवाज होना चाहिए।

---:o:---

सूचना।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का साधारण मासिक अधिवेशन हर अंग्रेजी महीने के अन्तिम शनिवार को सन्ध्या के छ बजे सभा भवन में हुआ करता है! इसमें सब सभासदों को सम्मिलित होना चाहिए। जूलाई के अंत में जो अधिवेशन होगा उसमें अन्य कार्यों के अतिरिक्त यही प्रस्ताव भी उपस्थित किया जायगा कि भविष्यत में एक उपमंत्री के स्थान पर सभा के दो उपमंत्री चुने जाया करें।

प्रबन्धकारिणी समिति।

शुक्रवार ता० २१ जुलाई १९११-सन्ध्या के छ बजे।

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू बेणीप्रसाद और बाबू बलभद्रदास। सम्मति भेजने वाले, पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०।

(१) तारीख ८ जूलाई और ११ जूलाई १९११ के कार्य विवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि तारीख ८ जूलाई के निश्चय नं० ४ में गत वर्ष के आय-व्यय का हिसाब जो स्वीकार किया गया है वह स्वीकृत न समझा जाय और जब जांचकर्त्ता महाशय उसे जांच लें तब वह उनकी सम्मति के सहित समिति के सम्मुख पुनः उपस्थित किया जाय। यह भी निश्चय हुआ कि सन् १९११-१२ के बजेट में हिन्दी कोश के आयव्यय तथा बजट की धन संख्या और बनारस बंक के ऋण की संख्या निकाल देने पर आय की अपेक्षा व्यय के अनुमान में जो प्रायः एक हजार रुपया अधिक दिखलाया गया है उसके लिये व्यय के जोड़ की संख्या में एक हजार रुपए की कमी की जाय।

(२) पण्डित निष्कामिश्र का ८ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी संक्षेप लेख प्रणाली की पुस्तक लिखने के लिये समिति ने उन्हें चांदी का पदक देना निश्चित किया है। उस के स्थान पर उन्हें स्वर्ण पदक वा नगद रुपया मिलना चाहिए।

निश्चय हुआ कि इसके लिये उन्हें २५) तथा इस पुस्तक की पचीस प्रतियां दी जांय।

(३) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि श्रीमान् महाराजा साहब बड़ोदा नागरी के बड़े हितैषी हैं और इन्हों ने सभा की भी विशेष सहायता की है। अतः इनके संरक्षक चुने जाने के लिये सभा के साधारण अधिवेशन में प्रस्ताव किया जाय।

(४) निश्चय हुआ कि संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर से प्रार्थना की जाय कि वे इस प्रान्त के पुस्तकालयों के लिये नागरी प्रचारिणी ग्रन्थमाला की कुछ प्रतियां खरीद कर इसके प्रकाशन में सभा की सहायता करें।

(५) पण्डित रामेश्वर दत्त शर्म्मा का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बिना वेतन के सभा के कार्यालय में काम सीखने की आज्ञा मांगी थी और बाबू जुगल किशोर ने इनकी प्रार्थना स्वीकार किए जाने की सम्मति दी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि बाबू जुगलकिशोर की जिम्मेदारी पर इनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय ।

(६) बा० गोपालदास का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के प्रत्येक सभासद से दो दो नवीन सभासद बढ़ाने के लिये प्रार्थना की जाय ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और इसके लिये पत्र छपवा कर वह नागरीप्रचारिणी पत्रिका के साथ सब सभासदों के पास भेजा जाय ।

(७) आनरेब्ल पण्डित मदन मोहन मालवीय और बाबू गोविन्ददास के पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए जिसमें उन्होंने लिखा था कि उनके नाम आगामी वार्षिक चुनाव की सूची में न रक्खे जांय ।

(८) पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पण्डित निक्कामिश्र का नाम भी आगामी चुनाव के लिये मंत्रियों और प्रबन्धकारिणी समिति के नगरस्थ सभासदों की सूची में लिखा जाय ।

(९) आगामी चुनाव की सूची में रायकृष्णदास का नाम रखने के विषय में पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू जगन्मोहन वर्म्मा, बाबू अमीर सिंह, और पण्डित ब्रजभूषण ओझा का पत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यदि रायकृष्णदास गुप्त की अवस्था १८ वर्ष से अधिक हो तो उनका नाम भी प्रबन्धकारिणी समिति के नगरस्थ सभासदों की सूची में रक्खा जाय ।

(१०) बेलफोर स्टुअर्ट की फिज़िक्स प्राइमर का पण्डित भवानीदत्त पांडे का अनुवाद जिसका संशोधन प्रोफेसर गोकुलदास ने किया था उपस्थित किया गया । साथ ही मंत्री ने गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का अनुवाद उपस्थित किया ।

निश्चय हुआ कि दोनों अनुवाद बाबू बांकेबिहारी लाल बी० एस० सी० की सेवा में भेजे जांय और उन से प्रार्थना की जाय कि वे कृपापूर्वक इस विषय में सम्मति दें कि क्या गुरुकुल वाला अनुवाद प्रकाशित हो जाने पर भी पण्डित भवानीदत्त पांडे के अनुवाद को प्रकाशित करने की आवश्यकता है ।

(११) सभा की अठारहवें वर्ष की रिपोर्ट उपस्थित की गई ।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने प्रस्ताव किया कि यह रिपोर्ट समिति के अधिवेशन में उपस्थित किए जाने के पहिले, प्रबन्धकारिणी समिति के सब सभ्यों के पास घुमाई जाय और जिन सभ्यों का इस से मत भेद हो उनकी सम्मति भी इसके साथ प्रकाशित की जाय । बाबू गौरीशंकर प्रसाद ने इसका विरोध किया और अधिक सम्मति से यह प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ ।

(१२) रिपोर्ट का एक अंश पढ़ा गया और संशोधन के उपरान्त स्वीकृत हुआ ।

(१३) समय अधिक हो जाने के कारण निश्चय हुआ कि सभा विसर्जित की जाय और शेष कार्यों के लिये इसका अधिवेशन पुनः हो ।

सोमवार ता० २४ जूलाई १९११-सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

पण्डित रामनारायण मिश्र (सभापति), पण्डित कृष्णराम मेहता बी० ए० एल एल० बी०, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, और बाबू शिवप्रसाद गुप्त ।

(१) वार्षिक रिपोर्ट का शेष अंश पढ़ा गया और संशोधन के उपरान्त स्वीकृत हुआ ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २९ जूलाई १९११-सन्ध्या के छ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के प्रस्ताव तथा बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद के अनुमोदन पर रावगोपालदास सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २४ जून १९११) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति के तारीख १५ जून, ८ जूलाई और ११ जूलाई १९११ के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(४) निम्नलिखित सज्जन सभासद चुने गए:-

१ राय रामसरनदास बहादुर एम० ए०-आनरेरी मजिस्ट्रेट-फैजाबाद ३) २ पण्डित कुशहर पांडे-ट्रेनिङ्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल-चौबेपुर बनारस १॥) ३ बाबू नारायणप्रसाद सिंह आनन्द बाड़ी-महल्ला चौक इलाहाबाद ५) ४ पं० प्यारे लाल शर्म्मा, ब्रह्मनाल, मुजफ्फरनगर १॥), ५ बाबू कृष्णदास महल्ला साहुगोपालदास, काशी ५) ६ पं० आत्माराम, काशी ग्लासमैन्युफैक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड, सीतारामपुर १॥) ७ पं० शीतलप्रसाद शर्म्मा, जमींदार और म्युनिसिपल कमिश्नर, टांड़ा, मुबारक पुर, जि० फैजाबाद ३) ८ पं० श्रीनाथमिश्र, ब्रह्मनाल, काशी १॥) ९ बाबू रामप्रसाद, सदर खजानची, फतहपुर ३) १० पण्डित वैद्यनाथ शर्म्मा राजवैद्य, जानसन गंज, प्रयाग ३) ११ बाबू करालीचरन गुप्त, सब मैनेजर, चन्द्रगढ़, पो० नवीनगर, जि० गया १॥) १२ बाबू सरजू सिंह, कलनाखोर, पो० रुस्का जि० बस्ती १॥) १३ पं० कमलादत्त तिवारी, मुदर्रिस देवरा, पो०देवरा तहसील बांसी, जि० बस्ती १॥) १४ पण्डित नाथूलाल शर्म्मा कृष्णागढ़ १॥) १५ स्वामी गंगाधर गिरि मार्फत पंजाबी हास्पिटल, हृषीकेश, जि० देहरादून १॥) १६ पं० गौरी शंकर शर्म्मा, श्रीतुलसी आश्रम, बघौली, जि० हरदोई १॥) १७ बाबू दुर्गाप्रसाद बी० ए०, एल एल० बी०, सहारनपुर ३) १८ बाबू सुमेरचन्द बी० ए० एल एल० बी०, वकीलहाईकोर्ट, सहारनपुर ३) १९ बाबू जगपतराय जी, वकील, सहारनपुर ३) २० बाबू छुट्टन लालजी वकील सहारनपुर ३) २१ लालामुरलीलाल रईस, सहारनपुर ६) २२ बाबू रामचन्द्र सब ओवरसीयर, मिलिटरी वर्क्स सहारनपुर १॥) २३ बाबू शङ्करलाल अत्तार, आर्यकुमार सभा, सहारनपुर १॥) २४ ठाकुर रामलाल सिंह, डाकूर, लो।को डिपो, सहारनपुर ३) २५ पण्डित श्यामलाल C/o पण्डित मोहनलाल बैरिस्टर, सहारनपुर ३) २६ मुंशी आशाराम जी मुख़्तार, सहारनपुर ३) २७ चौबे सालिगराम पाठक, डिपटी कलेकूर, सहारनपुर ३) २८ लाला सादीराम गुप्त, रईस और आनरेरी मजिस्ट्रेट, सहारनपुर ३) २९ बाबू प्रियाचरण अग्रवाल, एडिशनल मुंसिफ, सहारनपुर १॥) ३० मिस्टर यू० एन० बेनर्जी एल० एम० एस०, सहारनपुर ३) ३१ चौधरी हुक्मसिंह वर्म्मा, पो० बेगमाबाद जिला मेरट ३),

(५) सभासद होने के लिये १२ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए:—१ बाबू शीतलप्रसाद, ठि० भगवानदास प्रभूदयाल, अल्मोड़ा। २ बाबू अम्बिकाप्रसाद कबीरचौरा, काशी। ३ मिस्टर डी० एस० डी० एन० वर्म्मा मुंगेर।

(७) प्रबन्धकारिणी समिति का भेजा हुआ यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के एक उपमंत्री के स्थान पर प्रति वर्ष दो उपमंत्रियों का चुनाव हुआ करे।

(८) प्रबन्धकारिणी समिति के प्रस्ताव पर निश्चित हुआ कि श्रीमान् महाराजा साहब बड़ौदा ने इस सभा की बड़ी सहायता की है और वे नागरी अक्षरों के बड़े हितैषी हैं अतः वे इस सभा के संरक्षक चुने जांय। सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव हर्षपूर्वक स्वीकार किया गया।

(९) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुई:- मैनेजर, विहार एञ्जलप्रेस एण्ड स्टोर्स, भागलपुर-हिन्दू धर्म्म की विशेषता, बालनीति विज्ञान। Indian Antiquary for July 1911· बाबू राधामोहन गोकुल जी, देवनागरी यन्त्रालय, १७ पगैया पट्टी, कलकत्ता-नीति छन्दावली १ प्रति। बाबू चण्डिकाप्रसाद, ठि० डिपटी इन्सपेकृर आफ़ स्कूल्स, बहराइच-हरिनाम पचीसी २ प्रति। श्री यशोविजय जी जैनपाठशाला, काशी-अहिंसा दिग्दर्शन। पण्डित शिवदत्त शर्म्मा, अजमेर-नीति वाक्य रत्नावली। राजाफ़तह सिंह वर्म्मा, पुवायां, जि० शाहजहांपुर-वर्ण व्यवस्था २ प्रति। कविगोविन्द गिल्लाभाई, सिहोर, भावनगर-गोबिन्द ग्रन्थमाला। पण्डित कन्हैया लाल शर्म्मा, कालिकागली, काशी-श्री रामकथामृत। खरीदी गई तथा परिवर्तन में प्राप्त-मनुस्मृति, व्यञ्जन प्रकाश चारो भाग, शमशेर, संसार, शेरसिंह विलक्षण जासूस, श्री महामण्डल की बाल्यावस्था, चुड़ैल उपन्यास पहिला और दूसरा भाग, कथा सरित सागर का हिन्दी अनुवाद १३ वां भाग, राजस्थान का इतिहास पांचवाभाग, किस्सा नया सवा यार, केसर गुलाब चारो भाग, कल्कि पुराण, जगत को उत्पति स्थिति और प्रलय, प्रेममंजरी प्रथमभाग, बड़ी भजन रत्नावली, बारहमासी, वाल्मीकीय रामायण, सुधाकर चरित्र, कबीर शतक, प्रेम का फल, श्री भारतधर्ममहामण्डल रहस्य, रागविनोद, अमरसन्त का चेला, आंगल संस्कृत प्रदीपिका, बालविनोद, शास्त्र सोपान, धर्म्म सोपान, शोधन सोपान, राज शिक्षा सोपान, यज्ञेश्वर विनोद, सर विलियम वेडरबर्न, अशभ्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमणी, स्वधर्म्मरक्षा, बसंतशृंगार, बालिका प्रबोधिनी, कन्याशिक्षा सोपान, तारामती, बालाबोधिनी, गूढ़ विषयों पर सरल विचार, ग्लानचेट गीतावली, धर्म्मसंगीत, धरनीदास जीकी बानी, जगजीवन साहब की शब्दावली, घटरामायण भाग १ ।

(१०) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

वार्षिक अधिवेशन ।

सोमवार ता० ७ अगस्त १९११-सन्ध्या के ६ बजे स्थान-सभाभवन ।

(१) सभापति ने सूचना दी कि पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी समिति के सभासदों के चुनाव के लिये जो नामावली छपी है उसमें बाबू गौरीशंकर प्रसादजी मंत्री अथवा उपमंत्री होना स्वीकार नहीं करते और बाबू भगवानदास एम० ए० को सभापति, उपसभापति अथवा प्रबन्धकारिणी समिति का सभासद होना स्वीकार नहीं है । अतः ये सज्जन न चुने जांय ।

(२) उपमंत्री ने सूचना दी कि प्रबन्धकारिणी समिति में लाला छोटेलाल का नाम सभापति और उपसभापति के चुनाव की सूची में रखना निश्चित हुआ था पर भूल से उनका नाम इस सूची में छूट गया है ।

निश्चय हुआ कि उनका नाम इस सूची में सम्मिलित किया जाय पर भविष्यत के लिये यह उदाहरण न हो ।

(३) उपस्थित सज्जनों में चुनाव के लिये पर्चे वितरित किए गए और निर्वाचन का परिणाम जांचने के लिये सभापति ने बाबू लक्ष्मीचन्द एम० ए० और पण्डित सूर्यनारायण त्रिपाठी एम० ए० को नियत किया ।

(४) मन्त्री ने सभा की अठारहवें वर्ष की रिपोर्ट पढ़ी ।

पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ने प्रश्न किया कि लेखमाला की केवल एक ही संख्या निकलने का क्या कारण है और पण्डित बालकृष्ण भट्ट की छुट्टी समाप्त होने पर वे क्यों नहीं आए वा क्यों नहीं बुलाए गए । राय शिवप्रसाद ने पूछा कि कोश विभाग के कार्यकर्त्ताओं को नियुक्त और पदच्युत करने का अधिकार सम्पादक को था अथवा यह अधिकार उनको अब भी है । बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने पूछा कि कोश के झगड़े क्यों और कैसे उठे और वे क्यों नहीं तै हुए, कोश कार्यालय के सम्बन्ध में पण्डित केशवदेव शास्त्री की रिपोर्ट प्रबन्धकारिणी समिति में क्यों नहीं उपस्थित की गई । सभा का वार्षिक हिसाब अभी जांचा नहीं गया अतः वह स्वीकार न होना चाहिये, छपाई के लिये सभा को प्रेसों का जो रुपया देना बाकी है वह ऋण है, उसके लिये बोर्ड आफ ट्रस्टीज़ की स्वीकृति ली गई है या नहीं, सभा के आय व्यय का हिसाब क्यों नहीं जांचा गया, वार्षिक विवरण के साथ हिसाब का चिट्ठा (बेलेन्सशीट) क्यों नहीं छपता, अठारहवें वार्षिक विवरण का अन्तिम भाग प्रबन्धकारिणी समिति में कब स्वीकृत हुआ था । गत तीन वर्ष की रिपोर्ट में जो सभा का हिसाब छपा है वह बिना जांचे हुए छपा है अतः वे रिपोर्टें अस्वीकार की जांय ।

मन्त्री ने उत्तर दिया कि लेखमाला के सम्पादक पहिले पण्डित रामनारायण मिश्र थे परन्तु कार्य की अधिकता से वे उसे निकाल न सके । उसके उपरान्त छ मास से बाबू शिवप्रसाद गुप्त इसके सम्पादक नियत किए गए और उन्होंने इसकी दो संख्यायें निकाल दी हैं, दूसरी संख्या का केवल टाइटिल पृष्ठ छपना बाकी है । पण्डित बालकृष्ण भट्ट की बीमारी में उनके स्थान पर बाबू गंगाप्रसाद गुप्त नियत किए गए थे । जिस समय कोश के निरीक्षक को बाबू भगवानदास हालना के पत्र से विदित हुआ कि वे अपने कार्य पर आने के लिये तयार हैं तो उन्होंने इस विषय में कोश के सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास जी को लिखा पर उन दिनों बाबू श्यामसुन्दर दासजी ने सम्पादक कार्य से इस्तीफ़ा भेजा था इस कारण उन्हों ने इस सम्बन्ध में कुछ आज्ञा नहीं दी और पण्डित बालकृष्ण भट्ट जी के विषय में अब बाबू श्यामसुन्दर दास जी स्वयम् प्रबन्ध करेंगे, कोश के कार्यकर्त्ताओं को पदच्युत करने और नियत करने का अधिकार बाबू श्यामसुन्दर दास जी को अब भी है । कोश के झगड़े का कारण इस वर्ष की रिपोर्ट में ही स्पष्ट लिखा है, झगड़ा अब तै भी हो गया है । पण्डित केशव देव शास्त्री की रिपोर्ट बाबू श्यामसुन्दर दास जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास से नहीं मिली, इसकी नकल बाबू शिवप्रसाद गुप्त के पास है और उन्होंने प्रबन्धकारिणी समिति की आज्ञा लेकर उसे छपवा भी दिया है। प्रेसों का जो रुपया बाकी है इसके लिये बोर्ड आफ ट्रष्टीज की स्वीकृति नहीं ली गई, यह ऋण नहीं कहा जा सकता। गत तीनों वर्षों का हिसाब जाचने के लिये जो सज्जन नियत हुए थे उन में से कुछ सज्जनों ने थोड़ा हिसाब जांच कर छोड़ दिया और कुछ सज्जनों ने पूरा हिसाब जांच कर भी केवल थोड़ा सा कार्य छोड़ दिया और अपने हस्ताक्षर नहीं किए। अब बोर्ड आफ ट्रष्टीज़ ने यह हिसाब जांचने के लिये बाबू शिवप्रसाद गुप्त को नियत किया है। सभा के वार्षिक विवरण के साथ चिट्ठा (बेलेन्सशीट) प्रारम्भ से ही नहीं छपता, इस वर्ष इसे तयार करवा देने का भार बाबू शिवप्रसाद गुप्त जी ने लिया था। कार्यविवरण का अन्तिम भाग तारीख़ २४ जूलाई के अधिवेशन में स्वीकृत हुआ था। गत तीन वर्षों की रिपोर्ट में जो हिसाब छपा है उस पर जांच करनेवालों के हस्ताक्षर नहीं हैं अतः उसका छपना नियम विरुद्ध नहीं है।

अधिक सम्मति से निश्चय हुआ कि अठारहवें वर्ष का कार्यविवरण स्वीकार किया जाय और वार्षिक आय व्यय का हिसाब जंच जाने पर स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जाय।

(५) निर्वाचन पत्रों का निम्न लिखित परिणाम सूचनार्थ उपस्थित किया गया :—

सभापति—पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा। उपसभापति-लाला छोटेलाल और बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०। मन्त्री-पं० रामनारायण मिश्र बी० ए०। उपमन्त्री-पं० निष्कामेश्वर मिश्र और बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा।

प्रबन्धकारिणी समिति के अन्य सभासद :—

संयुक्त प्रदेश से-पण्डित श्रीधर पाठक, उपाध्याय पण्डित बदरी नारायण चौधरी। बंगाल से-पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर। विहार से-राय पूरनचन्द्र। मध्यप्रदेश और बरार से-प्रोफेसर मुन्नालाल चौबे। मध्य भारत से-पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०। राजपुताने से-पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा बी० ए०। बम्बई से-सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास।

(६) प्रबन्धकारिणी समिति के काशीस्थ सभासदों के चुनाव के लिये निर्वाचनपत्र वितरित किए गए और इनका परिणाम जांचने के लिये सभापति ने पण्डित निष्कामेश्वर मिश्र, बाबू जगन्मोहन वर्म्मा, बाबू छन्नूलाल और बाबू बेणीप्रसाद को नियत किया।

(७) बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने प्रस्ताव किया कि सन् १९११-१२ का जो बजेट प्रबन्धकारिणी समिति ने तयार किया है उस में व्यय की अपेक्षा आय की कमी है। यह नहीं होना चाहिये और छपाई आदि के सब बिल जिस वर्ष के हों उसी वर्ष में उन्हें चुका देना चाहिए।

राय शिवप्रसाद ने कहा कि इस प्रस्ताव पर इस समय विचार नहीं हो सकता। बजेट की स्वीकृति के समय इसे उपस्थित करना चाहिए। बाबू गंगाप्रसाद वर्म्मा ने इसका समर्थन किया और बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने अपना प्रस्ताव लौटा लिया।

(८) निश्चय हुआ कि सभा के आयव्यय का गत वर्षों का हिसाब दो मास के भीतर जंचवा लिया जाय और इसके उपरान्त सन् १९११-१२ का बजेट सभा में स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जाय और इस बीच में दो मास तक कार्य चलाने के लिये १४००) रु० तक का व्यय स्वीकार किया जाय।

(९) प्रबन्धकारिणी समिति के काशीस्थ सभासदों के सम्बन्ध में निर्वाचन का निम्न लिखित परिणाम सूचनार्थ उपस्थित किया गया:—बाबू बेणी प्रसाद, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, गोस्वामी रामपुरी, रायकृष्णदास गुप्त, पण्डित देवीप्रसाद उपाध्याय, राय शिवप्रसाद, बाबू जयशंकर प्रसाद, बाबू ब्रजचन्द्र।

(१०) पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि बाबू गौरीशंकर प्रसाद जी ने आज तक जिस परिश्रम और सहनशीलता से अपने निज के कार्यों की हानि करते हुए भी सभा की सेवा की है उसके लिये उन्हें सभा का हार्दिक धन्यवाद दिया जाय।

(११) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

रामनारायण मिश्र

मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की बनाई दवाएं २६ वर्ष से सारे हिन्दुस्थान में प्रचलित है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री वेङ्कटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये !

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रासिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर वर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयों की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, बंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

६ प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

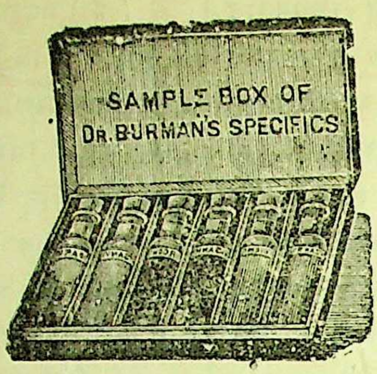

मूल्य १॥) डा० म० ।)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनायाहै इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़ खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमें की दवा—तत्काल दमें को दवाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते है:-

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से—आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाहा गुण भी है बणन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताव दिवरा जिला सारनसे—आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से—छैःमशहूर दवाइय एक ही बकस में जिसकी कीमत१॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बख्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारिफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाईगईहैं।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से-दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि" रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी कर के १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

डा: एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्थापित सं० १८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचलित है

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 414.

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका ।]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १६ | सितम्बर, अक्तूबर १९११ । | भारतेन्दु संवत् २९ | संख्या २

सूचना और सम्मति ।

हमें पयागपुर (बहराइच) के विद्यानुरागी और विचारशील राजा श्रीयुत विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंह जी को बधाई और धन्यवाद देने का अवसर एक साथ प्राप्त हुआ है । श्रीमान् ने हाल ही में अपने राज्य का प्रबंध भार कोर्ट आफ वार्ड्स से अपने हाथ में लिया है । गद्दी पर बैठते ही आपने अपनी प्रजा का सुबीता सोचा और राज्य का सब काम अंग्रेज़ी और हिन्दी में होने की आज्ञा दे दी । धन्य ! इस आज्ञा से छोटे बड़े सब प्रसन्न हैं । यदि इस प्रान्त के और दूसरे धराधीश भी हिन्दी के स्वाभाविक स्वत्व पर ध्यान दें तो देश में एक बड़ी पुष्ट शिक्षा की नीव पड़ जाय ।

—o—

काश्मीर राज्य के शिक्षा विभाग ने वहां के मदरसों में फारसी की जगह हिन्दी पढ़ाए जाने की व्यवस्था की है । जो बात बहुत पहले होनी चाहिए थी वह अब हुई । वर्तमान अधिकारियों की दूरदर्शिता और नीतिकुशलता की प्रशंसा सब विचारवान लोग करेंगे । केवल पंजाब की देखादेखी काश्मीर राज्य में फ़ारसी शिक्षा का प्रचार किया गया था । वहां की प्रजा की भाषा तो डोगरी और काश्मीरी हैं । ये दोनों भाषाएं संस्कृत से सम्बन्ध रखनेवाली हैं । काश्मीरी में तो कहीं कहीं संस्कृत वाक्य प्रायः ज्यों के त्यों बने हुए हैं जैसे 'कहां गया' के स्थान पर काश्मीरी लोग कहते हैं "कुत गच्छ" । डोगरी भी पंजाबी का एक पहाड़ी रूप है । अतः इन दोनों भाषाओं को बोलनेवालों की ठीक ठीक शिक्षा उसी भाषा द्वारा हो सकती है जिसका लगाव संस्कृत से है । इस समाचार से हमारे चिरपरिचित मित्र पैसा अखबार को ऐसा धक्का पंहुचा है कि वह दुःख और आश्चर्य्य के समुद्र में फिसल पड़ा है ।

—o—

लाहौर में जो हिन्दू प्रारम्भिक-शिक्षा-समिति (Hindu Elementary Education League) बनी थी उसने थोड़े दिन हुए यह प्रकाशित किया था कि उसके प्रबन्ध से जो पाठशालाएं खुलेंगी उनमें हिन्दी के द्वारा शिक्षा दी जायगी । भाषातत्व को जानने वाले सब लोग इस बात से प्रसन्न हुए थे क्योंकि इससे देश में भाषा विषयक एकता की पुष्टि होती । पर कुछ लोगों ने इसका विरोध करना अच्छा समझा । विरोध करने में सब से आगे रहे मि॰ बोस नामक एक बंगाली । इन्होंने ट्रिब्यून नामक पत्र में एक चिट्ठी छपाई जिसमें हिन्दी के विरुद्ध ये कारण दिखलाए (१) हिन्दी के एक दरजन जुदे जुदे रूप हैं । समिति किसको ग्रहण करेगी किसको नहीं ? (२) कोई कारण नहीं कि पंजाबियों की असली भाषा पंजाबी की जगह एक भिन्न भाषा हिन्दी घुसाई जाय । (३) हिन्दी में जो शिक्षा की पुस्तकें हैं वे बनारस की हिन्दी में लिखी हैं जिनमें संस्कृत के बहुत से शब्द आते हैं ।

बोस महाशय से पूछना चाहिए कि उन्हों ने किन बारह बोलियों में हिन्दी की किताबें छपी देखी हैं । क्या हिन्दी में जितने पत्र पत्रिकाएं निकलती हैं सब की भाषाएं जुदी जुदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती हैं? पंजाब के लिए हिन्दी भाषा कोई नई नहीं। वहां घर घर हिन्दी के गीत और भजन गाए जाते हैं और बात बात में नीति के दोहे और कुंडलियां पढ़ी जाती हैं। पंजाब में हिन्दी के बहुत से कवि हुए हैं और अब भी हैं। अब चाहिए क्या? आपकी दूसरी बात यह है कि पाठ्य पुस्तकें बनारस की हिन्दी में लिखी जाती हैं और उनमें संस्कृत के शब्द रहते हैं। हम कहते हैं कि आप प्राइमरी पुस्तकों को हाथ में ले कर देखिए, वे बनारस की हिन्दी में नहीं खास दिल्ली आगरे की हिन्दी में लिखी जाती हैं। बनारस की बोली इन पुस्तकों की हिन्दी से उतनी ही दूर है जितनी लाहौर की बोली। पर 'तुम आते हो' को लाहौर के 'तुसि आवँदेओ' बोलने वाले भी समझ लेते हैं और बनारस के दिहात के "तू आवत हौआ" बोलने वाले भी। जान पड़ता है कि हिन्दी भाषा की इस विशेषता पर आपने ध्यान नहीं दिया कि वह एक ऐसे स्थान से ली गई है जो बीचोबीच पड़ता है। दिल्ली से यदि पश्चिम लाहौर की ओर बढ़ते जाइए तो भी उसका अधिकार मिलेगा और पूरब पटने की ओर बढ़िए तो भी। बोस महाशय से शायद अब अपनी बँगला से काम नहीं पड़ता यदि पड़ता तो संस्कृत शब्दों पर वे इतने नाराज़ न होते। संस्कृत शब्द जिन पर बँगला, हिन्दी, पंजाबी सब का समान स्वत्व है जहां ज़रूरत होती है वहीं रक्खे जाते हैं। बोस साहब की राय पर "पैसा अखबार" से न खुश होते बनता है न नाराज क्योंकि वे हिन्दी का विरोध करके पंजाब में पजाबी की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं न कि उर्दू की।

—o—

पंजाब हिन्दू कानफ़रेंस की जो तीसरी बैठक अमृतसर में हुई है उसमें हिन्दी और संस्कृत के विषय में यह मन्तव्य स्थिर हुआ है:—

"यह कानफ़रेंस प्रत्येक हिन्दू के लिए हिन्दी और संस्कृत का पढ़ना पढ़ाना आवश्यक समझता है। प्रारम्भिक शिक्षा की सुगमता के लिए चाहिए कि शिक्षा हिन्दीं वा पंजाबी में, जहां जैसी आवश्यकता हो, नागरी वा गुरुमुखी अक्षरों के द्वारा दी जाय"

पंजाब के लिए यह प्रस्ताव बड़े महत्व का है इससे इसके सम्बन्ध में कुछ कहना आवश्यक है। पंजाबी भाषा अभी साहित्य की भाषा नहीं हुई है। उसे अभी बनाना है। यह तो सिद्ध बात है कि किसी मूल भाषा (Classical language) का सहारा लिए बिना कोई देशभाषा विचारक्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकती। उत्तरीय भारत की सब भाषाओं का मूल रूप संस्कृत में मिलता है अतः स्वाभाविक नियमानुसार काम पड़ने पर पहिले वे उसी से शब्द लेती हैं। उससे निराश हो कर तब और दूसरा द्वार देखती हैं। इससे बड़ी भारी बात यह होती है कि सब भाषाओं का परस्पर सम्बन्ध और उसके द्वारा कालान्तर में एक भाषा होने की सम्भावना बनी रहती है। पंजाबी को चाहिए कि और उन्नत देश भाषाओं की तरह वह भी जहां तक हो सके संस्कृत ही से सहायता ले कर चले। ऐसा करने से वह भारत की सब भाषाओं के मेल में रहेगी। इस समय जितनी देश भाषाओं ने साहित्य कर लिया है उतनी देश के प्रयोजन के लिए बहुत हैं। फिर भी यदि कोई भाषा साहित्य रूप में आना ही चाहे तो उसे उसी सूत्र का सहारा लेना चाहिए जिसमें और सब भाषाएं बँधी हुई हैं।

—o—

प्राचीन आर्य्य।

(३)

छन्द और ऋषि के अतिरिक्त एक तीसरा पदार्थ देवता है जिसके विषय में कुछ छानबीन करने की आवश्यकता है। यह एक ऐसा आवश्यक विषय है जिसका निर्धारण किए बिना वेदार्थ का समझना अत्यन्त दुरूह है। प्राचीन काल में वेदों की उपक्रमणिकायें न थीं जिनमें प्रत्येक मन्त्र के ऋषि, छन्द और देवता लिखे रहते हैं। उस समय देवताओं के निश्चय करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। कभी कभी तो ऐसे मन्त्र सामने आजाते थे जिनके देवता का पता चलाना बड़े बड़े ऋषियों के लिये भी कठिन पड़ता था। यास्काचार्य जी निरुक्त में एक स्थल पर यह प्राचीन इतिहास लिखते हैं:—

शाकपूणिः सङ्कल्पयाञ्चक्रे सर्वा देवता जानामीति। तस्मै देवतोभयलिङ्गा प्रादुर्बभूव। तान्न जज्ञे। तां पप्रच्छ विविदिषाणि त्वेति। सास्मा एता मृचमादि देशैषा मद्देवतेति।

अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुध्वंसना वधि श्रिता। साचित्तिभिर्निहि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रि मौहत। ऋ० २। ३। १९।४।

ऋषि शाकपूणि ने संकल्प किया था कि सब मन्त्रों के देवताओं को जान लूंगा। उसके सामने एक ऐसा मन्त्र आगया जिसका देवता उभयलिंगा था। उसको वह न जान सका। उससे ऋषि ने कहा कि मैं तुम्हें जानना चाहता हूं तब उस देवता ने उस को यह मन्त्र बतलाया और कहा कि इसी मन्त्र का मैं देवता हूं। इस मन्त्र में पहिले दो चरण का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता पुल्लिंग है और अन्त के दो चरणों का देवता स्त्रीलिंग है। यह उन लोगों को जिनको संस्कृत भाषा में लिंग बोध-मात्र है "सः" और "सा" पदों से पता चल सकता है। यही नहीं किन्तु आदि के आधे का द्युस्थानस्थ और अन्त का मध्यस्थानवाची देवता है। तात्पर्य्य यह कि वेद मन्त्रों के देवता का निश्चय एक अत्यन्त उपयोगी विषय है जिसके ठीक निश्चय करने में बड़े बड़े विद्वानों को भी भ्रम हुआ है और हो सकने की संभावना है। *

नोट * द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।
अथर्व ८।५।८।२०। ऋ १।१६४।२०

इस मन्त्र का अर्थ प्रायः ब्राह्मण उपनिषदादि से लेकर शंकराचार्य्य और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी तक ने जीव और ईश्वर पर किया है। पर वास्तव में यदि इस मन्त्र का अर्थ देवता के अनुसार किया जाय तो इस में अद्भुत विज्ञान का बीज पाया जायगा। इस सूक्त भर में सूर्य्य की विभूति का वर्णन है। मन्त्र २१ यह है:—

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्राविवेश।

इसकी व्याख्या निरुक्त अ०, ३।२१ में इस प्रकार की है:—

"यत्र 'सुपर्णाः सुपतना आदित्य रश्मयोऽमृतस्य भाग मुदकस्यानिमिषन्तो वेदनाभिस्वरन्तीति वाभिप्रयन्तीति वेश्वरः सर्वेषां भूतानां गोपायितादित्यः 'समाधीरः पाकमात्रा विवेशेति, "धीरो 'धीमान्' पाकः' पक्तव्यो भवति विपक्वप्रज्ञ आदित्य इत्युपनिषद्वर्णो भवतीत्यधिदैवतम्"

जिसमें सूर्य्य की किरण जल के अनिमेष भाग को वेदना पूर्वक खींचती है वह धीर समस्त लोकों का रक्षक आदित्य देव हम में पाचन शक्ति देवै।

२२ मन्त्र यह है।

यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे देवा सम्पिबते यमः।
अत्रनो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनुवेनति।

इस मन्त्र की व्याख्या निरुक्त १२।३।१० इस प्रकार है:—

'यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे' वृतक्षये वापि वोपमार्थस्या द्वृक्षं इव सुपलाशे इति वृक्षो वृश्चनात्पलाशं पलाशना दे वैः सङ्गच्छते यमो रश्मिभिरादित्यस्तत्रनः सर्वस्य पाता पालयिता वा पुराणानुकामयेत।

जिस मलरहित लोक में सूर्य्य अपनी किरणों से प्राप्त होता है वहां सब संसार का रक्षक पिता आदित्यदेव हमारी पुरानी कामनाओं को पूर्ण करै वा हमारे पूर्वजों के अभिप्राय को पूरा करै।

इन दोनों मन्त्रों के निरुक्त से यह स्पष्ट है कि २० वें मन्त्र का भी देवता सूर्य्य ही है जिसके न निश्चय करने से अन्यत्र यह एक मात्र जीव और ब्रह्म पर घसीटा गया है। मेरा यह तात्पर्य्य कदापि नहीं है कि वह अर्थ जो प्राचीन और आधुनिक आचार्य्यों ने किया असंगत है बल्कि देवतानुसार अर्थ की प्रधानता दिखलाना है। यों तो कोई प्रकरण विरुद्ध जैसा चाहे अर्थ कर सकता है और प्रायः विद्वान भाष्य कारों ने किया भी है। देवता के निश्चय करने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और भाष्य कारों ने इस कठिनाई से बचने तथा शीघ्र अर्थ करने के लिये वा स्वसिद्धान्तस्थापनार्थ अन्य अर्थ किया है। अब जब इसका देवता सूर्य्य निश्चय हो गया तब इस के अर्थ पर विचार करते ही ज्ञात होगा कि मन्त्रकार ऋषि ने इस मन्त्र में प्रकाश और तेज के विज्ञान (Theory of light and heat) को प्रकाशित किया है। हम मन्त्र का अर्थ करने के पहिले हम यह बतला देना चाहते हैं कि इस मन्त्र में तीन प्रधान पद हैं जिनके अर्थ निश्चय हो जाने से मन्त्र का आशय स्पष्ट झलक जाता है। वे पद 'सुपर्ण', वृक्ष,' और पिप्पल' हैं। पूर्व उदाहृत निरुक्त के वाक्यों से तो सुपर्ण का अर्थ सूर्य्य की किरण और वृक्ष का अर्थ स्थान वा देश निश्चय हो गया। अब पिप्पल का अर्थ बतलाना है। निघंटु अध्याय १ खण्ड १२ में पिप्पल पद का पाठ उदक नाम में है। पिपर्तीति पिप्पलम् इसकी व्युत्पत्ति है। अब शुद्ध अर्थ लीजियेः—

दो प्रकार की सूर्य्य की किरण होती हैं जो एक दूसरे से मिली हुई सदा साथ रहती हैं। ये दोनों जब किसी स्थान पर पहुचती हैं तब साथ ही पहुचती हैं। इन दोनों में एक तेज (Heat) है जो जल को ग्रहण करता है और दूसरा प्रकाश (Light) है जो कुछ ग्रहण नहीं करती केवल प्रकाश मात्र करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता क्या है इसके जानने की अत्यन्त आवश्यकता है। साधारण अर्थ तो देवता शब्द का उसकी व्युत्पत्ति के ज्ञान से हो सकता है। निरुक्त में लिखा है:—

देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थाने भवतीति वा। देवता वा देवशब्द दान दीपन और द्योतन से बनता है। तथा द्युस्थान में रहने वाले को भी देवता कहते हैं।

व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ होने पर भी "मन्त्र के देवता" शब्द से मन्त्र का विषय (Subject) ही लिया जाता है। निरुक्त में लिखा है:—

"यानि न मानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां तद्दैवतमित्याचक्षते"।

स्तुति वा मन्त्र में जिन देवताओं के नाम प्रधान हैं वे देवता कहलाते हैं उन का वर्णन जिस प्रकरण में हो उसे दैवत कहते है। आगे चल कर कहा है:—

यत्काम ऋषिर्यस्या देवतायामार्थपत्य मिच्छन्स्तुति प्रयुङ्क्तेतद्दैवतः समन्त्रो भवति।

ऋषि किसी अभिप्राय से जिस देवता की स्तुति करता है वह उस मन्त्र का देवता है। सायणाचार्य्य जी ने लिखा है:-

"यस्य वाक्यः स ऋषिर्यातेनोच्यते सादेवता"

जो मन्त्र जिसका वाक्य है वह उस मंत्र का ऋषि है और जो विषय उस मन्त्र में वर्णन किया गया है वह देवता है।

देवता यद्यपि उपक्रमणिका में प्रत्येक मन्त्र के लिखे गये हैं और वे याज्ञिकों के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं किन्तु नैरुक्तकों और विशेष कर ऐतिहासिकों के लिये वे बहुत कम उपयोगी हैं। निरुक्त में लिखा है:—

तद्येऽनादिष्ट देवता मन्त्रास्तेषु देवतोपपरीक्षा। यद्दैवतः सयज्ञो वा यज्ञाङ्गं वा तद्दैवता भवन्ति। अथान्यत्रयज्ञात्। प्राजापत्या इति याज्ञिकार। नाराशंसा इति नैरुक्ताः। अपि वा सा कामदेवता स्यात् प्रायो देवता वा। अस्तिह्याचारो बहुलं लोके देव देवत्य मातिथि देवत्यं पितृ देवत्यम्।

जिन मन्त्रों में देवता स्पष्ट नहीं है उनमें देवता का निश्चय करना चाहिये। वह यज्ञ वा यज्ञांग जिस देवता से संबंध रखता है वही देवता उस मन्त्र का भी होता है। ऐसे मन्त्रों के जिनका प्रयोग यज्ञ में नहीं होता देवता याज्ञिकों के मत से प्रजापति हैं। नैरुक्तक उनके "नाराशंस" देवता मानते हैं अथवा काम (कामना वाञ्छा से निश्चित) देवता वा प्रायो (प्रकरणानुसार निर्णीत) देवता मानते है। संसार में भी भिन्न भिन्न प्रकार के काम होते हैं कोई देवता के लिये कोई अतिथि के लिये और कोई पिता आदि के लिये।

सारांश यह है कि ब्रह्म से लेकर स्तम्भ पर्य्यन्त वेद मन्त्रों के देवता वेदों में माने गये अर्थात् छोटे से छोटे पदार्थ से लेकर बड़े से बड़े पदार्थों का वर्णन ऋषियों ने वेदों में किया है। इन्हीं देवताओं वा विषयों के निश्चय होने पर वेदार्थ का सच्चा ज्ञान होता है।

वेदार्थ के विषय में कई पक्ष हैं ऐतिहासिक, नैरुक्तक याज्ञिक अध्यात्मवादी आदि। इन सब पक्षों में ऐतिहासिक मत सब से प्राचीन है। आदि मन्त्रकाल के पीछे जब शब्दों का ज्ञान स्थूल होने लगा और कुछ शब्द विशेष अर्थों में प्रयुक्त होने लगे तब ऋषियों की कविता शक्ति स्वयंभू दिव्य प्राकृतिक पदार्थों से च्युत हो सांसारिक गिरि नदी निर्झर आदि पदार्थों के, विशेष कर जिन का उन लोगों ने नाम करण कर लिया था, वर्णन की ओर झुकी। यही क्रमशः अधःपतित होती हुई मनुष्यों की कीर्ति सुयश दानादि के वर्णन की ओर प्रवृत्त हुई और ऋषियों का एक दल एक विशेष प्रकार की कविता करने की ओर प्रवृत्त हुआ जिस को प्राचीन भाषा में गाथा कहते थे। यही गाथा क्रमशः उतरती हुई इतिहास पुराण नाराशंसी इत्यादि भेदों में विभक्त हुई। यह रचना मन्त्रकाल ही में प्रारंभ हुई। संभव है कि इनके ग्रन्थ पृथक् भी रहे हों पर वे अब मिलते नहीं। गाथाएँ मन्त्रसंहिताओं में तथा ब्राह्मण ग्रंथों में इधर उधर विकीर्ण मिलती हैं। आचार्य सत्यव्रत सामश्रमी जी भी गाथा काल के विषय में निरुक्तालोचन के पृष्ठ "तै" में लिखते हैं:—

एत द्युगारम्भात्पुरैव प्रणीतानि कुसुरुविन्दादिभि ऋषिभिरनुब्राह्मणादीनि ततः पूर्वस्मिन्नेव युगे कल्पे वा महीदासादिभिः श्लोका गाथादीनि संगृह्य तदनुसारेणा कृतान्यैतरेयादीनि ब्राह्मणानि, ततः पुर एव युगे कल्पे वा प्रवादाने वानुसृत्य प्रणीताः श्लोकानुश्लोकगाथदया; ततः पुर एव युगे कल्पे वा श्रूयन्तेस्म विकर्णाः प्रवादस्तत एवाद्यापिते श्रतय इत्याख्या यान्तेच। ततः पुर एव युगे कल्पे वा भवद्यज्ञ प्रयोगारम्भः। तद्दैवाथवणाकृत एकेनैव यत्नेव चतुः संहिता संग्रहः॥

इस युग के आरंभ के पहिले कुसुरुविन्दादि ऋषियों ने अनुब्राह्मणों को रचा था। उसके पूर्व उसी युग वा कल्प में महीदासादिने श्लोक गाथादि का संग्रह कर उनके अनुसार ऐतरेयादि ब्राह्मणों को रचा। उसके पहिले के कल्प वा युग मे प्रचरित प्रवादो का संग्रह करके श्लोक अनुश्लोक गाथा नाराशंसी आदि ऋषियों ने रचे थे। इसके पूर्व कल्प वा युग मे विकीर्ण प्रवाद सुने जाते थे और वे आज तक श्रुतिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम से प्रसिद्ध हैं। उसके पूर्व कल्प वा युग में यज्ञ की प्रथा चली थी। इसके लिये अथर्वा ने चार संहिताओं का संग्रह किया था।

पारसियों के धर्म ग्रन्थों पर दृष्टिपात करने से यह सुनिश्चित रूप से निर्धारित हो सकता है कि उनका वेदों के साथ न केवल घनिष्ट सम्बन्ध है बल्कि वे प्रकारान्तर से वेदों की किसी शाखा के रूपान्तर हैं। वेदों के बहुत से मन्त्र उनमें ज्यों के त्यों आये हैं यद्यपि देश भेद से उनके शब्दों में उच्चारणभेद और पाठभेद हैं। वेदों के वाक्य मन्त्र कहलाते हैं उनके धर्म ग्रन्थ के वाक्य भी "मन्थर" कहे जाते हैं। वेदों का एक नाम "छन्द" है उनके प्रधान ग्रन्थ का नाम "जन्द" जो छन्द के साथ बहुत कुछ मिलता जुलता है। वैदिक साहित्य में "गाथा" हैं जो विकीर्ण हैं, उनके यहां वे अब भी बहुत कुछ मिलती हैं। जन्द के साथ अवस्था का वही सम्बन्ध है जो मन्त्र संहिताओं के साथ ब्राह्मण का। अवस्था शब्द "व्यवस्था" से बहुत कुछ मिलता है जिस्का अर्थ विवरण व्याख्या है। हिन्दुस्थान के आर्य्यों में सोमयज्ञादि की प्रथा थी, वे भी नित्य अग्निहोत्र करते थे, पारसियों के ग्रन्थों में भी होमयष्टि आदि "यशनों" का उल्लेख है और अब तक वे अग्निहोत्र करते हैं। इस प्रकार पारस आदि देशों में आर्य्यों का साम्राज्य होने तथा वहां की नदियां आदि का नाम वेदों में मिलने से यह दृढ़ रूप से प्रमाणित है कि जन्द भी वेदों की शाखाओं का एक रूपान्तर है तथा जन्द भाषा वैदिक भाषा से निकली एक अति प्राचीन भाषा है और भारतीय आर्य्यों तथा पारसी आर्य्यों के धर्मादि में बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध है।

प्राचीन काल के आचार्य्यों ने मन्त्रो को कई प्रकार के भेदों में विभक्त किया था। कहीं कहीं पुरुष के अनुसार 'प्रत्यक्ष कृत, परोक्षकृत और आध्यात्मिक" कहीं विषय के अनुसार 'आध्यात्मिक आधि दैवत, आधियाज्ञिक' भेद से कहीं कहीं भाव के अनुसार विभाग हैं। निरुक्त के दैवत काण्ड में इसका विशेष विवरण है। ये सब विभेद जिस समय किये गये थे उस समय के लिये उपयोगी थे। अतः अब हम वेद मन्त्रों को चार विभागों में विभक्त करना उचित समझते हैं:—

* १ वे मन्त्र जिनमें स्वयम्भू अनादि प्राकृतिक पदार्थों का अविकल शुद्ध भाव से वर्णन है। (१)

२ वे मन्त्र जिनमें प्राचीन काल के गिरि नदी निर्झर वनस्पत्यादि का वर्णन है। (२)

नोट * (१) जैसे: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्,

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्।

होतारं रत्नधातमम्।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।

दृशे विश्वाय सूर्य्यम्।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।

इत्यादि।

(२) जैसे:-

मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्निरीरमत्।

मा वः परिष्ठात्सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत्सुम्नमस्तु वः

ऋ० ५। ५३। ८

भा० हमारी अति प्रभाव वाली 'रसा, नदी तुम को न रोके, कुभा नदो भी तुम को न रोके, और क्रुमु भी तुम को न रोके, सिन्धुनद जिसमें क्रुमु नदी मिलती है तुम को न बाधा डाले और उस क्रुमु और सिन्धुकेसङ्गम से परे सजल सरयू नदी भी तुमारे गमन में बाधा न डाले।

इसी प्रकार—

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शतुद्रिस्तोमं सचता परुष्ण्या

असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्यासुषोमया।

ऋ १०। ७५। ५

गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः

प्रेष्यं जनमिव शेवधिं त समानं परिदद्मसि। अथर्वं

प्रवेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः।

सोमस्येव मौजवतस्यभक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान्।

ऋ। १०। ३४। १।

(३) जैसे।

अदान्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्युर्वधूनाम्।

मंहिष्ठो अर्यः सत्पतिः।

उत मे प्रयियोर्वयियोः सुवास्त्वा अधि तुग्वनि।

तिसृणां सप्ततीनां श्यावः प्रणेता भुवद्वसु दियानां पतिः।

ऋ० म ८। १९। ३६। ३७

अर्थ। पूज्यतम ऐश्वर्यवान सत्पति पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु नाम राजा ने मुझे पचास वधुओं को दिया। और मुझे धन सम्पत्ति वस्त्राच्छादन और तीन सत्तर अर्थात् २१० गायें, जिनका प्रणेता उनका स्वामी काला सांड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ वह मन्त्र जिन में यज्ञादि तथा दानादि का वर्णन है। (३)

४ वह मन्त्र जिनमें उस समय के आचार व्यवहार मिथ्या प्रवाद विश्वास अपवाद (Superstitions) आदि का उल्लेख है। (४)

याज्ञिक मन्त्र यद्यपि यज्ञादि के लिये बहुत उपयोगी हैं पर ऐसे विचार के लिय उपयोगी नहीं हैं जिसके करने को हम उद्यत हैं। हम शेष प्रकार के मन्त्रों के आधार पर कुछ ऐतिहासिक रीति से विचार करने का साहस करते हैं। ऐतिहासिक रीति का विचार यद्यपि आज कल के मतवादियों को अरुचिकर होगा तो भी इतिहासप्रिय सज्जनों के लिये एक मनोरंजक विषय होगा। ऐतिहासिक पक्ष की प्राचीनता के विषय में मुझे विशेष कहने की आवश्यकता नहीं केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त है कि निरुक्तकार यास्काचार्य्य के समय से बहुत पूर्व जब ब्राह्मणादि ग्रन्थ रचे गये इस पक्ष के ग्रन्थ लुप्त हो गये थे और यास्काचार्य्य को निरुक्त रचते समय न तो किसी ऐतिहासिक ग्रन्थ का ही पता चला और न किसी आचार्य्य का नाम ही उनको ज्ञात हो सका और विवश हो कर उनको "इत्यैतिहासिकाः" "अत्रेतिहासमाचक्षते" इत्यादि वाक्यों को लिख कर ही सन्तोष करना पड़ा।

उन्हीं प्राचीन आचार्य्यों की शैली का अवलम्बन कर आज मैं इस विचार में प्रवृत होता हूँ:—

साधवो येन गच्छन्ति तेन गच्छन्नदोषभाक्।
निन्दा वा यदि वा शंसा नानुगानां हि युज्यते॥

जगन्मोहन वर्म्मा

था, दों उसने यह दान सुवास्तु नदी के घाट पर किया। इत्यादि।

(४) जैसे:-

इमां खनाम्योषधिं वीरुधं बलवत्तमाम्।
यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम्। ऋ० मं १०।१४५।१

अर्थः। मैं इस बलवान ओषधी को खोदता हूं जिससे सपत्नी को बाधा पहुचाते हैं और पति को अनुकूल करते हैं।

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।

ऋ० १०।१६५।१

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे।
दर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः। अथर्व। २१।४।२८।१
यो नः शापादशपतः शपतो यश्चनः शपात्।
वृक्ष इव विद्युता हत आमूलादनुशुष्यतु। अथर्व ७।६।५९।१
यथा वृक्षमशनिर्विश्वहा हन्त्यप्रति।
एवाहमद्य कितवानक्षैर्बध्यासम्प्रति। अथर्व ७।५।५०।१
यौ व्याघ्रावववरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च।
तौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः। अथर्व६।१३।१४०।१
धकधूमं नक्षत्राणि यद्राजानमकुर्वत।
भद्राहमस्मै मायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति। अथर्व ६।१३।१२८।१
यो न जीवोसि न मृतोसि देवानाममृतगर्भोसि स्वप्न।
वरुणानी ते माता यमः पिता ररुर्नामासि।
विद्म ते स्वप्नजनित्रं देवजामीनां पुत्रोसि यमस्य करणः अन्तकोसिमृत्युरसि। तं त्वा स्वप्न तथा संविद्म सनः स्वप्न दुःस्वप्नात्पाहि।
यथा कला यथा शफं यथर्णं संनयन्ति।
एवा दुःष्वप्न्यंसर्वं द्विषते संनयामसि। अथर्व ६।५।४६
इत्यादि।

द्वितीय हिन्दीसाहित्य सम्मेलन।

प्रयाग की नागरी-प्रवर्द्धिनी-सभा के उत्साही सभासदों के असामान्य उद्योग और कार्य्यदक्षता से द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की बैठक बड़ी सफलता के साथ हो गई। २४ सितंबर को सवेरे पं० गोविन्द नारायण मिश्र इलाहाबाद के स्टेशन पर पहुंचे और उनकी सवारी चौक से होती हुई हिंदू बोर्डिंग हाउस की ओर चली। साथ में धीरे धीरे चलती हुई हिन्दी के विद्वानों और नगर के प्रतिष्ठित सज्जनों की भीड़ से हिन्दी की वर्तमान गंभीर और अनिवार्य गति का आभास मिल रहा था। "द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन" के दो झंडे हिन्दी प्रेमियों के चित्त के समान लहरा रहे थे। लोगों की उमंगें रंग विरंग के फूलों के रूप में बरस रही थी। बीच बीच में 'हिन्दी भाषा की जय', 'राष्ट्रभाषा की जय' 'भारतेन्दु की जय' सुनने को मिलती थी। मार्ग में सब से मनोहर दृश्य देखने को मिला जान्सनगंज की कन्य पाठशाला के सामने, जहां छोटी छोटी सुकुमार बालिकाओं ने एक पंक्ति में खड़ी हो कर मंगल गान किया और थाली में पुष्प, धूप, दीप सजाकर सभापति महाशय का प्राचीन पद्धति के अनुसार पूजन किया। ११ बजते बजते सवारी नियत स्थान पर पहुंची और लोग अपने अपने डेरों पर गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी दिन २ बजे से सम्मेलन का कार्य्य आरम्भ हुआ। सब लोगों के यथा स्थान बैठ जाने पर दो लड़कों और कई लड़कियों ने मंगलाचरण किया। फिर स्वागतकारिणी समिति के सभापति हिन्दी क्षेत्र के भीष्म पितामह पं० बालकृष्ण भट्ट के उठते ही एक बार लोगों की आंखों के सामने तीस वर्ष पहिले से लेकर आज तक का समय फिर गया। उन्हों ने जिस समय अपनी छपी वक्तृता हाथ में ली और उसे पढ़ना आरंभ किया लोगों के चेहरों पर पूज्यभाव की सौम्यता छागई। भट्ट जी के कुछ अंश पढ़ चुकने पर जब पं० रास बिहारी शुक्ल ने समझा कि उन्हें आगे पढ़ने में कष्ट होगा तब वे उनकी ओर से उस वक्तृता को सुनाने लगे। पर समाप्त होने के पहिले भट्ट जी ने परचे को फिर अपने हाथ में लिया और उसका शेषांश पढ़ कर पं० गोविन्द नारायण मिश्र से सभापति का आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया। इसके पीछे उपाध्याय पंडित बदरीनारायण जी चौधरी (प्रेमघन) अनुमोदन करने उठे। उनको सामने देख उपस्थित समुदाय को भारतेन्दु का समय याद आया, जब कि वर्तमान हिन्दी के लिए राह निकल रही थी। चौधरी जी ने पं० गोविन्द नारायण मिश्र के गुणों की कुछ सूचना देकर भट्ट जी का अनुमोदन किया। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने विविध भाव-पूरित शब्दों में समर्थन किया। आप के समर्थन में लोगों को बड़ा आनंद आया। पं० गोविन्दनारायण ने सभापति के आसन को ग्रहण किया। अब कविताओं और लेखों के पढ़ने की बारी आई। पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी ने पद्य में 'हिन्दी का सन्देश' एक एक अक्षर के साथ पूरी रिआयत कर के सुनाया। पं० लोचन प्रसाद पांडे की कविता पढ़ी जाने के बाद पं० माधव शुक्ल ने अपना ब्रजभाषा और खड़ी बोली का भेदभाव मिटाता हुआ पद्य सुनाया। आगरे के पं० सत्यनारायण जब तक अपनी सुरीली लय और अनोखी लटक के साथ कुछ ब्रजभाषा की कविताएं सुनाते रहे तब तक लोगों को टक बांध कर ताकने को छोड़ और कामों से छुट्टी रही। लोगों का यह स्वप्न टूटा कब, जब उन्होंने सभापति जी को खड़े होने के लिए तैयार होते देखा। सभापति जी उठे और समुदाय को सम्बोधन करके बोले:—

"प्रिय सज्जनो! आप लोगों ने जिस प्रकार मेरा स्वागत किया है, उसे देख कर मैं स्तब्ध हो गया हूं। जिस समय बालिकाओंने वेदध्वनिसे मेरा अभिनन्दन किया, उस समय मुझे एक पुरानी आख्यायिका स्मरण हो आयी (यहां आप ने सारस्वत ऋषि के अपनी माता द्वारा वेदाध्ययन की आख्यायिका सुनायी) मुझे मालूम हुआ कि युग बदल रहा है। उस मधुर वेदध्वनि को सुनकर मैं गद्गद हो गया। जुलूस के सम्बन्ध में आप लोगों ने जो प्रबन्ध किया उसकी यथार्थ प्रशंसा करने के लिये मैं अपने को असमर्थ मानता हूं। इन सब बातों के साथ ही यहां आने पर मेरे पुराने मित्र पण्डित-वर बालकृष्ण भट्ट और पण्डित वर बदरीनारायण चौधरी ने जिन शब्दों में मेरा नामोल्लेख किया उन्हें सुनकर मैं चकित हो गया। मित्र हो कर इन महाशयों ने जिस प्रकार मेरी प्रशंसा की है, उससे मुझे बहुत ही सङ्कोच हुआ है। मुझे इनसे कभी ऐसी आशा न थी! मुझ में योग्यता कुछ भी नहीं है। परन्तु योग्यता आप में है। जिसको चाहें आपलोग योग्य बना सकते हैं। मेरा प्राकृत ज्ञान यथेष्ट नहीं है। मेरे सम्बन्ध में मेरे मित्रों ने अतिशयोक्ति की है। परन्तु आप लोगों की आज्ञा शिरोधार्य्य मान मैं अपलोगों को धन्यवाद देता हूं"।

सभापति जी के साधु भाषण को तो लोगों ने बड़े धैर्य्य कौतूहल और प्रेम से सुना पर जब उन्होंने अपना छपा व्याख्यान वा 'गद्य काव्य' हाथ में लिया तब लोगों के हृदय में सहसा एक अपूर्व ज्ञान का उदय हुआ, उन्हें मालूम हुआ कि बड़ी कड़ी गरमी पड़ रही है। जिसके सामने जो कागज पड़ा उसी को लेकर वह अपने मुंह पर हवा करने लगा। बहुत से लोग व्याकुलता नाट्य करते हुए बाहर निकल आए। इनमें से कुछ लोग तो समाप्ति की आशा में इधर उधर देर तक मंडराते रहे, औरों ने अपनी अपनी राहली। पहिले दिन की लीला तो इस तरह समाप्त हुई। विषय निर्धारिणी समिति के चुनाव तक बहुत कम आदमी रह गए। यहीं पर यदि मैं यह कहूं तो बात बेठिकाने न होगी कि इतने बड़े जन समुदाय के सामने लंबे २ लेखों को आदि से अंत तक पढ़ने का विधान ठीक नहीं। लेख चाहे कितनी ही सफाई और ऊंचे स्वर से पढ़े जायँ उनकी ओर आस पास के लोगों को छोड़ सब का ध्यान नहीं रह सकता। अधिकांश लोग तो दूर पर एक आदमी को कागज में मुंह छिपाए खड़ा देख उलटा ऊबते हैं। ऐसे अवसरों पर व्याख्यानों से अधिक काम होता है। लेख पढ़ने का सुबीता तो किसी विषय के विद्वानों की ऐसी चुनी हुई मंडलियों के बीच होता है जैसी बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी, लंडन की जाग्रफ़िकल वा अस्ट्रानामिकल सोसाइटी, इत्यादि। यदि ईश्वर की कृपा रही तो सम्मेलन दिन दिन अपने पैर फैलावेगा। जितने लेख आए थे आगे चल कर उनसे अधिक ही आवेंगे, कम नहीं। ऐसी अवस्था में अच्छा यह होगा कि जो बहुत अच्छे लेख आवें, जिनमें नई और चिन्तनीय बातें हों, उनके लेखकों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना की जाय कि वे अपने लेख का सारांश मञ्च पर आकर थोड़े में सुनावें अथवा लिख कर किसी दूसरे को सुनाने के लिए दे दें। ऐसा होने से समय भी बचेगा और काम भी होगा।

विषय निर्धारिणी कमिटी में इतने अधिक आदमी चुन लिए गए कि जो काम एक घंटे में होने का था वह चार घंटे में हुआ। कार्य्य साधक परामर्शों के अभाव में की और को आदि पर झगड़ा चलता रहा।

दूसरे दिन १२ बजे से फिर सम्मेलन आरम्भ हुआ। पंडित महाबीर प्रसाद द्विवेदी ने "हिन्दी की वर्त्तमान अवस्था, पर एक लेख भेजा था। यद्यपि द्विवेदी जी भी उपस्थित थे पर किसी कारण से पं० रामजीलाल शर्मा ने उस लेख को पढ़ना आरम्भ किया। लेख के समाप्त होते होते उसमें ज़िक्र आया समालोचना का। अतः द्विवेदी जी उठे और उन्हों ने उस अंश को स्वयं पढ़ कर सुनाया। पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा की प्राचीन तथा अर्वाचीन अंकों की लिखाई में परिवर्त्तन नामक लेख पढ़ा। इसके पीछे वृन्दावन के पं० राधाचरण गोस्वामी ने अष्टछाप के कवियों के सम्बन्ध की कुछ इधर उधर की प्रसिद्ध बातें कहीं। साहित्याचार्य्य पं० रामावतार पांडे एम० ए० के लेख को, जिसमें कई विचारणीय और काम की बातें हैं, पं० हरनन्दन पांडे बी० ए० ने सुनाया। पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने भी हिन्दी की अवस्था पर एक अच्छा लेख पढ़ा।

किसी प्रकार लेखों का पढ़ा जाना बंद हुआ कार्रवाई शुरू हुई। सभापति ने स्वयं ये दोनों प्रस्ताव उपस्थित किए:—

पहला प्रस्ताव।

यह सम्मेलन भारतवर्ष में अपनी भारतवर्षीय प्रजा के बीच सम्राट पञ्चम जार्ज के राज्याभिषेकोत्सव के निश्चय पर अपना असीम हर्ष प्रकट करता हुआ धन्यवाद देता है और उनके मङ्गल के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता है।

दूसरा प्रस्ताव।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र. पं० पुत्तनलाल सारस्वत और पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा राजवैद्य की असामयिक मृत्यु से हिन्दी साहित्य को बहुत हानि पहुंची है। यह सम्मेलन इन सज्जनों की मृत्यु पर अत्यन्त शोक और उनके कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति प्रकट करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उनकी आत्माओं को शान्ति प्रदान करे।

तीसरा प्रस्ताव।

इस सम्मेलन को यह देख कर बहुत आश्चर्य्य और दुःख हुआ है कि गवर्नमेण्ट के जो नये नोट निकले हैं उनमें यद्यपि ऐसी लिपियां बढ़ायी गयी हैं जो पहले नहीं थीं, तथापि देवनागरी लिपि जो सदा से नोटोंपर रही हैं, नहीं रक्खी गई है।

भारतवर्ष भर में नागरी लिपि सब लिपियों में मुख्य लिपि है। अन्य लिपियां प्रायः सभी नागरी लिपि के रूपान्तर हैं और उनके जाननेवाले प्रायः सभी नागरी लिपि जानते हैं। नागरी लिपि ही ऐसी लिपि है जिसको भारतवर्ष के अधिकांश लोग जानते हैं। इस कारण गवर्नमेण्ट का नोटों में नागरी लिपि को न रख उसका निरादर करना प्रजा के व्यापारों में बहुत हानिकारक है और नोटों के प्रचार में भी बाधा डालेगा।

इस सम्मेलन के विचार में बाबू भूपेन्द्रनाथ बसु के नागरी सम्बन्धी प्रश्न पर २२ सितम्बर सन् १९११ ई० को बड़े लाट की लेजिस्लटिव कौन्सिल में जो उत्तर सर गाई फ्लीटवुड विलसन ने दिया था वह सन्तोष जनक नहीं है नागरी कोई भाषा नहीं किन्तु लिपि है। कैथी लिपि का कदापि उत्तरीय भारत की व्यापारी जातियों में नागरी लिपि से अधिक प्रचार नहीं है और कैथी की अपेक्षा नागरी लिपि का नोटों में रखना अधिक आवश्यक है।

अतएव यह सम्मेलन गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करता है कि जैसे ही दूसरी बार नोट बनाये जाय उनमें नागरी लिपि रखने की आज्ञा दी जाय।

प्रस्तावक-पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी कलकत्ता।
अनुमोदक—श्रीयुक्त मुकुन्दी लाल वर्म्मा प्रयाग।
समर्थक—पं० नर्मदेश्वर प्रसाद, उपाध्याय, मिर्जापुर।
" बाबू गोपाल राम, गहमर।

चौथा प्रस्ताव।

महाशय सत्यदेव ने यह चौथा प्रस्ताव उपस्थित किया। "यह सम्मेलन माननीय मिस्टर गोखले के प्रारम्भिक शिक्षा सम्बन्धी बिल का हृदय से अनुमोदन करता है और आशा करता है कि इसके द्वारा हिन्दी की उन्नति में बड़ी सहायता होगी। यह प्रस्ताव सम्मेलन में एक नया रंग लाया। नए और पुराने विचारों का युद्ध अनायास हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी लीक पर पानी फिरते देख हिन्दी के बहुत पुराने सम्पादक पं० अमृतलाल जी चक्रवर्त्ती से न रहा गया। अनुमोदन और समर्थन होने के पूर्व ही वे इस अनिवार्य्य शिक्षा से होनेवाले सामाजिक अनर्थों को दिखाने का यत्न करते हुए कहने लगे:—"यह देश इंगलैंड नहीं भारतवर्ष है। यहां के समाज में और वहां के समाज में बहुत अन्तर है। यहां यदि चमार मेहतर डोम पढ़ने लिखने लगेंगे तो उनका काम कौन करेगा? यदि नीच लोग अपना अपना काम छोड़ कर बाबू बनने लगेंगे तो समाज विश्रृंखल हो जायगा"। इन बातों को सुन कर सारे शिक्षित समूह में एक प्रकार की खलबली सी पड़ गई। प्रत्येक व्यक्ति चक्रवर्त्ती जी का उत्तर देने के लिए आकुल दिखाई देने लगा। इधर मथुरा के गो० लक्ष्मणाचार्य्य चक्रवर्ती जी की ओर से बोलने के लिए उछले जाते थे। उनकी उछल कूद से लोगों का जोश और भी बढ़ता था इससे उनसे बार बार ठहर जाने का अनुरोध किया जाता था। पर उन्हों ने दो चार इस तरह की बातें कह ही डालीं कि "शूद्र लोग बिना विद्या ही के सुखी हैं, जाकर पूछ लीजिए। न पढ़ने से उनकी कोई हानि नहीं है। विदेश की सब बातें हम यहां नहीं चला सकते।" अब तो सत्यदेव जी फिर उठे और अपने अभ्यस्त आवेग के साथ अमेरिका का हाल इस तरह सुनाने लगे:- मैं विदेश में घूमा हूं। वहां के लोग पढ़ लिख कर भी भंगी चमार का काम बराबर करते हैं। कोई अपना काम नहीं छोड़ता। यहां पर यदि नीच लोग पढ़ने लगेंगे तो यह ज़रूर होगा कि जिस काम के लिए हम आज उन्हें २) देते हैं उसी के लिए उन्हें १०) देने पड़ेंगे। पर इसकी कुछ परवा नहीं, तब तक हमारी हालत भी १०) देने लायक़ हो जायगी।"

सत्यदेव जी के कह चुकने पर श्रीयुक्त काशीनाथ ने चक्रवर्त्ती जी की बातों को लक्ष्य करके इस प्रस्ताव का समर्थन ऐसी ऊटपटांग और बिगड़ैल भाषा में किया कि कई लोग जो चक्रवर्त्ती जी के समर्थक नहीं भी थे उद्विग्न हो उठे। अब तक तो जोश ही का साम्राज्य रहा, जोश का जबाब जोश से दिया जाता था। इसके पीछे पं० देवी प्रसाद शुक्ल बी० ए० और बा० महेश चरण सिंह जी ने अपने सौम्य और तुले हुए बचनों से लोगों की प्रवृत्ति विचारों को ग्रहण करने की ओर कर दी। फिर तो साहित्याचार्य्य पं० रामावतार पांडे एम० ए० ने विरोधियों के विरोध के आधार ही को हिला डाला। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक और बड़े उचाट के साथ कहा—"लोग अपने बाप दादा के समय से चली हुई बातों को अनादि और अटल मानने लग जाते हैं। वे बिना अपने घर का हाल जाने ही सब बातों को विदेशी बता दिया करते हैं। वे समझते हैं कि हमारे देश में कभी ये बातें थी ही नहीं। मैंने ३० वर्ष तक लगातार संस्कृत का अध्ययन किया है, उपनिषद देखिए, सब को विद्या का समान अधिकार है (उन्हों ने छान्दोग्योपनिषद् के कुछ वाक्यों को पढ़ कर दिखाया कि प्राचीन काल में भी किसी का अविद्य रहना बुरा समझा जाता था)।" पांडे जी की बातों को सुनकर चक्रवर्ता जी ने कहा "मैं शिक्षा का विरोधी नहीं हूं, मैं केवल पुस्तक पढ़ाने का विरोध करता हूं"। बात तो एक प्रकार से ठिकाने आगई थी पर सभापति महाशय ने भी कुछ कहना उचित समझा और उठ कर वे इस प्रकार बोले:—

इस बिलके विरोधी सबसे अधिक ज़ोर इस बात पर देते हैं कि नीचों के शिक्षित होनेपर हिन्दू समाज नष्ट हो जायगा। वे कहते हैं कि एक ही स्कूल में निम्न जाति के और उच्च जाति के लड़के विद्याध्ययन करेंगे, इससे बड़ा अनौचित्य होगा। सभापतिजीने कहा कि विरोधियों को ध्यान में रखना चाहिये कि भारतमें अब हिन्दुओं का स्वराज्य नहीं है। अब वह समय नहीं है कि जब समस्त कार्य्य अपने शास्त्रानुकूल होते थे। ब्राह्मण लोग ही वेदों का पठन करते थे। पर उस समय भी वेद को छोड़कर और किसी विषय की शिक्षा से नीचसे भी नीच वञ्चित नहीं किया जाता था। अब तो आप एक चमार को भी वेद पढ़ने से रोक नहीं सकते। चमार अथवा भङ्गी को यद्यपि उस अवस्था में आप छूना पसन्द न करें, किन्तु ज्यों ही उसने कलमा पढ़ लिया वा बप्तिस्मा ले लिया और कोट पेंट पहिन कर तथा हैट देकर निकला, बस फिर आप उससे हाथ मिलाने को तरसेंगे! अभिप्राय यह कि जब आप विदेशी राज्य होने के कारण निम्न श्रेणी के लोगों को पढ़ने से रोकने में सर्वथा असमर्थ हैं और आप जानते हैं कि भारत की निम्न श्रेणी के लोग सदा इसी दशा में नहीं बने रहेंगे और एक दिन वह अवश्य आवेगा जब ये लोग शिक्षित होंगे क्योंकि भारत में आज या कल एक दिन अवश्य अनिवार्य्य शिक्षा का नियम प्रचलित होगा, फिर आप लोग जान बूझ कर ऐसे कार्य्य में बाधा डालने का निरर्थक परिश्रम क्यों कर रहे हैं? यदि आज, जब अनिवार्य्य शिक्षा का समय नहीं है, कोई भङ्गी चमार हिन्दी अथवा अङ्गरेजी पढ़ा चाहे तो क्या आप उसे रोक सकते हैं? इस लिये कहना यही है कि जो बात आपकी सामर्थ्य के बाहर है उसमें बोलना सर्वथा व्यर्थ है, समय नष्ट करना है"। इस समय खूब तालियां बजी समस्त श्रोतागण सन्तुष्ट हो गये और बिल बड़ी धूम धाम से पास हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन में प्रारम्भिक अनिवार्य्य शिक्षा के समर्थन का प्रस्ताव केवल इस कारण लाया गया था कि उसके द्वारा हिन्दी का प्रचार बढ़ेगा। अतः वहां पर उसका विचार केवल साहित्य की दृष्टि से होना चाहिए था। सम्मेलन का काम सिर्फ यही देखना था कि इस अनिवार्य शिक्षा से हिन्दी के प्रचार वा उन्नति में सहायता पहुंचेगी वा नहीं, किसी समाज वा धर्म विशेष पर उसका प्रभाव क्या पड़ेगा यह देखने जाना उसके अधिकार के बाहर की बात थी। पर आश्चर्य्य है कि इस प्रस्ताव के ऊपर सम्मेलन में जो कुछ वादविवाद हुआ वह समाज और धर्म को ले कर। संसार में कर्मों का विभाग इसी लिए होता है कि सीमा के भीतर काम हो।

पांचवाँ प्रस्ताव।

"इस सम्मेलन के विचार में हिन्दी में विज्ञान, शिल्प और व्यापार सम्बन्धी साहित्य की बहुत आवश्यकता है। यह सम्मेलन हिन्दी लेखकों का ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित करता है और मुख्य नागरीप्रचारिणी सभाओं से अनुरोध करता है कि वे इस कार्य्य को अपने हाथ में लें और इन विषयों पर पुस्तकें तैयार करावें।

इस सम्बन्ध में हिन्दी लेखकों का ध्यान उस ५००) रुपये के पारितोषिक की ओर दिलाया जाता है जो गत वर्ष सम्मेलन में श्रीयुत सेठ दामोदरदास राठी ने व्यापार सम्बन्धी कानून के विषय पर एक अच्छी पुस्तक के लिये देने को कहा था।"

प्रस्तावक—साहित्याचार्य्य पण्डित रामावतार शर्म्मा, बांकीपुर।

अनुमोदक—पं० हरनन्दन पाण्डेय बी० ए०।

समर्थक—पण्डित सकलनारायण पाण्डेय, आरा।

इसके बाद सभापति जी की अनुमति से पं० मुरलीधर मिश्र बी० ए० एल० एल० बी० ने छठां प्रस्ताव उपस्थित किया, जो इस भांति था:—

छठाँ प्रस्ताव।

"संयुक्त प्रान्त की अदालतों में इस बात की आज्ञा न होने के कारण कि फ़ारसी लिपि में लिखे हुए इज़हार तजवीज़ तथा अन्य अदालती काग़ज़ात डिगरी की नकलें नागरी लिपि में भी दी जायं, इस प्रान्त के उन बहुसंख्यक लोगों को जो केवल नागरी लिपि जानते हैं अपने अदालती कामों में बिना इसके बड़ी कठिनता पड़ती है। अतएव यह सम्मेलन संयुक्त प्रान्त की गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करता है कि वह यह आज्ञा दे दे कि संयुक्त प्रान्त की अदालतों में इज़हार, तजवीज और डिगरी की नकलें उन लोगों को नागरी में दी जांय जो इस बात की प्रार्थना करें।"

वृन्दाबन के पं० राधाचरण गोस्वामी ने कई बातों के अनुभव का गौरव प्रगट करते हुए इसका अनुमोदन किया। प्रयाग के हिन्दी प्रेमी मुंशी नवाब बहादुर ने इसका समर्थन किया। बाबू गंगाप्रसाद गुप्त ने भी इसका समर्थन किया। पश्चात् सर्वसम्मति से यह स्वीकृत हुआ।

इसके उपरान्त अतिकाल होता देख यह निश्चय किया गया कि सभापति महाशय स्वयं सब प्रस्ताव पढ़ दें। इससे सभापति जी ने सातवाँ, आठवाँ नवाँ और दसवाँ ये चार प्रस्ताव पढ़ सुनाये और वे सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए।

सातवाँ प्रस्ताव।

"यह सम्मेलन पंजाब गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करता है कि पंजाब के उन निवासियों की बड़ी संख्या की सुविधा के लिये जो अपना अदालती काम नागरी में किया चाहते हैं वह अपने प्रान्त की अदालतों में उर्दू के साथ नागरी लिपि का भी प्रचार कर दे और यह आज्ञा दे दे कि अदालतों में नागरी लिपि में भी कागजात स्वीकार किये जायँ और सम्मन इत्यादि नागरी में भी जारी हों और डिगरी, इज़हार, फैसला इत्यादि की नकलें भी जो लोग नागरी लिपि में चाहते हों उन्हें नागरी में दी जाया करें।"

आठवाँ प्रस्ताव।

"यह सम्मेलन पंजाब में नागरी के पक्ष में यत्न करने के लिये लाला लाजपत राय, लाला हरकिशन लाल तथा अन्य सज्जनों को धन्यवाद देता है और आशा करता है कि वे इस कार्य्य में निरन्तर यत्न करते रहेंगे।"

नवाँ प्रस्ताव।

"इस सम्मेलन के विचार में गवर्नमेंट के हाल और उसकी आज्ञाओं को संयुक्तप्रान्त के अधिकांश लोगों को जताने के लिये यह आवश्यक है कि जिस प्रकार से संयुक्त प्रान्त का गवर्नमेण्ट गजट अंगरेजी और उर्दू में प्रकाशित होता है उसी प्रकार वह सरल हिन्दी भाषा और नागरी अक्षरों में भी प्रकाशित हो। अतएव यह सम्मेलन संयुक्त प्रान्त की गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करता है कि वह उक्त गजट को नागरी लिपि में प्रकाशित करने की आज्ञा दे दे।"

दसवाँ प्रस्ताव।

"यह सम्मेलन भारतवर्ष की रेलवे बोर्ड और सब रेलवे कम्पनियों का ध्यान इस ओर दिलाता है कि भारतवर्ष के पढ़े लिखे लोगों में से अधिकांश हिन्दी भाषा और नागरी लिपि को समझ सकते हैं और इस कारण यात्रियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबिधा के लिये रेलवे नियमावली टाइमटेबिल, नकशे, टिकट इत्यादि की सर्व साधारण को सूचना देने का सब से अच्छा और सुगम उपाय यह होगा कि इस प्रकार की पुस्तकें पुस्तिकाएं और नकशे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में छापे जायँ।"

इसी समय काशी हिन्दूकालेज के प्रोफेसर जे० एन० ऊनवाला महोदय पधारे, इसलिये यह उचित समझा गया कि ग्यारहवां प्रस्ताव वे उपस्थित करें

ग्यारहवाँ प्रस्ताव।

"यह सम्मेलन भावी हिन्दू विश्वविद्यालय के सञ्चालकों से सानुरोध निवेदन करता है कि उक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य को उचित स्थान दिया जाय और शिक्षाप्रणी में उसकी विशेषता रक्खी जाय। इस सम्मेलन के विचार में आरम्भसे लेकर आठवीं कक्षा तक सब विषयों की शिक्षा हिन्दी भाषा ही में देनी चाहिये और ऊंची कक्षाओं में भी हिन्दी साहित्य को आवश्यक विषयों में रखना चाहिये।"

इस प्रस्ताव को उपस्थित करते समय प्रोफेसर ऊन वाला महाशय ने हिन्दी में अपना समयोचित तथा भ्रातृभाव पूर्ण भाषण प्रारम्भ करने के पहले कहा कि मैं पारसी हूं। मुझको आप लोगों ने इस प्रस्ताव के उपस्थित करने का जो सम्मान दिया है, उसके लिये मैं आप का धन्यवाद करता हूं। गुरुकुल के प्रोफेसर महेशचरण सिंह एम० ए० ने भी इसका अनुमोदन करते हुए कहा कि गुरुकुल में सब विषय हिन्दी में पढ़ाये जाते हैं, इस लिये यह न समझना चाहिए कि हिन्दी के द्वारा उच्च शिक्षा नहीं दी जा सकती। अनन्तर करतल ध्वनिपूर्वक यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् सभापति जी ने स्वयं बारहवां और तेरहवां ये दो प्रस्ताव उपस्थित किये और दोनो स्वीकृत हुए।

बारहवां प्रस्ताव

"यह सम्मेलन अपने कार्य्यालय में हिन्दी की सामयिक अवस्था और उन्नति का विवरण रखने के लिये प्रस्तुत है। अतएव सम्मेलन सब हिन्दी लेखकों और प्रकाशकों से प्रार्थना करता है कि वे अपनी पुस्तकों की एक एक प्रति सम्मेलन कार्य्यालय में बिना मूल्य भेजने की कृपा करें। इस कार्य्य में सहायता देने के लिये पत्र सञ्चालकों से भी प्रार्थना करता है कि वे अपने अपने पत्रों की एक एक प्रति बराबर बिना मूल्य सम्मेलन कार्य्यालय में भेजने की कृपा करते रहें।"

तेरहवां प्रस्ताव।

"इस सम्मेलन के विचार में हिन्दी साहित्य की उन्नति का यह एक उत्तम साधन है कि प्रत्येक तीर्थ स्थान पर और मुख्य मुख्य देवमन्दिरों में हिन्दी पुस्तकालय खोले जायं। अतएव सम्मेलन तीर्थवासी हिन्दीप्रेमियों और मन्दिरों के सञ्चालकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करता है।"

चौदहवाँ प्रस्ताव।

हिन्दी के पुराने लेखक और कवि उपाध्याय पं० बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन ने चौदहवां प्रस्ताव उपस्थित किया जो इस प्रकार था—

"इस सम्मेलन के विचार में हिन्दी भाषा में धर्म्म, वीरता और अच्छे मार्ग की ओर प्रवृत्त करने वाले नाटकों का खेलना सर्व साधारण में हिन्दी भाषा और साहित्यकी ओर प्रेम उत्पन्न करने का उत्तम साधन है। अतएव यह सम्मेलन हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी सभाओं का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करता है कि वे अच्छे हिन्दी नाटकों को अपने अपने नगर में समय समय पर खेलने का प्रयत्न करें। इस के साथ ही यह सम्मेलन देश के शिक्षित पुरुषों से निवेदन करता है कि नाटक खेलने के प्रचलित दोषों को दूर करने और उनको सर्व साधारण की शिक्षा का साधन बनाने के लिये वे स्वयं उनके खेलने में सम्मिलित हों और उनका निरीक्षण करें।

"यह सम्मेलन नाटक खेलने का व्यवसाय करनेवाली वर्तमान कम्पनियों का भी ध्यान इस बात की ओर दिलाता है कि देश के प्रति उनका धर्म है कि वे अपने नाटकों को विचारवान लेखकों से सर्वसाधारण के समझने के योग्य सरल हिन्दी भाषा में लिखवावें जिससे उन नाटकों का मान और गौरव हो और देश पर उनका अच्छा प्रभाव पड़े।"

चौधरी जी ने नाटकों की आवश्यकता पर सुललित व्याख्यान दिया तथा भानुताप यन्त्र के आविष्कर्ता पं० श्रीकृष्ण जोशी बी० ए० ने विद्वत्ता पूर्ण वक्तृता द्वारा इसका अनुमोदन किया।

पन्द्रहवां प्रस्ताव।

"यह सम्मेलन श्रीमान् काशीनरेश की सेवा में सादर निवेदन करता है कि श्रीमान् का हिन्दू जाति में बड़ा उच्च पद है और श्रीमान् उस नगर के नरेश हैं जो सदा हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का केन्द्र रहा है। इस कारण से समस्त हिन्दी भाषा के प्रेमियों को यह देख कर बहुत दुःख होता है कि यद्यपि श्रीमान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकांश प्रजा हिन्दी भाषा ही जाननेवाली है, तथापि श्रीमान् के राजकार्य में नागरी लिपि और हिन्दी भाषा का जितना चाहिये उतना प्रयोग नहीं होता। अतएव यह सम्मेलन श्रीमान से प्रार्थना करता है कि वे अपनी मातृभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ावें और अपनी प्रजा की सुविधा के लिये अपने राज्य में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचार करें और साथ ही जहां अपने राज्य का गज़ट उर्दू में निकालते हैं वहां अपनी मातृभाषा हिन्दी में भी प्रकाशित करने की शुभाज्ञा प्रचारित करने की कृपा करें।"

सोलहवां प्रस्ताव ।

"इस सम्मेलन के विचार में हिन्दी साहित्य की उन्नति और प्रचार के लिये यह आवश्यक है कि हिन्दी की परीक्षाएं स्थापित की जांय और उनमें उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को योग्यतानुसार प्रमाणपत्र और पदक दिये जांय। सम्मेलन यह काम अपनी स्थायी समिति के अधीन करता है कि वह इसके सम्बन्ध में नियमावली बनावे और उसे आगामी सम्मेलन में उपस्थित करे।"

सत्रहवां प्रस्ताव ।

"यह सम्मेलन सब भारतीय भाषाओं के पत्र सम्पादकों से प्रार्थना करता है कि वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के उद्योग में सहायता दें और इसके निमित्त अपने अपने उन समाचार पत्रों में जो हिन्दी के नहीं हैं कुछ स्थान हिन्दी के लेखों के लिये रखें।"

ये तीन प्रस्ताव समापति जी ने स्वयं उपस्थित किये और करतल ध्वनि पूर्वक स्वीकृत हुए।

इसके अनन्तर पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने एक नया प्रस्ताव उपस्थित किया। गुरुकुल के प्रोफेसर महेशचरण सिंह के अनुमोदन और पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी के समर्थन तथा सर्व सम्मति से यह स्वीकृत हुआ।

यह अठरहवां प्रस्ताव इस प्रकार था :—

इस सम्मेलन के मत से हिन्दी की प्राचीन वा अर्वाचीन प्रकाशित वा अप्रकाशित पुस्तकों की विषयानुक्रम सूचा बनने की अत्यन्त आवश्यकता है, जिसमें पुस्तक के लेखक का नाम उसके बनने की मिती आदि रहे। यह काम सम्मेलन अपनी स्थायी समिति को सौंपता है।

इसके बाद पहले सम्मेलन का पांचवाँ, छठाँ, आठवाँ और नवाँ ये मन्तव्य फिर प्रस्ताव रूप से उपस्थित और स्वीकृत हुए। अनन्तर सम्मेलन के मन्त्री बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन ने नियमावली उपस्थित की। इस पर कुछ सामान्य वाद विवाद हुआ। जब एक महाशय ने कहा कि यह नियमावली आगामी वर्ष उपस्थित की जाय, तब पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर ने कहा कि यदि नियमावली न स्वीकृत होगी तो हम लोग सम्मेलन को कलकत्ते में निमन्त्रित करें या नहीं, हमें इसका विचार करना होगा। इसपर टंडन महाशय ने कहा कि यह नियमावली केवल एक वर्ष के लिये स्वीकृत कर लीजिए। सम्मेलन के बाद समाचार पत्रों में यह प्रकाशित कर दी जायगी। साल भर तक लोग इस पर खूब विचार करेंगे और इसमें जो संशोधन या परिवर्त्तन करना चाहेंगे वह अगले सम्मेलन में उपस्थित करेंगे। इस पर सब लोग चुप हो गये और नियमावली के पहले ३६ अंश एक वर्ष के लिये स्वीकृत हुए।

इसके पश्चात् कलकत्ते के साहित्यसेवियों का निमन्त्रण पत्र उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ। भिन्न भिन्न स्थानों के ५० सज्जनों की स्थायी समिति बनायी गयी। बाबू पुरुषोत्तम दास पूर्ववत इसके मन्त्री रहे। अन्त में सभापति जी की अन्तिम वक्तृता हुई। वक्तृता समाप्त होने पर स्वागतकारिणी सभा के सभापति पं० बालकृष्ण भट्टजी ने सभापति जी को धन्यवाद देते हुए कहा कि हम लोगों को सभापति जी से जैसी आशा थी उससे अधिक उत्तमता के साथ आपने सम्मेलन का कार्य्य किया।

पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी बी० ए० महाशय ने स्वागत कारिणी सभा को उसके आतिथ्य के लिये धन्यवाद दिया।

श्रीमान् भारतेन्दु ।

बाबू हरिश्चन्द्र जी के प्रति

"निज कृतज्ञता"

[पण्डित चन्द्रशेखरधर शर्म्मा 'कवीन्द्र' द्वारा लिखित]

१

जयन्ती प्रसादादियम्वैजयन्ती,
सदा भारतीयैव पुण्या जयन्ती
प्रभूयादियं चन्द्रभूति र्जयन्ती,
सदा शर्म्मणे सज्जनाना ञ्जयन्ती ॥

२

स जयतु हरिश्चन्द्रो यत्सत्कलाकलनन्नृणा
मविरतमहो भद्रोद्रकाय काममयं शुभम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस रसना, वाणी कल्याणिनी कविताहिता,
कृतिरतितरां लोकोत्कर्षा च यस्य भुविस्थिरा।

३

अधिकाधिकानिसुयशांसि मुहु
रधिकाशिनो ऽधिभुवनं व्यनयन्।
कविता मृतानि जनतासु तथा
शुचि भाषितानि जयतां स चिरम्॥

४

अहो हारश्चिन्द्र कथं कथापथे,
परिस्थितो भूः कथयाद्य तथ्यतः
सरस्वती यस्य महामृतस्थली,
गतोऽमरत्वञ्च सुरेन्द्र दुर्लभम्॥

५

श्रीयुत नृपवर हरिश्चन्द्र गुण गण समलङ्कृत,
भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्र कविता गुण सम्वृत
देश भारती वृद्धि हेतु जो जग में जनमे
जयति जयति जय शब्द कढें उनको जन जनमे॥

६

(वसन्ततिलका छन्द)

है धन्यवाद बहुधा उन सज्जनों को
जो भारतेन्दुयश उत्तम सद्गुणों को
लाके कृतज्ञतर मानस में बढ़ाते,
सम्मान की सरणि नूतन हैं दिखाते।

७

प्रसन्नता की यह बात भारी,
जो सज्जनों ने मन में विचारी,
कृतज्ञ हो मान करैं सदा जो,
श्रीमान् हरिश्चन्द्र समान का हो।

८

प्रबन्ध होता यह कार्य्यकारी
श्रीकाशिका में समयानुसारी
विद्या महाधर्म खनिस्थली है,
यही हरिश्चन्द्र जनिस्थली है।

९

(बरवा)

हिन्दी की उन्नति का कर सुविचार,
हरिश्चन्द्र ने लिया मनो अवतार,

दोहा।

१०

अपने घर के काम में, हैं कितने न प्रवीन
हरिश्चन्द्र ही एक थे, नित परहित में लीन॥

११

(बरवा)

कितने नहीं जगत में सुन्दर रूप,
निज वनिता ही के हैं जो अनुरूप।

१२

कितने नहीं धनिक हैं लक्ष्मी रूप,
जो निज सुत हित ही के हैं हित भूप।

१३

कितने नाट्यकला के कुशल ललाम
जो निज ललनाऽऽलय के सुललित काम।

१४

कितने बनिता नायक गायक लोग
कितने सुख के कहते हैं उपभोग

१५

पर वे कितने हैं जो परहितप्राण
करते तुर्त निछावर धन, जन, मान,

१६

हरिश्चन्द्र थे ऐसे गुण गम्भीर
परहित ही में धन औ दिया शरीर

१७

उदारता के गुण में अकेले,
थे प्रीति के सद्गुण में अकेले।
जोड़ी न छोड़ी अपनी कहीं है।
समानता शून्य अभी मही है॥

१८

(दोहा)

ऐसा कोई था नहीं, गुणी विगत गुण-ज्ञान।
जिसको निज गुण से अधिक मिला नहीं सम्मान

१९

(वसन्त तिलका)

भाषासमुन्नतिहितार्थ समै लगाया
जिस्ने न केवल धनादिक ही लुटाया
हो के रुजाजित दिया निज देह भी है
इस्की कहो भुवन में समता कहीं है?

(कवित्त)

एक-ओर भाषा तो गवारों की बिगड़ रही,
गति है विकल जैसे विना पद नर की।
अपर दिशा में बाणी हिन्दी संस्कृतज्ञों की भी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल न सकी है जैसे चिड़ी बिना पर की ।
भाषा पद तोड़ने को गोली बनी उर्दू बीबी
अरबी और फारसी बीच तोपैं सरकी ।
अंगरेज़ी, बंगलादि भाषा ने भी यथावत
भाषा के बिगाड़ने में कुछ न कसर की ।

भाषा जो न मनोहर हो अनुरूप
पड़ै समाज-ज्ञान-बल अन्धे कूप २१
भाषोन्नति ही से जन उन्नत होय
भाषा गिरी गिरी, जनता सुख खोय २२

(दोहा)

सुन्दर भाषा ही भरे, भक्ति हृदय भर पूर,
ललित बचन ही जय करे, परम प्रेम रसचूर २३

(बरवा)

भाषाही हरिपद में देती प्रीति
भाषा ही से बढ़ती प्रेम प्रतीति २४

दोहा ।

भाषा ही सुन्दर करे कायर को भी सूर
बिजली सी तन में भरे नई शक्ति भरपूर २५
चहे रुलावे जब चहे, चहे हँसावे लोग
घिन उपजावे समय पर चहै बढ़ावे सोग २६

(बरवा छन्द)

भाषा ही दुर्गुण से, देती भीति
बढ़ती भाषा से अमर्ष की रीति २७
परम सरल बातों में अद्भुत रीति
सुन्दर भाषा ही दिखलाती प्रीति २८

(बरवा)

किया अलंकृत हिन्दी नूतन रूप
हुए सभ्यजन भाषण के अनुरूप २९
समाचार पत्रादिक नाटक आदि
हिन्दी में प्रकटाये नव कवितादि ३०
देशोन्नति के जो थे उत्तम काम,
किया आपने यथा शक्ति अंजाम ३१
स्मरण करो उस अपने हित को आज
कई लाख खरचे धन तव हितकाज ३२
सतत परिश्रम करते तव हित हेतु
पर न समझता था तू रहा अचेत ३३
समझ हुई तो फिर से समझो आज
किए कहाँ तक ऐसे हित के काज ३४
फिर भी आप न समझे उनके भाव
'हरिश्चन्द्र नाटक' में कहा स्वभाव ३५

गद्य

क्या हुआ कि प्यारे हरिश्चन्द्र के गुण रूप किसी ने न समझे ।

"कहैंगे सबैही नैन नीरभरि भरि पीछे प्यारे हरिचंद की कहानी रह जायगी"

सत्य, कहानी अपनी राखी छोड़,
चर्चा हरिश्चन्द्र की है बेजोड़ ३६

(गीतिका छन्द एक प्रकार का जो ग़ज़ल से मिलता है)

नीर भर भर कर नयन से किसने फिर रोया नहीं ।
किसने सारे देह ही को अश्रु से धोया नहीं ॥
मित्र की तो बात क्या थी शत्रु भी रोते रहे !
बरसों सब अख़्बार रोने में समय खोते रहे ॥३७॥
अब भी कर जिसका स्मरण, सहृदय हृदय से रोते हैं
पर नहीं चलता है वश व्याकुल वृथा ही होते हैं ।
वर्ष सत्ताईस बीते पर भी पहिचाने न हम
हैं नराधम हम कहां तक यह भी तो जाने न हम ३८ ॥
जिसने छोड़ा हैं जगत का सर्व सुख जिसके लिए ॥
क्या उसे भी चाहिये करना भी कुछ उसके लिए ?
है नहीं बदला भला जो चाहता बदला नहीं ।
किन्तु कुछ भी चाहिये हम को भी तो करना कभी ॥३९॥
बात है सच्ची यही वह तो नहीं इस लोक में ।
होते भी ती चाहते बदला कहीं इस लोक में ? ॥
किन्तु उनके मान करने से हमारा मान है ।
है समुन्नति भी हमारी उनका जो सम्मान है ॥ ४० ॥
इस्से उनके नाम से कुछ काम अब करते चलें ।
विविध विद्यालय भी उनके नाम अब करते चलें ॥
विश्व विद्यालय भी उनके नाम से था चाहता ।
यदि च हिन्दी भाषिगण निज उचित धर्म निवाहता ॥ ४१

दोहा ।

करैं सभी सज्जन कृपा कर ऐसे सम्मान
बढ़ी कीर्ति लतिका करे भारत का कल्याण । ४२)

शुभम्भूयादिति

श्रीचन्द्रशेखरधरशर्म्मणः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोश की आवश्यकता।

—:o:—

लिखने पढ़ने की भाषा के लिये एक बड़े कोश का होना बहुत ही ज़रूरी है। कोश बनाना इस बात का प्रयत्न करना है कि भाषा में जितने शब्द और मुहाविरे हैं वे इकट्ठे कर लिए जायँ। इस इकट्ठा करने से दो लाभ हैं:—

(१) एक तो साहित्य को पढ़ने और उसे अच्छी तरह समझने में सहायता मिलती है। यदि हमें किसी शब्द के अर्थ का ठीक ठीक बोध नहीं है तो हम उस वाक्य वा पद का अभिप्राय ठीक ठीक नहीं समझ सकते जिसमें वह शब्द आया है। किसी पुराने बड़े ग्रन्थकार की रचना में आए हुए किसी असाधारण शब्द के अर्थ का ठीक ठीक पता तब तक नहीं लग सकता जब तक उसका प्रयोग दो चार और पुराने ग्रन्थों में देखकर अर्थों का मिलान न कर लिया जाय। पर इतनी जानकारी और फ़ुरसत हर किसी को नहीं होती। एक छोटा सा उदाहरण लीजिए। मलिक मुहम्मद जायसी की 'पदमावत' हिन्दी की बहुत पुरानी और अच्छी किताबों में से है। उसमें एक जगह आया है:—

अहुठ हाथ तन सरवर, हिआ कँवल तेहि माहँ।

इसका अर्थ सुधाकरचन्द्रिका में सुधाकरजी ने इस प्रकार किया है:—"हाथ अहुठ अर्थात् नहीं उठने लायक़ है और हृदय कमल उसके बीच में है।" पर वास्तव में 'अहुठ' शब्द का अर्थ है साढ़े तीन। यह पाली अड्ढुड्ढ* से निकला हुआ मालूम होता है और इसी से 'हूँठा' बना है। सूरदास तथा और कवियों ने भी इसका प्रयोग किया है, जैसे:—

(क) सुगम भयो देहरि में अँटकावत। अहुठ पैर बसुधा सब कीन्हीं धाम अवधि बिरमावत॥ सूर।

(ख) जब मोहन कर गही मथानी। कबहुंक अहुठ परग करि बसुधा कबहुंक देहरि उलँघि न जानी॥ सूर।

भला सुधाकरजी ने तो इतना भी किया पर कोश को अनावश्यक कहने वाले लोगों के लिये तो ऐसे मौकों पर चुप रहने के सिवाय और कोई उपाय नहीं। क्या ऐसे लोग यह दावा कर सकते हैं कि वे सूर, तुलसी, केशव, बिहारी, घन आनंद, देव आदि के काव्यों में जहाँ जो शब्द आए हैं काम पड़ने पर सब का ठीक ठीक अर्थ वे झटपट बतला देंगे? मैं तो समझता हूँ कि कोश की अनावश्यकता उन्हीं लोगों को सता रही है जिनका हिन्दी के परम्परागत साहित्य से कुछ लगाव नहीं।

यह तो हुई विद्वानों की बात। अब छात्रों तथा उन लोगों का जो हिन्दी सीखना चाहते हैं कोश के बिना कैसे काम चल सकता है? वह दिन अब बहुत दूर नहीं है जब कालिज क्लासों में भी हिन्दी की पढ़ाई होगी जिनमें नए और पुराने सभी ग्रंथ पढ़ाए जायँगे। इस काम के लिये अभी नए गद्य ग्रंथ चाहे उतने न मिलें पर पद्य की पुरानी पोथियों की कमी नहीं जिनके भाव भी गूढ़ और पेचीले हैं तथा शब्द भी असाधारण हैं।

(२) दूसरा लाभ शब्द और मुहाविरों को संगृहीत कर लेने से यह होगा कि हिन्दी को एक परिमित और स्थिर रूप प्राप्त हो जायगा जिसके बिना न कोई भाषा सभ्य कहला सकती है और न सीखने योग्य हो सकती है। यदि गहमर, छत्रपुर, मिरजापुर और कानपुर के लेखकों को यह स्वतंत्रता दे दी जाय कि वे अपने यहाँ बोले जानेवाले जिन शब्दों का चाहें व्यवहार करें तो हिन्दी कोई भाषा ही न रह जाय। कोश से भाषा की मर्य्यादा बँध जाती है। प्रत्येक मनुष्य में, अतः प्रत्येक समाज में, ऐसे स्वतंत्र नए शब्द बनाने की एक स्वाभाविक प्रच्छन्न शक्ति होती है जिनका पूर्व शब्दों से कोई लगाव नहीं। आरम्भ में तो इस शक्ति से पूरा पूरा काम लिया गया पर पीछे से उसे रोकने अथवा एक निश्चित मार्ग पर लगाने की ज़रूरत हुई। क्योंकि यदि प्रत्येक जन वा जनसमूह शब्दों का पृथक पृथक ढेर लगाता चला जाता तो थोड़ी ही दूर के लोग एक दूसरे की बात न समझ सकते और इस प्रकार भाषा का प्रयोजन ही सिद्ध न होता। अब भी हम देखते हैं कि किसी व्यक्ति का निज का एक शब्द होता है जिसकी कुछ व्युत्पत्ति नहीं होती अर्थात् जो किसी नई वा पुरानी भाषा से निकला हुआ नहीं होता। प्रत्येक मनुष्य के हृदय में उसकी मानसिक गठन के अनुसार भिन्न भिन्न नादों वा ध्वनियों की जुदी जुदी प्रतिमाएं होती हैं जिनको सभ्यता के अनुरोध वा प्रचलित भाषा के अनुशासन से वह दबाए रहता है, केवल कभी बहुत हेलमेल के लोगों के सामने उनका कुछ आभास देता है। जैसे किसी की विलक्षण आकृति देख कर कोई उसे गबद्दू, कोई भोंदू कोई घुरपतरी और कोई धौंकल कहता है। भभ्भड़, अंटागुड़गुड़ अट्ट सट्ट आदि आदि शब्द इसी तरह बने हैं। इनका पूर्ववर्ती शब्दों से कोई लगाव नहीं। ऐसे शब्द काल पा कर चल भी जाते हैं और अपने लिये किसी विशेष स्थान वा मंडल में जगह भी कर लेते हैं। हिन्दी में ऐसे शब्दों की गिनती कम नहीं है जो देशज कहलाते हैं। पर ऐसे शब्दों की बाढ़ से भाषा के इतिहास के नष्ट होने और शब्दशास्त्र (Philology) के निष्क्रिय होने की आशंका रहती है।

* चतुत्थोड्ढेन अड्ढुड्ढो ततियोड्ढतियो तथा। अभिधानप्पदीपिका, श्लोक ४७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद कोश को अनावश्यक बतलाने का प्रायश्चित्त किसी किसी सज्जन ने 'अभी' शब्द लगा कर किया है। उन्हों ने कहा है:—"अभी कोश की उतनी ज़रूरत नहीं है।" पर उनका यह कथन ही अयुक्त है। कोश और व्याकरण की आवश्यकता तो उसी समय हो जाती है जब भाषा बन जाती है और उसे एक प्रदेश के लोग काम में लाने लगते हैं। बिना कोश और व्याकरण के तो भाषा का गठन ही नहीं हो सकता। कोश और व्याकरण बनाने का अर्थ है उन्हें हाथ में लेने लायक कर देना। कोश और व्याकरण बनाना केवल अन्वेषण है, नई रचना नहीं। कोश बनाने में हम शब्दों को ढूंढ़ ढूंढ़ कर इकट्ठा करते हैं, और व्याकरण बनाने में उन नियमों को जिनके अनुसार शब्दों की उचित योजना होती है। कोई यह नहीं कह सकता कि कोश वा व्याकरण बनने के पहिले वे शब्द वा नियम थे ही नहीं। अतः प्रश्न यह नहीं है कि कोश की ज़रूरत कब है बल्कि कोश बन कब सकता है। भाषा की असाहित्य दशा में जब कि पुस्तकें नहीं होतीं सुन सुना कर वा स्मृति के आधार पर कोश बनाना बहुत कठिन होता है। पर तब भी कठिन ही होता है असम्भव नहीं, क्योंकि मिशनरी लोगों ने जंगली भाषाओं तक के कोश और व्याकरण बना डाले हैं। जब कई शताब्दियों में पुस्तकें काफ़ी हो जाती हैं और उनमें भाषा का पूर्ण समावेश हो जाता है तब बड़े कोश बनने की सम्भावना हो जाती है। आज सात आठ सौ वर्ष से हिन्दी बोली और लिखी जा रही है। इसके सब शब्द और मुहाविरे सैकड़ों हजारों पुस्तकों में भरे पड़े हैं। भाषा के विचार से हिन्दी पूर्णता को पहुंच चुकी है। माना कि इसमें आधुनिक विज्ञान और कला कौशल के शब्द अभी उतने नहीं हैं पर विषय विशेष के शब्दों के लिये कहीं कोश का बनना नहीं रुका रहा है। यूरप में नित्य नए नए विज्ञान निकलते रहते हैं और उनके सम्बन्ध में नए नए शब्द बनते जाते हैं पर वहां बड़े बड़े कोशों का बनना दो सौ वर्ष से जारी है। चाहे हिन्दी का विषयभांडार अभी पूरा न हो पर यह एक सर्वांगपूर्ण और अत्यंत व्यंजक भाषा है, इस बात को डाक्टर हार्नली और ग्रियर्सन आदि विदेशीय विद्वानों ने भी स्वीकार किया है। इसमें शब्द और मुहाविरे संसार की किसी भाषा से कम नहीं और इसकी अभिधा शक्ति में कोई कसर नहीं। फिर इसका एक कोश क्यों न बने? दो एक आदमियों के मुंह से कोश की अनावश्यकता की दबी पुकार सुन कर मेरा ध्यान शिक्षित लोगों के इस दोषारोपण की ओर गया कि हिन्दी वालों को तो अभी अपने भयंकर भावों को शब्दों द्वारा छिपाने की भी सभ्यता न आई।

पाठक जानते ही हैं कि सभा दो तीन वर्ष से हिन्दी का एक बहुत बड़ा कोश बनाने में लगी है। इस कार्य्य में उसे बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। यद्यपि सम्पादन कार्य्य में डेढ़ वर्ष से हाथ लगा है पर सहायक सम्पादकों की नियत संख्या गत जनवरी में आकर पूरी हुई है और तभी से कार्य्य की गति सम हुई है। हर्ष की बात है कि अक्षर 'अ' समाप्त हो गया है जो शीघ्र ही प्रकाशित हो कर हिन्दी प्रेमियों के सामने आवेगा। सभा ने यह निश्चित किया है कि जब एक अक्षर सम्पादित हो जायं तब वह प्रकाशित कर दिया जाय। इस प्रकार खंड खंड करके निकालने से ग्राहकों को भी सुबीता होगा और "हिन्दी के पंडितों" को भी बहुत दिनों तक हाथ पर हाथ रक्खे ताकना न पड़ेगा। कुछ न कुछ उनके सामने आता रहेगा। यहां पर मैं उन सज्जनों को भी विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूं जो समय समय पर यह चेताते रहते हैं कि "किसी भाषा का सर्वगुणसम्पन्न कोश बनाना बड़ी योग्यता, बड़ी विद्वत्ता, बड़ी खोज और बड़े परिश्रम का काम है।"

अन्त में हम समस्त हिन्दी प्रेमियों से, जिनके भरोसे पर सभा ने इस बड़े कार्य्य को उठाया है, यह प्रार्थना करते हैं कि वे अपनी सहानुभूति और सहायता द्वारा यह प्रत्यक्ष करदें कि अपनी मातृभाषा के गौरव से वे अपना गौरव समझते हैं। बस और क्या कहें।

महाराजा पंचम जार्ज का

सचित्र जीवन चरित्र।

ऐसे शुभ अवसर पर जब हमारे महाराजाधिराज के पधारने का गौरव भारत वर्ष को प्राप्त होनेवाला है, इसकी बड़ी आवश्यकता थी कि महाराज का जीवन चरित्र हिन्दी में प्रकाशित हो। अस्तु, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रबन्ध में महाराज का सचित्र जीवनचरित्र छप रहा है और नवम्बर के अन्त तक छप कर प्रकाशित हो जायगा। यह पुस्तक भरतपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेट कौन्सिल के मेम्बर खां बहादुर काजी अजीजुद्दीन अहमद जी के उर्दू पुस्तक का अनुवाद है जो कि टेक्स्ट बुक कमेटी द्वारा स्वीकृत हो चुकी है। मूल्य ॥) है और जो सज्जन इसके छपने के पूर्व अपना नाम ग्राहकश्रेणी में लिखवा लेंगे उनसे केवल ।≡) लिया जायगा।

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

—:o:o:—

प्रबन्धकारिणी समिति।

शुक्रवार ता० १८ अगस्त १९११—सन्ध्या के छ बजे

स्थान-सभाभवन

उपस्थित-पण्डित माधवप्रसाद पाठक-सभापति, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, पण्डित निष्कामेश्वर मिश्र, बाबू ब्रजचन्द्र, राय कृष्णदास गुप्त, बाबू जयशङ्कर प्रसाद, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा।

सम्मतियां—बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०, पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए०, गोस्वामी रामपुरी, पण्डित देवी प्रसाद उपाध्याय, राय पूरनचन्द्र, पण्डित मुन्नालाल चौबे।

(१) राय कृष्णदास गुप्त के प्रस्ताव तथा पण्डित रामनारायण मिश्र के अनुमोदन पर पण्डित माधव प्रसाद पाठक सभापति चुने गए।

(२) तारीख २१ जूलाई और २४ जूलाई के कार्य विवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

(३) बाबू जगन्नाथ झुनझुनूवाले का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि रेलगाड़ी में गाड़ी रोकने के लिये जो ज़ंजीर लगी रहती है उसे अकारण न छूने के लिये जो सूचना लिखी रहती है वह नागरी अक्षरों में भी रहे।

मंत्री ने सूचना दी कि उन्होंने इसके लिये ईस्ट इण्डियन रेलवे के कर्मचारियों को लिखा है और इसपर वे विचार कर रहे हैं।

(४) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का २३ श्रावण का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रबन्धकारिणी समिति से इस्तीफ़ा दिया था।

निश्चय हुआ कि बाबू शिवप्रसाद जी सभा के प्राय: प्रत्येक अधिवेशन में उपस्थित रहते हैं और अन्य प्रकार से सभा की बराबर सहायता करते आए हैं। ऐसी अवस्था में उनसे प्रार्थना की जाय कि वे कृपाकर अपने इस्तीफ़े पर पुन: विचार कर उसे लौटा लें।

(५) निश्चय हुआ कि इस वर्ष रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स प्रबन्धकारिणी समिति के प्रधान और पण्डित माधव प्रसाद पाठक उपप्रधान नियत किए जांय।

(६) निश्चय हुआ कि इस वर्ष पुस्तकालय के निरीक्षक बाबू ब्रजचन्द्र, नागरी प्रचार के निरीक्षक बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद बी० ए०, एल० एल० बी०, सुबोध व्याख्यान के निरीक्षक पण्डित सूर्यनारायण त्रिपाठी एम०ए०, ग्रन्थमाला के सम्पादक बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०, लेखमाला के सम्पादक पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी बी० ए० और पत्रिका के सम्पादक पण्डित रामचन्द्र शुक्ल नियत किए जांय।

(७) निश्चय हुआ कि इस वर्ष मंत्री और उपमंत्रियों के कार्य का विभाग मंत्री पर ही छोड़ा जाय।

(८) कोश कार्यालय के निरीक्षक की जुलाई १९११ की रिपोर्ट सूचनार्थ उपस्थित की गई।

(९) पण्डित देवी दत्त मिश्र का प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बिना वेतन के तीन मास की छुट्टी और मांगी थी।

निश्चय हुआ कि पण्डित देवीदत्त को सूचना दी जाय कि वे दो सप्ताह के भीतर अपने कार्य पर आ जांय। दो सप्ताह तक उनकी प्रतीक्षा करने पर पुस्तकाध्यक्ष के पद पर दूसरा मनुष्य नियत कर लिया जाय।

(१०) बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा का पत्र पण्डित श्यामबिहारी मिश्र जी की इस सम्मति के साथ उपस्थित किया गया कि चुनार के पण्डित भानु प्रताप तिवारी की हिन्दी पुस्तकों की नोटिस करने के लिये १०) रु० मासिक वेतन पर कुछ समय तक के लिये एक मनुष्य नियत किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि एक मास के लिये यह स्वीकार किया जाय।

(११) कांगड़ी के गुरुकुल द्वारा प्रकाशित बेलफोर स्टुअर्ट की फिजिक्स प्राइमर के अनुवाद तथा पण्डित भवानीदत्त पांडे के अनुवाद के विषय में बाबू बांके बिहारी लाल की सम्मति उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि गुरुकुल द्वारा इस पुस्तक का एक अनुवाद प्रकाशित हो जाने के कारण अब सभा इसका दूसरा अनुवाद प्रकाशित नहीं कर सकती।

(१२) लाला छोटेलाल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सर्कारी न्यायालयों अथवा अन्य कार्यालयों के कर्मचारी यदि देवनागरी की अर्जियां लेना अस्वीकार करें तो सभा उसका नोट रख लिया करे और जब इस प्रकार के दस बारह नोट हो जांय तो ये सब गवर्नमेंट की सेवा में एक पत्र के द्वारा भेज दिए जाया करें।

सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(१३) बाबू बूटाराम का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका छोटे आकार में पुस्तक के रूप में निकाली जाय।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि पत्रिका में जिस प्रकार के लेख छपते हैं वे पुस्तकों के योग्य नहीं होते।

(१४) पण्डित रमाशंकर मिश्र का १७ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने काशी से बाहर जाने के कारण हिन्दी कोश के उपसम्पादक के पद से इस्तीफा दिया था।

निश्चय हुआ कि यह इस्तीफा कोश समिति में उपस्थित किया जाय।

(१५) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का ५ श्रावण का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अनेक प्रश्न पूछे थे।

निश्चय हुआ कि मंत्री इस पत्र का उत्तर दे दें।

(१६) पण्डित राम नारायण मिश्र की प्रार्थना पर निश्चय हुआ कि यदि आवश्यकता हो, तो सभाभवन में हरिश्चन्द्र स्कूल के रहने के लिये दिसम्बर १९११ तक का समय बढ़ा दिया जाय।

(१७) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी के स्मारक में इस वर्ष भारतेन्दु जयन्ती की जाय और इसका सब प्रबन्ध करने के लिये निम्नलिखित सज्जनों की सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् पण्डित रमाशंकर मिश्र एम० ए०, बाबू गोविन्द दास, बाबू ब्रजचन्द्र, बाबू जयशंकर प्रसाद, राय कृष्ण दास गुप्त, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, गोस्वामी रामपुरी, पण्डित माधव प्रसाद पाठक और सभा के मंत्री।

(१८) बाबू ब्रजचन्द्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि हिन्दी के अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थकारों के स्मारक में भी इसी प्रकार के उत्सव सभा द्वारा हुआ करें।

(१९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २८ अगस्त १९११ सन्ध्या के ५ बजे।

स्थान सभा-भवन।

(१) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के प्रस्ताव तथा पं० रामनारायण मिश्र के अनुमोदन पर बाबू लक्ष्मीचन्द्र एम० ए० सभापति चुने गए।

(२) तारीख २९ जुलाई के साधारण अधिवेशन तथा ७ अगस्त के वार्षिक अधिवेशन के कार्य्यविवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति के ता० २१ और २४ जुलाई के कार्यविवरण सूचनार्थ पढ़े गए।

(४) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए :--

१ बाबू बिहारी लाल गुजराती, रानी कटरा, लखनऊ १॥) २ पं० क्षीरेश्वर बाजपेयी, रानी कटरा, लखनऊ १॥) ३ बाबू बेचन लाल, हेड मास्टर, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल, मुरादाबाद ३) ४ बाबू चिम्मन लाल भार्गव मंत्री, सनातन धर्म्मसभा, ब्यावर, जि० अजमेर ३) ५ पं० कृपाशंकर कौल, इन्सपेक्टर आफ पोस्ट आफिसेज, जि० गोरखपुर १॥) ६ पं० काशीनाथ जनार्दन गोरे, मिशन स्कूल, कर्वी, जि० बांदा ५) ७ पं० युगलकिशोर शर्म्मा मास्टर तहसीली स्कूल, बांदा १॥) ८ बाबू रामदास सिंह सब इन्स्पेक्टर, पुलिस लाइन, बांदा १॥) ९ ठाकुर जमुना प्रसाद सर्कार, मेनेजर कायस्थ ट्रेडिंग एण्ड बैंकिंग कार्पोरेशन लि०, देउरिया, जि० गोरखपुर २) १० राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहादुर मिस्टर एम० रंगाचार्य्य एम० ए०, प्रोफेसर, प्रेसिडेन्सी कालेज, मदरास ३) ११ बाबू गिरिधर दास, महल्ला गोविन्द जी नायक, काशी ३) १२ बाबा काली कमली वाले श्री रामनाथ जी, हृषीकेश २५) ।

(५) सभासद होने के लिये ३३ सज्जनों के नवीन प्रार्थनापत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(६) निम्नलिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए :--१ बाबू बालक राम वर्म्मा, सन्त सदन, गोंडा । २ स्वामी ओंकार जी, नेपाली खपरा, काशी । ३ बाबू ठाकुर दास, बुलानाला, काशी । ४ बाबू गणेशी लाल, चन्दौसी जि० मुरादाबाद ।

(७) मंत्री ने मथुरा के बाबू नन्दलाल वर्म्मा की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया ।

(८) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं-इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद-सुख मार्ग । बाबू गोपाल राम, गहमर-अद्भुत जासूस सं० ८ । पं० शिवशङ्कर शर्म्मा, तुरकमान दरवाजा, गली डकौतान, दिल्ली-आत्मदर्पण । चौधरी विश्वनाथ मिश्र, दौलत गंज, लखनऊ-श्री राघवगीत । महाशय हेतराम रामलाल बजाज, मोहनपुर, एटा-वैराग्य विहार भजनावली । Indian Antiquary for August 1911. एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, कलकत्ता-Journal and Proceedings of the Society for January, February and March 1911.

(९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

प्रबन्ध कारिणी समिति ।

शनिवार ता० १६ सितम्बर १९११- सन्ध्या के ६ बजे

स्थान- सभाभवन ।

उपस्थित-पण्डित माधव प्रसाद पाठक सभापति, पण्डित देवीप्रसाद उपाध्याय, बाबू बेणीप्रसाद, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, पण्डित निष्कामेश्वर मिश्र, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बाबू जयशंकर प्रसाद, बाबू ब्रजचन्द्र, रायकृष्ण दास गुप्त ।

सम्मतियां-प्रोफेसर मुन्नालाल मिश्र, उपाध्याय पण्डित बदरी नारायण चौधरी, पण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, पण्डित श्याम विहारी मिश्र एम० ए० ।

(१) पण्डित राम नारायण मिश्र के प्रस्ताव तथा बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के अनुमोदन पर पण्डित माधव प्रसाद पाठक सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० १८ अगस्त १९११) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) बाबू शिवकुमार सिंह का २२ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि (१) संयुक्त प्रदेश के शिक्षाविभाग के द्वारा सभा की ओर से जो हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा होती है उसका परिणाम गवर्न्मेण्ट गज़ेट में प्रकाशित हुआ करे (२) इन प्रान्तों में जो वकील वा मुख्तार इस सभा के सभासद हों उनसे प्रार्थना कीजाय कि वे प्रतिवर्ष इस विषय की सूचना सभा को देदिया करें कि उनके द्वारा किन किन न्यायालयों में कितनी कितनी अर्ज़ियां नागरी में दी गईं । इसका विवरण सभा की रिपोर्ट में भी छपा करे (३) जो वकील वा मुख़्तार सभासद नागरी में अब तक अर्जियां नहीं लिखते उनसे सैकड़े पीछे ४ अर्ज़ियां नागरी में लिखने के लिये प्रार्थना की जाय (४) सभा की पुस्तकों और अदालती फ़ार्मों का विज्ञापन पत्रिका में छपा करे (५) साहित्य सम्मेलन कमेटी से प्रार्थना की जाय कि वे पैसा फण्ड की आधी आय सभा को इन प्रान्तों में नागरी के प्रचारार्थ दें (६) अरायज़ नवीस और वकील सभासदों के द्वारा अदालती फ़ार्मों की बिक्री का उद्योग किया जाय ।

निश्चय हुआ कि (१) यह प्रस्ताव आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय (२) यह स्वीकार किया जाय (३) जो वकील वा मुख्तार सभासद नागरी में अर्ज़ियां नहीं देते उनसे यथासम्भव नागरी में भी अर्जियां देने के लिये प्रार्थना कीजाय (४) अदालती फार्मों का विज्ञापन भी तीसरे मास पत्रिका में छपा करे पर जिस अंक में सभा की पुस्तकों का विज्ञापन रहे उस अंक में यह न छापा जाय (५) मंत्री ने सूचना दी कि उन्होंने इस विषय में द्वितीय साहित्य सम्मेलन के मंत्री को लिखा था और उनका उत्तर आया है कि वे पैसा फण्ड का धन उन ज़िलों में नागरी के प्रचारार्थ लगावेंगे कि जहां कोई नागरी प्रचारिणी सभा नहीं है (६) इस का उद्योग किया जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) पण्डित रामनारायण मिश्र का कोश कार्यालय के निरीक्षक पद से इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया पर समिति के अनुरोध से उन्होंने उसे लौटा लिया।

(५) बाबू हरिदास माणिक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे भारत के वीरों के विषय में एक ग्रन्थ लिख रहे हैं और सभा उसके लिये उन्हें पृथ्वीराजरासो के कुछ अंश उद्धृत करने की आज्ञा दे।

निश्चय हुआ कि इसके लिये उनको आज्ञा दीजाय।

(६) पण्डित राधेलाल चौबे का २६ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ मिला है जिसमें भारतवर्ष के चौहान राजाओं का बड़ा अच्छा वर्णन है। सभा इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद छपवावे।

निश्चय हुआ कि एशियाटिक सोसायटी से पूछा जाय कि यह पुस्तक कब तक छपेगी और यदि न छापी जाय तो इसकी प्रतिलिपि कितने व्यय में मिल सकेगी।

(७) स्वामी प्रकाशानन्द गिरि का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा भवन में पंखे लगवाने के लिये १००) रु० का चन्दा किया जाय और उसके लिये उन्होंने २५) रु० भेजा था। उपमंत्री ने सूचना दी कि सब मिलाकर अब तक इसके लिये ५६) रु० का चन्दा लिखा भी गया है।

निश्चय हुआ कि पंखों की बनवाई का एस्टिमेट मंगवाया जाय।

(८) बाबू श्याम सुन्दर दास का २८ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि ग्रन्थ-माला के सम्पादक यदि काशी के ही कोई सज्जन नियत किए जांय तो उत्तम हो।

निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास जी से प्रार्थना की जाय कि वे ही इस वर्ष कृपापूर्वक इसके सम्पादन का कार्य स्वीकार करें।

(९) अंजुमन तहजीबुल अख़लाक़ के सेक्रेटरी का ८ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने आल इण्डिया शीया कान्फ़रेन्स के लिये सभा की कुर्सियें और बेंचे मंगनी मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि मंत्री को अधिकार दिया जाय कि वे जितनी कुर्सियें और बेंचें उचित समझें इसके लिये मंगनी दे दें।

(१०) कोश कार्यालय के निरीक्षक की अगस्त १९११ की रिपोर्ट सूचनार्थ पढ़ी गई।

(११) पंडित ब्रजरत्न भट्टाचार्य के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए अर्थात् (क) सभा इस बात का उद्योग करे कि स्कूल क्लासों में हिन्दी और संस्कृत के साथ ही साथ प्राकृत की भी शिक्षा दी जाय (ख) ग्रेजुएटों में हिन्दी का अनुराग जागृत करने के लिये उन्हें तुलसीकृत रामायण का एक मनोहर संस्करण सभा की ओर से दिया जाय और इसकी भूमिका तथा टिप्पणियां आदि अंग्रेजी में रहें (ग) प्रयाग में होने वाली सम्पादक समिति में हिन्दी का एक दैनिक पत्र निकालने के लिये एक प्रस्ताव भेजा जाय।

निश्चय हुआ कि (क) इस विषय में सभा कुछ नहीं कर सकती (ख) यह प्रस्ताव सभा की सम्मति में बड़ा ही उपयोगी है पर धनाभाव से सभा इसे नहीं कर सकती। यदि वे इस सम्बन्ध में भारतधर्म्म महामंडल को लिखें तो सम्भव है कि इसमें सफलता प्राप्त हो (ग) पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य जी का यह प्रस्ताव सम्पादक समिति में विचारार्थ भेज दिया जाय।

(१२) पण्डित इन्द्रकृष्ण कौल लिखित "किफ़ायत शुआरी" नाम पुस्तक उपस्थित की गई जिसे उन्हों ने सभाद्वारा प्रकाशित होने के लिये भेजा था।

निश्चय हुआ कि धनाभाव से सभा इसे प्रकाशित नहीं कर सकती।

(१३) बाबू नानक चन्द का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि सभा उनके बनाए हुए महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी जी के तैलचित्र का मूल्य निश्चित करदे।

निश्चय हुआ कि मन्त्री को अधिकार दिया जाय कि वे इसका मूल्य निश्चित कर दें।

(१४) पण्डित निष्कामेश्वर मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि संक्षेप लेख-प्रणाली के तयार करने के लिये सभा ने उन्हें जो २५) रु० पारितोषिक देना निश्चय किया है उसके स्थान पर उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्णपदक दिया जाय और इस में सभा का जो अधिक व्यय होगा उसे वे देंगे। साथही संक्षेप लेखप्रणाली की जो २५ प्रतियां उन्हें सभाने देना स्वीकार किया है उनके बदले उन्हें सभा द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें दी जांय।

निश्चय हुआ कि स्वर्णपदक के विषय में पण्डित निष्कामेश्वरमिश्र जी का प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और संक्षेप लेखप्रणाली की २५ प्रतियों के बदले उन्हें उसी मूल्य की अन्य पुस्तकें दी जायं।

(१५) द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंत्री का भादों सुदी ४ का पत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि द्वितीय साहित्य सम्मेलन के लिये निम्नलिखित सज्जन इस सभा के प्रतिनिधि चुने जांय और उन से प्रार्थना की जाय कि वे द्वितीय साहित्य सम्मेलन में सभा की ओर से उपस्थित हों। बाबू काशी प्रसाद जायसवाल कलकत्ता; पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी कलकत्ता; बाबू हरिकृष्ण जौहर कलकत्ता; पण्डित बाबू राव विष्णु पराडकर, कलकत्ता; बाबू दामोदर दास खत्री कलकत्ता; पण्डित रामा नन्दन द्विवेदी, कलकत्ता; बाबू रामलाल वर्म्मा, कलकत्ता; साहित्याचार्य्य पण्डित रामावतार शर्म्मा, बांकीपुर; रायपूरन चन्द्र, पटना; लाला भगवान दीन गया; पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, अजमेर; पण्डित चन्द्र[illegible] गुलेरी बी० ए० अजमेर, सेठ दामोदर [illegible] पट्टीवैद्य, पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० [illegible]चर्स ट्रेनिङ्ग[illegible] लाल, [illegible] लज्जाराम शर्म्मा, बूंदी; बाबू श्या[illegible] श्रीनगर; उपाध्याय पण्डित बदरी नारायण चौध[illegible], मिर्जापुर; पण्डित राधाचरण गोस्वामी, बृन्दावन; पण्डित मोहन लाल विष्णु लाल पण्ड्या, मथुरा, पण्डित श्रीधर पाठक, प्रयाग; पण्डित बालकृष्ण भट्ट, प्रयाग; माननीय पण्डित मदन मोहन मालवीय, प्रयाग; डाक्टर गंगानाथ झा, प्रयाग; महामहोपाध्याय पण्डित आदित्य राम भट्टाचार्य्य, प्रयाग; ठाकुर हनुमन्त सिंह, आगरा; ठाकुर सूर्य्य कुमार वर्म्मा, लशकर; पण्डित सूर्य नारायण दीक्षित एम० ए० लखीमपुर; पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी कानपुर; पण्डित शुकदेव बिहारी मिश्र, लखनऊ; बाबू पुत्तन लाल विद्यार्थी, लखनऊ; बाबू भगवानदास हालना हाथरस; पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय, आजमगढ़; पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, प्रयाग; स्वामी रामकृष्णानन्दगिरि, प्रयाग; आनरेबल पण्डित सुन्दर लाल, प्रयाग; पण्डित द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी, प्रयाग; पण्डित महादेव मालवीय, जौनपुर; पण्डित लक्ष्मी शंकर द्विवेदी मिर्जापुर; पण्डित बदरी नाथ वैद्य, मिर्जापुर; बाबू देवी प्रसाद, बस्ती; लाला छोटेलाल साहब, काशी; पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, काशी; बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०, काशी; पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, काशी; बाबू ब्रजचन्द्र, काशी; पण्डित देवी प्रसाद उपाध्याय, काशी; रायकृष्ण दास, काशी; बाबू जयशङ्कर प्रसाद, काशी; पण्डित लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी काशी; बाबू जयरामदास, काशी; बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, काशी; बाबू जगन्मोहन वर्म्मा, काशी; पण्डित केदारनाथ पाठक, काशी, बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, काशी; पण्डित कृष्ण राम मेहता, काशी; पंडित केशव देव शास्त्री, काशी; बाबू गंगा प्रसाद अरोड़ा, काशी; बाबू ठाकुर प्रसाद, काशी; बाबू बलभद्र दास बी० ए० एलएल० बी०, काशी; राय शिव प्रसाद, काशी; बाबू शिवकुमार सिंह, बांदा; पंडित निष्कामेश्वर मिश्र, काशी; बाबू पुरुषोत्तम दास, काशी; पंडित ब्रजभूषण ओझा, काशी। इसके साथ ही एक सूचनापत्र काशी के सभासदों के पास भेजा जाय और उन से प्रार्थना की जाय कि जो सज्जन सभा के प्रतिनिधि होकर सम्मेलन में जाना चाहें वे इसकी सूचना सभा को शीघ्र भेजें (ख) सभा इस बात का प्रयत्न करे कि सभा के सभासद और अन्य हिन्दी प्रेमी सम्मेलन के लिये कुछ चन्दा दें और इस चन्दे को एकत्रित करके उसे द्वितीय साहित्य सम्मेलन के मंत्री के पास भेजने का भार सभा के उपमंत्री बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा को सौंपा जाय (ग) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा और पंडित केदार नाथ पाठक से प्रार्थना की जाय कि वे सभा की ओर से सम्मेलन की तिथि के पूर्व ही प्रयाग जा कर सम्मेलन के कार्यकर्ताओं को उनके कार्य में सहायता दें (घ) सम्मेलन कार्यालय में इस निश्चय की एक नकल भेज दी जाय।

(१६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंत्री का भादों सुदी ८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि प्रथम साहित्य सम्मेलन की बची हुई वस्तुओं की बिक्री तथा सम्मेलन के कार्यविवरण की बिक्री से जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन प्राप्त हो वह उन्हें भेजा जाना चाहिये।

निश्चय हुआ कि द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंत्री को सूचना दी जाय कि प्रथम साहित्य सम्मेलन में जितनी आय हुई थी उससे अधिक व्यय उस सम्मेलन के प्रबन्ध में तथा उसके कार्यविवरण के द्वितीय भाग को छपाई में हुआ है। इसके अतिरिक्त कार्यविवरण का प्रथम भाग छप रहा है और उसमें भी लगभग १७५) रु० के व्यय होगा जो कि इस सभा को देना पड़ेगा। सम्मेलन की बची हुई वस्तुओं में कोई ऐसी नहीं है जो बिक सके। केवल एक दर्जन दीवाल के लम्प, मिट्टी के गमले और Badges आदि के बेचने से कुछ अधिक नहीं मिलेगा। यदि साहित्यसम्मेलन कमेटी कार्यविवरण के दोनों भागों की छपाई सभा को देदे तो सभा इन भागों की कुल प्रतियां उन्हें भेज दे।

(१७) निश्चय हुआ कि सम्मेलन के कार्यविवरण के प्रथम भाग का मूल्य चार आना रक्खा जाय और यह रिपोर्ट उन सज्जनों को बिना मूल्य दी जाय जिन्हें इसका प्रथम भाग बिना मूल्य दियो गया था। साथ ही जिन सज्जनों ने इसमें छपे हुए प्रस्तावों को उपस्थित किया अथवा उसका अनुमोदन किया था अथवा जिन सज्जनों ने ५) रु० वा इससे अधिक चन्दा सम्मेलन के लिये दिया था उन्हें भी इसकी एक एक प्रति बिना मूल्य दी जाय।

(१८) निश्चय हुआ कि बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा से प्रार्थना की जाय कि वे द्वितीय साहित्य सम्मेलन में सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री का प्रबन्ध करदें।

(१९) निश्चय हुआ कि द्वितीय साहित्य सम्मेलन में होने वाले प्रस्तावों पर विचार कर सम्मति भेजने के लिये पंडित माधव प्रसाद पाठक, पंडित रामचन्द्र शुक्ल और पंडित रामनारायण मिश्र की सब कमेटी बना दी जाय।

(२०) निश्चय हुआ कि द्वितीय साहित्य सम्मेलन के मंत्री को सूचना दी जाय कि सभा के प्रतिनिधि उन्हीं के प्रबन्ध में ठहरेंगे।

(२१) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० ३० सितम्बर १९११ सन्ध्या के छ बजे

स्थान-सभाभवन।

(१) राय कृष्ण दास गुप्त के प्रस्ताव तथा पण्डित देवी प्रसाद उपाध्याय के अनुमोदन पर मुन्शी भगवान दीन सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० २८ अगस्त १९११) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) प्रबन्ध कारिणी समिति का ता० १८ अगस्त १९११ का कार्य विवरण सूचनार्थ पढ़ा गया।

(४) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए:-(१) बाबू महावीर प्रसाद अध्यापक, हरिश्चन्द्र स्कूल, काशी ३) (२) बाबू मन्नू लाल गौड़, दरामल गंज, जि० मिर्जापुर १॥) (३) बाबू बसन्त लाल अग्रवाल, मुजफ़्फ़र गंज, मिर्जापुर ३) (४) बाबू विन्ध्येश्वरी प्रसाद अग्रवाल, ठि० सेठ ओंकार मल, मिर्जापुर १॥) (५) बाबू मातबर सिंह मास्टर, बाबू मथुरा दास की कोठी, अली नगर, गोरखपुर १॥) (६) बाबू ब्रजबिहारी लाल बी० ए०, एल एल० बी० वकील, बलिया ५) (७) पंडित रेवती राम रईस, जैंती पुर, पो० घाटम पुर, जि० कान पुर ५) (८) बाबू दीप चन्द, देहली, पो० सूसा नगर, जिला कान पुर ५) (९) पंडित राधावल्लभ [illegible] पो० विजय गढ़, जि० अलीगढ़ ३) (१०) लाला सु[illegible] मौजा पासीखेड़ा, पो० पछरीलालपुर, घाटम[illegible], जि० कानपुर ५) (११) भैया कृष्ण दयाल सिंह, मौज़ा गौरा, पो० बरह, जि० गोरखपुर ३) (१२) बाबू गया प्रसाद सिंह, रांची, डुमरांव ५) (१३) बाबू दहन सिंह, डुमरांव, जि० आरा १॥) (१४) पंडित रौशन लाल चतुर्वेदी, खजानची हरदोई १॥) (१५) बाबू दौलत राम वर्म्मा, पंजाब ट्रेडिङ्ग कम्पनी, २१४ सूतापट्टी, कलकत्ता १॥) (१६) पंडित दीपचन्दाचार्य्य, गौड़ स्वामी का मठ, मीर घाट, काशी १॥) (१७) बाबू मंगला प्रसाद, रईस, महल्ला नन्दन साव, काशी ६) (१८) बाबू पुरुषोत्तम राय, ८८ अपर सर्कुलर रोड, कलकत्ता ३) (१९) बाबू रौशन सिंह, झरिया, जि० मान भूम ३) (२०) बाबू श्याम बिहारी लाल, हाई कोर्ट, अपिलेट साइड, कलकत्ता १॥) (२१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू लक्ष्मी नारायण खत्री, १४३ हेरिसन रोड, कलकत्ता ३) (२२) बाबू कन्हैया लाल, सेवक राम सदावर्ती की गली, काशी १॥) (२३) सन्त ज्वाला सिंह, बारादरी बाग, पटियाला ५) (२४) बाबू रघुवर दयाल भटनागर, सब डिपटी इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स, बांदा १॥) (२५) कुंवर लायक सिंह, तहसीलदार, बदौसा, जि० बांदा ३) (२६) बाबू बसन्तराय वकील बी० ए० एल एल० बी० सकरकन्द की गली, काशी ३) (२७) बाबू केशव दास बुला नाला, काशी १॥) (२८) महन्त जयदेव दास, कर्वी, जि० बांदा ३) (२९) महाशय सत्य देव जी, ठि० फूल चन्द बैंकर, देहरादून १॥) (३०) पंडित रामानन्द द्विवेदी, १२ हरी सर्कार लेन, कलकत्ता १॥) (३१) बाबू रामसिंह शकार पुरी, सकरकन्द की गली, काशी १॥) (३२) बाबू मैथिलीशरण गुप्त, चिरगांव, झांसी ३) (३३) बाबू अम्बिका प्रसाद गुप्त, सम्पादक, इन्दु, काशी ३)

(५) सभासद होने के लिये ८४ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए:—(१) पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी, कापर गंज, कान पुर (२) बाबू राम कुमार सोंथलिया, मंडावा, जैपुर (३) बाबू प्रयाग नारायण पंसारी, औरैया, जि० इटावा (४) पंडित कन्हैया लाल शर्म्मा, ४६ मसहरी पट्टी, कलकत्ते (५) बाबू बालमुकुन्द लाल, टीचर्स ट्रेनिङ्ग कालेज, लखनऊ (६) बाबू राज किशोर नारायण सिंह, पक्री, पो० सीता मढ़ी, जि० मुजफ्फरपुर (७) सेठ जमुना लाल जय लाल, प्राग पुरा तोराबाटी, जयपुर (८) पंडित परमानन्द तिवारी ट्रान्स लेटर, सेशन्स जज का दफ्तर, जबल पुर (९) बाबू राम देव चौखानी, १३५।१३७ हेरिसन रोड. कलकत्ता (१०) बाबू मृत्यु ञ्जय भट्टाचार्य्य पो० हुधौंज, बलिया (११) बाबू कुंवर बहादुर, स्याहा नवीस, तहसील गोंडा (१२) पंडित घनश्याम शर्म्मा उपदेशक, खवा, पो० दौसा, जयपुर (१३) पंडित राम स्वरूप शर्म्मा, खवा, पो० दौसा, जय पुर।

(७) सहायक मंत्री ने निम्नलिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया:— (१) पंडित भवदेव शास्त्री, गुरु कुल भूमि, फर्रुखाबाद (२) बाबू श्याम लाल सिंह, वजीरपुरा, आगरा (३) स्वामी गरीब दास, हृषीकेश, लछमण झूला, देहरादून

(८) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं:—पंडित गोकुलचन्द्र भावन, राजज्योतिषी, जयपुर भारतीय ज्योतिष यन्त्रालय-वेध पथ प्रदर्शक। लाला प्रभुदयाल शरण, लक्ष्मण टोला, अयोध्या-सद गुरु चरित्र सुमिरनी, प्रेम पत्रिका। बाबू रामरत्न लाल, डिपटी कलेक्टर, जौनपुर-जीत जीवन चरित्र और जीतविनोद। बाबू शिव प्रसाद मारवाड़ी, जौन पुर-धर्म्म और पूजादि मीमांसा। संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट-मुल्क हिन्द में अंग्रेजी अमलदारी के पिछले पचास साल के जमाने में मुल्क के इन्तज़ाम के बोजे नतीजों की मुख़तसर कैफियत, District Gazetteer of the United Provinces Vols I, VII, XXIII and XXVII. पंडित शुभा कर लाल शुक्ल डिपटी इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स, बिजनौर-बाला शृंगार। पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र, बी० ए० क्लास, ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ-गंगा भरण। पंडित कृष्णानन्द गोस्वामी, योगाश्रम, काशी-गीता शतकम्, भक्ति रस बिन्दु, हिन्दी शिक्षा सोपान। पंडित चुन्नी लाल शास्त्री, बरेली-निर्विकल्प सूत्रम्। खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर-सौन्दर्योपासक। खरीदी गईं-सीता चरित्र, प्रकृति, इंगलैण्ड का इतिहास, बाल गीतावली, बाल निबन्ध माला, पारवती और यशोदा।

(९) सभा पति को धन्य वाद दे सभा विसर्जित हुई।

रामनारायण मिश्र, मंत्री।

विज्ञापन। हैजे के होमियोपैथिक चिकित्सा की एक बहुत ही मुफ़ीद और सहज पुस्तक हिन्दी भाषा में छप कर तयार है। इसे आप स्वयं पढ़कर बिना किसी डाक्टर या हकीम की मदद के लाभ उठा सकते हैं, दवाइयों का नाम हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में लिखा है। मूल्य हिन्दी पुस्तक का ।), हिन्दी का ≈)। डाक व्यय ग्राहक को देना होगा। सुर्मा और लेप आंख की सब बीमारियों के लिये निहायत मुफ़ीद तयार है। नमूना मुफ्त दिया जाता है या डाक से बैरंग भेज दिया जाता। मूल्य फ़ी तोला १)।

डाक्टर लक्ष्मीप्रसाद होम्योपैथिक महल्ला भेलूपुरा पो० शिवाला शहर बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की बनाई दवाएं ...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबङ्गबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होती अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेङ्कटेश्वर समाचार—
जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये !

भारत जीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार—डाक्टर वर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २ / ६ दवाइयों की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता-
डाक्तर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध बिक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिकजन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मिलती है।

एजेन्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल बुलानाला बनारस।

परीक्षा के लिये।

छै प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

मूल्य १।।) डा० म० ।)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़ खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमे की दवा—तत्काल दमें को दवाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली —सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैः-

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से—
आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाही गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मुलचन्द, जवला पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाला बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताव दियरा जिला सारनसे—
आपने छे प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू बिजय सिंहरईस पो० गौतरा जिला बदाऊ से—छैःमशहूर दवाइय (एक ही बकस में जिसकी कीमत१।।) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया वाकई निहायत मुफीद व सेहत बख्स पाये गये और २ दवाइयां जिसकी तारिफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाईगईहै।

सुबेदार पेन्सनर विश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से-
दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादूकासा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बक्स की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि" रबिमण्डल देखत लघु लागा उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी कर के १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित सं० १८८४। २६ वर्षसे अधिक प्रचलित है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No. A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका।]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। 'बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल' ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु मूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा माहिं प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १६ } नवम्बर, १९११ ! भारतेन्दु संवत २० { संख्या ५

सूचना और सम्मति।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के चैंसलर ने अपनी कनवोकेशन की वक्तृता में देशी भाषाओं के विषय में कहा है:—

"दूसरा बड़ा प्रश्न देशी भाषाओं की शिक्षा का है। यूनिवर्सिटी इस प्रश्न पर, विशेष कर देशी भाषाओं को कालेज के शिक्षाक्रम में स्थान देने के विषय में, विचार कर रही है। एक समिति बना दी गई है जिसने अपना कार्य्य आरम्भ भी कर दिया है। स्कूल के कोर्स में तो इस सम्बन्ध में कोई अड़चन नहीं है। किसी लड़के की शिक्षा चाहे और कितने ही विषयों में हुई हो पर उसे अपनी मातृभाषा में पुष्ट होना ही पड़ता है। स्कूल लीविंग आर एन्ट्रेंस की परीक्षाओं में उसे यह प्रमाणित करना पड़ता है कि उसने अपनी देशीभाषा का आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। पर कालेज की पढ़ाई में देशीभाषाओं को स्थान देने का प्रश्न कुछ गूढ़ है। इस विषय में मतभेद हो सकता है कि उच्चशिक्षा में देशी भाषाओं की शिक्षा कहां तक आवश्यक और अनिवार्य्य है। पर एक बात में तो कोई सन्देह नहीं कि देशभाषाओं की ओर उदासीनता निन्दनीय है ओर दूर होनी चाहिये।

हेग के Seismological Association में प्रोफेसर वेचर्ट ने कहा है कि भूडोल के समय भूगर्भ में होने वाले भिन्न भिन्न वेग के कम्पों की जांच से यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी के भीतर बीचोंबीच एक लोहे का पिंड वा गुठली है जिसका व्यास ५५८० मील है और जिसके ऊपर ८३० मील मोटा छिलका वा खोपड़ा है। इस छिलके की भीतरी और ऊपरी तह के बीच एक प्रकार की द्रवधातु है। यह द्रव धातु पृथ्वी के तल से २० मील की गहराई पर है।

एक वैज्ञानिक पत्र ने लिखा है कि जो वस्तु पानी में घुल नहीं सकती उसमें गंध नहीं होती। जैसे प्रकाश और शब्द का अनुभव केवल वायु के कंप से होता है वैसे महँक का नहीं। जब कोई चीज़ महकती है तब यथार्थ में उस चीज़ के छोटे छोटे हवा में उड़ते हुए कण ही हमारी नाक में घुसते हैं और उसमें प्रभाव उत्पन्न करते हैं। जितनी ही चीज़ गीली होगी उतनी ही उसमें से महँक उड़ेगी। किसी बगीचे में पानी बरसने के पीछे जाने से इसका अनुभव होता है। हमारे यहां के आचार्य्य लोग "आघ्राणमर्धभोजनम्" को बहुत पहिले से जानते हैं।

यूरप की International Association of

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Academics ने महाभारत का एक बहुत बड़ा और आलोचनापूर्ण संस्करण निकालने का संकल्प किया है। उक्त असोसिएशन इस बात का विचार आज सात वर्ष से कर रहा था। आक्सफर्ड के प्रोफेसर मैकडानल तथा जर्मनी के संस्कृतज्ञ विद्वानों ने इस बड़े कार्य्य में योग देना स्वीकार किया है। इस प्रकाशन में उस मूल प्रति का उद्धार किया जायगा जिससे आज कल की प्रचलित उत्तरीय और दक्षिणीय प्रतियाँ ली गई हैं। असोसिएशन की और से प्रो० मैकडानेल ने भारतवर्ष के राजा महाराजाओं आदि से आर्थिक सहायता के लिए अपील की है। पंजाब यूनिवर्सिटी ने ३०००) देना मंजूर भी किया है। मैं तो समझता हूँ कि भारतवासियों को इस कार्य्य के लिए तभी कुछ चंदा देना चाहिए जब दो चार भारतीय विद्वान भी इस कार्य्य में योग दें।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति।

शृरावन्पुरः परुषगर्जितमस्यहन्त !
रेपान्थ ! विस्मितमना न मनागपिस्याः।
विश्वार्तिवारणसमर्पित जीवतोऽयं
नाकर्णितः किमुसखे ! भवताम्बुवाहः ?।

आजकल कभी कभी यह सुनाई दे जाता है कि संस्कृत के पहिले प्राकृत भाषा थी। इस घोषणा को सुनकर कुछ लोग तो बेतरह चिढ़ जाते है और कुछ लोग यह मान बैठते हैं कि नाटकों और जैन ग्रन्थों की ज़ो प्राकृत है उसी को कठिन और कर्कश करके संस्कृत बना ली गई है। पर वास्तव में उपर्युक्त कथन का अभिप्राय केवल यह है कि यह प्रकांड संस्कृत जिसमें एक शब्द के सैकडों पर्य्याय है इस रूप में कभी एक जगह बोली नहीं जाती थी, उससे पहिले की भाषा वेद और ब्राह्मण की है जो यथार्थ में बोली जाती थी। प्राकृत से अभिप्राय है केवल बोलचाल की भाषा। संस्कृत शब्द का प्रयोग किसी प्राचीन आर्ष ग्रन्थ में भाषा के अर्थ में नहीं आया है। महाभाष्यकार पतंजलि, जो महात्मा बुद्ध देव से दो एक ही शताब्दी आगे पीछ हुए हैं, महाभाष्य के पस्पशाह्निक में 'अथ शब्दानुशासनम्' पर लिखते हैं 'केषांशब्दानां? लौकिकानां वैदिकानाञ्च' किन शब्दों का ? लौकिक और वैदिक शब्दों का। यदि उनके समय में संस्कृत शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ में होता तो वे अवश्य संस्कृत शब्द प्रयोग करते। भ्रान्ति का मूल कारण पीछे के ग्रन्थों में संस्कृत शब्द का प्रयोग होना ही है जिसका अर्थ संस्कार की हुई वा सुधारी हुई है।

प्राचीन आर्य्यों की भाषा जब पूर्ण हो कर इस योग्य हुई कि उसमें कुछ विचार सुघरता से प्रकाशित किया जा सके, जिससे श्रोता वक्ता के अभिप्रायों को समझ सके, तब उस में प्राचीनों ने वेदमन्त्रों की रचना की। आर्य्य लोगों की आबादी क्रमशः बढ़ती हुई कश्यपसागर (Caspian Sea) से लेकर गंगा यमुना के किनारे तक फैल गई थी और वैदिक भाषा ही कश्यपसागर से लेकर गंगा यमुना के तट तक बोली जाती थी। यही भाषा पुराने पारसी भाषा जन्द तथा उस संस्कृत भाषाकी जननी बनी जिसमें ब्राम्हण और उपनिषद् लिखे गये। यद्यपि पीछे से जनसमुदाय की भाषा में और उसके प्रयोगों में कुछ अन्तर पड़गया पर तो भी उच्च कक्षा की रचना वैदिक भाषा में की जाती थी। कोई पुरुष तब तक पूज्य वा मान्य नहीं समझा जाता था जब तक वह वैदिक भाषा का पूर्ण जानकार न होता था। वैदिक भाषामें श्लोक वा मन्त्र रचने वाला ब्राम्हणेतर शूद्र और दासी पुत्र भी ऋषियों की पंक्ति में ले लिया जाता था। सांख्यायन ब्राम्हण अध्याय १२।३ में एक इतिहास है:—

माध्यमाः सरस्वत्यां सत्रमासत तद्धापि कवषा मध्ये निषसाद तं हेम उपोदुर्दास्या वैत्वं पुत्रोसि नवयंत्वया सह भक्षयिष्याम इति। सह क्रुद्धः 'प्रद्रवत्सरस्वतीमे' तेन सूक्तेन तुष्टाव, तं हेयमान्वियाय, तत उ हेमे निरागा इव मेनिरे, तं हान्वावृत्योचुर्ऋषेनमस्ते अस्तु मा नो हिंसीस्त्वं वै नः श्रेष्ठोऽसि यं त्वेयमन्वेति तं ह ज्ञपयांचक्रुस्तस्य ह क्रोधं विनिन्युः स एष कवषस्यैव महिमा सूक्तस्य चानुवेदिता

माध्यम (मध्यम देशवासी ऋषि) सरस्वती के किनारे सत्र (पंगत) में बैठे थे। कवष भी उनके बीचमें जाकर बैठा। ऋषियोंने कवष से कहा "तू दासीपुत्र है हम तेरे साथ नहीं खायँगे"। वह नाराज होगया और प्रद्रवत्सरस्वतीम्, इस सूक्त से स्तुति की। सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अनुकूल हो गई। तब ऋषियोंने उसको निष्पाप अर्थात् शुद्ध माना। कवषके चारों ओर घेर कर वे बोले "ऋषे! आपको नमस्कार है हमारा अपकार मत कीजिये। आप हम सबमें श्रेष्ठ हैं जिस पर सरस्वती प्रसन्न हुई है।" उन्होंने उससे क्षमा माँगी। उसका क्रोध शान्त होगया। यह कवष की और सूक्त की महिमा का ज्ञापक है।

इसी प्रकार और भी अन्य आख्यायिकायें हैं जिन से यह अनुमान होता है कि उस समय वैदिक भाषामें कविता करनेवाले का बड़ा मान था। कुछ काल में जब वेद और ब्राह्मणों की भाषा बोल चाल से उठ गई तब भी उनमें महाभारत के समय तक वेद मंत्रों का बनना पाया जाता है। किन्तु धीरे धीरे आबादी के साथ भाषा के फैलने और रूपांतरित होने पर महाभारत और वाल्मीकि रामायण लिखे गये, जिनके अंश अब भी क्षेपकोंमें लिपटे मिलते हैं। उसी समय एक प्रांत की बोल चाल मुहाविरे आदि दूसरे प्रांतसे विभिन्न हो गये थे। यद्यपि राष्ट्रभाषा और थी, जिसे देववाणी वा विद्वानों की भाषा कहते थे, पर प्रान्तीय बोलियोंमें बहुत कुछ अन्तर पड़ गया था। कितने शुद्ध अनार्य भाषाओं के प्रान्तिक बोलियोंमें मिल गये थे। क्रमशः भाषा बदलती गई और एक प्रान्त की बोली को दूसरे प्रान्त में समझने में कठिनाई पड़ने लगी। उस समय की अन्य प्रान्तीय भाषाओं के लेख बहुत कम मिलते हैं। मगध देश उस समय में अत्यन्त प्रभावशाली राज्य था जिसका विस्तार अवध (कोशल) से लेकर राजगृह तक था। वहाँ मागधी बोली जाती थी। महात्मा बुद्धदेवने जब देखा कि ब्राह्मण लोग वेदमन्त्रोंका मनमाना अर्थ कर सकते हैं तब उन्होंने सब को उस समय की भाषा में उपदेश देना प्रारम्भ किया जिसमें लोग अर्थ का अनर्थ न कर सकें और साधारणसे साधारण लोग भी उनकी शिक्षा के अभिप्रायों को सुगमता से समझ सकें। यही उपदेश रत्न महात्मा बुद्धदेव के परिनिर्वाण प्राप्त होने के दो मास के पीछे उनके शिष्यों द्वारा गद्य और पद्यरूप में संगृहीत किये गये। यही भाषा महाराज अशोक के समय में, जो भारतवर्ष का चक्रवर्ती सम्राट था भारत की राष्ट्र भाषा हुई और कई शताब्दियों तक बनी रही। इसके राष्ट्रभाषा होने पर भी भिन्न भिन्न प्रान्तों में भिन्न प्रान्तीय बोलियाँ बोली जाती थीं। लिपि में भी भेद था। पर राजकर्मचारी और विद्वान लोग इसी भाषा में लिखते पढ़ते और बातचीत करते थे। इस भाषाका प्रभाव उस समय इतना प्रबल था कि साधारण से साधारण लोग इस भाषाको पढते और समझते थे। बौद्धधर्म उस समय भारतवर्ष का राष्ट्रधर्म्म और मागधी राष्ट्रभाषा थी। इस भाषा का प्रभाव सभी भाषाओं पर पडा। वेदों के काल से लेकर महाभारत के समय तक तो पारस देश भारतवर्ष में सम्मिलित था और इसके भिन्न २ भागों का जिक्र कहीं इरण कहीं पारद, पारस और कहीं पह्लव आदि नामों से मिलता है। पर पीछे से यह पृथक देश वा राज्य हो गया। यहां की भाषा वैदिक भाषा से कुछ विभिन्न हो गई। बहुत से मन्त्र और गाथाएं कुछ उलट फेर के साथ जन्द के मन्त्र और गाथाएं हो गईं। पर तो भी जन्द भाषा अपनी मूल जन्मदात्री आर्य्य भाषा से सम्बन्ध न त्याग सकी। इसकी लिपि में अन्तर पडगया। असुर लोगों की सभ्यता का प्रभाव इनपर पड़ा पर फिर भी इनकी सभ्यता भारतवर्ष की सभ्यता से वैसे ही मिलती है जैसे एक पदार्थ के भिन्न भिन्न योगों से बनी हुई वस्तु। बौद्धों के समय में जब ब्राह्मणों और बौद्धों में कुछ खीचातानी आरम्भ हुई तब इधर ब्राह्मणों ने वेदों को ईश्वरीय मानकर अपनी धर्म भाषा को न केवल मनुष्यों की आदि भाषा कहा आपितु उसे वे ईश्वर की भाषा कहने लगे और उधर बौद्धों ने अपनी भाषा को मूलभाषा और सब भाषाओं की जननी कहने में कसर न की। जब बौद्ध लोग 'सामागधी मूलभाषा नरा या आदि कप्पिका, । ब्राह्मणा चास्सुतालापा सम्बुद्धा चापि भासिरे' की राग अलाप रहे थे और पाली भाषा के व्याकरण पाली भाषा में लिखने और पाली भाषा में धातुओं की कल्पना करने में लगे थे, भारतके पश्चिम पार्श्व (गुजरात राजपुताना) में एक और भाषा अपना प्रभाव फैला रही थी और एक और धर्म्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में जड पकड रहा था। यह भाषा आर्ष प्राकृत भाषा थी जिसमें जैन धर्म्म के प्राचीन ग्रन्थ लिखे गये और यह धर्म्म जैन धर्म्म था। जैन धर्म्म के ग्रन्थ यद्यपि पहिले आर्ष प्राकृत में लिखे गये तो भी इस धर्म्म वालों का सस्कृत से विशेष प्रेम था। संस्कृत में सब लोग ग्रन्थ लिखते रहे अतः इसी को उन्हो ने भी राष्ट्र भाषा माना। प्रान्तिक बोलियों में कोई ग्रन्थ नहीं लिखे जाते थे केवल दानपत्र आदि लिखे जाते थे। नाटकों की प्राकृत भाषा जो भिन्न भिन्न रूपों में मिलती है तथा जैनों की प्राकृत भाषा जिस में बहुत से ग्रन्थ हैं किसी प्रान्त की ज्यों की त्यों बोली प्रतीत नहीं होती। प्रान्तिक बोलियों का मेल पाली और आर्षप्राकृत से जितना होता है उतना इन प्राकृतों से कदापि नहीं होता। आज्ञान शब्द का पाली रूप अञ्ञान है और प्राकृत आणाण। आजकल का अनजान वा अजान शब्द का जितना मेल पाली अञ्ञान से है उतना प्राकृत अणाणसे नहीं। कितने विद्वानों ने ' अनाड़ी ' शब्द को प्राकृत अण्णाणी से जो संस्कृत अज्ञानी का रूप है बतलाया है पर यह भ्रम उनको पाली भाषा के न जानने से हुआ है, पाली भाषा में अनार्य्य शब्द का रूप अनारिय होता है जिससे ' अनारी ' शब्द बहुत कुछ मिलता जुलता है। आर्य्या शब्द का पाली रूप अय्या है जो अबतक लोगों में बडी बूढी के लिये प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा का सबसे पुराना ग्रन्थ पृथ्वीराजरासो है जिसकी भाषा प्राकृत से न मिलकर पाली भाषा से बहुत मिलती है। इसके पश्चात् जो जो ग्रन्थ लिखे गये प्रायः प्रान्तीय बोलियों में लिखे गये। मुसल्मान साम्राज्य में हिन्दी भाषा को प्रधानता प्राप्त हुई उस समय उर्दू भाषा का नाम निशानभी नहीं था केवल हिन्दी में कवितायें होतीं थीं। खुसरो, जायसी, रहीम, आदि कवियों को जब देशी भाषा में कविता करनी पडी तो विवश होकर वे हिन्दी भाषा ही के शरण गए। इस समय ग्रन्थ प्रायः पद्य में लिखे जाते थे। गद्यग्रन्थ लिखने की प्रथा इस देश में बहुत कम थी। क्या संस्कृत क्या पाली क्या प्राकृत (जो बहुत अंशों में एक कल्पित भाषा है) सभी में पद्य ग्रन्थों का बाहुल्य है और इने गिने ग्रन्थ ही गद्य में है। गद्य में चिट्ठी पत्री दान पत्रादि लिखे जाते थे। भाषा में विशेषकर अपभ्रंश शब्दों की अधिकता थी, तथा और भी काम के शब्द जिनका लोक में बहुत प्रचार हो गया था अन्यभाषाओं के इस में मिल गये थे। विज्ञानादि के शब्द प्रायः संस्कृत से लिये जाते थे। इस के पीछे मुसलमानों ने फारसी शब्दों को ठूस ठूस कर एक विचित्र भाषा की कल्पना की और उसका नाम उर्दू रक्खा। इस भाषा का जन्म दिल्ली में हुआ और इसने अपनी कविता के लिये देशी छन्दों को त्याग फारसी और अरबी छन्दों को पसन्द किया और संस्कृत भाषा से नाता तोड़ अरबी मिली फारसी भाषा के साथ सम्बन्ध जोड़ा। इस भाषा के प्रचार में मुसलमान अग्रसर हुए और कश्मीरी पंडितों और कायस्थों ने उनका साथ दिया। यह भाषा मुसलमान अधिपति के केन्द्रस्थल में प्रचरित रही, शेष लोग हिन्दी भाषा और प्रान्तीय बोलियों सेही काम चलाते थे। मुसलमानों के दो प्रधान केन्द्र स्थल थे दिल्ली और लखनऊ। इन दो भिन्न और दूरस्थ नगरों में उर्दूभाषा ने दो भिन्न रूप धारण किये जिन में मुहाविरे और लिंग आदि के प्रयोग का कुछ थोड़ा भेद बना ही रहा। इसके अतिरिक्त मुर्शिदाबाद और हैदराबाद भी यद्यपि केन्द्रस्थल थे तथापि इन दोनो नगरों में से पहिले में तो नवाब वंशधरों के राज्य विध्वंस के साथ ही वहाँ से उर्दू का नाम व निशान मिट गया और हैदराबाद भी कोई विलक्षणता प्रदान करने में असमर्थ रहा; वहाँ दिल्लीवाली उर्दू ही का दौर दौरा रहा।

सब से पहिले उर्दू भाषा में कविता वली गुजराती ने सन् १६५८ में अपने दीवान में लिखी पर उसमें फारसी और अरबी शब्दों की उतनी भरमार नहीं है जितनी उसके पीछे के कवियों ने की है।

गद्य की रचना सब से पहिले हिन्दी भाषा में प्रारम्भ हुई और पहिले पहिले लल्लू लाल ने सन् १८०४ में प्रेमसागर लिखा। उसी समय में मीरअम्मन ने जान गिल्काइष्ट के आज्ञानुसार ' बाग बहार ' लिखा। पीछे उर्दू भाषा में अच्छे अच्छे लेखकों ने गद्यग्रन्थों के लिखने में हाथ लगाया, पर उसमें क्रमशः अरबी तुर्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फारसी शब्दों की भरमार करते गये जिसका समझना फारसी अरबी पढ़ने वालों को छोड़ अन्यों के लिये नितान्त कठिन पड़ता गया। सरूर के 'फिसाना अजायब' में कितने ऐसे शब्द हैं जिनके अर्थों को सिवाय अरबी फारसी के उत्कट विद्वानों के अन्य-लोग समझने में असमर्थ हैं। हिन्दी भाषा में लल्लू लाल के पीछे ५० वा ६० वर्ष तक ऐसे लेखक बहुत कम हुए जिन्होंने किसी प्रबन्ध वा ग्रन्थ को लिखा हो। हिन्दी भाषा की गद्य रचना अत्यन्त हीन दशा में थी। यही एक भाषा थी जिसे सर्वसाधारण सुगमता से समझ सकते थे। इसमें गद्य ग्रन्थों तथा लेखों का अभाव देख कितने देश हितैषी सज्जनों का हृदय भर आया और वे तन मन धनसे इस भाषा के भाण्डार को भरने में लग गये और औरों के लिये मार्ग साफ किया। ऐसे लोगों में स्वामीदयानन्द सरस्वती, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और राजाशिवप्रसाद, ऐसे हैं जिनकी हिन्दी भाषा सदैव के लिये ऋणी है। इनके पीछे इस भाषा ने अपना हाथ पैर फैलाया और देश भर में पंजाब से लेकर कलकत्ता और बम्बई तक सभी प्रान्तों में इसके लेखक उत्पन्न होने लगे; और यह भाषा एक प्रकार से राष्ट्रभाषा बन चली। अब इसके समझने वाले प्रायः सभी प्रान्तो में भारतवर्ष भर में मिलते हैं। यह भाषा किसी देश वा जनसमुदाय ही की भाषा न रही किन्तु सर्वतोग्राही राष्ट्र भाषा बन रही है। इसकी उन्नति कुछ लोगों को, जो उर्दू भाषा के पक्षपाती थे, खटकी और उन लोगों ने उर्दू का संस्कार करना प्रारम्भ कर दिया, उसमें से कठिन और जटिल घोर दुरूह अर्बी और फारसी शब्दों को बीन बीन कर अलग करने लगे और भाषा को यथाशक्य सादी बनाने लगे, पर उर्दू विदेशी भाषाओं की चाशनी चख चुकी थी, मंगनी गहनों से अपनी शोभा बढा चुकी थी अतः उसके लिये उनका परित्याग करना असम्भव सा हो गया। बहुत छीना खसोटी करने पर भी अब तक उसमें आधे से अधिक ऐसे शब्द रहगये हैं जिनको समझने में सर्वसाधारण को कठिनाई पड़ती है। उर्दू लेखकों को अपने भाव दरसाने के लिये फारसी और अरबी के शब्दों को देशी अपभ्रंश शब्दों के होते हुए प्रधानता के साथ चुनकर लेने की लत पड गई है। इसी से वह सुधारने पर भी दुरूहता को त्याग नहीं सकती। यह तो हुई उर्दू की बात। इधर कुछ संस्कृतज्ञ विद्वानों ने हिन्दी भाषा में से देशी और अपभ्रंश शब्दों को निकाल कर उनके स्थान में संस्कृत शब्दों को ठूसठूस उलटी गंगा बहाना प्रारम्भ किया और भाषा को विहंगम रूप देने लगे। देशी शब्दों के होते हुए भी वह लोग संस्कृत शब्दों का प्रयोग करना परम धर्म समझने लगे। ऐसे लोग सिंचाई को सेचन गिरान वा गिराव को अव-पतन, उछाल को उच्छलन, सवार को अश्वारोही, पगड़ी को शिरत्राण और उड़ानको उड्डयन लिखते हैं और संस्कृत शब्दों के निरन्तर प्रयोग से भाषाको लच्छेदार बनाते हैं। इन लोगों ने न केवल स्वयं इस प्रकार का लेख लिखना प्रारम्भ किया बल्कि कितने महात्माओं ने तो तुलसी और सूर आदि के ग्रन्थों पर हाथ साफ करना शुरू कर दिया। ये लोग अपने पांडित्य के घमण्ड के नशे में चूर रहते हैं और अपने को वर्तमान कालका बाण और दण्डी समझते हैं। ऐसे लोग यद्यपि अपनी समझ में भाषा का उपकार करते हैं पर वास्तव में वह भाषा का अपकार कर रहे हैं। भाषा दुरूह और जटिल करने से अलंकृत नहीं होती किन्तु विविध विषयों से अलंकृत करने से सम्पन्न और अच्छी बनती है। भाषा का मुख्य प्रयोजन वक्ता का आन्तरिक अभिप्राय को ठीक ठीक श्रोता को समझाना है न कि श्रोता को जटिलता के चक्कर में डालना और अभिप्राय ग्रहण से वंचित रखना। जो भाषा इस गुण से युक्त है, वास्तव में वही सुभाषा, और जो लेखक ऐसी भाषा लिख सकता है वही सुलेखक, कहे जाने योग्य है। जिन लोगों ने वाल्मिकीय रामायण देखा है वे जानते हैं कि कैसे सुगम शब्दों में वाल्मिकि नें अपने गम्भीर भावों को प्रकाशित किया है। तुलसी और जायसी की कविता देखिये तो जान पड़ेगा कि इन महाकवियों ने कैसी सरल भाषामें अपने गूढ़ भावों को प्रकट किया है। बंगभाषा यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब विषयों से समलंकृत है पर तोभी संस्कृत की मिलोनी उसमें इतनी है कि यदि उसमें से संस्कृत शब्द अलग कर दियें जावें तो क्रिया और कर्ता के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रह जाता। यही दशा अन्य भाषाओं की भी हो जाती यदि विद्वान लोग ध्यान न देते। हिंदी का कोष सब भाषाओं की अपेक्षा भरपूर है अत: यदि यह संस्कृत शब्दों से अलंकृत न भी की जाय तो भी इसके सौन्दर्य्य में कोई त्रुटि नहीं होती। मैं संस्कृत शब्दों के प्रयोग का विरोधी नहीं हूं बलिक मेरा प्रयोजन यह है कि लेखक लोग इस में देशी अपभ्रंश और प्रान्तीय शब्दों के होते हुए संस्कृत शब्दों का कम प्रयोग करें। यों और अनिवार्य्य दशा में तो संस्कृत तो अपने ही पूर्वजों की भाषा है अरबी तुरकी, अंग्रेजी यूनानी आदि सभी भाषाओं के शब्द प्रयोग में लाये जा सकते हैं और ऐसा हमारे पथदर्शक पूर्वजों ने किया भी है। हमैं उन्ही को अपना आदर्श बनाना चाहिये।

यद्यदाचरते श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरे जनाः
सयत्प्रम णां कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥
गीता

जगन्मोहन वर्म्मा

मुहम्मद साहब के पीछे अरब जाति और अरबदेश का संक्षिप्त हाल।

[बाबू रामचन्द्रसिंह बी०ए०एल०एल०बी० लिखित।]

मुहम्मद साहबने सन ६३२ ई० में स्वर्गारोहण किया आर अपनी मृत्यु के पहिले ही उन्होने अपनी आंखों से समस्त अरबदेश में इसलाम धर्म प्रचलित देखा। अपने जीवन की सफलता देखकर उन्होंने अपने पूर्व समय का वह कष्ट जो इसलाम का प्रचार करने में पाया था भुलवा दिया। हमारे पाठकों को मालूम होगा कि महम्मद साहब को मूर्तिपूजक अरबों के हाथ से अपनी प्राणरक्षा करने के लिये मक्का छोडकर मदीना भागना पड़ा था। मुहम्मद साहब के पूर्व अरब देश में अनेक प्रकार के धर्म फैले थे। मूर्तिपूजक अरबों के सिवाय यहूदी और ईसाई लोगों की भी संख्या अधिक थीं। परन्तु महम्मद साहब को ठीक २ मालूम हो गया कि असभ्य और अनपढ़ अरबों के साथ केवल शास्त्रार्थ करने ही से काम न चलेगा अतएव उन्होंने कुछ अस्त्र शस्त्र का भी प्रबन्ध किया। इस पृथ्वी के इतिहास में एक इसलाम ही धर्म पाया जाता है जिसका प्रचार युद्ध के द्वारा हुआ है। क्रमश: अरब की सारी जातियों को पराजित कर उन्होंने उस देश में एक छोर से दूसरे छोर तक इसलाम की जड़ दृढ़ रूप से जमाई और मदीना नगर को अरब देश की राजधानी बनाई। परन्तु इसलाम को फलते फूलते देखने के पूर्व ही मुहम्मद साहब पञ्चत्व को प्राप्त हुए। मरणशय्या पर महम्मद साहबने अपने शिष्यों से अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट की, कि अरब देश में इसलाम के अतिरिक्त दूसरा कोई धर्म फैलने न पावे। मुहम्मद साहब में उनके मित्र, शिष्य और अनुयायियों की अचल भक्ति थी। अपने पैगम्बर की अन्तिम बात उन लोगों के हृदय पर बराबर अंकित रही और उसी के बल से उन्होंने पृथ्वी पर इसलाम का झंडा फहराया। मुसलमानों ने और देशों को किस प्रकार विजय किया नीचे लिखा जायगा।

ईश्वरदूत मुहम्मद साहब के कोई पुत्र न था। पाठक लोग इससे यह न समझें कि उनकी शादी ही न हुई थी। हदीस में एक समय में चार स्त्रियों से अधिक विवाह करना पाप लिखा है, पर महम्मद साहबने स्वयं १२ स्त्रियों से विवाह किया। उन स्त्रियों में एक अति सुन्दरी यहूदी धर्म की थीं। पैगम्बर साहब अपनी वृद्धावस्था में भी शादी करने से बाज नहीं आये पर उनके कोई संतति न हुई, अतएव उनका ससुर अबुब्कर उनका उत्तराधिकारी समझा गया। यदि उस समय मुहम्मद साहब को कोई पुत्र भी होता तो वह उनका उत्तराधिकारी न बनाया जाता, क्योंकि पैगम्बर साहब की आज्ञा थी कि सारे अरब देशके मुसलमानों में जो सब से सुयोग्य पुरुष हो वही सरदार या खलीफ़ा बनाया जाय। यही रीति बहुत दिनों तक जारी रही, पर पीछे से उसके विरुद्ध वंशपरपरा और पद भेद का विचार होने लगा जिससे अरबवालों की शक्ति शिथिल हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद साहेब के मरने के थोड़े ही दिनों पीछे मक्का और मदीना में उत्तराधिकारी चुनने के विषय में विभेद उत्पन्न हुआ। अरब देश के उत्तर में विशेष कर ईसाई लोग रहते थे और उसके दक्षिण में असभ्य और लुटेरे अरब रहते थे। राजधानीवासियों का फूट देख कर ईसाई, यहूदी और लुटेरे लोग इसलाम धर्म को एक एक कर के छोड़ने लगे और अशीर (अर्थात्—आय का दसवां हिस्सा) भी देना बन्द कर दिया। इस बात को सुनकर अबूबकर को बहुत कष्ट हुआ। इसलाम का झंडा मदीने की मस्जिद में गाड़ा गया और नगाड़ा बजने लगा। नवयुवक लोग झंडे के चारो ओर जमा होने लगे। कुछ मास के अन्तर युवकों की संख्या इतनी अधिक हो गई कि खलीफ़ा ने उन को ग्यारह सेनाओं में विभक्त कर अरब की नाना दिशाओं में भेज दिया। अरब के प्राचीन इतिहासलेखक लोग कहते हैं कि ये ११ सेनायें एकही समय में भेजी गई। परन्तु उस समय का भीतरी इतिहास देखने से ज्ञात होता है कि ये सब सेनायें एक एक करके भेजी गई थीं। मक्के और मदीने की आबादी उन दिनों इतनी अधिक नहीं थी कि ११ सेनाएँ एकही समयमें भेजी जातीं। मूर साहेब की भी यही सम्मति है। जो जो लड़ाइयाँ उस समय हुई उन सबका वर्णन हम यहां पर आवश्यक नहीं समझते। मुहम्मद साहेब के मरने के बाद ही अरब में कई एक झूठे पैगम्बर खड़े होगये उनमें से प्रधान ये थे :- (१) लोलिहा, (२) मोसलेमा, (३) सेजाह। इनमें से पहिले और दूसरे तो मुसलमान थे, जो मध्य अरब में रहते थे, और तीसरी एक ईसाइन युवती थी जो घोड़ी पर सवार होकर और अपने साथ एक सेना लेकर मध्य अरब में आपहुंची और मोसलेमा से अपनी शादी की। खालिद नामक एक पुरुष खलीफ़ा अब्बूबकर का सेनापति था। वह इतना कठोरहृदय पुरुष था कि उसका नाम "ईश्वर का खड्ग" पड़ गया था। वह किसी शत्रु को बिना क़तल किये हुए नहीं छोड़ता था और अपने मार्ग के प्रत्येक नगर को लूटता और जलादेता था। अब्बूबकर अपनी सब सेना को चलने के समय यह उपदेश दिया करता था कि व्यर्थ ज़ुल्म न करना और जो शत्रु रण में अपनी पीठ दिखा दे तो उसको न मारना। परन्तु उसके उपदेश के अनुसार खालिद की सेना कभी नहीं काम करती थी। अब्बूबकर खालिद से सदैव प्रसन्न रहता था क्योंकि वह बहुत वीर और बलवान सेनापति था। वह विषयी भी बड़ा था। अरब लोगों में यह चाल थी कि वे लोग अपने शत्रुओं की स्त्रियों को पकड़ कर गुलाम बना लेते थे और उनमें से जो सुंदरी होती थीं उनमें से कुछ तो सेनापति को दे देते थे और कुछ मदीने में खलीफ़ा के पास भेज देते थे। शेष स्त्रियाँ सेना में बाँटी जाती थीं और सिपाही लोग उनसे शादी कर लेते थे। हदीस में लिखा है कि किसी स्त्री को पूर्व पति के मरने या छोड़ देने के बाद तीन मास तक शादी न करनी चाहिये। इस नियम को इद्दत कहते हैं। परन्तु खालिद इतना विषयी था कि इस नियम का उल्लंघन करके शादी कर लेता था। एक बार ऐसा हुआ है कि उसने एक प्रख्यात युद्ध में एक अमीर को हराया, उसे कैद करके उसी दिन मारडाला और उसी शाम को उसकी युवती स्त्री से अपनी शादी करली। खालिद की ऐसी चाल चलन से उमर जो अबूबकर का प्रधान मंत्री था बहुत अप्रसन्न रहता था परन्तु खलीफ़ा ऐसे सुयोग्य सेनापति को दण्ड देना या अपमानित करना अपने अर्थ के प्रतिकूल समझते थे। ईश्वर के खड्ग खालिद ने अपने बाहुबल से मध्य और उत्तरी अरब की जातियों को हराया और इसलाम को उन खण्डों में फिर से स्थापित किया। कहते हैं कि इसलाम के झंडे के ऊपर एक खड्ग और एक कोरान की पुस्तक रहती थी। जो जाति क़ोरान को स्वीकार कर लेती थी और देश की आय का दसवाँ हिस्सा देना मंजूर करती थी उस के साथ कोई लड़ाई नहीं होती थी। मुसलमान लोगों को विश्वास है कि क़ोरान महम्मद साहब के जीवन में ही स्वर्ग से उतरा था। परन्तु महमद साहेब अपने शिष्यों के पास कोई क़ोरान नहीं छोड़ गये। क़ोरान केवल मोलवियों को कंठस्थ था। मूर साहेब का विचार है कि क़ोरान दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खलीफा उमर के समय में एकत्रित किया गया जब कि बहुत से मुल्ला विदेशी युद्धों में मारे गये और यह भय हुआ कि क़ोरान लुप्त हो जायगा। इसके सिवाय ख़लीफ़ा उसमान ने क़ोरान में बहुत से अदल बदल भी करवाए। इस से सिद्ध होता है कि यथार्थ में झंडे के उपर क़ोरान नही रक्खा जाता था बल्कि शत्रुओं से स्पष्ट कह दिया जाता था कि यातो मुसलमान हो जाव या लड़ो।

दक्षिण अरब में प्रायः लुटेरे लोग रहते थे। उन लोगो में भी एक पैगम्बर हुआ था जिसका नाम अस्वाद था। लाल समुद्र के किनारेकी सड़कों पर कोई यात्री इन लुटेरों के भय से नहीं चलने पाता था। इन खण्डों में शान्ति फैलाने के लिये खलीफा अबूबकर ने मोजावीर और इकरिमा को भेजा। इन दोनो सेनापतियों ने नाना प्रकार के कष्ट सहकर इन असभ्य जातियों को हराया और उन्हे मुसलमान बनायां। बहुतरे झूठे पैगम्बर पकड कर अबूब कर के सामने लाये गये। उन्होंने अपना दोष स्वीकार किया और अपना अपराध क्षमा कराने के लिये प्रार्थना की। वे मुसलमान बनाये गये और विदेशियों के साथ लड़ाइयों में बराबर साथ रहे।

उतरी अरब के ईसाई लोगों ने मुसलामन बनाना स्वीकार नहीं किया। खालिद उन लोगों के विरुद्ध भेजा गया। रास्ते में एक मरुभूमि मिली। सिपाही लोग तीन दिन तक बिना अन्न जल के रहे थे। बहुत से घोडे ऊंट और खच्चर जल के बिना मर गए। तीसरे दिन सन्ध्या के समय थके मादें भूखे प्यासे लोग इधर उधर बालू में छटपटाने लगे। रात को ठंढी हवा चली। उसीं के सहारे बिचारे सिपाही लोगोंने अपना प्राण रक्खा। प्रभात ही कुछ दूरपर एक सरोवर दिखलाई पड़ा। सिपाही लोग अपने घोड़ों के साथ वहाँ गये। सबने भर पेट पानी पिया और ऊँटों और खच्चरों पर अच्छी तरह से पानी लाद लिया। अरब लोगों को यह विश्वास हो गया कि वही सरोवर इश्वर की माया थी। विश्राम के बाद उन्हों ने शत्रुओं पर आक्रमण किया और उन को हरा कर पारस की खाढ़ी के टापुओं में पहुँचे। बहुत से ईसाइ मुसलमान हो गये और अशीर (आय का दसवां हिस्सा) देने लगे।

खलीफा अबूबकर ने सब सेना मदीने से बाहर भेज दी थी। अतएव मदीने की रक्षा के लिये बहुत कम मनुष्य बच गये थे। बहुतों ने यह दशा देखकर मदीने पर आक्रमण किया। बीर खलीफा अबूबकर थोडे से नवयुवकों को लेकर लड़ने के लिये शहर के बाहर गया और उन्हे नगर से बहुत दूर हटा दिया।

प्रायः डेढ़ वर्ष में तमाम अरब देश अबूबकर के अधीन हो गया। इसके उपरान्त सेनापति लोग विदेश विजय करने के लिये भेजे गये।

[शेष आगे]

साहित्य।

[श्रीयुत पण्डित बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित]

बुद्धिमानों के विचार अथवा उनकी मानसिक शक्ति के निष्कर्ष को साहित्य कहते हैं। प्रत्येक भाषा के साहित्य अलग अलग ढंग के हैं और उस से उन भषाओं के विद्वानों की रुचि का पूरा पूरा पता लग सकता है। इतनां ही नहीं वरन जिस देश का जो साहित्य होगा उसमें उस देश के रहने वाले जनसमूह की रुचि पूरी तरह पर ज्ञात हो जाती हैं। हमारे यहां के साहित्य में अधिक तर पारलौकिक विषयों की आलोचना का यही कारण है कि लोगों की दृष्टि सांसारिक बातों पर अधिकतर न गई सामान्य प्राकृतिक विषयों की आलोचना में भी वे कुछ अदृष्ट कारण को स्थिर कर, उसी के कार्य्य रूप में परिणत समस्त संसार को मान, कारण ही के विचार और उसकी ऊहा पोह में लगे रहे। एसा ही अरब और फारस आदि पश्चिमी देशोंके भोगालिप्सू मनुष्यों का परलोक भी हूर और परियों का जखेड़ा समझा गया, और यही कारण है, कि उसी की निकृष्ट संतति दिल्ली और लखनऊ अदि की उर्दू साहित्य में भी वही आशिकी और माशूकी का झमेला भरा पड़ा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रतिपक्षी यह कह सकते हैं कि आप की हिन्दी भी तो नायिका नायक के झगडों से रहित नहीं है। इसके उत्तर में इतना कहने का साहस हमें अवश्य होगा कि यह भी यवनसंपर्क का ही फल या परिणाम है, नहीं तो हमारे प्राचीन कवि सूर तुलसी तथा अष्टछाप के कवियों की कविता पढ़िये तो मालूम होगा कि उनमें भक्तिरस का अमृत भरा है और ठौर ठौर वात्सल्य तथा प्रेम पीयूष की अविच्छिन्न वर्षा पाई जाती है। नायिका के नखसिखवर्णन की प्रथा प्राचीन नहीं है और फारसी और उर्दू शायरों का अनुकरण अंग प्रत्यंग की छटा दरसाने में बहुधा किया गया है। माना कि इस तरह का वर्णन साहित्य को मलिन और दूषित करनेवाला अवश्य कहा जायगा, पर उस में भी हमारे हिन्दी साहित्य का एक निराला ढंग है। ऐसे ऐसे अलंकार और लक्षणा व्यंजना के भाव उस में दरसाए गये हैं जो एक शास्त्र हो गया है, जिसकी उपज उर्दू शायरों को सूझी ही नहीं। कालिदासादि संस्कृत के कवियों का तो कहनाही क्या, अपनी वर्णन शैली में एक ऐसी बात कहदी है जो प्रकृति के साथ टक्कर खाती है और सब भांति अनोखी है। हम अपने भाषा के साहित्य की प्रसंशा इस विषय में बिना किये आगे नहीं बढ़ सकते--तुलसी, विहारी, केशव, पद्माकर आदि कवियों के काव्य में अनेक स्थलों में प्रकृति का विस्तार तथा प्राकृतिक पदार्थों के निरूपण भरे पड़े हैं। तुलसीदासजीकी कविता को देखिये कैसे कविने प्रकृति के सौन्दर्य्य का वर्णन सदुपदेश पूर्ण दिया है।

दामिनि दमकि रही घन माहीं।
खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥
बरषहिं जलद भूमि नियराये।
जथा नवहिं बुध विद्या पाये॥
बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे।
खल के बचन संत सह जैसे॥
छुद्र नदी भरि चली तोराई।
जस थोरे धन खल इतराई॥
भूमि परत भा डाबर पानी।
जनु जीवहि माया लपटानी॥
सिमिटि सिमिटि जल भरहि तलावा।
जिमि सदगुन सज्जन पहं आवा॥
सरिता जल जलनिधि महँ जाई।
होइ अचल जिमि जिव हरिपाई॥

दो०--हरित भूमि तृणसंकुल समुझि परहिं नहिं पंथ।
जिमि पाखंड विवाद तें लुप्त होहिं सदग्रंथ॥

इत्यादि इसी प्रकार सूरदास की कविता में भी ठौर ठौर पर प्रकृति का अनुहार दिखाया गया है विशेष कर जहां वात्सल्य रस का उद्गार दिखाया गया है वह तो अपने ढंग का अनूठा ही है। उदाहरण के लिये देखिये।

बनते आवत धेनु चराए।
संध्या समय सांवरे मुख पर गोपद रज लपटाये॥
वरह मुकुट के निकट लसति लट मधुप बने रुचि पाये।
विलसत सुधा जलद आनन पर उड़त न जात उड़ाये॥
विधिवाहन भक्षन की माला राजत उर पहिराये।
इक वपु रही नांहि बडे छोटे ढोटा शिशुग्वाल बने इकदाये।
सूरदास इमि लीला प्रभु की जीवत जन यश गाये

[शेष आगे]

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २८ अक्तूबर १९११ सन्ध्या के छ बजे।

स्थान-सभाभवन।

(१) गत अधिवेशन (तारीख ३० सितम्बर १९११) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए:—
(१) बाबू इन्द्रमल हाकिम नागोर मारवाड़ १॥) (२) पण्डित बलभद्रप्रसाद वाजपेयी हेडमास्टर तहसीली स्कूल सुमेपुर जि. हमीरपुर १॥) (३) बाबू भवानीदीन जिमीदार मौजा बाँकी पो० सुमेरपुर, जि. हमीरपुर १॥) (४) राव कुंजविहारी जिमींदार मौ. पुरवाबम्हौरी-पो. बलरामपुर जि. हमीरपुर १॥) (५) बाबू जोधासिंह बनापर, मौजा सराई, अजयगढ़ १॥) (६) बाबू [illegible]बहादुर वर्म्मा बी. ए., हेडमास्टर जगन्नाथ हाईस्कूल, मंडला सी. पी. १॥) (७) बाबू गोविन्दराम अग्रवाल मास्टर हाईस्कूल-मंडला सी. पी. १॥) (८) बाबू ठाकुरदास गुप्त, हल्दौर जि. विजनौर ५) (९) पण्डित मनुदत्त शर्म्मा, उपदेशक बदायूं 'गुरुकुल हल्दौर जि. विजनौर १॥) (१०) बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवतप्रसाद जायसवाल, इमलीतला, दानापुर १।।) (११) पण्डित हनुमानप्रसाद आडिट आफिस कोचिंग, लखनऊ १।।) (१२) बाबू रामचन्द्रपुरी--एकाउण्टेण्ट, एकजामिनर्स आफिस, लखनऊ १।।) (१३) बाबू रामनारायण सिंह विद्यार्थी स्कूल और पो. बेरियां जि. बलिया १।।) (१४) बाबू कामताप्रसाद नायब मुदर्रिस विद्यानगर जि. गोंडा १।।) (१५) बाबू शिवचरण लाल मुलाजिम कारखाना कोल्हू विद्यानगर जि. गोंडा १।।) (१६) बाबू लाड़लेप्रसाद वर्म्मा नायब नाजिर संदीला जि. हरदोई १।।) (१७) बाबू लालता प्रसाद वर्म्मा उपमंत्री आर्य समाज हरदोई १।।) (१८) बाबू धनपतिलाल गुप्त ठि. बाबू काली प्रसाद पुरानी गोदाम गया १।।) (१९) बाबू राधेकिशुन महल्ला फतहगंज गोलबाग गया १।।) (२०) बाबू सीतलप्रसाद सिंह गहरवार, पो. इमामगंज जि. गया ३) (२१) पण्डित बजरंगदत्त शर्म्मा, मुरारपुर, गया ३) (२२) पण्डित नयन तिवारी हेडपण्डित नौआटोली लोअर प्राइमरी स्कूल पो. डालटैन गंज जि. पलामू १।।) (२३) बाबू राम जगराम इन्स्पेक्टिंग पण्डित पाटनथाना, पो० पाटन, जि० पलामू १।।) [२४] बाबू सरजू प्रसाद अग्रवाल मुजफ्फरगंज मिर्जापुर ३) [२५] ठाकुर जगन्नाथ बख्श सिंह ताल्लुकदार रहवां जि. रायबरेली ५) (२६) ठाकुर शिवनारायण सिंह ताल्लुकदार, गौरा, जि. रायबरेली ५) [२७] बाबू माताप्रसाद श्रीवास्तव अकाउण्टेण्ट रियासत रामनगर धमेड़ी जि. बाराबंकी ३) (२८) बाबू प्यारेलाल सरिश्तेदार, मैनेजर रियासत रामनगर धमेडी जिला बाराबंकी ३) (२९) पण्डित प्रेमनारायण राजवैद्य रियासत रामनगर धमेडी जिला बाराबंकी ३) (३०) पण्डित सूर्यप्रसाद पांडे जिलेदार हल्का थाल रियासत रामनगर धमेडी जिला बाराबंकी ३) (३१) बाबू प्रयागलाल गुरू, गुरू ट्रेनिंग स्कूल, नौबतपुर १।।) (३२) बाबू जमुनालाल, ठि० राय बहादुर बछराज जमुनालाल, वार्धा सी० पी० १०) (३३) बाबू बिरदीचन्द पोद्दार, वार्धा सी० पी० १०) (३४) लाला भगवती प्रसाद वैश्य, महल्ला, बाबा स्वाकी, मेरठ १।।) (३५) पण्डित उदयनाथ मिश्र, हेड पण्डित, गुरू ट्रेनिंग स्कूल, रेहला, जिला पलामू १।।) (३६) पण्डित महेश पाठक, हेड पण्डित, हुसेनाबाद मि० व० स्कूल, पो. जपला, पलामू १।।) (३७) पण्डित किशुन राम, हेड पण्डित, गुरू ट्रेनिंग स्कूल, हैदरनगर, जिला पलामू १।।) (३८) बाबू गजाधर प्रसाद, सब इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स, बगोदर सर्किल, पो. बगोदर, हजारीबाग १।।) (३९) बाबू नारायणदास बाजोरिया, ११७ हेरिसनरोड, कलकत्ता १।।) (४०) श्रीमती पण्डिता रमादेवी, कीटगंज इलाहाबाद १।।) (४१) बाबू चमकलाल चौधरी, गुरू ट्रेनिंग स्कूल, मधेपुर, भागलपुर १।।) (४२) बाबू गुरुदेव प्रसाद सिंह ज़मींदार, मधेपुरा, भागलपुर १।।) (४३) पण्डित ज्वालाप्रसाद त्रिपाठी, करसा, पो. सरवनखेड़ा जिला कानपुर १।।) (४४) बाबू नारायणदास पारिख, असिस्टेण्ट जुडीशल डिपार्टमेण्ट, गवर्नमेण्ट सेक्रटरिएट नैनीताल १।।) (४५) महन्त रामस्वरूप रामानुजदास मौजा पैकोरा माफी, पो. रैपुरा, जिला बांदा ३) (४६) लाला कामताप्रसाद अग्रवाल मौजा रैपुरा, जिला बांदा १।।) [४७] बाबू प्रयागदास मुख्तार, जजी, झांसी ३) [४८] बाबू सूर्यभानुलाल वकील, औरंगाबाद, जिला गया ३] [४९] बाबू रामकीरत सिंह वकील औरंगाबाद जि. गया १।।) [५०] बाबू बटुकनाथ खन्ना कालिका गली काशी १।।) [५१] बाबू फूल चन्द सेठ, कोशाध्यक्ष बुन्देलखण्ड अनाथालय, बांदा १।।) [५२] बाबू भागवत प्रसाद दुबे, महल्ला कटरा, बांदा १।।) [५३] कुंअर हरप्रसाद सिंह वकील हाई कोर्ट, बांदा १।।) [५४] बाबू बिश्वम्भरनाथ, डिपटी कलेक्टर, बांदा ३) [५५] बाबू पन्नालाल मुरारका, १७८ हेरिसन रोड कलकत्ता ९) [५६] बाबू मदनमोहन वर्म्मा, १४५ हेरिसन रोड, कलकत्ता ५) [५७] बाबू धन्नूलाल अग्रवाल एटर्नी, नम्बर ४ मदन मोहन चटर्जी लेन, कलकत्ता १२) [५८] बाबू भोलानाथ, ठि. बिहारीलाल पीताम्बरवाला, चौक, काशी १।।) [५९] बाबू जगन्नाथ सिंह वर्म्मा गौर, तालुकदार, पातावोझ, पो० महोली सीतापुर १।।) [६०] ठाकुर दुर्गा सिंह रईस, बरखेरवा पो. बघौली, जि. हरदोई १।।) (६१) कुंअरलखन सिंह नायब तहसीलदार खलीलाबाद जि. बस्ती ३) (६२) लाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंग बहादुर लाल मुख्तार खलीलाबाद जि० बस्ती ३) (६३) बाबू बच्चू लाल क्लार्क बाबू रघुवीर सहाय एम. ए., एल. एल. बी, वकील हरदोई १॥) (६४) पण्डित शिवरत्न शर्म्मा मुलाजिम मित्र कम्पनी हरदोई १॥) (६५) बाबू जैराम-ड्राइङ्ग मास्टर जैनारायण स्कूल काशी १॥) (६६) बाबू नान्हक चन्द, ड्राइङ्ग मास्टर हरिश्चन्द्र स्कूल काशी १॥) [६७] बाबू सूर्य्यबली लाल गंधौली पो. सिधौली जि, सीतापुर १॥) [६८] बाबू विश्वेश्वरदयाल सिधौली जि. सीतापुर १॥) [६९] पण्डित मातादीन द्विवेदी हेड मास्टर टाउन स्कूल हरदोई १॥) [७०] बाबू शिवशङ्करलाल द्वितीयाध्यापक टौन स्कूल हरदोई १॥) [७१] बाबू सरस्वतीप्रसाद खरे, २१७ बादशाही मंडी प्रयाग ३) [७२] बाबू काशीप्रसाद खरे असिस्टेंण्ट, सिविल सेक्रेटरिएट, नैनीताल १॥) [७३]बाबू गोपीचन्दलाल गुप्त, सपही, पो. डोमचाच जि. हजारीबाग ३) [७४] बाबू रामकृष्णराम बैश्य, भीतर गोदाम, गया १॥) [७५] बाबू प्रेम-नारायण मेहरा ठि. रायबहादुर लाला दामोदरदास आनरेरी मजिस्ट्रेट, बरेली १॥) [७६] पण्डित विश्वम्भरनाथ द्विवेदी कक्षा ९ गवर्नमेण्ट हाई स्कूल बरेली १॥) [७७] पण्डित रामचन्द्रराव आपटे रेलवे इञ्जीनिअर का दफ्तर गया १॥) [७८] बाबू करम चन्द कपूर कन्ट्रेक्टर गया १॥) [७९) बाबू कमला प्रसाद मुंसिफ, ठि. बाबू बालकृष्णसहाय वकील रांची ३) [८०] पण्डित शिववचनलाल शुक्ल स्थान और पो. खझौला. जि. कानपुर १॥) [८१] ठाकुर महाबीर सिंह तहसीलदार महाराज गंज रायबरेली ३) [८२] पण्डित रामनारायण हेड मास्टर टाउन स्कूल महाराज गंज रायबरेली १॥) [८३] बाबू इन्द्रदेवलाल द्वितीय अध्यापक पाठशाला मुंडियारी, जि. बलिया १॥) [८४] पण्डित बाबूराम बाजपेयी. सर्वनखेड़ा. पो. सर्वनखेड़ा. कानपुर १॥] [८५] कुंअर मूल सिंह बसी हाउस चांद पोल दरवाजा जयपुर २) [८६] ठाकुर कल्याण सिंहजी खाचरिया वास हाउस जयपुर २) (८७)पण्डित मनीराम शर्मा पी. डब्ल्यू. डी. गवर्नमेंट आफ इण्डिया शिमला ३) [८८] पण्डित राम दहिन पाठक सुरेमनपुर बलिया १॥) [८९] पण्डित पंचानन शर्म्मा दुरजनपुर पो० सुरेमनपुर बलिया १॥) [९०] बाबू कन्हैयालाल गार्गीय, ब्यावर १॥) [९१] शाह उदयमल ब्यावर ५) [९२] लाला देवकलीप्रसाद लोहरौली. डुमरिया गंज जि, बस्ती १॥) [९३] बाबू महाबीर प्रसाद खजानची, कोर्ट नानपारा. बहराइच १॥) [९४] बाबू दीनदयाल खजानची तहसील नानपारा बहराइच १॥)

[३] सभासद होने के लिये ४९ महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

[४] निम्न लिखित सभासदोंके इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुएः- (१) बाबू अनन्त देव प्रसाद नारायण सिंह सूर्यपुर, आजमगढ़ [२] बाबूरामदेवलाल सूर्य्यपुर जि० आजमगढ़

(५) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईः-

संयुक्त प्रदेशकी गवर्न्मेण्ट इलाहाबाद—List of Sanskrit and Hindi Manuscripts purchased in the Sanskrit College, Benares in 1909--10

(२) पंण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजपूताना म्यूजियम अजमेर—सिरोही राज्यका इतिहास

[३] स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण—श्रीभक्ति शरत शर्वरीश

[४] लाला मुन्शीराम गुरुकुल कांगड़ी-नेपोलियन बोनापार्ट

(५) बाबू मदनगोपालसिंह ७३। १ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता- सप्तकाण्डरामायण खालसाकृत

(६) बाबूजगन्मोहनवर्म्मा काशी—प्रश्नोत्तर रत्नमाला

(७) बाबूदयाचन्दजैन, क्षेत्रपाल, ललितपुर-बालशिक्षा, Indian Antiquary for October 1911

(८) खरीदी गई अथवा परिवर्तनमें प्राप्त-अर्थमें अनर्थ भाग १ और २,. भूतनाथकी. जीवनी चौथाभाग

(९) रायकृष्णदासगुप्त काशी-कुसुम संग्रह।

(६) मंत्रीने इस सभाके स्थायी सभासद बाबू विश्वनाथ प्रसाद मेहता की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया और निश्चय हुआ कि स्वर्गवासी बाबू साहब के उत्तराधिकारियों को शोक और सहानुभूति सूचक पत्र भेजा जाय।

(७) सभापतिको धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की बनाई दवाएं २६ वर्ष से सारे हिन्दुस्तान में प्रचलित हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबंगवासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होतीं अल्प आय वाले भी सहज ही उसे खरीद सकते हैं।

श्री बेंकटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये!

भारतजीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार- डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी करदी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर है। २।१ दवाइयों की परिक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं। यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है

मारवाड़ी बन्धु, कलकत्ता—डाक्टर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पेटेण्ट औषधियों के रसिक जन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवायों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक बिना मूल्य मिलती है।

परीक्षा के लिये।

छः प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

मूल्य १।।) डा० म० ।)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्तर वैद्य वो हकीम भी ऐसा हो चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्तर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनायाहै। इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटेण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़े खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमे की दवा—तत्काल दमे को दबाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली—यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सबज)—अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की दवा।

देखिए लोग क्या कहते हैं:—

बाबू बनारसी लाल दास जलालाबाद, जिला भागलपुर से——आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसाही गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मूलचन्द, जबला, पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशीवाली बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई हकीकत में आपकी दवायें आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती हैं।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद, पो० सिताब दियरा जिला सारनसे—आपने छै प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू विजय सिंह रईस पो० गौतरा जिला बदाऊं से- छै:मशहूर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत १।।) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोलाटानिक का इस्तमाल किया गया, वाकई निहायत मुफीद व सेहत बख्स पाये गये, और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाई गई है।

सूबेदार पेन्शनर बिश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से

दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादू का सा असर, मैं अपनी जिन्दगानी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बकस की छोटी शीशियों का तो यही असर है कि "रविमण्डल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता, मेहरबानगी करके १ शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

एजेण्ट—बाबू गुर सहाय छोटे लाल, दुर्गानाला, बनारस।

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित सं० १८९४

२६ वर्षसे अधिक प्रचलित है।

श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस जतनबड़ बनारस सिटीमें [illegible] छपवाकर प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A 414

सम्पादक रामचन्द्र शुक्ल।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

[मासिक पत्रिका।]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा माहिं प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र

भाग १६ | दिसम्बर, १९११ । भारतेन्दु संवत २९ | संख्या ६

सूचना और सम्मति।

एक प्रसिद्ध फ़रासीसी रसायनवेत्ता ने एक मासिक पत्र में कोयले का एक अद्भुत गुण बतलाया है। वह लिखता है कि कोयला प्रत्येक प्रकार के विष के लिए एक अव्यर्थ महौषधि है। जापानवालों की यह पुरानी आदत है कि जब वे किसी प्रकार का संदिग्ध वा दूषित आहार कर बैठते हैं तब ऊपर से थोड़ी सी कोयले की बुकनी फाँक लेते हैं। इससे वे अतिसार आदि के आक्रमण से बच जाते हैं। मिश्र वाले भी पहिले अपने मुर्दों को सुरक्षित रखने के लिये इसका व्यवहार करते थे। किन्तु यूरपवालों को इसका गुण विदित नहीं था। आज साठ वर्ष हुए कि एक फ़रासीसी रसायनवेत्ता ने यूरपवालों का ध्यान इस ओर यह प्रकाशित करके आकर्षित किया कि वह बहुत सा कुचला कोयले के साथ मिला कर खा गया और उसे कुछ नहीं हुआ। पर उस समय उसकी बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। किन्तु अब इस बात को सब मानने लगे हैं कि कोयले की महीन बुकनी बनस्पति-विष, जंतु-विष, तथा खनिज-विष तक के प्रभाव को दूर कर सकती है।

———:o:———

कोश का प्रथमखंड छपने को जा रहा है। पहिले 'ब' और 'व' एक ही में रक्खा गया था। पर अधिकांश हिन्दी प्रेमियों की सम्मति इसके विरुद्ध जान पड़ी। इस लिये 'व' को फिर से अन्तस्थ में रखना पड़ा। ऐसा करने में परिश्रम तो बहुत पड़ा और आगे पड़ेगा पर हिन्दी हितैषियों का आदेश माननीय है।

———:o:———

डाक्टर चामर्स मिशिल (Dr. Chalmers Mitchell) ने हाल में जीवों की बाल्यावस्था पर एक व्याख्यान दिया है। आपने कहा है कि मनुष्यों में जो सभ्य और शिक्षित जातियां हैं उनमें असभ्य जातियों की अपेक्षा बाल्यावस्था की अवधि अधिक है। सभ्य जातियों को प्रौढ़ होने में असभ्यों की अपेक्षा अधिक समय लगता है। जंगलियों की बाढ़ प्रायः १४ और २० वर्ष के भीतर ही पूरी हो जाती है। मनुष्यों से मिलते जुलते गोरिला, चिंपांजी और आरंग आदि बंदर ८ और १४ के भीतर ही खासे जवान हो जाते हैं। किसी किसी अंश में तो डील पर बाल्यावस्था की अवधि निर्भर है। बड़े डील के जानवरों को जवान होने में ज्यादा देर लगती है। पर यह नियम सर्वत्र नहीं घटता। बाल्यावस्था की अवधि का अधिक सम्बन्ध प्राणियों की ज्ञानमात्रा से है। जो जीव जितने ही अधिक बुद्धिसम्पन्न होंगे उनके बच्चों को उतना ही अधिक समय ज्ञानसञ्चय के लिये चाहिये।

———:o:———

हर मुलर नामक एक तत्ववेत्ता ने एक विलायती मासिकपत्र में इस विषय पर एक लेख लिखा है कि कलों से काम करनेवालों के हृदय पर कैसा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने अपने अनुसन्धान की सामग्री यूरप के बड़े बड़े कल कारखानों में काम करनेवालों से पत्रव्यहार करके प्राप्त की है। एक मनुष्य २४ वर्ष से छाते के कारखाने में काम करता था जिसमें छाते की कड़ियां मशीन के द्वारा तैयार होती थीं। मशीन के हजारों पुरजे इस तेजी के साथ चलते थे कि उन पर नजर नहीं ठहरती थी। पहिले उस मनुष्य के हृदय में विस्मय और भय का भाव उत्पन्न हुआ। उसने देखा कि उसके एक साथी का हाथ थोड़ी सी असावधानी के कारण खट से उतर गया। ऐसी ऐसी बातों की आशंकाएँ मनुष्यों को जड़ बना देती हैं और वे स्वयं एक मशीन हो जाते हैं। यह निर्विवाद है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्घटनाओं का लगातार भय मनुष्य को अधीर और उद्वेगी बना देता है। कहीं से जरा सी आवाज आई कि वह चौंका कि कहीं कोई मशीन में तो नहीं फंसा है। इस प्रकार मनुष्य दुर्बल चित्त का हो जाता है। उसकी आध्यात्मिक शक्ति मारी जाता है। हर मुलर महाशय को जितनी चिट्ठियां मिली हैं उन सब से यही बात सिद्ध होती है कि कल का काम करने वाले और मनुष्यों की अपेक्षा अधिक उद्वेगशील और अधीर होते है।

बहुत से सभासदों की चिट्ठियां आई कि पत्रिका में पढ़ने के लिए मैटर कम रहता है, बहुत सा स्थान कार्य विवरण में चला जाता है। उनकी प्रसन्नता और संतोष के लिए सभा ने अब यह निश्चित किया है कि पत्रिका क्राउन चौपेजी ६ फार्म की कर दी जाय और उसमें भिन्न भिन्न विषयों पर लेखें विस्तृत रूप से रहा करें। लेखों के विषय में केवल इतना ही कहना है कि हम लोगों का ध्यान लोगों के दिल बहलाने की ओर उतना नहीं रहा है और न रहेगा जितना उनके विचारों को बलात् आगे बढ़ाने की ओर। अतः हो सकता है कि किसी किसी महाशय को यह मानसिक प्रयास खला हो। पर क्या किया जाय ?

हिन्दी प्रेमियों से निवेदन।

हिन्दी कोश का अक्षर 'अ' सम्पादित हो कर छपने के लिये जा रहा है। इस कार्य्य में जो जो कठिनाइयां सम्पादकवर्ग को पड़ती हैं उनके उल्लेख की आवश्यकता नहीं। सबसे अधिक अड़चन ऐसे शब्दों के अर्थों को ढूंढ़ने में पड़ती है जो कविता के पुराने ग्रन्थों में आए हैं। पुराने ग्रन्थों के कोई प्रामाणिक संस्करण न होने के कारण पाठों के शुद्धाशुद्ध के निर्णय का भी कोई साधन नहीं। अक्षर 'अ' के सम्पादन में बहुत से ऐसे शब्द मिले हैं जिनके अर्थों का ठीक ठीक निश्चय नहीं हो सका है। इनमें से अधिकांश शब्द सूरसागर के हैं। सूरसागर का कोई प्रामाणिक संस्करण आज तक नहीं हुआ है। वेंकटेश्वरप्रेसवाला सूरसागर काम में लाया गया है, पर वह भी अशुद्धियों से भरा हुआ है। उदाहरण के लिए वेंकटेश्वर के सूरसागर से एक पद उद्धृत करते हैं।

अति मलीन वृषभानु कुमारी। हरिश्रम जल अंतर तनु भजि स लालच मधु आवत सारी। अधोमुख रहति उरध नहिं चितवति ज्यों गथहारे थकित यूंथ अरी। छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नालिनी हिमकर की मारी। इत्यादि।

अब इसका शुद्ध पाठ देखिए:—

अति मलीन वृषभानुकुमारी। हरि श्रम जल अंतर तन भीजे ता लालच न धुआवति सारी। अधोमुख रहति उरध नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी। छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकर की मारी॥

जायसी की पदमावत का भी यही हाल है। पूरी पुस्तक पंडित रामजसन की छपवाई हुई है उसमें भी पाठ कई जगह अंडबंड हैं। जैसे—हवसी बँदवाना जियबधा। तेहि सौंपा राजा अगधा। यहां 'अगधा' के स्थान पर "अगदधा" चाहिए। पंडित सुधाकर ने जो थोड़े से अंश को अपनी टीका टिप्पणी के साथ "सुधाकर चन्द्रिका" के नाम से एशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित कराया है उसमें भी अर्थ भिड़ाने के लिए कहीं २ पाठ ही बदल दिया है।

इस अवस्था में यह उचित समझा गया कि जिन शब्दों के अर्थों का निश्चय नहीं हो सका है वे सर्व साधारण हिन्दी प्रेमियों के सन्मुख उपस्थित किए जाँय और उन पर उनकी सम्मति ली जाय।

नीचे ऐसे शब्द, उन ग्रंथों के पृष्ठांक सहित जिन में वे आए हैं, दिए जाते हैं जिनके अर्थों का निश्चय नहीं हो सका है। निवेदन है कि जिन महाशयों को इनके अर्थ विदित हों वा विदित हो सकें वे कृपा कर के २८ फरवरी के भीतर सूचित करें। सभा को हिन्दी प्रेमियों से इस अनुग्रह की पूरी आशा है।

अँभोरना—[सूरसागर—बा० राधाकृष्ण दास संपादित, वेंकटेश्वर प्रेस पृ० १८९ पं० ८] सखी री मुरली लीजै चोर। जिन गोपाल कीने बस अपने प्रीति सबन की तोर। छिन एक घोरि फेरि वस ता सुर धरत न कबहूं छोर। कबहूं कर कबहूं अधरन पर कबहूं कटि में खोंसत जोर। ना जानों कछु मेलि मोहिनी राखी अंग अँभोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बंध्यो राग के डोर॥ १॥

पाठांतर।

सखी री मुरली लीजै चोरि। जिन गोपाल किये बस अपने प्रीति सबनि सों तोरि। एकहु पल नाहीं निसु दिन मैं कबहूं धरत न छोरि। कबहूं कर कबहूं अधरनि पर कबहूं उर कटि ओरि। जानति हौं कछु मेलि मोहिनी राखे सब अंग भोरि। सूरस्याम को मन सुनु सजनी बंध्यो नाद की डोरि॥ १॥

अऊत—[सत्य कबीर की साखी-युगलानंद कृत टीका, वेंकटेश्वर प्रेस सं० १९५९ पृष्ठ १७४ पंक्ति १६]
धन्य सो माता सुंदरी, जिन जाया वैष्णव पूत।
राम सुमिरि निर्भय भया औ सब गया अऊत॥

अकूहल—(सूरसागर पृष्ठ २२३ पं० ३१ गोवर्द्धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा प्रसंग)
आइ जुरे सब बृज के वासी । डेरा पऱ्यो कोस चौरासी। एक फिरत कहुं ठौर न पावे । एते पर आनन्द बढ़ावे । कोउ काहू सो बैर न ताकै । बैठत मन जहं भावत जाकै । खेलत हँसत करैं कौतूहल । जुरे लोग तहं तहां **अकूहल** । नन्द कह्यो सब भोग मंगावहु । अपने कर सब लैलै आवहु । भोग बहुत वृष भानुहिं घर को। को कहि बरनै अतिहि बहर को । सूरस्याम जो आयसु दीन्हों । विप्र बुलाइ नन्द तब लीन्हों ॥ १ ॥

अगरी—(सूरसागर पृ० २०३ पं० १७)
(१) अडचंढ । अनर्गल बात । अनुचित बात । (२) अगराई हुई ।
(अगराना=स्नेह से धृष्टता का व्यवहार करना ?)
बिलावल—सुनहु महरि तेरो लाड़िलो अति करत अचगरी । यमुन भरन जल हम गईं तहं रोकत डगरी । शिरते नीर ढराइ देत फोरी सब गगरी । गेंडरि दइ फटकारि कै हरि करत हैं लंगरी । अब बसवास नहीं बनै यहि तुव व्रज नगरी । नित प्रति ऐसेइ ढंग करै हमसों कहैं **अगरी** । आपु गयो चढ़ि कदमही चितवत रही सिगरी । सूरस्याम ऐसेहि सदा हमसों करै झगरी ॥ १ ॥

अगास—(सूरसागर)
(१) द्वार के आगे का चबूतरा ? (२) आकाश ?
हौं संग सांवरे के जैहौं । होनी होइ सो होवै अबहीं जस अपजस काहू न डरैहौं । कहा रिसाइ करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्रान ते दैहौं । दैहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत हरि रति बीज बहुरि कब वैहौं । का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि **अगास** पिय भवन समैहौं। का यह व्रज वापी क्रीड़ा जल भजि नँद नन्द सबै सुख लैहों ॥ १ ॥

अचवाई—(पदमावत पृ० १८१ पं० ४ पं० रामजसन सम्पादित)
[सं० अच्छ = साफ] धोई हुई । साफ़ ।
रूप सरूप सिंगार सवाई । अप्सर कैसी रहि **अचवाई** ।

अछवाई—(पद्मावत पृ० १८० पं० १४)
पहिले कहौं हस्तिनी नारी । हस्ती की परकीरति सारी। भोजन बहुत वहुत रतिचाऊ । अछवाई सों थोर सुभाऊ ॥

अजूजा—कबित्त—जुद्ध जाजऊ के बुद्ध है करि सक्रुद्ध नद्ध आजम के महाबीर काटि काढ़े ऊजा से । कहैं कवि दूलह समुद्र बढ़े सोनित के जुग्गुनि परेते फिरै जम्बुक **अजूजा** से । एक लीने सीस खाय वेष ईस एकन की एकन की उपमा निहारी मनु ऊजा से । अधफटे फैलि फैलि फरमें बिराजैं मानों माथे मोगलन के तरास तरबूजा से ॥ १ ॥

अठंग—कवित्त । उठत उरोजन उठाए उर ऐंठ भुज ओठन अमेठे अंग आठहूं **अठंग** सी । देव मन मोहन की डीठिही भिठानी पीठि देदै क्यों बढ़ानी सोहैं भौंहैं भरि भंगसी । तेरेई अनूप रूप रीझे रिझवार जिन झाईं सों रिझाई रमां रूप के तरंगसी । गरबीली गूजरी गोबिंद को गनै न तू बांधे गुन गगन चढ़ाए फिरै चंगसी ॥ १ ॥ (पृ० १६३ पं० ९ सुखसागर तरंग देव कृत)

अठोठ—ठाट । आडंबर । पाखंड । ?
कवित्त—लाज के **अठोठ** कैकै बैठती न ओट देदै घूंघट कै काहे को कपट पट तानती । डारि देती डर कर ऐंचती न कोप करि डीठि चोरि पीठि मोरि हौं न हठ ठानती । देव सुख सोवती न रोवती सुहाग रैन मेटि ताप ही ते आप ही ते सुख मानती । हाय हाय काहे को तितेक दुख देखती जो प्रीतम को मिले को इतेक सुख जानती ॥ १ ॥ देव

अडारी—हरि हम काहे को योग विसारी । प्रेम तरङ्ग बूड़ि व्रजवासी तरत श्याम सोइ हारी । रिपुमाधव पिक बचन सुधाकर मरुत मन्द गति भारी । सहि न सकत अति विरह त्रास तनु आगि सलाकनि जारी । ज्यों जल थाके मीन कहा करै तेउ हरि मेलि **अडारी**। विजय अधो मुख लेन सूर प्रभु काहियहु विपति हमारी ॥ १ ॥
(पृष्ठ ५३८ पं० १३ सूरसागर ।
ऊधो बेदबचन परमान । कमलमुख पर नैनन खंजन निरखि है को आन । श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान । अधर सुधा पियाइ बिछुरे पठै दोनों ज्ञान । ए नहीं है कृपाल केशव ए हैं हिबे समान । निकरि क्यों न गोपाल बोलत दुखिन के दुख जान । रूप रेख न देखिये तहँ मूढ़ सुमिरि भुलान। इनहिं दंड **अडारि** हरिगुन योगजान बखान । बीत राग सुजान § योगिन भक्त भजन निवास। निगम बानी मेटि कहि क्यों सकै सूरज दास ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृ० ५५४ पं० ३४ सूर भागवत दशम स्कंद)।

अढैया... अति परम सुन्दर पालना गढ़िल्यावरे बढ़ैया। शीतल चंदन कटाउ धरि खरादि रंग लगाउ विविध चौकी बनाउ रंग रेसम लगाउ हीरा मोती लाल मढ़ैया। विश्व कर्मा सुढार रच्यो है काम सनार मणि गण लागे अपार नंद महर सुत काज अढ़ैया। आनि धर्‍यो नंद द्वार अति ही सुंदर सुढार ब्रज बधू देखैं बारबार सोभा नहिं वारपार धनि धनि धन्य है गढ़ैया। पालनो आन्यो सब ही मन मान्यो नीको सो दिन धराय सखिन मंगल गवाय रंग महल में पौढ़्यो है कन्हैया। सूरदास प्रभू की मैया जसुमति नंद रानी जोई सोई लेत बधैया ॥ १ ॥

अतूथ देखो सखि अद्‌भुत रूप अतूथ। एक अंबुज मध्य देखियत बीस उदधिसुत यूथ। एक शुक, दोउ जलचर, उभयो अर्क अनूप। पंच विराजे एकही ढिग कहु सखि कौन स्वरूप। शिशुता में सोभा भई करो अर्थ विचारी। सूर श्रीगोपाल की छबि राखिए उर-धारी। (सूर सागर पृष्ठ १०७ पं० २४)

अपडाई-(सूर सागर पृष्ठ ३०५ पं० ८)
मन जो कहो करै री माई। तेरी कही बात सब होती मिलो उनहिं को धाई। निलज भई तन सुध बिसराई गुरुजन करत लराई। इत कुलकानि उतै हरि को रस मन तो अति अपडाई। आप स्वारथी सबै देखियत है मोको दुखदाई। सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनक ही गयो रिसाई ॥

अफलदी-(सूदन कवि का सुजान चरित्र, सभा संस्करण पृ० १६१ पं० २७)
कोई फल ?
आलूचा अमिली अँबहलदी।
आल, आँवरा, साल अफलदी।

अवगारना-(सूरसागर पृ० [illegible] पंक्ति ४)
कहा कहत रे मधु मतवारे? आयो धाइ जोग उपदेसन प्रेम भजन गहि डारे। जेहि मुख सुधा श्याम रस अंचवत, अब पीवैं जल खारे। यह अक्रूरहु तें अति खोटो डारति हौं अहिकारे। हम जान्यो यह श्याम सखा है यह तो औरै न्यारे। सूर कहा याके मुख लागत कौन याहि अवगारे।

अहीठ-(सूर सागर)
लोचन भए अति ही ढीठ। रहत हैं हरि संग निसि दिन अतिहि नवल अहीठ। वदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत। बार बार बुझाइ हारी भौंह मोपै तनत। ज्यों सुभट तन देखि टरत न लरत खेत प्रचारि। सूर छवि सम्मुखहिं धावत निमिष अरुन डारि ॥-सूर।

अहीठि-(सूर सागर पृष्ठ ३८० पंक्ति २६)
काहि मनाऊँ श्यामलाल बाल जोरै नहिं डीठि। मुखहू जो बोलै तो मनही की लहिए, ऐसी तिहारी अहीठि। अपनी सी बहुत कहीं, सुनि सुनि उन सबै सही, बारू की बूंद ताको कहा करै बसीठि। सूरदास के पिय प्यारी आपुही जाय मनाय लीजै जैसी बयारि बहै तैसी ओढ़िए जू पीठि ॥

मय।

हमारे यहां के ग्रन्थों में 'मय' का नाम प्रायः मिलता है। रामायण में दो स्थानों पर मय का नाम आया है। एक तो मंदोदरी को जो रावण की रानी थी मय की पुत्री लिखा है और फिर मय के लड़के के साथ बालि का लड़ना और युद्ध में बालि का उसे मारना लिखा है। महाभारत में भी मय का नाम आया है और लिखा है कि युधिष्ठिर के लिये मय ने इंद्रप्रस्थ में अत्यन्त अद्‌भुत और विशाल सभा-भवन खांडव में बनाया था। इसकी ख्याति सुन दुर्योधन देखने के लिये जब गया था तब उसे वहां जल में थल और थल में जल का भ्रम हुआ था। सूर्य्यसिद्धान्त में लिखा है कि मय ने सूर्य्य भगवान की घोर तपस्या ज्योतिष विद्या की प्राप्ति के लिये की थी जिससे सूर्य्यदेव ने प्रसन्न हो एक प्रतिपुरुष को भेजा था जिसने उसको ज्योतिष शास्त्र का उपदेश किया था जो पीछे सूर्य्य सिद्धान्त के रूप में लिखा गया। इसके अतिरिक्त पुराण आदि में कितनी ही जगह मय शब्द आया है। इन सब बातों पर विचार करने से अनुमान होता है कि 'मय' किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं था वरन् वह विदेशियों की किसी बहुत प्राचीन जाति का नाम था जिनका सम्पर्क आर्य्य जाति के साथ बहुत प्राचीन काल से चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता था । एक व्यक्ति विशेष का इतने दिनों तक भिन्न २ कालों में हमारे साहित्य में उल्लेख देखे जाने से यह अनुमान और भी पुष्ट होता है कि यह वास्तव में कोई व्यक्ति न था क्योंकि एक व्यक्ति की स्थिति भिन्न भिन्न कालों में असंभव सी प्रतीत होती है । यह जाति अन्य जातियों के समान असभ्य जाति न थी वरन आर्य्य जाति के समान ही सभ्य जाति थी जो कला कौशल तक्षण में अद्वितीय और ज्योतिष विद्या में दक्ष तथा सूर्य्य चन्द्रादि की गति से अभिज्ञ थी । इनके साथ आर्य्य जाति का घनिष्ट सम्बन्ध था । कभी ये लोग आर्य्यों से मैत्री करते थे, कभी उनसे लड़ने पर उतारू होकर चढ़ाई करते थे । हमारे यहां के ग्रन्थों में मय को असुर लिखा है और उसका निवासस्थान पाताल बतलाया है ।

पाताल देश का सम्बन्ध न केवल 'मय' और असुरों ही के साथ माना गया है अपितु नाग लोगों का भी स्थान पाताल बतलाया गया है । इससे यह अनुमान होता है कि या तो असुर मय और नाग लोग एक ही थे अथवा ये लोग एक ही स्थान में आस पास के रहने वाले थे । ये लोग सभ्य और शिक्षित भी थे । इन लोगों पर हमारी सभ्यता का तथा हमलोगों पर इनकी सभ्यता का बहुत कुछ प्रभाव पड़ा था इस का अनुमान भी होता है क्योंकि इन लोगों का सम्पर्क आर्य्य जाति के साथ बहुत प्राचीन अनिर्दिष्ट काल से होना पाया जाता है । एक अनुमान और भी होता है कि जब पूर्व काल में हमारा इन लोगों के साथ इस प्रकार का घनिष्ट सम्बन्ध था तब इन लोगों की आबादी अवश्य कहीं इस पूर्वीय गोलार्ध में रही होगी । क्यों कि इतने दिनों तक लगातार सम्पर्क होने पर यह सम्भव नहीं मालूम होता कि इन लोगों ने कोई स्थान अपने अधिकार में न किया हो और वहां अपनी आबादी स्थापित न की हो । एक और विलक्षणता की बात तो यह है कि वेदों में जहां आर्य्य शब्द आया है वहां असुर शब्द भी आया है जिससे यह भी पता चलता है कि ये दोनों जातियां समकक्ष थीं । नागों का सम्बन्ध तो यहां तक मिलता है कि किसी २ मन्त्रों के ऋषि भी सर्प कहे गए हैं । इसका पता ऐतरेय ब्राह्मण में 'सर्प ऋषिर्मन्त्रकृत्' पद के देखे जाने तथा शतपथ ब्राह्मण में 'अयंगौःपृश्निरक्रमीत्' को सर्पराज्ञी कहे जाने से होता है । नाग कन्याओं के साथ प्राचीन काल में भारतीय आर्य्यों का विवाह इत्यादि सुने जाने से यह भी अनुमान होता है कि इन जातियों के साथ आर्य्यों ने विशेष घनिष्ठता होने से सम्बन्ध भी करना प्रारंभ कर दिया था । जरत्कारु ऋषि का तथा अर्जुनादि का नाग-कन्याओं से विवाह होना लिखा है जिससे इस अनुमान की विशेष पुष्टि होती है ।

संस्कृत भाषा में पाताल नीचेके लोक को कहते हैं । अमेरिका महाद्वीप जो नई दुनियां में है वह ठीक हमारे पदतल विन्दु के नीचे है जिस से अनुमान होता है कि हमारे यहां के लोगों ने इसे ही पाताल कहा है और इसी को प्राचीनों ने नागलोक भी कहा है । इसको नाग लोक कहे जाने के कई कारण प्रतीत होते हैं । या तो अमेरिका निवासियों वा पाताल वालों ने जिनका सम्पर्क हमारे पूर्वजों के साथ हुआ था अपने आपको नागवंशी बताया होगा यद्वा हमारे पूर्वजों को यह ज्ञात था कि ये लोग उन्हीं नागों के वंशधर थे जिनका सम्बन्ध उनके पूर्व पुरुषों के साथ बहुत दिनों से था, जो मध्य एशिया में रहते थे । कुछ हो इन लोगों का ज्ञान हमारे पूर्वजों को अवश्य था ।

अब हम इस छान बीन में प्रवृत्त होते हैं कि यह वास्तव में कोई जाति थी अथवा हमारे साहित्य में झूठ मूठ इनके नाम और कल्पित गाथाएं भरी हैं । हमारा विश्वास है कि पुराने साहित्य और पुराणों में सब बातें निर्मूल नहीं हैं । हां यह सम्भव है कि बहुत पुरानी गाथाओं के होने से उनमें बहुत कुछ अत्युक्ति दोष तथा असंभव कथायें और कल्पनायें मिल गई हैं पर वे सर्वथा निर्मूल नहीं हैं । यह संभव है कि अब भी ढूढने से उनमें बहुत कुछ बातों की सत्यता का पता चल सकता है । जब हम अमेरिका-देश वासियों की ओर देखते हैं तथा जहां उस देश में बहुत सी असभ्य जातियां मिलती हैं वहां मेक्सिको देश में एक ऐसी सभ्य जाति की आबादी पाई जाती है जो कला कौशल तक्षण आदि कामों में बड़ी ही चतुर और दक्ष है । यूरोप के लोगों की जब पहिले पहिल इन जातियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेंट हुई तब उनकी सभ्यता और दक्षता देखकर वे लोग अबाक् हो गए। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में लिखा है:—

'When early in the 16 th Century the Spaniards found their way from the West India Islands to those parts of the mainland of America, they came in view of nations cultured high above the level they hitherto met with in the New World. Here were not rude and simple tribes like the islanders of Antilles, but nations with organized armies, official administrators, courts of Justice, high agriculture and mechanical arts, and what struck the white men especially, stone buildings, whose architecture and sculpture were often of dimensions and eleborateness to astonish the builders and sculptures of Europe. How population of millions could inhabit a world whose very existence had been till then unknown to geographers and historians, and how its nations could have reached so high a grade of barbaric industry and grandeur, was a problem which, naturally excited the liveliest curiosity of scholars'.

सोलहवीं शताब्दी में जब स्पेन के लोग वेस्ट इण्डीज टापू से हो अमेरिका के महाद्वीप के इन भागों में पहुंचे तब उनको यहां ऐसी जातियां मिलीं जो सभ्यता में इतनी बढीचढी थीं जिनकी टक्कर की कोई जाति उस नई दुनियां में उनको उस समय तक नहीं मिलीथी। यहां उन लोगोंको अन्टिलेस टापू के बाशिंदों के समान असभ्य और सीधी जातियां नहीं मिलीं अपितु अत्यंत सभ्य जातियां मिलीं जिनमें सेनाओंका प्रबंध बहुत अच्छा था, जिन में बड़े बड़े नीतिकुशल शासक होते थे, जिनके यहां न्यायालयकी अच्छी व्यवस्था थी। यह लोग कृषिकर्म और कला कौशल में अत्यन्त कुशल और दक्षथे। सबसे अधिक विस्मय तो उनको उससमय हुआ जब उनलोगोंने इनकी पत्थरोंकी इमारतोंको देखा जिन की रचना प्रायःइतनी विस्तृत और परिश्रमसाध्य थी कि उन्हें देख यूरोपके थवईयों और तक्षकों के छक्के छूट जायँ। कैसे यहां इस दुनियामें लाखों मनुष्यों की आबादी हुई इसका कुछ भी पता उस समय तक पुरानी दुनिया (यूरोप) के भूगोल-विदों और ऐतिहासिकों को नहीं लगा। और कैसे वहांकी जातियां असभ्यता की दशासे निकलकर दस्त कारी और महत्वकी इस पराकाष्ठाको पहुंची यह बात विद्वानों को चकित किए रही।

आकार में वे लोग कुछ नाटे थे प्रायः ५ फुट ३ इंच तक लम्बे पाए गए थे। इनके शरीर की बनावट सुदृढ और सुविभक्त थी। ये मजबूत और सहिष्णु होतेथे इनके मुखका आकार कुछ लम्बाई लिये गोल था। इनका माथा या ललाट दबा वा चपटाथा और आंखें लम्बी तथा गालकी हड्डियां उभरी हुई थीं। नाक किसीकी चपटी और किसी की लम्बी होती थी और होठ मोटेथे। रंग इनका प्रायः पीलापन लिये भूराथा। आंखों की पुतलियां और बाल काले और चमकीले होतेथे। रूपज्ञ विद्वानों की सम्मति है कि ये लोग तातार देश वालों के दूरस्थ सजातीय हैं और बहुत दिनों से कई युग हुए उनसे विलग होगये हैं और यही कारण है कि उनकी भाषा से एशिया की भाषाओंसे कोई सम्बन्ध नहीं पाया जाता है। खास अमेरिकाही में इन जातियों में कई भाषायें बोली जाती हैं जिनका परस्पर कोई सम्बंध नहीं है। इस विषय पर उक्त ग्रंथमें लिखा है:—

The remarkable phenomenon of nations so similar in bodily make but so distinct in language can hardly be met except by supposing a long period to have elapsed since the country was first inhabited by the ancestors of peoples whose language has since passed into so different forms. The original peopling of America may well date from the time when there was continuous land between it and Asia.

ऐसी जातियों के, जिनके शारीरिक संगठन में इतनी समानता है पर भाषा में इतनी विभिन्नता है, इस अद्भुत वैषम्य का समाधान विना यह माने नहीं हो सकता है कि उनके पूर्वजों को अमेरिका में आबाद हुए बहुत काल हो चुका है। और अमेरिका देश में पहिली आबादी उस समय में प्रारंभ हुई जब अमेरिका और एशिया के बीच स्थल मार्ग था। आगे चलकर इनकी सभ्यता पर एशिया की सभ्यता का प्रभाव देख इस प्रकार लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What gives more solid interest to the question of Asiatic influence in America is that, though neither the evidence of feature nor of language has substantiated it, there are details of Mexican civilization which are most easily accounted for on the supposition that they were borrowed from Asia.

यद्यपि एशिया का प्रभाव अमेरिका वालों के आकार और भाषा पर स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं पड़ता पर तो भी अमेरिका की सभ्यता के बहुत से अंशों का समाधान यह मानने से हो जाता है कि वह एशिया से ली गई है।

हमारे यहां के ग्रन्थों के देखने से यह पता चलता है कि तातार में नाग लोग रहते थे। इन लोगों ने भिन्न भिन्न समयों में कई बार भारत पर आक्रमण किया था। युधिष्ठिर के पौत्र परिक्षित को तक्षशिला ❀ में तक्षक नाग ने मारा था और इसी का बदला लेने के लिये उसके बेटे जन्मेजय ने नागों पर चढाई की थी जिसमें नागों की बडी सेना जलाई गई। इस कथा को पुराणों में इस रूप से लिखा है कि परीक्षित को तक्षक ✳ नागने काटा था और जन्मेजय ने उसका बदला लेने के लिये सर्पमेध यज्ञ किया था। तिब्बती लोग अपनी लिपि को नागलिपि और अपनी भाषा को नागभाषा कहते हैं। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की प्राचीन मूर्त्तियों को देखने से पता चलता है कि ये लोग नागों की पूजा करते थे और नाग ही इनका जातीय देवता था। तन्त्र तातारियों से लिये गये हैं। कनिष्क, जो तातारी था, जब भारत वर्ष का सम्राट् हुआ तब उसने बौद्ध धर्म स्विकार किया और बौद्ध ग्रन्थों का पृथक संस्करण संस्कृत में महायान नाम से करवाया जिस में बहुत से तान्त्रिक अंशोंका मेलमाल करा दिया। पौराणिक क्षीरसमुद्र के शेषशायी विष्णुको वैदिक विष्णु वा सूर्य्य के साथ मिलाइए और "चिताभस्मोलेपो गरलमशनो दिक्पटधरः। जटाधारीकण्ठेभुजगपीतहारी पशुपतिः" शिव को वैदिक रूद्र से जो विद्युत् और वायु का नामान्तर है मिलाइये तो पता चलेगा कि इनमें कितना अन्तर है। इसके अतिरिक्त तक्षक शब्द के अर्थ पर ध्यान दीजिये तो मालूम होगा कि इसका अर्थ संस्कृत भाषा में संगतराश और गढनेवाला हैं। इस प्रकार छानबीन करने से यह स्पष्ट है कि नाग जाति का सम्बन्ध आर्य्य जाति से बहुत प्राचीन काल से है।

अब इन्साई क्लोपीडिया में मैक्सिको के मय लोगों के विश्वास के विषय क्या लिखा है देखिए:—

There was only the heaven with its boundaries towards the four winds, but as yet there was nobody, nothing that could cling to any thing else, nothing that balanced itself or rubbed together or made sound; there was naught below but the calm sea alone. In the silent darkness alone was the Creator the Former, the Ruler, the Feathered serpent he who gives being and whose name is Gucumatz.

पहिले आकाश मात्र था जिसके चारों ओर वायु थी। उस समय तक कोई प्राणी नहीं था कोई ऐसा पदार्थ नहीं था जो दूसरे पदार्थ से मिलता। और न कोई वस्तु थी जो उठती या किसी दूसरी वस्तु से रगड़ खाती या शब्दों को उत्पन्न करती। नीचे एक प्रशान्त सागर अन्धकार में आच्छन्न था। केवल वहां जगत का स्रष्टा, नियन्ता आदि पक्षधारी नाग था जिसने सब पदार्थों को उत्पन्न किया और उसका नाम गुकुमत्स है।

इससे यह अनुमान होता है कि ये लोग नाग कोही जगत का स्रष्टा और नियन्ता मानते थे। और स्यात् इसी कारण से ये लोग नाग कहे गए हों। इन्ही लोगों के अन्तर्गत मय लोग भी थे। ये लोग तक्षण कर्म में बड़े दक्ष हैं। इन लोगों में मिश्र निवासियों के समान ऊंचे ऊंचे स्तूप (Pyramids) बनाने की प्राचीन काल से प्रथा चली आती है। ये लोग चित्रकारी बहुत अच्छी करते हैं और मिश्रियों के सदृश इनकी भी लिपि चित्रलिपि ही है। इन समानताओं को देखकर कितने विद्वानों की यह सम्मति है कि मिश्र के लोग या तो इनके सजातीय थे वा इन्हीं के अवान्तर भेद थे। इसकी पुष्टि हाल में

❀ तक्षशिला में जब सिकंदर आया था तब उसने वहां के राजा के पास दो बड़े नाग पले हुए देखे थे जिनकी पूजा होती थी।

सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके पूर्वजों के तथा मिश्र देश वासियों के पूर्वजों के कपालों के मिलाने से होगई है और अब विद्वान लोगों की यह धारणा होगई है कि मिश्र में इनही लोगों की एक शाखा अमेरिका से आकर आबाद हुई। मिश्र देश में जितने स्तूप देखे जाते हैं वे सब समान कक्षा के है वहां ऐसे कोई भी चिन्ह नहीं मिलते जिनसे यह अनुमान हो सके कि मिश्रियों में सभ्यता अमुक क्रम से फैली। इनके विरुद्ध हाल में मैक्सिको में निकले हुए पदार्थों से पुरातत्वविद विद्वानों का यह अनुमान और भी पुष्ट होगया है कि मैक्सिको निवासियों की सभ्यता मिश्रियों की सभ्यता से पुरानी है।

इन सब बातों पर बिचार करने से यह अनुमान होता है कि पूर्व कल्प में ये लोग एशिया खंड में पास २ रहते थे और जैसे आर्य्यों की ईरानी और भारतीय दो भिन्न भिन्न शाखायें होगई वैसे ही इनकी भी दो शाखायें हो गई थीं एक असुर दूसरे नाग। यहीं से पीछे फिर एक शाखा पाताल वा अमेरिका देश में चली गई और वहां पर बहुत काल तक निवास करने पर जब इनकी कलाकौशल और तक्षण उन्नति को पहुंच गई तब इनकी एक शाखा मिश्र देश में आई और उसने वहां अपनी आबादी कायम की। यह गमनागमन अनिर्दिष्ट काल तथा कल्पान्तर में हुआ था यही कारण है कि इनकी भाषा में इतना अन्तर पड़ गया। इन लोगों की चरचा भारत वर्ष के साहित्य में मिलने से अनुमान होता है कि पूर्व काल में भारतीय आर्य्यों ने इन लोगों से तथा इन लोगों ने भारतीय आर्य्यों से बहुत कुछ सीखा है।

(क्रमशः)

जगन्मोहन वर्म्मा।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता. २७ नवम्बर १९११ सन्ध्या के ५ बजे

स्थान-सभा भवन

[१] बाबू जुगल किशोर सभापति चुने गए।

[२] गत अधिवेशन (तारीख २८ अक्टूबर १९११) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

[३] तारीख १६ सितम्बर १९११ का प्रबन्ध कारिणी समिति का कार्य्यविवरण सूचनार्थ पढ़ा गया।

[४] निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए:—

[१] पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा ज्योतिर्विद, गुप्त काशी-जि० गढ़वाल २) [२] पण्डित रामकृष्ण शर्म्मा-मु. वामसू-पो. गुप्तकाशी-जि० गढ़वाल १।।) [३] बाबू त्रिलोकीनाथसहाय बी. ए. वकील, बहराइच १।।) [४] बाबू गोविन्द प्रसाद-मीराखेलपुरा—बहराइच १।।) [५] बाबू बद्रीप्रसाद टंडन—ठेकेदार-रायबरेली ३) [६] पण्डित शिवराम जानी-इलाहाबाद बंक-चौक, लखनउ ३) [७] पण्डित नारायण बैजनाथ काले, ब्रम्हाघाट, काशी १।।) [८] पण्डित फूलचन्द शर्म्मा-५० काटन स्ट्रीट—कलकत्ता ३) (९) पण्डित बालचन्द शास्त्री, मु० रामगढ़ जि० ३) (१०) बाबू रंगलाल जादोदिया २१२ सूतापट्टी-कलकत्ता ३) [११] बाबू विहारीलाल सेक्रेटरी-आर्य समाज, रुस्तमपुर, जि० नीमाड़ ३) [१२] बाबू कुन्दनलाल मालवी-हेडमास्टर वर्नाक्युलर मिडिलस्कूल-पंधाना तहसील खंडवा जिला नीमाड़ १।।) [१३] बाबू कालिकाप्रसाद मुदर्रिस-मदर्सा पटखौला-पो० खलीलाबाद जि० बस्ती १।।) [१४] बाबू बच्चूलाल-इन्सपेक्टिङ्ग पंडित-हथुआ राज्य, मीरगंज, जि० सारन १।।) [१५] बाबू रामेश्वरलाल बजाज-रानीगंज ३) [१६] बाबू बदरीप्रसाद-इम्पीरियल साइकिल वर्क्स-निकलसन रोड, लाहोर, १।।) [१७] पण्डित नाथूराम ज्योतिषी-नाहन-सरमौर १।।) [१८] बाबू राजबली सिंह-मुदर्रिस-सँवरा-पो० रसड़ा-ज़िला बलिया १।) [१९] पण्डित सीताराम पांडेय-मुदर्रिस-रसपुरा-पो० हलधरपुर-बलिया १।।) [२०] बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरिजा शङ्कर दयालु मुख्तार–खलीलाबाद जि० वस्ती ३) [२१] बाबू गुरु प्रसाद सर्कार–ट्रांस लेटर–सी. आई. डी. कटरा, इलाहाबाद ३) [२२] बाबू देवकी नन्दन सहाय–इन्स्पेक्टर जनरल आफ़ पुलिस का दफ्तर–इलाहबाद १।।) [२३] बाबू मानकरण शारदा–आक्सफर्ड एण्ड केम्ब्रिज होस्टल, इलाहाबाद १।।) [२४] बाबू मोहनलाल-नायब मुदर्रिस–पाठशाला कुलपहाड़–जि० हमीरपुर १।।) (२५) बाबू भवानीप्रसाद–अध्यापक–ब्रांच स्कूल–कुल पहाड़–जिला हमीरपुर १।।) (२६) पण्डित लक्ष्मीनारायण गर्दे ५ पत्थर गली–काशी १।।) [२७] बाबू बैजनाथ प्रसाद कौलापुरी–केराकत–जि० जौनपुर १।।) (२८) बाबू गजाधर प्रसाद--आडिटर--लोकल फंड एकाउण्ट, एकजामिनर आफ एकाउण्टस का दफ्तर-इलाहाबाद १।।) (२९) बाबू चिरंजीलाल बागला, रईस और म्युनिसिपल कमिश्नर-हाथरस ३) (३०) बाबू सागरमल बागला-रईस–हाथरस ३) (३१) बाबू अक्षयकुमार वर्म्मा-पटना ट्रेनिङ्ग कालेज-मुरादपुर-बांकीपुर १।।) (३२) बाबू जगनलाल गुप्त--हिन्दी टीचर--महसाना-बरोदा राज्य १।।) (३३) बाबू उमाप्रसाद इंगलिश टीचर-पटना ट्रेनिङ्ग स्कूल-बांकीपुर १।।) (३४) बाबू बी. के. विद्यार्थी-हेडमास्टर-महेश्वरी स्कूल-पोकरण-मारवाड़ १।।) (३५) पण्डित राम प्रसन्नतिवारी–अध्यापक--मदारीचक स्कूल-पो. मदारीचक-जि. पूर्नियां १।।) (३६) पण्डित शङ्करदयालु शर्म्मा ब्रह्मभट्ट--भूतपूर्व सम्पादक--भट्ट भास्कर—कानपुर १।।) (३७) पण्डित नारायण प्रसाद शर्म्मा ब्रह्मभट्ट—वूलन मिल्स-कानपुर १।।) (३८) पण्डित रघुवर दयालु ब्रह्मभट्ट वैद्य शास्त्री--नौघटा—कानपुर १।।) (३९) पण्डित कल्यानसिंह परिहार-गोड़ बड़ले का चौक-जोधपुर १।।) (४०) बाबू रामरख मालानी--ठि. बालचन्द उगरचन्द--ब्यावर ५) (४१) पण्डित बालकृष्ण मिश्र-१० हनुमान जी लेन-बड़ा बाज़ार-कलकत्ता ३) (४२) पण्डित सत्यनारायण पाण्डेय--३४ आर्मेनियन स्ट्रीट-कलकत्ता ५) (४३) बाबू कालीप्रसन्न चट्टोपाध्याय मिश्र पोखरा-काशी ५) (४४) पण्डित जनार्दन मिश्र-पटना ट्रेनिङ्ग स्कूल--बांकीपुर १।।) (४५) बाबू गोकुलदास एम. एस. सी.., एल. एल. बी. प्रोफ़ेसर--होल्कर कालेज--इन्दौर ३) (४६) बाबू व्रजपाल दास–अध्यापक-हरिश्चन्द्र स्कूल-काशी १।।) (४७) बाबू हनुमान बकस-मारवाड़ी बाज़ार-बम्बई नं. २, ३) (४८) बाबू रामनिवास सूरजमल कारुंडिया-ठि. हरदत्त राय राम प्रताप-बम्बई नं २, ३) (४९) पण्डित राधेलाल त्रिपाठी स्टुवर्ड--यूनाइटेड सर्विस क्लब--लखनऊ ३)

(५) सभासद होने के लिये १९ सज्जनों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(६) पण्डित जानकी प्रसाद, धर्म्मकूप, काशी, का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(७) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईः ।

संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट—Catalogue of Sanskrit Mss in the Government Oriental Mss Library, Madras Vol XI

ऐशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल कलकत्ता—Journal & Proceedings for April 1911. बाबू जीवराखन लाल, कटनी, मुरवाड़ा-सन्तति रत्न । श्रीमान् महाराजा साहब रीवाँ—यूनान रोम युद्ध । बंगाल की गवर्न्मेण्ट—Tibaten—English Dictionary । पण्डित श्यामाविहारी मिश्र एम. ए., छत्रपुर--हिन्दी नवरत्न, इङ्गलेण्ड का इतिहास, रूस का इतिहास। पण्डित सुदर्शनाचार्य्य, प्रयाग-छोटी बहू, राधा रानी । खरीदी गई-नाट्य शाल, बालस्मृति माला, बाल अरब्योपाख्यान भाग २, ३ और ४ ऋद्धि, सिंहगढ़ विजय, छत्रपति शिवाजी, स्त्री शिक्षा, फूलों का हार, वैधव्य विध्वंसन चम्पू, गृह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध शास्त्र, प्रियतम, प्राणघातक माला, बाल पुराण, प्रकृति ।

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबंधकारिणी समिति ।

शनिवार ता० २५ नवम्बर १९११--सन्ध्या के ५। बजे। स्थान-सभाभवन

उपस्थित

पण्डित माधवप्रसाद पाठक सभापति, गोस्वामी रामपुरी, बाबू जयशंकरप्रसाद, रायपूरनचन्द्र, बाबू बेणीप्रसाद, बाबू जुगलकिशोर, पण्डित निष्कामेश्वरमिश्र, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, ।

सम्मतियां—पण्डित श्रीधरपाठक, पण्डित मुन्नालाल मिश्र, पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा बी० ए०, पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० ।

(१) गत अधिवेशन [ता० १६ सितम्बर १९११ का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) पुस्तकाध्यक्ष के पद के लिये आए हुए प्रार्थनापत्र उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि ये आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किए जांय ।

(३) ठाकुर जगन्नाथ सिंह वर्म्मा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा भारतेन्दु ग्रन्थावली के एक सुलभ संस्करण के निकालने का प्रबन्ध करे ।

निश्चय हुआ कि खड्गविलास प्रेस से प्रार्थना की जाय कि वे इस ग्रन्थावली का एक सुलभ संस्करण प्रकाशित करें ।

(४) पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि पण्डित बालकृष्ण भट्ट तथा पं० गोविन्दनारायण मिश्र ने हिन्दी की बहुत सेवा की है अतः वे सभा के आनरेरी सभासद चुने जांय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव साधारण सभा में स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जाय ।

(५) पण्डित रामचन्द्र शुक्ल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका का आकार बदल दिया जाय और उसकी पृष्ठ संख्या बढ़ा दी जाय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय ।

(६) बाबू दीवान चन्द्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा इस बात का उद्योग करे कि पंजाब के स्कूलों में जो पुस्तकें उर्दू में पढ़ाई जाती हैं उनका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो जाय और वहां के ट्रेनिङ्ग कालेज में केवल हिन्दी जानने वाले टीचर भी लिए जांय ।

निश्चय हुआ कि इसके लिये पंजाब के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर से प्रार्थना की जाय ।

(७) ललिता पारितोषिक के लिये मथुरा ज़िले की बालिकाओं की हस्तलिपि के पर्चे उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि इनकी परिक्षा के लिये निम्न लिखित सज्जनों की सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् पण्डित माधव प्रसाद पाठक, गोस्वामी रामपुरी और बाबू अमीरसिंह ।

(८) लेखमाला के सम्पादक पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बाबू लक्ष्मीचन्द्र एम० ए० के रूई विषयक लेख को छापने की सम्मति दी थी, "क्रीसस का पतन" शीर्षक लेख छपने के लिये भेजा था और पण्डित उमापति जी की जीवनी जो सभा द्वारा स्वीकृत हो चुकी थी उसके छापने के विरुद्ध सम्मति दी थी ।

निश्चय हुआ कि पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा की सम्मति के अनुसार रूई और क्रीसस के पतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110771

विषयक लेख नागरी प्रचारिणी लेखमाला में प्रकाशित किए जांय और लेख का अभाव होने पर पण्डित उमापति जी की जीवनी भी उसमें छापी जाय ।

[९] कोश कार्यालय के निरीक्षक की सितम्बर और अक्तूबर १९११ की रिपोर्टें सूचनार्थ पढ़ी गईं ।

[१०] फ़ैजाबाद की हिन्दी प्रचारिणी सभा तथा जयपुर के सरस्वती पुस्तकालय के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उन्होंने सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बिनामूल्य मांगी थीं ।

निश्चय हुआ कि फ़ैजाबाद की सभा को पूरे मूल्य पर और जयपुर के सरस्वती पुस्तकालय को अर्ध मूल्य पर पुस्तकें दी जा सकती हैं ।

[११] खां वहादुर काज़ी अज़ीज़द्दीन अहमद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि क्या सभा उनके लिखे हुए संम्राट पंचम जार्ज के जीवनचरित्र का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर सकती है ।

निश्चय हुआ कि यह अनुवाद सभा द्वारा प्रकाशित किया जाय ।

(१२) निश्चय हुआ कि मिस्टर एस० आर० वट्टा ने सभा के तीन वर्षों का जो हिसाब जांच दिया है उसके लिये बाबू गोविन्द दास से प्रार्थना की जाय कि वे मिस्टर वट्टा का पुरस्कार निश्चित कर दें ।

(१३) सम्वाद समिति के प्रधान का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपने साप्ताहिक अधिवेशनों के लिये सभाभवन दिए जाने की प्रार्थना की थी ।

निश्चय हुआ कि यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकती ।

(१४) वेतन वृद्धि के लिये पण्डित काशी प्रसाद तिवारी का प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि आगामी वर्ष इस विषय में विचार किया जा सकेगा ।

(१५) पण्डित काशी प्रसाद तिवारी का प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने एक सप्ताह के लिये बीमारी की छुट्टी मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि नियमानुसार उन्हें बिना वेतन के छुट्टी दी जा सकती है ।

(१६) "हिंदू अधिनिवेशन" शीर्षक लेख पर पण्डित कृष्णा राम मेहता की सम्मति उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि यह लेख नागरी प्रचारिणी लेखमाला के वर्तमान सम्पादक की सम्मति के लिये भी उनके पास भेजा जाय ।

(गोस्वामी रामपुरी ने इस निश्चय का विरोध किया था)

(१७) खत्री कान्फ़रेन्स के मंत्री का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने तारीख २४ से २७ दिसम्बर १९११ तक के लिये सभा की बेंचें मंगनी मांगी थीं ।

निश्चय हुआ कि उन्हें इस समय के लिये बेंचें दी जांय ।

(१८) बाबू शिवप्रसाद गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे प्रबन्धकारिणी समिति से अपना इस्तीफ़ा नहीं लौटा सकते अत; वह स्वीकार किया जाय ।

निश्चय हुआ कि बाबू शिवप्रसाद गुप्त का इस्तीफ़ा स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू गौरीशंकर प्रसाद जी प्रबन्धकारिणी समिति के सभासद चुने जांय ।

(१९) पण्डित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने कोश कार्यालय के निरीक्षक तथा सभा के मंत्री के पद से इस्तीफा दिया था ।

निश्चय हुआ कि यह आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय ।

सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

उपमंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

11077

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की बनाई दवाएं २८ वर्ष से सारे हिन्दुस्तान में प्रचलित हैं।

सम्पादकों की सम्मति

हिन्दीबंगबासी-आप की औषधियां जैसी सस्ती हैं, वैसी ही आशुफलद हैं।

भारतमित्र-आप की दवायों में यह बड़ा गुण है कि वह बहुमूल्य नहीं होतीं अल्प आय वाले भी सहज ही उस खरीद सकते है।

श्री बेंकटेश्वर समाचार—जब इनका कपूर का अर्क प्रजा में आदरनीय है तब इनकी और औषधियों को भी सेवन करना चाहिये!

भारतजीवन पत्र—आप की दवाएं तमाम भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं।

राजस्थान समाचार— डाक्टर बर्म्मन ने यह बक्स बनाकर ऐसी आसानी कर दी कि सब दवाइयां मुसाफ़री में भी आराम से रह सकती हैं।

सरस्वती—बक्स बहुत सुन्दर हैं। २। १ दवाइयों की परीक्षा करने से मालूम हुआ कि वे भी अच्छी हैं। यह बक्स घर में हर गृहस्थ के रखने योग्य है।

मारवाडी बन्धु, कलकत्ता—डाक्टर साहब की औषधियां जैसी कुछ गुणकारी, सुलभ और सच्ची हैं, उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। इनकी औषधियों के प्रचार होने पर सर्व साधारण, वंचक औषध-विक्रेताओं से बच कर अवश्य उपकृत हुये हैं। आशा है कि पटेण्ट औषधियों के रसिक-जन इन वस्तुओं से लाभ उठावेंगे।

इन दवाइयों का विशेष हाल वो प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक बिना मूल्य बिकती है!

परीक्षा के लिये।

छै प्रसिद्ध दवाएं एक ही बक्स में

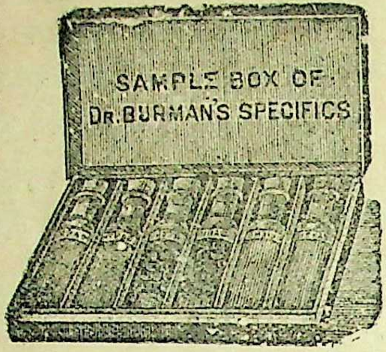

मूल्य १॥) डा० मा० ॥)

डाक्टर बर्म्मन की दवाओं के लिये बहुधा इस विषय के पत्र आया करते हैं कि "परीक्षा के लिये थोड़ी दवाई भेज देवो, बाद गुण देखने के अधिक दवाएं मंगावेंगे।" केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन डाक्टर वैद्य वो हकीम भी ऐसा ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इसी लिये डाक्टर बर्म्मन ने अपनी बनाई हुई दवाओं में से छै विशेष जरूरी दवाओं का एक बक्स नमूने का बनाया है। इसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पेटण्ट शीशिओं में भरी हुई सुन्दर कागज के बक्स में बन्द रहती हैं। साथ पूरे हाल की छपी हुई पुस्तक वो सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थों के लिये यह अनमोल है। थोड़े खर्च में डा० बर्म्मन की विशेष गुणदायक दवाओं का उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई हो सकती है।

दवाओं का नाम।

अर्क कपूर—हैजे वो गर्मी के दस्त की एक ही दवा है।

दमे की दवा-तत्काल दमे को दबाती है।

कोला टानिक—हर एक के लिये बल बढ़ाने की दवा।

धातुपुष्ट की गोली--यथा नाम तथा गुण

जुलाब की गोली—सहज में पेट साफ करती है।

अर्कपूदीना (सब्ज)--अजीर्ण पेट दर्द वो बादी की द[illegible]।

देखिए लोग क्या कहते हैं:—

बाबू बनारसी लाल दास, जलालाबाद, जिला भागलपुर से——आपकी बनाई छै शीशी का १ बक्स मैंने जो मंगाया है उसका जैसा नाम वैसा ही गुण भी है वर्णन करने लायक नहीं है।

लाला मूलचन्द, जमहा, पो० हरसौर जिला अजमेर से—हमने आप के कार्यालय से दवाइयां अजमाने के लिये ६ शीशी वाली बक्स मंगाई और इस्तमाल में ली गई है। हकीकत में आपकी दवाएं आपके विज्ञापन पढ़ने अनुसार ही तुरन्त गुण देती हैं।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद पो० सिताव दिबरा जिला सारन से—आपने छै प्रसिद्ध दवाएं एकही बक्स में भेजे थे उसमें से अर्क कपूर रामबाण से कम नहीं है। कई एक आदमी को हैजे में दिया गया।

बाबू विजय सिंह रईस पो० गौतरा जिला बदाऊं से—[illegible] हर दवाइयां एक ही बकस में जिसकी कीमत १॥) है उनमें से अर्क कपूर अर्क पुदीना वो कोला टानिक का इस्तेमाल किया गया, वाकई निहायत मुफीद व सेहत बख्स पाये गये, और २ दवाइयां जिसकी तारीफ आपने अपने किताब में तहरीर की है मुताबिक उसीके पाई गई है।

सूबेदार पेन्शनर बिश्वनाथ सिंह, भदासा जिला कानपुर से—दाद को ऐसा असर किया कि आपका एहसान और औषध का जादू का सा असर मैं अपनी जिन्दगी भर नहीं भूल सक्ता और आपके बकस की छोटी शीशियों का तो वही असर है कि "रविमण्डल देखत लघु लागा। उदय तासु त्रिभुवन तम भागा"। और मैं तारीफ नहीं लिख सक्ता मेहरबानगी करके [illegible] शीशी शीघ्र भेज दीजिये।

एजेंण्ट—बाबू गुरसहाय छोटे लाल, बुलानाला, बनारस।

एस. के. बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

स्थापित सं० १८९४ । २६ वर्षसे अधिक प्रचलित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस जतनबड़ बनारस सिटी में प्राप्राइटर सीताराम दिनकर जटार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri